अन्तिम सन्देष्टा

कहां ? कब

और कौन

विभिन्न ग्रन्थों की दृष्टि में

भाषा के कारण बनी दूरी को समाप्त करने का प्रयास

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	अन्तिम सन्देष्टा कहाँ, कब और कौन?
लेखक-	मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)
संस्करण-	बाइसवाँ संस्करण
पुस्तक संख्या-	5000
वर्ष-	2020
प्रकाशक-	जमअ़ीयत पयामे अम्न
मूल्य-	230 रु०

Publisher	:	**Maktaba Payam-e-Amn** **Nadwa Road, Daliganj, Lucknow (U.P.) India**
Writer	:	**Mohd Sarwar Farooqui Nadwi (Acharya)**
Website	:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile	:	**0091– 9919042879, 9984490150**
E–Mail	:	**jpa_lko@yahoo.com,** **ataullah2012@gmail.com**

मिलने के पते

1. मजलिसे तह़क़ीक़ात व नशरियात, नद्वतुल उ़लमा, पोस्ट बाक्स नं० 119 (लखनऊ) **(0522–2741529)**
2. न्यू सिलवर बुक एजेन्सी, 14, मुह़म्मद अ़ली रोड, भिन्डी बाज़ार, मुम्बई **(0522–2741539)**
3. अल् फ़ुरक़ान बुक डिपो, नज़ीराबाद-31 (लखनऊ) **(9936635816)**
4. सत्य फ़ाउन्डेशन 182 ग्रीन लैण्ड कैम्पस, पोखरपुर, कानपुर **(9935044343)**
5. मकतबः शबाब जदीद, नदवा रोड, लखनऊ **(9198621671)**

अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन

अन्तिम सन्देष्टा

"वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध, तौरेत, इन्जील, पारसी, अ़रब कवि, भारतीय कवि, विशेष रूप से तुल्हसीदास जी, कबीरदास जी की वाणियों सहित गुरू नानक जी की वाणियाँ तथा इतिहासकारों, वैज्ञानिकों और पवित्र कुर्आन की दृष्टि में, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल0)।"

विषय सूची

सन्देश 17
प्रस्तावना.....20

खण्ड 'क' भाग (1)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में वेदों की भविष्यवाणियाँ

अन्तिम सन्देष्टा की खोज वेदों की दुनिया में..... 24
नराशंस शब्द का अर्थ.....24
देवताओं की जातियां.....25
नराशंस मनुष्यों में से होगा.....26
शब्द नराशंस और मुह़म्मद (सल्ल०) तुल्नात्मक दृष्टी से.....26
मुह़म्मद शब्द का अर्थ.....26
नराशंस कब और कहाँ आयेगा.....27
नराशंस और मुह़म्मद (सल्ल०) का समय 27
नराशंस के पैदा होने का स्थान.....28
नरांशस के विशेषताओं की भविष्यवाणियां.....29
नराशंस और ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) की विशेषताएँ तुल्नात्मक दृष्टि से.....30
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रशंसा.....31
अज़ान में ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रशंसा.....31
नमाज़ में ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) की प्रशंसा 31
दूसरे धार्मिक गुरूओं से भी प्रशन्सित..... 32
प्रो० श्री राम कृष्ण राव जी के अनुसार..... 32
एक यहूदी मानो वैज्ञानिक की दृष्टि में ह़० मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
..... 32
एक ईसाई भाई के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
..... 33

बौद्ध धर्म के आचार्य श्री माग तोग जी के अनुसार.....33
डा० डी० रायट जी के अनुसार.....34
नराशंस सबको प्रिय होगा.....34
नराशंस सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग करेगा.....35
नराशंस को परोक्ष ज्ञान दिया जाएगा.....36
नराशंस अत्यधिक सुन्दर एवं ज्ञान के प्रसारक होंगे.....37
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सुन्दरता.....38
नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा.....39
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व की दशा.....39
नराशंस का एक सांसारिक नाम मामह होगा.....40
नराशंस को सौ निष्क प्रदान किये जाएंगे.....40
नराशंस दस मालाओं वाला होगा.....41
नराशंस दस ह़ज़ार गौओं से युक्त होगा.....41

भाग (2)

पुराणों की भविष्यवाणियां, कल्कि अवतार और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

अवतार का अर्थ.....44
पं० श्री राम शर्मा जी के अनुसार अवतार का अर्थ.....44
अवतार या सन्देष्टा की अवश्यकता और हमारी आशा 46
अन्तिम सन्देष्टा (या अवतार) के आने से पूर्व संसार की दशा 47
श्रीमद्भागवत महापुराण में कल्कि अवतार का महत्व.....53
अन्तिम या कल्कि अवतार के प्रकट होने का स्थान.....57
शम्भल शब्द की खोज..... 58
शम्भल का शाब्दिक अर्थ.....59
कल्कि अवतार के माता-पिता का नाम.....60
कल्कि अवतार की विशेषताएं..... 61
कल्कि और ह़० मुह़म्मद सल्ल० तुल्नात्मक दृष्टि से.....61

अश्वारोहण करने वाला होगा.....62
जगद्गुरू होगा.....62
असाधुदमन करेगा 62
देवताओं द्वारा सहायता मिलेगी 62
अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा..... 63
शरीर से सुगन्ध निकलेगी 63
भविष्यपुराण के अनुसार कल्कि अवतार के आने से पूर्व की दशा.....63
वेदों में शब्द अह़मद व मुह़म्मद 65

भाग (3)

उपनिषदों की भविष्यवाणियाँ

उपनिषदों में शब्द अल्ला, रसूल व मुह़म्मद..... 68
एक और स्थान पर अल्लाह व रसूल 68

भाग (4)

बौद्ध धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

गौतम बुद्धजी की भविष्यवाणियां 71
आने वाले बुद्ध की विशेषताएँ 71
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) और अन्तिम बुद्ध तुलनात्मक दृष्टि से.....72
वह जगत को सत्य और परोपकार की शिक्षा देगा 74
अन्तिम ईशदूत जगतनायक होगा.....74
वह जगत को सत्य व पूर्ण मार्ग दिखलाएगा.....75
वह अपने समय पर आएगा..... 76
उसका हृदय शुद्ध और ज्ञान सम्पन्न होगा.....76
अन्तिम बुद्ध का नाम मैत्रेय होगा 77
बुद्ध मैत्रेय की विशेषताएँ और ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) तुलनात्मक दृष्टि से.77

भाग (5)

पारसी धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

पारसी धर्म का संक्षिप्त परिचय..... 80
पारसी ग्रन्थों की भविष्यवाणियाँ 80
सोइश्यान्त शब्द की व्याख्या..... 81
स्तेवेत एरेता 81

भाग (6)

यहूदी धर्म के अनुसार अन्तिम सन्देष्ट की भविष्यवाणियाँ

अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ तौरेत के पन्नों में 86
उनके (अर्थात इस्राईलियों के) भाइयों के बीच में होगा..... 86
शब्द मह़ामदेम की व्याख्या..... 87
तेरे (अर्थात मूसा के) समान एक नबी आएगा 87
ह़ज़रत मूसा (अलै०) और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) में समानता..... 87
ईश्वरीय वचनों को प्रसारित करना 89

भाग (7)

इंजील में अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

ह़० ईसा मसीह़ (अ़लै०) की भविष्यवाणियाँ..... 91
ह़० ईसा (अ़लै०) और ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) तुलनात्मक दृष्टि से.....91
पैराक्लीट की वास्तविकता..... 92
बाईबिल में संशोधन..... 93
पैराकर्लाट का अर्थ..... 94

भाग (8)

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पूर्व अ़रब कवियों की भविष्यवाणियाँ

अरब कवियों और नुजूमियों की भविष्यवाणियाँ और ह़० मुह़म्मद (सल्ल०). 97
राइश के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०).....97
वरक़ा बिन नौफ़ल के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०).....98
फ़ातिमा बिन्त मुर्रह़ की भविष्यवाणियाँ.....100
ह़ज़र बिन मालिक की भविष्यवाणियाँ 101
कअ़ब बिन लुवई की भविष्यवाणियाँ.....102

भाग (9)

हिन्दी कवियों और सन्तों की भविष्यवाणियाँ

भक्ति काल के कवियों का गुणगान..... 105
क़ुर्आन में मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में.....105
इसी बात को जायसी ने पद्मावत में स्पष्ट.....105
इसी प्रकार अखरावट में लिखा है-.....105
सूफ़ी कवि मंझन मधुमालती में लिखते हैं.....106
सूफ़ी कवि उस्मान ने चित्रावली में कहा 106
संत प्राणनाथ ने ह० मुह़म्मद (सल्ल०) को ईशदूत स्वीकार करते हुए लिखा है..... 106
कबीरदास जी के अनुसार..... 106
महाराजा सरकिशन प्रसाद जी के अनुसार..... 106
मुंशी शंकर लाल साक़ी जी के अनुसार.....107
लक्ष्मी नारायण श्री वास्तव जी के अनुसार..... 107
चौधरी दल्लू राम कौसरी जी के अनुसार..... 107

तिलोक चन्द्र महरूम के अनुसार..... 107
पंडित हरिचन्द्र अख़्तर की ज़बानी.....107
पंडित देवी प्रसाद मस्त जी के अनुसार.....107
योगेन्द्र पाल साबिर जी के अनुसार..... 107
जगन्नाथ प्रसाद जी के अनुसार..... 107
चन्द्र प्रकाश जौहर बिजनौरी के अनुसार..... 108
सन्तों की भविष्यवाणियाँ 109
तुल्सीदास जी के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०)..... 110
बाबा गुरु नानक जी के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०)..... 111

भाग (10)

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) प्रसिद्ध गैर मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि में

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व 113
डी० डब्ल्यू० लाइट्ज के अनुसार..... 113
आर० डब्ल्यू० स्टूअर्ट के अनुसार 114
लामार्टिन के अनुसार 114
गिबन के अनुसार..... 114
जी० हिगिन्स के अनुसार 114
स्टेनले लेनपूल के अनुसार 115
डा० गेस्टोंव लीबान के अनुसार..... 115
जान डेविन पोर्ट के अनुसार..... 115
याकर्स डाड के अनुसार 115
विश्वमान्य गॉधी जी के विचार..... 116
'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के रचयिताओं के अनुसार..... 117
मुहलरजी के अनुसार..... 118
मिस्टर थाम्स कारलायल जी के अनुसार..... 118

जर्मन इतिहासकार डोश जी के अनुसार 119
मिस्टर वास्वार्थ स्मिथ जी के अनुसार 120
एक स्थान पर मिस्टर थामस जी लिखते हैं 121
एक ईसाई डा० स्पिरिंगर जी के अनुसार 122
रेवरेण्ड राडवेल जी के अनुसार 122
मिसेज एनीबेसेन्ट जी के अनुसार 122
ग्रेट टीचर हरबर्ट वायल जी के अनुसार 123
जार्ज बर्नाड शा के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) 124

भाग (11)

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) वैज्ञानिकों की दृष्टि में

वैज्ञानिकों का विश्लेषण 126
प्रो० मूरे जी के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) 126
प्रो० तेगासान जी के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) 129
प्रो० कार्नर जी के अनुसार 132
साराँश 133
प्रो० हे के अनुसार 134
प्रो० सिम्पसन जी के अनुसार 136
प्रो० मार्शल जानसन जी के अनुसार 136
प्रो० युश्युदी कुसान जी के अनुसार 137
प्रो० टी० वी० एन० प्रसाद जी के अनुसार 137
प्रो० दोर्जा राव जी के अनुसार 137
प्रो० श्नोडर जी के अनुसार 137
प्रो० आर्मस्ट्रॉग जी के अनुसार 137
पवित्र कुर्आन और विज्ञान 139

भाग (12)

ईश सन्देष्टा की धारणा पवित्र कुर्आन के पन्नों में

ईशदूतत्व विश्वास 150
पवित्र कुर्आन के अनुसार ईशदूत की धारणा 150
महाईशदूत ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) सारी मानव जाति के उद्धारक 151
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) अन्तिम सन्देष्टा के रूप में 152

खण्ड 'ख' भाग (1)

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का संक्षिप्त परिचय

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) का वंश 156
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के जन्म से पूर्व संसार की दशा 156
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व यहूदी धर्म की दशा 156
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व ईसाई धर्म की दशा 157
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व मजूसी सम्प्रदाय की दशा 159
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व बौद्ध धर्म की दशा 160
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व हिन्दू धर्म की दशा 161
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व हिन्दुस्तानी समाज की दशा 163
भारत का अन्धकारमय युग 165
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व रोम की दशा 166
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व ईरानी साम्राज्य की दशा 167
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व अ़रब की दशा 168
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) से अ़रब प्रायद्वीप में ही क्यों पैदा हुए 172
ईरानी सभ्यता पर एक दृष्टि 175
हिन्दुस्तानी सभ्यता पर एक दृष्टि 177
रोम और ईरानियों की सभ्यता 178

अ़रब प्रायद्वीप में अन्तिम नबी के अभ्युदय का दूसरा कारण..... 180
अ़रब प्रायद्वीप की भौगोलिक स्थिति..... 182
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म..... 184
नुबूवत का ताज (अर्थात ईशदूतत्व पद)..... 185
इस्लाम की किरण..... 186
इस्लाम..... 186
सर्वप्रथम इस्लाम ग्रहण करने वाले..... 187
मुसलमानों का घोर विरोध..... 187
महाईशदूत मुह़म्मद (सल्ल०) पर मक्का निवासियों का अत्याचार..... 187
महाईश दूत ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) को प्रलोभन..... 188
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०)का सामाजिक बाईकाट..... 189
मक्का के काफ़िरों का अत्याचार मुसलमानों पर..... 189
ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) का इस्लाम..... 190
ह़ज़रत खब्बाब (रज़ि०) का इस्लाम..... 190
ह़ज़रत सुहैब व ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि०) का इस्लाम..... 190
ह़ज़रत अबू फ़की़ह (रज़ि०) का इस्लाम..... 190
ह़ज़रत सुमय्या (रज़ि०) का इस्लाम..... 191
ह़ज़रत अबूज़र गिफ़ारी (रज़ि०) का इस्लाम..... 191
ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मसअूद (रज़ि०) का इस्लाम..... 191
ह़ज़रत उस्माने ग़नी (रज़ि०) का इस्लाम..... 191
ह़ज़रत जुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) का इस्लाम..... 192
ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) का इस्लाम..... 192
ह़ज़रत आइशा बिन्त अबी रबीअः व सलमः बिन्त हिशाम (रज़ि०)का इस्लाम 192
ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) का इस्लाम..... 192
श्री नाथू राम जी की राय..... 193
इस घोर अत्याचार के बाद मुसलमानों की हिज़रत..... 193
इस्लाम का प्रकाश मदीने में..... 193
मदीने की ओर हिज़रत..... 194

मक्का निवासियों से युद्ध..... 194
क़त्ल (युद्ध) की अनुमति का कारण..... 195
जिहाद का अर्थ इस्लाम धर्म में..... 195
शिक्षा के ज़रिये..... 196
माल के ज़रिये जिहाद..... 197
जान के ज़रिये जिहाद..... 197
तल्वार का प्रयोग इस्लाम धर्म में..... 197
कुर्आन पर आरोप की वास्तविकता..... 198
बाबू मुकुटधारी प्रसाद जी के अनुसार इस्लाम की तल्वार..... 201
महात्मा गांधी जी के अनुसार इस्लाम की तल्वार..... 203
स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार..... 203
डी० लेसी ओ- लेरी जी के अनुसार..... 203
इस्लाम की नैतिकता..... 203
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) का पहला युद्ध..... 204
लेनपूल जी के अनुसार ह़० मुह़म्मद (सल्ल०)..... 204
मि० लारेंस ई० ब्राउन जी के अनुसार..... 205
इस्लाम का सिद्धान्त ग़ैर मुस्लिम भाइयों के हित में..... 205
श्री सुन्दर लाल जी के अनुसार इस्लामी सिद्धान्त..... 206
कुर्आन के प्रभाव से इस्लाम..... 207
ह़ज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) का इस्लाम स्वीकार करना..... 207
ह़ज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़ि०) का इस्लाम स्वीकार करना..... 208
ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के आचरण से प्रभावित होकर इस्लाम क़ुबूल करने वाले..... 209
आप (सल्ल०) के भाषण के प्रभाव से इस्लाम क़ुबूल करने वाले..... 209
आप (सल्ल०) को केवल देखने का प्रभाव..... 210
आचरण का प्रभाव..... 210
आप (सल्ल०) के चमत्कार का प्रभाव..... 210
मक्का विजय और शत्रुओं के साथ व्यवहार..... 211

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) द्वारा दिये गये सेना को उपदेश..... 213
मानवता पूर्ण नियम..... 213
अन्तिम ह़ज और उसका खुत्बः..... 214
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का अन्तिम अनतर्राष्ट्रीय भाषण..... 214
आप (सल्ल०) की बीमारी और अन्तिम समय..... 216
आप (सल्ल०) के अन्तिम शब्द..... 216
आप (सल्ल०) के निधन के बाद..... 217
आप (सल्ल०) की क़ब्र मुबारक (रौज़-ए-अतहर).....217

भाग (2)

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के आचरण और गुणों का वर्णन

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) का आचरण और स्वभाव..... 220
ह़० मुह़म्मद सल्ल० के गुणों का वर्णन..... 221
आप (सल्ल०) का स्वभाव..... 222
आप (सल्ल०) की दयालुता..... 225
आप (सल्ल०) की सादगी..... 226
जानवरों पर दया का हुक्म 226
सेवकों के साथ दया..... 227
आप (सल्ल०) का पहनावा..... 227
आप (सल्ल०) का भोजन..... 228
आप (सल्ल०) की पसंदीदा चीज़ (ख़ुशबू)..... 228
आप (सल्ल०) के आराम करने का तरीक़ा..... 229

भाग (3)

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के संक्षिप्त सुकथनों का वर्णन

ह़० मुह़म्मद (सल्ल०) के उपदेश..... 231

खण्ड 'ग' भाग (1)

इस्लाम धर्म का अर्थ और उसके कुछ मूल विश्वास

इस्लाम का शब्दिक अर्थ..... 239
इस्लाम धर्म की प्राचीनता और उसके संस्थापक..... 239
विश्वव्यापी धर्म..... 241
मुसलमान या मुस्लिम किसे कहते हैं 241
काफ़िर किसे कहते हैं..... 242
क्या कुर्आन में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की आज्ञा दी गई है..... 242
इस्लाम धर्म की मूल आस्थाएँ..... 244
अल्लाह के फ़रिश्तों (देव दूतों) पर आस्था..... 245
रिसालत (ईशदूतत्व विश्वास).....245
ईशवाणी या ईशग्रन्थों पर विश्वास..... 245
अल्लाह के फ़रिश्तों (देवदूतों) पर आस्था..... 245
तक़्दीर पर आस्था..... 246
क़ियामत और मरने के बाद दोबारा उठाये जाने पर आस्था..... 246
इस्लाम के प्रमुख आधार..... 246
अन्तिम शब्द..... 247

सन्देश

ह़ज़रत मौलाना सय्यद अब्दुल्लाह ह़सनी नदवी रहमतुल्लाह अ़लैहि के क़लम से

भूतपूर्व उस्ताजे हदीस दारुल उलूम, नद्वतुल उलमा, व सहसम्पादक 'अर्राइद' लखनऊ

बिस्मिल्लाहिर्रह़मार्निरह़ीम

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों की रहनुमाई और ह़िदायत के लिए नबियों और रसूलों का सिल्सिला क़ायम फ़रमाया जो ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक बराबर चलता रहा, हर-हर इलाक़े में और हर-हर क़ौम में सन्देष्टा भेजे गये उन्होंने अपने पालनहार और भेजने वाले के पैग़ाम को सम्पूर्ण रूप से पहुँचाया। सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, मारे पीटे गये, लेकिन पैग़ामे ह़क़ व सत्यता सुनाकर रहे, मानने वालों ने माना और कामियाब हुए और मानव दुश्मन ज़ालिम और जाहिल लोगों ने नहीं माना तो हलाक व बरबाद हो गये जिसका रिकार्ड आसमानी किताबों ने सुरक्षित करके आने वाली नस्लों को पेश किया ताकि वह ऐसी ग़लती न करें और इन्कार करके मुजरिमों की सूची में शामिल न हो जाएँ।

अल्लाह भला करे ऐसे लोगों का जिनके पास ह़क़ व सत्यता का सन्देश था परन्तु उन्होंने अपने स्वार्थ और दुनियावी लोभ के लिए उसको छिपाया फिर उसमें काट-छांट की, इस प्रकार नस्ल इंसानी की राह खो गई। यह लोग बराबर इन्सानियत के साथ ज़ुल्म व ज़्यादती करते रहे, और अल्लाह के भेजे हुए सन्देश ह़क़ व सदाक़त को झुठलाते रहे। अल्लाह को अपने पैदा किये हुए इन्सानों से प्यार था इस लिए वह बराबर ह़क़ की रोशनी के लिए अपने सन्देशवाहकों को भेजता रहा। अन्त में जब उन लोगों ने इस सन्देश को बिल्कुल मिटा के रख दिया और सारे दीप बुझा दिये और सारी दुनिया घटाटोप अंधेरे में बदल गई तो अल्लाह

तआ़ला की रह़मत (दया) को जोश आया और अपने अन्तिम सन्देष्टा को सारे संसार की हिदायत के लिए भेजा और उसको तमाम दुनिया के लिए रह़मत बनाकर अपने सन्देश ह़क़ व सत्यता को आम करने का हुक्म दिया, तो उसने वह पैग़ाम सुनाना शुरू किया, मानने वालों ने बढ़कर स्वागत किया और उसके आस-पास जमा हो गए और न मानने वाले, जो वास्तव में मानव दुश्मन थे इन्कार करते चले गए। अतः उनका कोई नाम लेवा नहीं, कोई याद करने वाला नहीं।

उसने आकर घोषणा की, कि ''तमाम मख़्लूक़ अल्लाह का कुंबा है। सब आपस में भाई-भाई और एक समान हैं, नस्ली और क़ौमी बुनियाद पर किसी को श्रेष्ठता ह़ासिल नहीं। अल्लाह को प्यारा वह है जो उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) के साथ एह़सान करे और वह अल्लाह का लिहाज़ करता और उससे डरता हो। आ़ला ख़ानदान में होने की वजह से 'जन्नत' उसका ह़क़ नहीं बल्कि जो भी ह़क़ व सत्यता को स्वीकार करके अ़मल करेगा वह कामियाब होगा और 'जन्नत' का ह़क़दार होगा चाहे काला हो या गोरा, चाहे आ़ला ख़ानदान का हो या मामूली ख़ानदान का।''

उसने बताया हर जानदार की ख़िद्मत करने में अज्र व सवाब है, ''एक बद्कार औ़रत की बख़्शिश (क्षमा) इस लिए हो गई कि उसने प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।'' एक बार ऐसा हुआ कि वह सफ़र में थे कुछ साथी उसके साथ थे उन्होंने एक चिड़िया के बच्चे पकड़ लिए, चिड़िया बार-बार आती और पर फड़फड़ाती, उसने पूछा कि किसने इस चिड़िया को दुख दिया है, इसके बच्चों को छोड़ दो।

जंग के मौक़े पर भी आप (सल्ल०) ने ताकीद की, कि औ़रत, बच्चों, बूढ़ों और अपनी इबादत गाहों में इबादत करने वालों को हाथ न लगाया जाये।

उसके ज़रिये क़ुर्आन में यहां तक एलान किया गया कि ''ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो बल्कि अल्लाह, रह़मान, (महादयालु) के बन्दों की निशानी बताई गई कि वह ज़मीन पर अकड़ कर नहीं चलते हैं, आहिस्तगी से नर्मी के साथ चलते हैं।''

उसने यह भी एलान किया कि सूरज, चांद-सितारे, आसमान, ज़मीन, जंगल, पहाड़, दरिया, समुद्र यह सब अल्लाह के बनाए हुए हैं और सब उसके हुक्म के मुताबिक़ अ़मल कर रहे हैं। उसी ने सबको पैदा किया है और वही

अकेला सबको चला रहा है, जब तक चाहेगा चलाएगा और जब चाहेगा ख़त्म कर देगा, वह खुद से कुछ नहीं कर सकते, और इन सबको इन्सान का सेवक बना दिया है और इन्सान को हुक्म दिया कि अपने पैदा करने वाले के आगे झुके और सिर्फ़ उसी की इबादत करे।

इसी तरह उसने अपने रब (पालनहार) अल्लाह के सन्देश को सारे संसार में आम कर दिया जिन्होंने माना वह कामियाब हुए और जो टकराए वह चूर-चूर हो गए, परन्तु यहाँ भी ऐसे लोग पैदा हुए जो बड़े मानव दुश्मन थे उन्होंने उसको बदनाम करने की कोशिश की और ग़लत-सलत बातें उसकी ओर लगाई, इसलिए बहुत से भोले-भाले लोग नासमझी का शिकार हो गए और बिना किसी तह़क़ीक़ के उसे स्वीकार कर लिया। जबकि यह एक ह़क़ीक़त है कि उसका नाम और काम तमाम आसमानी किताबों में बता दिया गया था। उसको उन्होंने छिपाया और मिटाया परन्तु इसके बावजूद आज भी उन किताबों में उसका ज़िक्र भरपूर मौजूद है यदि निष्पक्ष होकर हक़ (सत्य) की खोज के लिए इसे पढ़ते तो स्वीकर कर लेते, और जिन्होंने इस तरह देखा उन्होंने माना और बराबर मान रहे हैं इसलिए ऐसा कौन है जो 'जन्नत' न ढूंढे, सुकून न चाहे और अच्छी ज़िन्दगी का इच्छुक न हो।

अज़ीज़-ए-गिरामी मौलवी मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी 'नदवी' ने बड़ी मेह़नत से और काफ़ी वक़्त लगा कर इस अन्तिम सन्देष्टा (यानी जिसका नामे-नामी इस्मेगिरामी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल० है) के विषय में आसमानी, मुक़द्दस किताबों और विभिन्न संतों, वैज्ञानिकों, इतिहासकारों के क़ौल को बड़े अच्छे ढंग से जमा कर दिया है, उम्मीद है कि वह तमाम भाई विशेष रूप से हिन्दुस्तानी विद्वानों और ह़क़ (सत्य) की खोज करने वाले सज्जनों तथा अन्तिम सन्देष्टा का इन्तिज़ार करने वाले तमाम इन्सानों के लिए राहे ह़िदायत होगा, अल्लाह उनके इस काम को क़ुबूल फरमाए और इसको हिदायत सआ़दत व निजात का ज़रिया बनाए।

अ़ब्दुल्लाह ह़सनी 'नदवी'
19 नवम्बर,1998

प्रस्तावना

पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:-

"और हमने हर गिरोह में पैग़म्बर (सन्देष्टा) भेजे ताकि (तुम) एक मात्र अल्लाह की स्तुति करो, और शैतान से बचते रहो, तो उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और कुछ पर गुमराही साबित हुई, ज़मीन पर चलो फिरो और देखो, कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ"।

(सूरः नह़्ल आयत नं० 36)

ऊपर की पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह (परमेश्वर) ने मानव जीव को पैदा करने के बाद यूं ही छोड़ नहीं दिया, बल्कि मनुष्य को जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने की अवश्यकता पड़ती है उससे कहीं अधिक ज़िन्दगी के हर मोड़ पर किसी मार्ग दर्शक की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए परमेश्वर ने इस का इन्तिज़ाम भी किया, कि वह मनुष्यों में से अपना ईशदूत नियुक्त करता रहा जिसमें सबसे पूर्व और प्रथम ईशदूत ह़ज़रत आदम (अलै०) थे।

इस प्रकार अपने समय पर बराबर सन्देष्टा आते रहे और उस समय लोग उनका पालन करते, परन्तु कुछ समय बाद लोग उनकी शिक्षाओं को छोड़कर स्वार्थ का रास्ता अपना लेते, तो दूसरे सन्देष्टा भेजे जाते, परन्तु उनके साथ भी यही होता कि उनकी शिक्षाओं को कुछ दिनों बाद छोड़ कर स्वयं उसी सन्देष्टा को इतना सम्मान दिया जाने लगता कि उसी की पूजा, पाठ आरम्भ हो जाती और वास्तविक परमेश्वर जिसने उस सन्देष्टा सहित सारे मनुष्यों को पैदा किया है उसको उससे भी कम सम्मान मिलने लगता, यहां तक कि परमेश्वर को छोड़ कर अन्य की पूजा शुरु हो जाती।

इस प्रकार जैसा पवित्र क़ुर्आन द्वारा स्पष्ट हो चुका है कि परमेश्वर ने प्रत्येक समूह में नबी या सन्देष्टा भेजे और दूसरे स्थान पर यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि हर समूह में जो सन्देष्टा आता था वह उसी समूह की भाषा

बोलता था, कहीं संस्कृत में, कहीं ईरानी में, कहीं सुर्यानी या फ़ारसी इत्यादि भाषा में सन्देष्टा बोलते और उसी भाषा में अपना ज्ञान या जीवन संविधान प्रस्तुत करते और लोग उनका अनुसरण करते, परन्तु वह अपने आप को अन्तिम सन्देष्टा नहीं कहते थे और न यह कहते थे कि यही संविधान क़ियामत तक रहेगा। यह तो केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने कहा है कि मैं अन्तिम सन्देष्टा हूँ और मेरा लाया हुआ संविधान क़ियामत तक के तमाम लोगों के लिए है।

इस महत्व को सामने रखते हुए उस सन्देष्टा की खोज करना अत्यन्त ज़रूरी है कि वह है कौन, और कहां आयेगा, या आ चुका है, तो है कौन? इसलिए कि यदि वह पैदा हो चुका है तो उसका दिया हुआ संविधान कौन सा है, इन्हीं प्रश्नों ने मुझे तमाम धार्मिक पुस्तकों के उलटने पर विवश कर दिया जिनमें सब से महत्वपूर्ण नाम 'पं० वेद प्रकाश उपाध्याय जी' का है। जिन्होंने अपनी पुस्तक 'नराशंस और अन्तिम ऋषि' के नाम से प्रकाशित किया है, उसमें उन्होंने उस आने वाले सन्देष्टा की भविष्यवाणियों को सामने रखते हुए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से तुलना की है, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध किया है कि वह अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही हैं, जिससे वास्तव में वह अपने इस विचार को स्पष्ट करना चाहते हैं कि हिन्दू मुस्लिम के मध्य जो दूरी है वह समाप्त हो और एक दूसरे को समझने में मदद मिल सके। इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में हमने पं० जी की ही सिद्ध की हुई बातों को स्पष्ट करने की कोशिश की है।

प्रस्तुत पुस्तक के हमने 3 खण्ड किए है जिसमें से खण्ड 'क' में अन्तिम सन्देष्टा के विषय में की गयी भविष्यवाणियों का ज़िक्र किया है, खण्ड 'ख' में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ उनके आचरण और उनके उपदेशों से सम्बन्धित व्याख्यान और खण्ड 'ग' में इस्लाम का अर्थ और उसकी मूल आस्थाओं को प्रस्तुत किया है। **परन्तु कोई यह न समझे कि हम इन पुस्तकों को आसमानी किताब या किसी को अहले किताब साबित करना चाहते हैं, ऐसा हरगिज़ नहीं है,** इसलिए कि हमारे पास क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी ग्रन्थ के विषय में पूर्णरूपेण प्रमाण मौजूद नहीं है, इसलिए न हम कह सकते हैं कि यह आसमानी ग्रन्थ है और न पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि नहीं

है। परन्तु इतना अवश्य कह सकते हैं कि इस समय पूरे विश्व में पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई ग्रन्थ अपने वास्तविक रूप में मौजूद नहीं है। अतः पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई ग्रन्थ नहीं जो पूर्णरूपेण प्रमाणित ईश्वरीय हो और यही केवल क़ियामत तक प्रमाणित ग्रन्थ रहेगा।

आशा है कि पाठक गण शोध पुस्तक से सन्तुष्ट होकर अपना क़दम आगे की ओर बढ़ाएँगे, इसलिए कि ईशग्रन्थ और सन्देशवाहक किसी एक वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं हुआ करते, उन पर जितना अधिकार उनके अनुयायियों का होता है उतना ही अधिकार इस विश्व के प्रत्येक मनुष्य का।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के अवलोकन से भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि निखिल भू-मण्डल में 'अम्न व अमान' की लहर दौड़ पड़ेगी और धर्म के नाम पर होने वाले कलह शांत हो जाएँगे।

अन्त में हम अपने प्रिय मित्र जनाब मुह़म्मद नदीम साहब, जनाब तस्नीम अह़मद साह़ब, डॉ० इम्तियाज़ अह़मद साह़ब के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने इस के प्रूफ़ पढ़ने में अपना क़ीमती समय दिया और विशेष रूप से जनाब ह़ाजी शफ़ीउल्लाह साह़ब के भी जिन्होंने इस की इशाअ़त में ह़िस्सा लिया। अल्लाह पाक अपनी शान के अनुसार उन्हें अज्र अज़ीम अ़ता फ़रमाए।

अल्लाह से यही प्रार्थना है कि सभी वर्ग अपने महाईशदूत से परिचित हों ताकि उनके अन्दर सद्भावना का संचार हो विश्व में बन्धुत्व हो और मरने के बाद का जीवन सुखमय और शान्तिमय हो।

मुह़म्मद सरवर फ़रूक़ी नदवी
दारुल उलूम नद्वतुल उलमा, लखनऊ
19 नवम्बर,1998

खण्ड (क)

भाग-1

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में वेदों की भविष्यवाणियाँ

अन्तिम सन्देष्टा की खोज वेदों की दुनिया में

नराशंस मिहप्रिय मस्यियज्ञे..... (ऋग्वेद संहिता 1:13:3)

अनुवाद- "**नराशंस** की प्रशंसा की जाएगी तथा सबको प्रिय होगा"।

सर्वप्रथम जब हम अपनी यात्रा वेदों की दुनिया से प्रारम्भ करते हैं तो हमें अनेक पृष्ठों पर 'नराशंस' शब्द से होकर गुज़रना पड़ता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे 'नराशंस' शब्द हम से चुपके-चुपके स्वर में कह रहा है कि मुझे समझने का प्रयास करो, अर्थात नराशंस के विषय में जो भविष्य वाणी दी गयी है, उसे मालूम करने की कोशिश करो। परन्तु आज हम अपनी इच्छा पूर्ति में इतना व्यस्त हो गये हैं, कि इसके लिए हमारे पास समय ही नहीं और जिनके पास कुछ समय है तो वह स्वार्थ और लोभ में इतना जकड़ चुके हैं कि उन्हें ह़क़ और सत्य बात कहने में उनकी सत्ता के समाप्त होने का ख़तरा पैदा हो जाता है, जबकि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जिसे मालूम करना प्रत्येक वैदिक धर्म के मानने वाले के लिए अनिवार्य है क्योंकि उस व्यक्ति या महापुरूष के आने के बाद उस पर आस्था रखना अनिवार्य है, इसलिए यदि वह व्यक्ति आकर चला गया हो तो जब से वह आया था तब से आज तक जो भी हमने उस व्यक्ति के विरूद्ध कार्य किये होंगे वह स्वीकार नहीं किये जायेंगे, इसलिए यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

नराशंस शब्द का अर्थ

नराशंस मिहप्रिय मस्यियज्ञे.....(ऋगवेद संहिता 1:13:3)

नराशंस शब्द का अर्थ विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न ढंग से किया है परन्तु हर शब्द का अर्थ जब उसके वातावरण और सन्दर्भ में भेद भाव से ऊपर उठ कर निष्पक्षता की दृष्टि से किया जाता है तभी उस का अपने भाव में सही अर्थ निकलता है।

जैसा कि यहां पर 'नराशंस' का वर्णन है। इसके भी कई अर्थ निकल सकते

है परन्तु देखना यह है कि यह शब्द किस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है जिसे नरांशस शब्द का सन्धि-विच्छेद करते हुए पं० थेम करण वर्मा, पं० राजा राम और डा० वेद प्रकाश उपाध्याय जी लिखते हैं।[1]

नराशंस- <u>नराशंस</u> शब्द 'नर' और 'आशंस' दो शब्दों से मिलकर बना है। नर का अर्थ होता है मनुष्य और आशंस का अर्थ होता है प्रशंसित (जव इम चतंपेमक) अर्थात आशंस शब्द वैदिक भाषा का शब्द है न कि लौकिक भाषा का, नराशंस शब्द का कुछ लोगों ने अर्थ लिया है कि मनुष्यों की प्रशंसा तथा कुछ लोगों के अनुसार नराशंस शब्द का अर्थ होता है मनुष्यों द्वारा प्रशंसित।

इसमें प्रथम अर्थ जो ऊपर दिया गया है वह व्याकरण के अनुसार षष्ठी तत्पुरूष समास से निकलता है, अब हमको देखना है कि वास्तव में नराशंस का क्या अर्थ होगा। तृतीय तत्पुरूष या षष्ठी तत्पुरूष से निकला हुआ अर्थ संगत नहीं खाता क्योंकि नराशंस के सूत्रों में किसी विशेष व्यक्ति ;च्तवचमत छवनदद्ध की प्रशंसा है। अतः जिसकी प्रशंसा नराशंस विषयक वर्णन है, नराशंस शब्द से उसी व्यक्ति का बोध होगा। नराशंस शब्द कर्मधार्य समास है जिसका विच्छेद नरश्चासौ आशंस अर्थात प्रशंसित मनुष्य होगा।[2]

इसलिए 'नराशंस' शब्द से किसी देवता को भी न समझना चाहिए

'नराशंस' शब्द स्वतः ही इस बात को स्पष्ट कर देता है कि, प्रशंसित शब्द जिसका विशेषण (Adjective) है 'वह मनुष्य है' यदि कोई नर शब्द को देव वाचक माने तो उसके समाधान में इतना स्पष्ट कर देना आवश्क है कि नर शब्द न तो देवता का पर्यायवाची शब्द ही है और न ही देवयोनियों के अन्तर्गत कोई विशेष जाति का।

देवताओं की जातियाँ (Species)

1- विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्व किन्नरः।
पिशचो गुहाकः सिद्धो भूतोऽमौ देवयोनयः।।

(अमर कोश स्वर्गन्वर्ग 11वां श्लोक)

ऊपर के श्लोक में देवताओं की निम्नलिखित दस जातियों का उल्लेख किया गया है-

1. विद्याधर 2. अप्सरस् 3. यक्ष 4. राक्षस 5. गन्धर्व
6. किन्नर 7. पिशाच 8. गुह्यक 9. सिद्ध 10. भूत

इन तमाम जातियों में से कोई भी जाति शब्द नराशंस पर सिद्ध नहीं होती, अतः नराशंस का मनुष्य होना स्पष्ट हो जाता है।

नराशंस मनुष्यों में से होगा

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः।
स्युः पुमांस पंचजनः पुरुषा पुरुषानरः।।

(अमर कोश, मनुष्य वर्ग, श्लोक 1)

'नराशंस' शब्द देवजाति में न होकर मनुष्य जाति में प्रशंसित (Praised in Homosapiens) के लिए है। नर शब्द का अर्थ होता है मनुष्य क्योंकि 'नर' शब्द मनुष्य के पर्यायवाची शब्दों में से एक है। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि नराशंस जिसका नाम होगा वह मनुष्य होगा और प्रशंसित (The Praised man) भी होगा।

शब्द नराशंस और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तुलनात्मक दृष्टि से

नराशंस शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है अर्थात 'नराशंस' शब्द व्युत्पत्तिजन्य अर्थ से निर्दिष्ट किसी व्यक्ति विशेष (Proper Noun) के लिए आया है जिससे यह स्पष्ट होता है कि वह आने वाला व्यक्ति जिसके विषय में वेदों में भविष्यवाणी की गई है, नर=मनुष्य होगा और साथ में आशंस=प्रशंसित होगा। अर्थात नराशंस वह होगा जिसमें नरत्व और आशंसत्व दोनों गुण घटित होंगे।

मुह़म्मद शब्द का अर्थ

'मुह़म्मद' शब्द 'ह़म्द' धातु से बना है (ह़म्द = प्रशंसा) इसी प्रकार (मुह़म्मद = प्रशंसित)

मुह़म्मद (सल्ल०) के पिता का नाम 'अ़ब्दुल्लाह' और माता का नाम

'आमिना' था जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि आप मनुष्य ही थे। अतः आप में नरत्व और आशंसत्व दोनों गुण घटित होते हैं। इसलिए नराशंस शब्द अ़रबी में 'मुह़म्मद' शब्द ही के समान है, जिस प्रकार जल कहें या वाटर या पानी सब एक ही पदार्थ की ओर संकेत करते हैं, केवल भाषा का ही अन्तर होता है इसी प्रकार 'नराशंस' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है और 'मुह़म्मद' अ़रबी भाषा का शब्द है जो एक ही व्यक्ति की ओर संकेत कर रहा है।

नराशंस कब और कहाँ आएगा

(अथर्ववेद के बीसवें काण्ड के अन्तर्गत एक सौ सत्ताइसवें सूक्त के प्रथम मन्त्र में इस प्रकार है:-

'इंद्र जना उपश्रुत नराशंसः स्तविष्यते।' (अथर्ववेद संहिता 20/127/1)

अनुवाद- ''हे मनुष्यों ! यह आदर से सुनो कि नराशंस की प्रशंसा की जायेगी''

यह श्लोक अथर्ववेद का है और अथर्ववेद चारों वेदों में सबसे बाद का है अतः इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नराशंस अथर्व वेद के लिखे जाने के बाद ही के किसी काल में होगा। नराशंस के विषय में दूसरी बात अथर्व वेद में वाहन (सवारी) के रूप में ऊँट का प्रयोग करने वाला बताया गया है।

उष्ट्रा यस्य प्रवाहणो.....(अथर्ववेद 20/127/2)

अनुवाद- ''उसकी सवारी ऊँट होगी।''

ऊपर के श्लोकों से यह स्पष्ट हो गया कि नराशंस ऐसे समय में आयेगा जबकि सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग होगा।

नराशंस और मुह़म्मद (सल्ल०) के आने के समय में समानता

जैसा कि वेदों में नराशंस के प्रकट होने का वह समय बताया गया है जबकि सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग होगा।

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी उस समय पैदा हुए जबकि सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग हो रहा था, उसके बाद दूसरी सवारियों का प्रयोग शुरु हुआ

स्वयं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ऊँटों का ही प्रयोग किया करते थे। जिसकी सबसे बड़ी दलील यह है कि जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ईश्वरीय सन्देश देना शुरू किया तो उनके परिवार के ही लोग विरोध करने लगे यहां तक कि आप के हत्या की योजना बना ली, और एक रात में आप का घर घेर लिया परन्तु उन्हीं शत्रुओं के बीच से निकल कर आप (सल्ल०) निकटतम सहचर ह़ज़रत अबूबक्र रज़ि० के यहाँ गये और दो ऊँटनियों पर, एक पर अबू बक्र (रज़ि०) और दूसरी पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) सवार होकर मदीना की ओर हिजरत की[1]।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जीवन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना मक्का की विजय है। इस ऐतिहासिक घटना के अवसर पर भी आप ऊँट ही पर सवार होकर मक्का आये।

तीसरी महत्वपूर्ण घटना आप (सल्ल०) के जीवन का अन्तिम ह़ज है जिसमें आप ऊँटनी पर ही सवार हो कर गये। इसके अतिरिक्त अधिकतर आप (सल्ल०) ऊँट पर ही सवारी किया करते थे।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता कि जिस नराशंस को सवारी के रूप में ऊँटों के प्रयोग करने की बात कही गयी है, वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर पूरी तरह सिद्ध होती हैं।

नराशंस के पैदा होने का स्थान

नराशंस के पैदा होने वाले स्थान को वेदों में स्पष्ट रूप से कहीं नहीं बताया गया, परन्तु हम इस प्रकार अनुमान लगा सकते हैं कि नराशंस को सवारी के रूप में ऊँट का प्रयोग करने वाला बताया गया है। कोई भी व्यक्ति सिद्धान्त रूप से जिस देश, काल या वातावरण में जन्म लेता है, उसी देश की भाषा, वेश-भूषा तथा सवारी का प्रयोग भी करता है। ऊँट की सवारी करने का तात्पर्य यह है कि नराशंस जिस स्थान में पैदा होगा, वहाँ ऊँटों की प्रचुरता रहेगी, ऊंटों की प्रचुरता प्रायः उन्हीं स्थानों में होती है जो रेगिस्तानी भू-भाग हों।

इस प्रकार हम इस तथ्य पर पहुँचते हैं, कि नराशंस रेगिस्तानी भू-भाग या क्षेत्र में होगा जहाँ ऊँट सवारी के रूप में प्रयोग होते होंगे।

1- सीरतुन्नबी

अब ऊपर के निष्कर्ष को देखते हुए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और नराशंस की तुलना इस प्रकार कर सकते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी जिस देश या क्षेत्र (मक्का) में पैदा हुए वह एक रेगिस्तानी क्षेत्र था जहां ऊंटों को ही सवारी के रूप में प्रयोग किया जाता था।

नराशंस की विशेषताओं की भविष्यवाणियाँ

नराशंस के विषय में उनकी विशेषताओं का उल्लेख विस्तार पूर्वक वेदों में मौजूद है जिनमें में से कुछ मुख्य विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जाता है।

1. नराशंस मिहाप्रिय मस्यियज्ञे....(ऋग्वेद संहिता, 1: 13: 3)

"नरशंस की प्रशंसा की जाएगी तथा सबको प्रिय होगा"।

2. उष्ट्रा यस्य प्रवाहरणी.....(अथर्ववेद, 20:127:2)

"नराशंस सवारी के रूप में ऊंटों को प्रयोग करेगा"।

3.....मधुजिहंव हविष्कृतम्।। (ऋग्वेद संहिता,1:13:3)

"नराशंस को परोक्ष ज्ञान दिया जाएगा"।

4. नराशंस प्रति धामान्यजन तिस्प्रो दिवः प्रतिमहा स्वर्चिः। (ऋग्वेद,2:3:2)

"नराशंस अत्यधिक सुन्दर एवं ज्ञान के प्रसारक होंगे"।

5. नराशंस वाजिन वाजयत्रिह.....(ऋग्वेद,1:106:4)

"नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा"।

6. एषा इषाय मामहे.....(अथर्ववेद, 20:127:3)

नराशंस का एक संसारिक नाम मामह होगा।

7. एषा इषाय मामहे शतं निष्कान्.....(अथर्ववेद, 20:127:3)

नराशंस को सौ निष्क प्रदान किए जाएंगे।

8. .....<u>दश स्रजः</u> (अथर्ववेद, 20:127:3)

नराशंस दस मालाओं वाला होगा।

9. ..... <u>दश गोंनाम्</u> (अथर्ववेद 20:127:3)

नराशंस दस हज़ार गौओं से युक्त होगा।

10. नराशंस मिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप हवेय। मधुजिहवं हविष्कृतम्।।

(ऋग्वेद 113:3)

मनुष्यों द्वारा प्रशांसित प्रिय अग्नि को इस यज्ञ स्थान में बुलाता हूं। वह मधुजिहवा और हवि के सम्पादक है। (अनुवाद पं० श्रीराम शर्मा)

11. नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति महनास्वर्चिः घृत पुषा मनसा हत्यमुन्दन मुर्घन् यज्ञस्य समनवुत देवान्। (ऋग्वेद,2:3:2)

नराशंस नाम वाले अग्नि देव अपनी महत्ता से प्रदीप्त हुए तीनों लोकों को व्याप्त करते हैं।

12. नराशंस सुधृष्टम मपश्यं सप्रघस्तमम्। दिवोन सघम स्वसम्।।

(ऋग्वेद,1:18:9)

प्रतापी विख्यात तथा यशस्वी मनुष्यों द्वारा स्तुति किये गये अग्नि को मैने देखा है।

13. **नराशंस सुषूदतीमं यज्ञमदाम्यः कविर्हिमधुहस्त्यः।** (ऋग्वेद 5:5:2)

सब मनुष्यों से प्रशंसा के योग्य अग्नि हमारे इस यज्ञ को प्रज्वलित करे वे अग्नि कर्म, कुशल, विद्वान है।

ऊपर के श्लोकों से नराशंस की महत्ता स्पष्ट हो जाती है कि उसकी प्रशंसा की जाएगी। इतना ही नहीं कि बाद में की जाएगी, बल्कि ऋग्वेद काल में भी यज्ञों को करते समय नराशंस का आह्वान किया जाता था। आह्वान किए जाते समय उसे 'प्रिय' (Beloved) शब्द से युक्त किया गया है। और नराशंस की वाणी की मधुरता को लक्षित करके उसे ऋग्वेद में साक्षात् 'मधुजिहंवं' अर्थात मधुर भाषित, बुद्धिमान, या प्रशंसनीय और सन्त कहा गया है।

नराशंस और मुह़म्मद (सल्ल०) की विशेषताएँ तुलनात्मक दृष्टि से

नराशंस के गुणों में सबसे पहला महत्वपूर्ण गुण यह है कि उसकी प्रशंसा

की जाएगी। जैसे-

नराशंस मिहाप्रिय मस्यियज्ञे.....(ऋग्वेद संहिता-मण्डलम् 1 सूक्तम् 13, मन्त्रः 3)

"नराशंस की प्रशंसा की जाएगी तथा सबको प्रिय होगा"।

मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा

इतिहास साक्षी है कि वैदिक काल से आज तक जितने भी महापुरुष या देवी देवता (अवतार अपने असली रूप में) हुए उनमें से कोई भी मुहम्मद (सल्ल०) के समान प्रशंसित न हुआ, न है और न होना सम्भव है। जिस की इतनी प्रशंसा हो। उदाहरणस्वरूप देखें:-

अज़ान में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा

जैसा कि मुसलमानों के यहाँ नित्य बिना नाग़ा दिन में पाँच बार अज़ान होती है और पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती है। जिसमें प्रत्येक समय अज़ान कहने वाला कहता है "अश हदु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाहि" अर्थात हर समय की अज़ान में दिन में पाँच बार पूरी दुनिया की मस्जिदों से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा की जाती है।

पूरी दुनिया का सिस्टम (ऐसा) है कि कहीं रात, कहीं दिन, कहीं सुबह कहीं शाम, कहीं 10 बजा है कहीं 12 तो कहीं 3 आदि। इसी प्रकार पाँचों अज़ानों का सिस्टम (System) है कि हर समय अज़ान होती रहती है एक जगह टाइम ख़त्म हुआ तो दूसरी जगह शुरु हो गया। कहीं ज़ुह्र का समय होता है तो कहीं अस्र का, तो कहीं मग़रिब का। इस प्रकार प्रत्येक सेकेण्ड हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की करोड़ों बार अज़ान में प्रशंसा की जाती है अर्थात नाम लिया जाता है।

नमाज़ में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रशंसा

जिस प्रकार अज़ान में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का नाम लिया जाता है उसी प्रकार हर नमाज़ में कम से कम एक या दो बार अत्तहीय्यातु के बाद दुरूद शरीफ़ में नाम ज़रूर लिया जाता है। अज़ान ही की तरह नमाज़ भी हर सेकेण्ड होती है। इस प्रकार हर सेकेण्ड करोड़ो बार पूरी दुनिया में हज़रत मुहम्मद

(सल्ल०) की प्रशंसा हो रही है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो नराशंस के गुणों में सबसे पहले गुण व उसकी प्रशंसा पर पूर्ण रूप से सिद्ध होते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तो अन्य दूसरे धार्मिक गुरुओं ने भी प्रशंसा की है। जो इस प्रकार है:-

दूसरे धार्मिक गुरुओं द्वारा प्रशन्सित

मानव इतिहास में आज तक कोई ऐसा धार्मिक नायक पैदा नहीं हुआ जिसने अन्य दूसरे धर्मों के अनुयायियों से ऐसी प्रशंसा प्राप्त की हो, जैसी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने की।

यदि केवल उनके नाम लिखे जाएं तो उनके नामों की सूची के लिए एक अलग पुस्तक की अवश्यकता पड़ेगी जिन्होंने 'मुहम्मद' (सल्ल०) की प्रशंसा की है।

जिनमें से हम एक हिन्दू भाई, एक ईसाई, एक यहूदी और एक बौध धर्म के अनुयायी की ओर से प्रशंसा के शब्दों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

श्री प्रो० कृष्ण राव जी के अनुसार

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व की पूरी सच्चाई में उतर पाना सबसे कठिन बात है परन्तु मैं केवल उसकी एक झलक पेश करता हूँ-

बिजनेस मैन- मुहम्मद (सल्ल०) हैं। उपदेशक- मुहम्मद (सल्ल०) सुधारक-मुहम्मद (सल्ल०) अनाथों का सहारा-मुहम्मद (सल्ल०) गुलामों के संरक्षक- मुहम्मद (सल्ल०) स्त्रियों के उद्धार कर्ता मुहम्मद (सल्ल०) न्यायधीश- मुहम्मद (सल्ल०) संत और इन सभी प्रतापी मान मर्यादाओं में मानवता के सभी भागों में वह एक हीरो के समान हैं। **(Muhammad the Prophet of Islam)**

एक यहूदी मनोवैज्ञानिक की दृष्टि में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

15 जुलाई 1974 को साप्ताहिक अमरीकी पत्रिका 'टाइम्स' में "Who were History's Greater" इतिहास में महान नायक कौन-कौन थे? जिस विषय में विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों के विचार छापे थे। अमरीकी मनोवैज्ञानिक जूल्स माज़र

मैन (Jules Masserman) ने अपने मत के तीन आधार बताये हैं कि उसे-

1. जनता के लिए रहन-सहन का अच्छा प्रबन्ध करने वाला होना चाहिये।
2. एक ऐसी सामाजिक अर्थ व्यवस्था का स्थापक होना चाहिए जिसमें लोग अपने को सुरक्षित समझें।
3. एक ही मान्यता के आधार मत पर लोगों को चला सकने वाला होना चाहिये।

उपर्युक्त सभी गुण ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) में थे जिसे श्री माज़र मैंन ने इस प्रकार सिद्ध किया है-

'पास्चर' (Pasteur) और 'साक' जैसे लीडर केवल पहली शर्त पूरी करते हैं। 'गांधी' कन्फ्यूशस जैसे लोग एक ओर तथा 'सिकन्दर' कैसर' और 'हिटलर' जैसे लीडर दूसरी ओर हैं, जो दूसरी या तीसरी शर्त पूरी करते हैं। ईसाई तथा बुद्ध केवल तीसरी श्रेणी में हैं। अतः सभी युगों के महानतम नायक मुह़म्मद (सल्ल०) थे जिनमें तीनों श्रेणियों की सभी विशेषताएँ थीं।

(Time. July 15, 1974)

एक ईसाई भाई के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

"श्री माइकिल हार्ट (Michael Hart) ने जो एक अमरीकी ज्योतिष गणितज्ञ तथा इतिहासकार है, 572 पृष्ठ की पुस्तक " The Hundred (100) में उन 100 व्यक्तियों का क्रमानुसार उल्लेख किया है जो उनके विचार में इतिहास के सबसे महान थे अपनी सूची में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को इस विशेषज्ञ ने प्रथम स्थान दिया है। जबकि ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को उसने तीसरे स्थान पर रखा है"।

बौद्ध धर्म के आचार्य श्री माग तोग जी के अनुसार

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) परमेश्वर की ओर से एक रह़मत थे तथा हम बुद्ध लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से प्रेम करते हैं और उनका सम्मान करते हैं"[1]।

1- नई दुनिया-शहन्शाह कौनैन नं० सितम्बर 1993

डा० डी० रायट जी के अनुसार

"मुह़म्मद साह़ब अपने स्वार्थ और क़ौम के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए रह़मत हैं"[1]।

ऊपर के तथ्यों से यह बात स्पष्ट हो गयी है कि केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अनुयाइयों ने ही प्रशंसा नहीं की बल्कि अनेक दूसरे धार्मिक गुरुओं ने भी प्रशंसा की तो ज़रूर प्रिय होगा तभी लोगों ने प्रशंसा की है, परन्तु उसके कुछ प्रमाण का भी हम उल्लेख करते हैं।

नराशंस सबको प्रिय होगा

'नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये।'

दूसरी विशेषता वेदों में बताई गई है कि वह सबको प्रिय होगा, जिस के कुछ प्रमाण का यहाँ हम उल्लेख करते हैं।

1- ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से उनके अनुयाइयों ने जैसे प्रेम किया वैसा प्रेम किसी धर्मगुरु के साथ उनके अनुयाइयों ने नहीं किया। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के प्रेम में उन्होंने धन को धन नहीं समझा, न सुख को सुख, न दुख को दुख, न सम्बन्धी को सम्बन्धी, न अपने प्राण को प्राण।

एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) कअ़बः में नमाज़ पढ़ रहे थे कि मक्का के विधर्मी सरदारों में से एक दुष्ट आपकी गर्दन में चादर डालकर ऐंठने लगा जिससे आपका गला घुटने लगा। इतने में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को ख़बर पहुंची तो दौड़े हुए आप (सल्ल०) को बचाने के लिए आये तो दुष्टों ने उनको इतना मारा कि वह बेहोश हो गये और उनके साथी उनको उठाकर घर ले गये वहां कुछ देर के बाद जब होश आया तो सबसे पहले कहा जब तक मैं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को देख न लूँ कुछ खा पी नहीं सकता। फिर उनकी माँ रात ही में उन्हें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास ले आयीं तब उनसे मिलने के बाद कुछ खाया पिया।

2- एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर युद्ध में तीरों की वर्षा होने लगी तो

1- नई दुनिया-शहन्शाह कौनैन नं० सितम्बर 1993

आप (सल्ल०) के एक प्रेमी अबू दुजाना (रज़ि०) ने आपकी रक्षा के लिए अपनी पीठ को ढाल बना लिया, और जो भी तीर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की ओर आता उसे वह अपनी पीठ से रोक लेते थे।

एक दुश्मन ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर तलवार का वार करना चाहा तो हज़रत तल्ह़ा ने उसे अपने हाथ पर रोक लिया जिससे उनका हाथ कट कर गिर गया।

3- एक बार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के उसैद नामक एक सहचर (सह़ाबी) हँसी-हँसी की बातें कर रहे थे कि अचानक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने हँसी-हँसी में उनके पेट में छड़ी कोंच दी, तो उन्होंने कहा हम आपसे बदला लेंगे। आप (सल्ल०) तैयार हो गये। इस पर उन्होंने कहा जिस समय आपने मेरे पेट में लकड़ी कोंची थी है उस समय मेरे शरीर पर कपड़ा नहीं था और इस समय आपके शरीर पर कपड़ा है। यह सुनते ही आप (सल्ल०) ने कुर्ता उलट दिया, उलटते ही तुरन्त वह आप से लिपट गये और उस स्थान को चूम लिया और कहा यही मेरी कामना थी।

उदाहरण के रूप में यह चन्द घटनाएँ बता दी गई हैं वरना यदि आपके पूरे जीवन काल की घटना का उल्लेख किया जाए तो लाखों पन्ने कम पड़ जाएँगे[1]।

केवल इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि तबसे आज तक का चाहे कितना बिगड़ा हुआ मुसलमान हो, सब कुछ सहन कर सकता है परन्तु आपका अपमान सहन नहीं कर सकता, तो उस समय के लोग कितना प्रेम करते रहे होंगे, इतना ही नहीं बल्कि प्रत्येक धर्म के मानने वाले भी आप (सल्ल०) से प्रेम करते हैं, जिससे इस आयत की पुष्टि होती है।

"वमा अरसलनाका इल्ला रह़मतल्लिल्आ़लमीन"

2- नराशंस सवारी के रूप में ऊँटों का प्रयोग करेगा

उष्ट्रा यस्य प्रवाहजो.....(अथर्ववेद 20:127:2)

नराशंस का होना उस समय बताया गया है जबकि ऊँटों का सवारी के रूप

1- और अधिक मालूमात के लिये तारीख़े इस्लाम का अध्ययन करें।

में प्रयोग हो। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी उस समय पैदा हुए थे जबकि ऊँटों का सवारी के रूप में प्रचुर मात्रा में प्रयोग हो रहा था। स्वयं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ऊँट की सवारी के अत्यधिक प्रेमी थे और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ऊँट पर चढ़ कर मदीना पहुँचे थे-[1]।

3- नराशंस को परोक्ष ज्ञान दिया जाएगा

..... मधुजिह्व हविष्कृतम्।। (ऋग्वेद)

नराशंस को परोक्ष-[2] ज्ञाता (ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वाला) बताया गया है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को भी परोक्ष ज्ञान दिया गया था जिसे कुर्आन स्वयं स्पष्ट करता है:-

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝١ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۝٣ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ
الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٤ بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٥ وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦

(सूरः रूम, आयत नं० 2-6 तक)

अनुवाद- "पराजित हो गये रूम वाले, पास वाले देश में और वे इस पराजय के पश्चात् निकट भविष्य मे विजयी होंगे कुछ सालों में....."

अर्थात नौ साल के अन्दर-अन्दर रूमियों का प्रभुत्व हो जाएगा क्योंकि बिज़अि में जिस शब्द का अनुवाद हमने 'कुछ साल' किया है वह तीन से नौ साल तक के लिए बोला जाता है। इन आयतों में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) द्वारा एक विचित्र भविष्यवाणी की गई है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ज्ञानी होने का एक प्रमाण है।

घटना इस प्रकार है कि उस समय की दो महान हुकूमतें, फ़ारस (ईरान) और 'रूम' 614 ई० के पश्चात, खुसरो परवेज़ के समय में फ़ारस ने रूम को एक कठोर और निर्णयात्मक हार दी। शाम, मिस्र और एशिया सब देश रूमियों के हाथ से निकल गये रूम के बादशाह को ईरानी लश्कर ने कुस्तुन्तुनिया में शरण लेने पर मजबूर कर दिया और रूमियों की राजधानी भी

1- (An Encyclopedia of World History, by W.L. Langer)

2- परोक्ष ज्ञान अर्थात जितना अल्लाह आप को ज्ञान करवा देता था उतना हो जाता था।

ख़तरे में पड़ गयी। जाहिर में रूम के उभरने और ईरान के अधिकार से निकलने की कोई आशा बाक़ी न रही। यह ह़ालत देखकर मक्का के मुशरिकों ने खूब आनन्द लिया, और मुसलमानों को दुख इस वजह से हुआ कि मुसलमान भी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) को मानते थे और वह लोग भी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के मानने वाले थे।

इस पर मुश्रिकों ने ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से कहा कि आज हमारे भाई ईरानियों ने तुम्हारे भाई रूमियों को मिटा दिया कल हम भी तुम्हें इसी प्रकार मिटा देंगे। इस बात को सुनकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने घोषणा की कि वास्तव में रूमी ईरानियों से हार गये हैं, परन्तु नौ साल के अन्दर-अन्दर वे (रूमी) फिर विजयी होंगे।

ठीक उसी प्रकार नौ साल के बाद अर्थात हिजरत के एक साल बीतने के बाद बद्र की विजय के दिन जब मुसलमान खुशियाँ मना रहे थे, उस समय वह इस बात से और भी अधिक प्रसन्न थे कि रूमियों को अल्लाह ने ईरान के मजूसियों पर विजय दी जिससे मक्का वाले अपमानित हुये।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ईश्वर प्रदत्त ज्ञान के प्रमाण बहुत से हैं जिसे अवशकता हो वह ह़ज़रत मौलाना अ़ली मियाँ की लिखी हुई पुस्तक 'नबी-ए-रह़मत' का अध्ययन कर सकता है। यहाँ केवल प्रमाण हेतु सिद्ध कर दिया गया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को भी परोक्ष का ज्ञान (अर्थात ईश्वर प्रदत्त ज्ञान) दिया गया था इसलिए कि आप (सल्ल०) ने कभी किसी पाठशाला द्वारा ज्ञान ह़ासिल नही किया था।

4- नराशंस अत्यधिक सुन्दर एवं ज्ञान के प्रसारक होंगे

'नराशंस प्रति धामान्यजन तिस्रो दिवः प्रतिमह्न स्वर्चिः' (ऋग्वेद-2/3/2)

नराशंस के विषय में 'स्वर्चि' शब्द ऋग्वेद में प्रयुक्त हुआ है। स्वर्चि शब्द का विच्छेद है *'शोभ्ना अर्चिर्यस्य सः'* अर्थात सुन्दर दीप्ति या कान्ति से युक्त, 'अर्चि' शब्द का अर्थ होता है दीप्ति और दीप्ति का अर्थ अमर कोश 3:239 में दिया गया है *(ज्वाला भासोर्न पुंस्य) चि ज्यों ति (भर्योत छष्टिषु)।* इसी प्रकार सु का अर्थ होता

है सुन्दर। 'स्वर्चि' शब्द का अभिप्राय यह है, कि इतने सुन्दर स्वरूप का व्यक्ति, जिसके आनन्द से रश्मि-रश्मि सी भासित हो रही हो।

ऋग्वेद के जिस मन्त्र में नराशंस को स्वर्चि कहा गया है वहीं यह भी कहा गया है कि वही अपने महत्व से घर-घर को प्रकाशित करेगा।

यहाँ पर नराशंस के विषय में जो 'प्रतिधामान्यजन् आया है उसमें अजन शब्द प्रकाशन अर्थ वाली अजु धातु में 'शतृ' प्रत्यय के संयोग से बना है। प्रतिधामानि का अर्थ स्पष्ट ही है 'प्रत्येक घर के'। यदि कोई यह शंका करे कि 'अग्नि' शब्द भी तो अजु धातु से बना है जो प्रकाशक होने के साथ ही जला देने वाला भी है तो'नराशंस' के विषय में 'अजु' धातु से निष्पन्न 'अजु' शब्द का प्रयोग करना यह स्पष्ट करता है कि नराशंस प्रत्येक घरों को जला कर भस्म कर देगा तो यह शंका अनुपयुक्त है, क्योंकि जो शब्द जिस स्थान पर प्रयोग होता है उस स्थान के अनुरूप ही अपने अर्थ को भी अभिव्यक्त करता है। यदि शब्दों के प्रयोग के विषय में स्थल का औचित्य न देखा जाये तो महान् अनर्थ की प्राप्ति होगी। जैसे- भोजन करते समय कोई कहे सैन्धव लाओं तो स्थल के अनुरूप, 'सैन्धव' के नमक अर्थ को ही ग्रहण करना चाहिए न कि 'घोड़े' अर्थ को और यात्रा करते समय 'सैन्धव' शब्द से 'घोड़े' अर्थ को समझना चाहिए न कि 'नमक' अर्थ को।

इस प्रकार प्रकाश का तात्पर्य नराशंस के विषय में ज्ञान से है। घर घर को प्रकाशित करने' का तात्पर्य घर-घर में ज्ञान को प्रसारित करने से है। अतः नराशंस को ऋग्वेद में 'ज्ञान का प्रसारक' कहा गया है, जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का मुख्य गुण था।

अतः ऊपर दी गयी भविष्यवाणियाँ पूर्ण रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर घटित होती हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सुन्दरता

"ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) कहते हैं कि आप (सल्ल०) का मुख मण्डल चन्द्रमा के समान था"। इसी बात को उन्होंने अपनी कविता में इस प्रकार कहा है। "ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अन्धकार को दूर करने वाले पूर्ण चन्द्रमा के समान थे"।

इसी प्रकार ह़ज़रत उमर (रज़ि०) आप (सल्ल०) को देखते तो कहते "यदि

आप मुनष्य के अतिरिक्त कुछ और होते तो चौदहवीं के चाँद होते" मानो आप (सल्ल०) के मुख मण्डल में सूर्य जल रहा है।

दूसरी बात ज्ञान की है ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ऐसे अन्धकार में विद्या और ज्ञान की ऐसी ज्योति जलाई जिससे पूरा विश्व प्रकाशमान हो गया, जिसके प्रमाण के लिए पवित्र क़ुर्आन काफ़ी है।

5- नराशंस लोगों को पापों से निकालेगा

'नराशंस वाजिनं वाजयत्रिह क्षयद्वीरं पूषणंसुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मात्रो अंहसोनिष्पिपर्तन।।

(ऋग्वेद-1/106/4)

नराशंस को इस में पापो का खत्म कराने वाला बताया गया है जो पूर्ण रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर सिद्व होती है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अरब में पैदा हुए और अ़रब निवासियों के आचरण का सुधार किया जो संक्षिप्त में इस प्रकार किया है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व की दशा

आप (सल्ल०) के आने से पूर्व लोग मानवता से दूर हो चुके थे शिष्टता और नैतिकता का दिवाला निकल चुका था। अज्ञानता और बर्बरता कूट-कूट कर भर गयी थी, और ह्रदय द्वेष शत्रुता, दुष्टता और पाप से भर चुके थे, दूसरे को हानि पहुँचाते हुए न उनको परमेश्वर का भय था और न मानवता के कर्तव्य का। वह कहने को मनुष्य थे परन्तु उनका स्वभाव पशुओं का सा था, अति तुच्छ बातों पर दूसरों का प्राण ले लेना खेल समझते थे। और भली स्त्रियों को विधवा बना देना उन की नीति थी ऐसी स्थिति में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का अम्युदय हुआ, जिसमें आपने लोगों को आदेश दिया कि "तुम में से जो कोई किसी में बुराई को देखे उसे चाहिए कि उस बुराई को हाथ की शक्ति से रोक दे। यदि वह ऐसा न कर सके तो ज़बान से मना करे और यदि यह भी न कर सके तो दिल से उसे बुरा समझे, और यह सबसे कम दर्जे का ईमान है"।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने पाप के हर कारण, हर साधन और हर मार्ग का विरोध किया, मदिरा पान, जुआ, सूद, डाका को ख़त्म करवाया और स्त्रियों की मर्यादा को क़ायम किया, रक्त पात बन्द हो गया, दुराचारी और कुकर्मी न केवल सदाचारी और सुकर्मी बन गए बल्कि उन्होंने सुकर्म को फैलाना और कुकर्म को मिटाना जीवन का उद्देश्य बना लिया, जिसका इतिहास साक्षी है। इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही सिद्ध होते हैं कि जिन्होंने पूर्ण रूप से पाप का निवारण किया।

6- नराशंस का एक सांसारिक नाम मामह होगा

'एष इषाय मामहे..... (अथर्ववेद 2:127:3)

मामह- इस शब्द का मूल "मह" है। जिसका अर्थ है, महान्। इतिहास में हमें कोई अन्य ऋषि 'मामह' के नाम का नहीं मिलता जिसकी वेदों की भविष्यवाणी के अनुसार संसार भर में प्रशंसा की गई हो।

7- नराशंस को सौ निष्क प्रदान किए जाएँगे

एषा इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोंनाम्।। (अथर्ववेद 20/127/3)

अनुवाद- निष्क का अर्थ होता है स्वर्ण मुद्रा। स्वर्ण मुद्राएँ आपत्तिकाल में मनुष्य की बहुत मदद करती हैं। यहाँ पर स्वर्ण मुद्राएँ या निष्क शब्द उन श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो रत्नवन महत्वशाली हों, ईश्वरीय धर्म के प्रचारकों एवं मूल धर्म के संरक्षकों के लिए भी निष्क शब्द का प्रयोग होता है। कारण यह है कि निष्क अत्यधिक मूल्यवान होता है और मूल धर्म के संरक्षक या गुरु द्वारा उपदेशित शिक्षाओं के संरक्षक का भी अत्यधिक महत्व होता है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के घर के बाहर एक चबूतरा था जिसका नाम 'सुफ़्फ़ा' था, इस पर रहने वालों को 'अस्ह़ाबे सुफ़्फा' कहते हैं, जिसका वास्तविक अर्थ होता है छप्पर वाले, उन की संख्या भी 100 थी[1]।

1- ह़ाफ़िज़ सुयूती ने दो पेज का अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के नाम से एक रिसाला लिखा है जिसमें सौ (100) अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा के नाम विस्तारपूर्वक दिये गये हैं। (अल्लामा शिबली नोमानी)

ये लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को लोगों तक पहुँचाते थे, अर्थात आप (सल्ल०) की शिक्षाओं के संरक्षक थे।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि वेद में जिस नराशंस को सौ निष्कों से युक्त होने की भविष्यवाणी की गयी है वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही हैं।

8- नराशंस दस मालाओं वाला होगा

'एष इषाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः'। (अथर्ववेद 20:127:3)

अनुवाद- अथर्ववेद में नराशंस के लिए दस 'स्रज' प्रदान किये जाने का उल्लेख है दस मालाएँ भी अन्योक्ति के माध्यम से, दस ऐसे प्रेमी व्यक्तियों की ओर संकेत है जो नराशंस के 'गले का हार' के समान हों और नराशंस उन्हें बहुत चाहते भी हों।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथ भी दस ऐसे व्यक्ति थे जो उन पर अपने प्राणों को समर्पित करने को तुले रहते थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के चारों ओर यह दस व्यक्ति सदैव रहते थे, इस लिए वह गले के हार के समान थे, ***जिन्हें 'अशर-ए-मुबश्शिरा' कहा जाता है। अशराह का अर्थ दस होता है, तथा मुबश्शिरा का अर्थ, शुभ संवाद सूचित,*** ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने एक बार इन दसों के प्रति यह शुभ सूचना दी थी कि यह जन्नती हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं- (1) अबू बक्र बिन अबू कुहाफ़ा (2) उमर बिन ख़त्ताब (3) उस्मान बिन अफ़्फ़ान (4) अ़ली बिन अबू त़ालिब (5) त़ल्ह़ा (6) जुबैर बिन अ़व्वाम (7) सअ़द बिन अबू वक़्क़ास (8) सई़द बिन ज़ैद (9) अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ अ़बू उ़बैदा बिन जर्राह़ (यह दादा के सम्बन्ध से पुकारे जाते थे)[1]

इस प्रकार दस मालाओं का होना भी पूर्ण रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही सिद्ध होता है।

9- नराशंस दस हज़ार गौओं से युक्त होगा

वीणि शतान्यर्वता सहस्रा दश गोनामम।। (अथर्ववेद 20:127:3)

नराशंस के लिए दस ह़ज़ार 'गौ' परमेश्वर द्वारा प्रदान किये जाने की

भविष्यवाणी की गयी है। 'गौ' शब्द जिन अर्थो के लिए अलंकार स्वरूप प्रयोग किया जाता है, वह निम्न हैं:

1. गौ का मूल 'गम' है जिसका अर्थ जंग के लिए जाना जाता है चूंकि युद्ध में गौओं को जीत कर लाने का बहुत महत्व था, इसलिए गायों को 'गौ' कहते थे।
2. प्रशंसनीय, शुभ, शत्रुओं को उखाड़ फेंकने वाला, बैल के समान शक्तिमान।
3. मानव के लिए भी गाय की उपमा दी जाती है। जैसे- **शतपथ ब्रहमण 12-9-1-7** में दी गयी है।
4. गौ शब्द श्रेष्ठ के लिए भी प्रयोग होता है

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सहयोगियों में ऊपर बयान किये गये सभी गुण थे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी मातृ भूमि मक्का से निकाले जाने के आठ साल बाद दस हज़ार सहयोगियों के साथ 'मक्का' की विजय के लिए निकले। जिसमें बिना किसी खून ख़राबे के, परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को भयभीत करके उनके सामने झुका दिया। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) व उनके 10,000 सहयोगियों ने मानवता का एक मात्र ऐतिहासिक उदाहरण स्थापित करते हुए एक भी शत्रु से बदला न लिया। इन 10,000 सहयोगियों की विशेषताओं के कारण इनको गौ कहा गया है।

इस प्रकार 10,000 गौ की उपमा भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही सिद्ध होती है।

भाग-2

पुराणों की भविष्यवाणियाँ

कल्कि अवतार और ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

अवतार का अर्थ

अवतार शब्द 'अव' उपसर्ग पूर्वक 'तृ' धातु में 'धञ्' प्रत्यय लगा कर बना है। अवतार शब्द का अर्थ होता है पृथ्वी पर आना, अवतरित होना। ईश्वरीय अवतार का अर्थ होता है, परमेश्वर की ओर से सन्देश लाने वाला सन्देष्टा।

परमेश्वर (अल्लाह) चूंकि सर्वव्यापी और असीमित है इसलिए किसी निश्चित स्थान में उसका रूप धारण करना, कहीं आना जाना, यह कथन उस के असीमित को सीमित बना देता है। परमेश्वर देश काल से परे है, इसलिए वह मनुष्यों ही में से किसी व्यक्ति को चुनता है और उसे परोक्ष ज्ञान प्रदान करता है, जिससे वह सम्पूर्ण मनुष्यों को परमेश्वर, का भक्त बनाता है और कहता है कि मैं परमेश्वर का सन्देष्टा हूँ।

परमेश्वर की ओर से ईश ज्ञान लाने वाले को अवतार कहते हैं संस्कृत भाषा में, 'प्रोफ़ेट' (Prophet) अंग्रेज़ी भाषा में और 'रसूल' अरबी भाषा में, परन्तु सम्बोध एक ही ईश्वरीय सन्देष्टा की ओर होता है। इस समय अवतार का जो अर्थ प्रचलित है कि परमेश्वर या भगवान किसी के रूप में आ जाता है यह धारणा बिल्कुल ग़लत है, बल्कि अवतार के माने अवतरित होने के हैं अर्थात नाज़िल होना (भेजा जाना)।

पं० श्री राम शर्मा जी के अनुसार अवतार का अर्थ

अवतार की परिभाषा करते हुए पं० श्री राम शर्मा जी कल्किपुराण के 278 पृष्ठ पर लिखते हैं जिसका सारांश इस प्रकार है:-

"अवतार शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जाये तो अनुचित न होगा कि 'समाज' की गिरी हुई दशा में उन्नति की ओर ले जाने वाला, "महा मानव नेता"। यह तो प्रत्यक्ष ही है कि ऐसा असाधारण कार्य कर सकने वाला, ईश्वरीय शक्ति से समन्वित होता है। उच्च जगत आत्माएँ ईश्वरीय आदेश को शिरोधार्य करके, परम पिता की इच्छा पूरी करने के लिए अविलम्ब तैयार हो जाती हैं और

लीलापति का साधन बनकर परम सौभाग्य का अनुभव करती हैं, वे अपने पीछे अनन्त यश और अखण्ड श्रद्धा छोड़ जाते हैं। जन समुदाय उनको ईश्वर का दूत, ईशपुत्र या साक्षात् भगवान ही मानने लगते हैं- वे ही अवतार कहे जाते हैं"।

'अवतार' की इस परिभाषा में कोई ऐसी बात नहीं जिससे उसकी कोई त्रुटि या हीनता प्रकट होती हो।

"हमारी सम्मति में अवतार के विषय में यह विवाद उठाना कि वह वास्तव में 'भगवान' ही होते हैं अथवा किसी व्यक्ति में भगवद् शक्ति प्रविष्ट हो जाती है, कुछ भी महत्व नहीं रखता। ऐसी बातों में सर खपाने वाले वे ही व्यक्ति होते हैं, जिनको कुछ करने धरने के बजाय बहस-मुबाहिसे और खण्डन-मण्डन में ही मज़ा आता है। यह तो कोई कह नहीं सकता कि जिस समय पृथ्वी पर अवतार हुए थे उस समय वैकुण्ठधाम भगवान से खाली हो गया था। फिर सर्वव्याप्त ईश्वर के लिए यह विवाद उठाना कि वह कब कहां रहते हैं अपनी अज्ञानता का परिचायक है"।

इस प्रकार अवतार के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत मतभेद तो प्राचीन काल से ही चला आया है। इस सम्बन्ध में मुख्य विचारणीय विषय यह नहीं है कि स्वयं भगवान अवतार लेने के लिए आते हैं अथवा किसी उपयुक्त जीवात्मा में अपनी विशेष शक्ति प्रविष्ट करके उसे भूतल का भार हल्का करने का उद्देश्य पूरा करते हैं? वरन् मुख्य बात यह है कि 'अवतार का जो स्वरूप पुराने रुढ़िवादी (Conservative) मानते हैं वह ठीक है अथवा उसका तर्क और बुद्धि संगत रूप, जो महान उद्देश्य के अनुकूल जान पड़े उसे स्वीकार किया जाये। इसी प्रकार अवतार के उद्देश्यों के सम्बन्ध में भी पं० श्री राम शर्मा जी ने कल्कि पुराण के पृष्ठ नं० 280 पर इस प्रकार लिखा है।

1- ईश्वर एक व्यक्ति को अवतार बनाकर भेज देता है। उसमें ऐसी योग्यता और शक्ति होती है कि वह अनायास अपने अनुयायी उत्पन्न कर लेता है।
2- अवतारी के काम अत्यन्त विचित्र और चमत्कार जादू की तरह होते हैं।
3- अवतार बुरे व्यक्तियों का वध करने आता हैं। दुष्टों का संहार ही उसका उद्देश्य होता है।

4- अवतार की शरण में जाने से पाप छूट जाते हैं और अनायास स्वर्ग मिल जाता है।
5- अवतार सर्वथा स्वतन्त्र होते हैं, वे हर प्रकार के सभी काम कर सकते हैं।
6- असाधारण शीघ्रता पूर्वक जो परिवर्तन होते हैं, वे लोगों को जादू की तरह प्रतीत होते हैं पर 'अवतार' नवीन व्यवस्था बनाने आते हैं, बाज़ीगर का खेल करने नहीं आते।
7- 'अवतार' बुराइयों को हटाने आता है, वह पापों को पूर्ण विचारों से नष्ट कर देता है।
8- अवतार के उदार और आदर्श विचारों का अनुसरण करने से तत्काल संसार की बड़ी सेवा होती है।
9- 'अवतार' वर्तमान समय में प्रचलित कुप्रथाओं को तोड़ने के लिए कोई असाधारण काम कर सकते हैं, पर वह मनुष्यता की मर्यादा को तोड़ने वाला कोई कार्य जिसे उद्दण्डता कहा जा सके कभी नहीं करते।
10- 'अवतार' के आदर्श और उपदेशों के अनुसार आचरण किये बिना केवल "श्रद्धा भक्ति" से किसी का कुछ लाभ नहीं हो सकता।

अवतार या सन्देष्टा की आवश्यकता और हमारी आशा

ऊपर जो हमने लिखा है यदि उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो उस सबका यही निष्कर्ष निकलेगा कि यदि संसार में किसी को अवतार कहा जाये तो उसका मुख्य उद्देश्य मानव जाति का मार्ग-दर्शन करना ही हो सकता है। प्राणियों की जाँच करने पर विद्वान लोग इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि प्रत्येक भूगर्भीय काल में ऐसे जीव उत्पन्न हुए जो अपने समय में सृष्टि के सर्वोत्तम प्राणी समझे जाते थे।

इसी प्रकार तमाम सन्देशवाहकों ने जिस कल्कि के आने की आशा जताई है, उन तमाम सन्देशवाहकों में सब से उत्तम गुण कल्कि में होना बताए हैं, परन्तु उस के आने से पूर्व विश्व की दशा अत्यन्त ख़राब हो चुकी होगी जैसा कि अनेक ग्रन्थों में उसके आने से पूर्व की दशा का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

अन्तिम सन्देष्टा (या अवतार) के आने से पूर्व संसार की दशा

महाभारत (वन पर्व अ० 190 में दिये गये कलियुग वर्णन जिसे अनुवाद किया है पं० श्री राम शर्मा जी ने) उसका कुछ अंश प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठकों को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व की दशा को तुलना करने में सहायता मिलेगी-

भर्यामित्राश्च पुरूष भविष्यन्ति युगक्षये।
मत्श्याभिषेण जीवेन्तो दहनतश्चाप्यजैपकम्।।
गोषु नष्टासु पुरुष येऽपि नित्यं घृतव्रत।
तेऽपि लोभसमायुक्ता भविष्यन्ति युगक्षये।।
अन्यान्यं परिमृष्णान्तो हिसयन्तशच मानवाः।
अजपा नास्तिकाः स्तेना भविष्यन्ति युगक्षये।।
श्राद्धे दैवे च पुरूषा येऽपि नित्यं घृतव्रताः।
तेऽपि लोभसमायुक्ता भीक्ष्यन्तीह परस्परम्।।
न व्रतानि चरिष्यन्ति ब्राह्मणा वेदनिन्दकाः।
न यक्ष्यन्ति न होष्यन्ति हेतुवाद विमोहितः।
निस्नेष्वीहां करिष्यन्ति हेतुवादविमोहिताः।।

(कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 134)

"उस समय लोग स्त्रियों से ही मित्रता करने वाले होंगे। अनेक लोग मछली माँस से जीविका चलाने वाले होंगे, गायों के नष्ट हो जाने से भेड़, बकरी का दूध व्यवहार में लाने लगेंगे, जो व्यक्ति व्रतों का पालन करने वाले हैं वे भी युग-प्रभाव से लोभी बन जाएगे, लोग-एक दूसरे को लूटने-मारने लगेंगे और उनमें से अधिकांश भजन-साधन से रहित नास्तिक, अपहरणकर्ता बन जाएँगे। जो लोग सदैव परान्न का त्याग करके व्रतशील रहते है वे लोभवश यव-यज्ञ और मृतक श्राद्धों में खाने लग जाएँगे। ब्राह्मण लोग व्रतों का पालन त्याग कर उल्टे वेद-निन्दक बन जाएँगे वे यज्ञ और होम को छोड़ बैठेंगे और झूठे तर्कवाद में फंसकर नीच कर्म करने को उद्यत हो जाएँगे"।

प्रायशः कृपणानां हि तथा बनधुमतामपि।
विधावानां च वित्तानि हरिष्यन्तीह मानवाः।।
स्वल्प वीर्यवलाः स्तब्धा लोभमोहपरायणाः।
तत्कथादान सन्तुष्ट दुष्टानामपि मानवाः।।
परिग्रहे करिष्यन्ति मायाचार परिगहाः।
समाह्वयन्तं कौन्तेयः राजानः पाप बुद्धयः।।
परस्परवधोद्युक्ता मूर्खः पण्डित मानिनः।
भविष्यन्ति युगस्यान्ते क्षत्रिया लोककण्टकाः।।
अरतिक्षरो लुब्धाश्य मानाहंकार दर्पिताः।
केवलं दण्डरूचयो भदिष्यन्ति युगक्षये।।

(महाभारत-वन पर्व अ० 11 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 135)

"अर्थपिशाच मनोवृत्ति के मनुष्य दोनों असहायों और विधवाओं का भी धन हड़प लेंगे। उनके शारीरिक बल और पराक्रम क्षीण हो जाएँगे, वे उद्दण्ड होकर लोभ और मोह में ग्रस्त रहेंगे, वैसी ही चर्चा प्रशंसा करने और उनसे दान लेने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे, कपटपूर्ण आचरण करते हुए वे बुरे लोगों के दान को भी ग्रहण कर लेंगे। राजा लोग पाप-परायण होकर एक-दूसरे के प्राण लेने को उद्यत होंगे और ब्राहण मूर्ख और नीच होते हुए भी पण्डिताई का दावा करेंगे। क्षत्रिय लोग (शासक-वर्ग) जगत के लिए कंटक स्वरूप बन जायेंगे। उस समय उनको प्रजा की रक्षा की ज़रा भी चिन्ता न होगी केवल उनसे रुपये ऐंठकर अपना घर भरने का ध्यान रखेंगे। सदा मान और अहंकार से चूर रहेंगे और प्रजा को अनावश्यक रूप से दण्डित करते रहेंगे।

आक्रम्याक्रम्य साधूनां दारांश्चापि धनानि च।
भोक्ष्यन्ते निरनुक्रोशा रुदतामपि भारत।।
न कन्यां याचते कश्चिन्नापि कन्या प्रदीयते।
स्वयंग्राहा भविष्यन्ति युगान्ते समुपस्थिते।।
म्लेच्छीभूतं जगत् सर्व भविष्यति न संशयः।
हस्तो हस्तं परिमुषेद् युगान्ते समुपस्थिते।।

सत्यं संक्षिप्यते लोके नरैः पण्डितमानिभिः।
स्थविरा बालमतयो बालः स्थाविरबुद्धयः।।
एकहार्ये युगं लोभ मोह व्यवस्थितम्।
अधर्मो वर्द्धते तत्र तु धर्मः प्रवर्तते।।

(महा भारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 136)

"लोग इतने दुष्ट हो जाएँगे कि सीधे-साधे भले मानसों पर अकारण आक्रमण करके उनके धर्म और स्त्री आदि का बल पूर्वक अपहरण करने लगेंगे और उनके रोने-पीटने पर भी कुछ ध्यान न देंगे। उस समय न तो कोई किसी से कन्या की याचना करेगा और न कन्यादान ही करेगा। वर-कन्या स्वयं ही एक दूसरे को पसन्द कर लेंगे तब सारा जगत म्लेच्छमय हो जाएगा और एक हाथ दूसरे हाथ को लूटेगा अर्थात सगा भाई ही भाई के धन को हड़प लेगा। अपने को पंडित मानने वाले मनुष्य संसार में से सत्य को मिटा देंगे। बूढ़ों की बुद्धि बालकों जैसी और बालकों की बूढ़ो के समान हो जाएगी। सब कोई लोभ और मोह में फंसकर भक्षामक्ष्य का विचार किये बिना सम्मिलित भोजन करने लगेंगे। अधर्म बढ़ेगा और धर्म विदा हो जाएगा।

न काश्चित् कस्याचिच्छोता न कास्याच्द्गुरुः।
तमोग्रस्तस्वदा लोको भविष्यति जनाधिप।।
अल्प द्रव्याअभावं च वृथालिंग प्रभविष्यति।
न कश्चित्कस्यचिद् दाता भविष्यति युगक्षये।
अट्टशूला जनपदाः शिवशूलाचतुष्पथाः।
केशशूला स्त्रियश्चापि भविष्यन्ति युगक्षये।
क्रयविक्रय काले च सर्वः सर्वस्व वच्चनम्।
युगान्ते भरतश्रेष्ठ वित्तयोभात् करिष्यन्यि।।
आरामांश्चैव वृक्षांश्च नाशयिष्यन्ति निर्व्यथाः।
भावना संशयो लोके जीवितस्य ही देहिनाम्।।

(महा भारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 137)

"उस समय कोई किसी का उपदेश नहीं सुनेगा और न कोई किसी को गुरु

मानेगा। समस्त जगत एक प्रकार के अन्धकार में ग्रस्त होगा। लोगों के पास सम्पत्ति का अभाव होगा, वे दिखाने के लिए साधु वेश धारण कर लेंगे, हिंसा की भावना बढ़ जाएगी और कोई किसी को कुछ देने वाला न होगा। उस समय सभी ग्राम नगर आदि अन्न बेचेंगे, ब्राह्मण वेद-धर्म के बेचने वाले होंगे स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति अपना लेंगी। ख़रीदने बेचने में सब एक दूसरे को धोखा देने लगेंगे और बागीचों के वृक्षों को भी काट डालेंगे और इससे उनको किसी प्रकार का खेद नहीं होगा। उस समय लोगों के जीवित रहने में भी शंका हो जाएगी"।

दस्यंभिः पीडिता राजन्काका इव द्विजोत्तमः।
कुराजविश्च सततं करभार प्रपीडिताः।।
धैर्य त्यक्त्वा महीपालः दारुणे युगसंक्षये।
विकर्माणि करिष्यन्ति शूद्राणां परिचारकाः।।
निर्विशेषा जनपदास्यथा विष्टिकरार्दिताः।
आश्रमानुपलयस्यन्ति फलमुलोपजीवियनः।।
भतृणां वचने चैव न स्थास्यन्ति तत स्त्रियः।
पुत्राश्य मातापितरौ हनिष्यन्ति युगक्षये।।
जन परिजनं चापि युगान्ते पर्युपस्थिते।
अथ देसोन् दिशश्चापि पत्ततानि पुराणि च।
क्रमशः संश्रयष्यन्तिं युगानते पर्युपस्थिते।।

(महा भारत वन पर्व 190 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय पेज नं० 138)

"श्रेष्ठ ब्राह्मण भी लुटेरों से पीड़ित होकर व्याकुल-भाव से चारों ओर फिरने लगेंगे। राजाओं (शासक-वर्ग) के कर भार से दुःखी और धैर्यहीन होकर वे शूद्रों की नौकरी करने लगेंगे, उस समय सभी भूभागों के निवासी एक-सी वेषभूषा बना लेंगे। लोग बेगार लेने वालों और कर वसूल करने वालों से पीड़ित होकर निर्जन स्थानों में चले जायेंगे और घास-पात खाकर गुज़र करने लगेंगे। स्त्रियाँ पति के वचनों पर कुछ भी ध्यान न देंगी और पुत्र माता-पिता को मारने में संकोच न करेंगे। उस समय लोग अपने परिवार वालों को भी त्याग देंगे। बहुसंख्यक लोग स्वदेश छोड़कर दूसरे देशों, दिशाओं नगरों, गावों का आश्रय लेंगे।

"श्री मद्भागवत" का कलियुग-वर्णन भी महत्वपूर्ण और मौलिकता से युक्त है। उसमें कलियुगी धर्म (स्कन्ध 12 अ० 2) का वर्णन करते हुए कहा गया है- जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पूर्व की दशा थीः-

ततश्चानुदिनं धर्मः सत्युं शौचं क्षमा दयाः।
कालेन बलिना राजन् नक्षयत्यायुर्दुर्बलं स्मृतिः।।
वित्तमेव ललौ नृणां जन्माचरगुणोदयः।
धर्मन्यायत्रयवस्थायां कारणं बलमेव ही।।
दाम्पत्येऽभिरूचिर्हेतुर्मायैव व्यावहारिके।
स्त्रीत्वे पुंस्त्वे च हि रतिर्विप्रत्वे सूत्रमेव हि।।
लिंगमेवाश्रमख्यातावन्यापत्तिणारणम्।
अवृत्या नयायदौर्बल्यं पाण्डित्ये चापल वचः।।
अनाढ्यतैवासधुत्वे साधुत्वे दम्भ एव तु।
स्वीकार एव चोद्वाहे स्नानमेव प्रसाधनम्।।

(श्री मद्भागवत महापुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 138)

"समय बड़ा बलवान है, जैसे-जैसे कलियुग बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे ही धर्म, सत्य, पवित्रता, क्षमा, दया, आयु, बल और स्मरण शक्ति का लोप होता जायेगा। कलियुग में जिसके पास धन होगा, उसी को लोग कुलीन, सदाचारी और सद्गुणी मानेंगे। जिसके हाथ में शक्ति होगी वही धर्म और न्याय की व्यवस्था अपने अनुकूल करा सकेगा। विवाह-सम्बन्ध के लिए कुल, शील योग्यता आदि की निरख-परख नहीं रहेगी, युवक-युवकी का मन मिल जाने से ही विवाह सम्पन्न हो जाएगा, जो जितना छल-कपट कर सकेगा वह उतना ही व्यवहार-कुशल माना जायेगा। स्त्री-परुष की श्रेष्ठता का आधार उनका शील संयम न होकर उनका रति-कौशल ही रहेगा। ब्राह्मण की पहचान उसके गुण-स्वभाव से नहीं यज्ञोपवीत से हुआ करेगी। वस्त्र-दण्ड-कमण्डल आदि से ही बह्म्चारी, संन्यासी आदि की पहचान होगी और एक दूसरे का चिन्ह स्वीकार कर लेना ही एक से दूसरे आश्रम में प्रवेश का स्वरूप होगा। जो घूस देने या ख़र्च करने से असमर्थ होगा उसे अदालत में ठीक न्याय न मिल सकेगा। बात-चीत में चालाक होने से ही पण्डित

माना जाएगा। ग़रीब होना ही असाधुता, दोषी होने का चिन्ह होगा और जो जितना अत्याचार कर सकेगा वह उतना ही साधु मान लिया जायेगा। विवाह परस्पर की स्वीकृति से हो जाएगा और श्रंगार कर लेने से ही स्नान करना मान लिया जायेगा।

दूरे वार्ययनं तीर्थ लावण्यं केशधारणम्।
उदरम्भरता स्वार्थः सतयत्वे धार्ष्ट्यमेव हि।।
दाक्ष्यं कुटुम्बभरणं यशोऽर्थ धर्मसेवनम्।
एवं प्रजाभिर्दुष्टाभिराकीर्णे क्षितिमण्डले।।
ब्रह्मविट्क्षत्रशूदाणां यो बली भविता नृपः।
प्रजा ही लुब्धै राजन्यैर्निर्घृर्णेर्दस्युधर्मभि।।
अनावृता विनंक्षयन्ति दुर्भिक्षकरपीड़ितः।
शीत वातातपप्रावृड्हिमैरन्योन्यतः प्रजाः।
क्षुतृड्भ्यां व्याधिभिश्चैव सन्तप्स्यन्ते च चिन्तया।
त्रिंशद्विंशतिवर्षाणि परमायुः कलौ नृणाम्।।

(श्रीमद भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय, पेज नं० 139)

"लोग दूर के तालाब को ही तीर्थ मान लेंगे, सिर पर बड़े-बड़े बाल रखना ही सुन्दरता का चिन्ह समझा जाएगा। अपना पेट भर लेना ही बड़ा पुरुषार्थ होगा जो जितनी ढिठाई से बात कर सकेगा वह उतना ही सच्चा मान लिया जाएगा। अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण कर लेना ही सबसे अधिक योग्यता मानी जाएगी, धर्म का सेवन यश के लिए किया जायेगा। इस प्रकार जब पृथ्वी में सर्वत्र दुष्टों की प्रधानता हो जाएगी तब राज्य व्यवस्था भी दूषित हो जायेगी। जो भी शक्तिशाली चलता पुर्ज़ा होगा वही शासक बन जायेगा। वे शासक अत्यंत लोभी, निर्दयी और लुटेरे होंगे। वे जनसाधारण के धन तथा स्त्रियों तक को लूटने में संकोच न करेंगे। इसके फलस्वरूप सर्वसाधारण सदैव भूख प्यास, चिन्ता, रोग आदि से दुःखी रहेंगे। उनकी आयु भी बहुत थोड़ी बीस-तीस वर्ष की ही रह जाएगी।

क्षीयमाणेषु देहेषु देहिनां कलि दोषकः।
बर्णाश्रमावतां धर्मे नष्टे वेदपथे नृणम्।
पाखण्डप्रचुचरे धर्मे राजसु।

चौर्यानृतवृथाहिंसाना वृत्तिषु वै नृषु।
शुदप्रायेषु वर्णेषुच्छागप्रयासु धेनुषु।
गृहायेष्वाश्रमेषु यौन प्रायेषु बन्धुषे।
इत्थं कलो गतप्राये जने तु खरधमिर्णि

(श्री मद्भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण-छठा अध्याय पेज नं० 140)

"कलियुग के दोषों से लोगों के शरीर भी क्षीण हो जाएँगे और वर्णाश्रम धर्म का प्रकाशक वेद-मार्ग नष्ट हो जाएगा। धर्म में पाखण्ड बहुत अधिक बढ़ जायेगा, शासक-वर्ग लुटेरों की तरह बन जाएगा और लोग जीवन-निर्वाह के लिए प्रायः चोरी, झूठ, हिंसा का व्यवहार करने लगेंगे। सब वर्णों के मनुष्यों का आचरण शूद्रों जैसा मर्यादा रहित हो जाएगा, गायें बकरियों की तरह दूध देने वाली हो जायेंगी। सन्यासियों के आश्रम गृहस्थियों के घरों की तरह बन जाएँगे और जिनसे विवाह सम्बन्ध होगा उन्हीं को अपना सम्बन्धी माना जायेगा। इस प्रकार का कलियुगी वातावरण छा जाने पर लोग गधों की तरह भार ढोने वोले और विषमयी हो जायेंगे।

विष्णु पुराण में महर्षि पराशर ने बतलाया है कि जिस समय कलियुग की प्रबलता होगी तो समस्त सामाजिक व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगाी और नर-नारियों में बहुत से दोष बढ़ जाएँगे। हर प्राचीन काल में जब उनको पाप की तरह माना जाता था, तो लोग यथासम्भव इन प्रवृत्तियों को दबाकर रखते थे पर कलियुग में छोटे-बड़े सभी लोगों में उनका प्रावल्य हो जाने से सामाजिक मर्यादा भंग हो जायेगी और लोग इन बातों में किसी प्रकार के पाप का अनुभव नहीं करेंगे। इस प्रकार सभी पुराणों में 'कलियुगीन समाज' की भ्रष्टता के प्रति घृणा और निन्दा का भाव किया गया है।

श्री मद्भागवत महापुराण में कल्कि अवतार का महत्व

श्री मद भगवत पुराण के बारहवें स्कन्ध के दूसरे अध्याय में कल्कि अवतार के प्रकट होने के महत्व को बड़े श्रद्धा पूर्वक बतलाया है।

सम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भवष्यति।।
अश्व मा शुगभारुद्वा देव दत्तं जगत्पत्तिः।
असिनासासा द्यदमनमष्टैश्वर्य गुणान्वितः।।
विचरन्ना शुना क्षोण्यां हयेना प्रतिमद्यतिः
नृपलिंगच्छदो दस्यून् कोटिशो निहनिष्यतिः।।
अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विंशदानि वै।
वासुदेवांगरागतिपुणय गन्धातिलस्पृशाम्।
पोरजानपदानां वै हतेष्वखिलदस्युष।।
तेषें प्रजाविसर्गश्य स्थविष्ठः सम्भाष्यिति।
वासुदेवे भगवति सत्वमूर्तो हदि स्थिते।।
यदावतीर्णो भगवान् कलिकर्धर्मपतिर्हरिः।
कृतं भविष्यति तदा प्रजासूतिशच सात्विकी।।

(श्रीमद् भागवत महा पुराण स्कन्ध 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण अध्याय पाँच पेज नं० 119)

अनुवाद- "जब अवतार के प्रकट होने का अवसर आएगा उस समय सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। उनका हृदय बड़ा उदार एवं भक्तियुक्त होगा। उन्हीं के घर में कल्कि अवतार ग्रहण करेंगे। श्री कल्कि ही अष्ट सिद्धियों तथा समस्त सद्गुणों के एक मात्र आश्रय है। समस्त जगत के वे ही रक्षक हैं। वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी अश्व पर आरुढ़ होकर दुष्टों को अपनी जगत प्रसिद्ध 'तलवार' के घाट उतारेंगे। उनके रोम-रोम से तेज छिटकता होगा। अपने शीघ्रगामी वाहन से पृथ्वी पर पूर्ण विचार करके राजाओं (शासकों) के वेष में प्रच्छन्न करोड़ों लुटेरों का संहार करेंगे। जब उनके अंगरोग से सुगन्धित वायु लोगों को स्पर्श करेगी तो उनका हृदय पवित्र हो जायेगा और पाप कर्मो का अन्त हो जाएगा। इससे सब के हृदय में भगवद् भक्ति का संचार होगा और वे सुखी तथा पूर्ण स्वस्थ होने लग जायेंगे। प्रजा के नयन-मनोहारी श्री हरि ही धर्म के रक्षक और सबके स्वामी ही होंगे तो 'कलियुग' (पाप युग) का अन्त होकर 'सत्युग' (श्रेष्ठ युग) प्रारम्भ हो जाएगा और सब मनुष्य तथा उनकी सन्तान स्वयमेव सत्यगुण युक्त बन जाएँगे"।

'भविष्य-पुराण' में 'कल्कि' का उल्लेख युग परिवर्तन के सम्बन्ध में करके यह बतलाया गया है कि वे 'महायज्ञ' द्वारा जगत् को सुखी बनाएँगे-

तदास भगवान कल्किः पुराण पुराण पुरूषोद्भवः।
दिव्यं वाजिनमारुहा खंडगी बर्मी च धर्मधृक्।
म्लेच्छांस्तान दैत्यभूवांश्व हत्वा योग गमिष्यति।।
षोडशब्द सहस्राणि तद्द्येशाग्नि प्रतापिता।
भस्मभूता कर्मभूमिर्निजग्रीवा भाविता तदा।।
गते कलियुगे घोरं कर्मभूमि पुनर्हरि।
कृत्वास्थलमयी रम्यं यज्ञै र्देवान् यजिस्यति।।
यज्ञभागमुपादाय देवास्ते बल संयुता।
वैवस्वतं मनुं मत्वा कथयिष्यन्ति कारणम्।

(श्रीमद् भागवत महा पुराण 12, अध्याय-2 व कल्कि पुराण अध्याय पाँच, पेज नं० 121)

'उस अवसर पर पुराण, परुष, 'कल्कि' प्रकट होंगे, दिव्य अश्व पर आरुढ़ और असि (तलवार) वर्म (कवच) चर्म (ढाल) आदि समस्त शस्त्रों से सुसज्जित होंगे। वे लाखों म्लेच्छों को उनके दुष्कर्मो के फलस्वरूप नष्ट कर देंगे और उसके पश्चात् -महासमाधि' ग्रहण कर लेंगे। उनके प्राकट्य के पहले यह भूमि धर्म-कर्म रहित धर्म विमुख लोगों से भर जाएगी पर कल्कि के प्रभाव से वह फिर पुण्य-स्थली बन जाएगी। अब कल्कि धर्म रक्षार्थ महायज्ञ का अनुष्ठान करेंगे, तो देवगण अपना नियमित अंश प्राप्त करके शक्ति सम्पन्न हो जाएँगे और पृथ्वी निसासियों के कल्याण साधन में तत्पर होंगे'।

श्रौते स्मार्ते च धर्मो विप्लवमत्यन्तमुपगते क्षीणापाये च कलावशेषजगत्प्रष्टुश्चरागुरोरादि मध्यान्तर रहितस्य ब्रह्मामयस्यात्मरुपिणो भगवतो वासुदेवर्स्याशश्शम्बलग्रामप्रधानब्राह्मणस्य विष्णुयशयशो गृहेअष्टगुर्णाद्धसमन्वित कल्किरूपीजगत्य त्रावतीर्य सकल म्लेच्छादस्युदुष्टा चरणचेतसामशेषाणामपरिच्छिन्न शक्तिमहात्म्यः क्षयं करिष्यति स्वधर्मेषु चाखिलामेव संस्थापयिष्यति।। 98

(कल्कि पुराण अध्याय 5, पेज नं० 123)

जब श्रौत वैदिक और स्मार्त धर्म की अत्यन्त हानि हो जाएगी और कलयुग

प्रायः समाप्ति पर होगा, तभी सम्भल' ग्राम में निवास करने वाले विप्रश्रेष्ठ विष्णु यश के यहाँ सम्पूर्ण विश्व के कारण, चराचर के स्वामी, आदि-मध्य अन्त से हीन, ब्रह्मामय एवं आत्मरूप अष्टगुण युक्त कल्कि रूप से म्लेच्छों, दस्युओं और दुष्ट हृदयों और दुराचारियों को नष्ट कर सभी प्रजा को अपने धर्म में स्थापित करेंगे।

'अग्नि पुराण' में भी कलियुग के कारण धर्म और समाज की दुरावस्था का चित्रण करते हुए 'कल्कि' के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

सर्वे कलियुगान्ते तु भविष्यन्ति च संकराः।
दस्यवः शीलहीनाश्चं बेदो वाजसनेयकः।।
धर्मकच्चुकसवीता अधर्मरूचयस्तथा।
मानुषात् भक्षयिष्यन्ति मलेच्छन् पार्थिव रूपिणः।
कल्कि विष्णुयशः पुत्रो याज्ञवल्क्य पुरोहितः।
उत्सादयिष्यति म्लेच्छान् गृहीतास्त्र कृतायुधः।।
कल्कि रूपं परित्यज्य हरिः स्वर्ग गामिष्यति।
तथा कृतयुगं नाम पुण्यवत् सम्भविप्यति।।

(कल्कि पुराण अध्याय 5, पेज नं० 124)

'कलियुग' का अन्त होने के समय सब लोग वर्णसंकर हो जाएँगे। वे लुटेरे, शीलरहित और वेद विरुद्ध आचरण करने वाले होंगे। उनकी रुचि धर्म की ओर से हटकर अधर्म की ओर चली जाएगी, म्लेच्छ राजागण मनुष्यों का बहुत बुरी तरह शोषण करेंगे, तब कल्कि भगवान् श्री विष्णु यश के यहाँ प्रकट होगा और याज्ञवल्क्य उनके पुरोहित होंगे, वे शस्त्र लेकर अपनी शक्ति से म्लेच्छों को नष्ट कर डालेंगे, कल्कि पुनः अपने लोक को चले जाएँगे।

गरुड़ पुराण (अध्याय-149) में कल्कि का वर्णन संक्षेप में इस प्रकार किया गया है:-

कल्कि विष्णुश्च भविता शम्भल ग्रामके पुनः।
अश्वारुढ़ोअखिलान् लोकांस्तदाभीतान् करिष्यति।।
एवं स भगवान व्यास धर्मसंरक्षणाय च।
दुष्टानां च वधार्थाय सवतारं करिष्यति।।

(गरुड़ पुराण-अध्याय-149 व कल्कि पुराण 124)

"शम्भलग्राम में विष्णु यश के यहाँ कल्कि प्रकट होंगे, वे घोड़े पर चढ़कर समस्त संसार को प्रभावित करेंगे, जैसा भगवान् व्यास कह गये हैं उनका अवतार दुष्टों का वध करने के लिए होगा"।

'विष्णुधमोत्तर पुराण' में भी कल्कि के सम्बन्ध में निम्नलिखित श्लोक मिलते हैं- **अनुप्रविश्य करुते वासुदेवो जगत्स्थितम्।।**

"जब कलियुग समाप्त होने लगेगा तो सर्वव्यापी पृथ्वी पर कल्कि रूप में प्रकट होंगे और ईश्वरीय सत्ता (धर्म) की स्थापना करेंगे"।

इस प्रकार प्रत्येक पुराण में कल्कि का न्युनाधिक प्रमाण में उल्लेख मिलता है। सभी विद्वानों और ऋषि महर्षियों ने उनकी गणना की है और उनकी महिमा श्रद्धापूर्वक की गई है। यद्यपि कल्कि पुराण में कल्कि का चरित्र-चित्रण सामान्य रूप में ही किया गया है और विद्वानों द्वारा अन्य पुरणों की तुलना में वह कम महत्व का ग्रन्थ माना जाता है पर इसमें कल्कि के महत्व में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इतना ही नहीं अनेक विद्वानों की यह भी धारणा है कि कल्कि संसार की नवीन सभ्यता के संस्थापक होंगे।

ऊपर के वर्णन और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पूर्व की दशा में कितनी यथार्थता है, जिसका उल्लेख आगे के पृष्ठों (खण्ड 'ख') में विस्तार पूर्वक किया गया है उसे पढ़ कर पाठक स्वयं अनुभव करेंगे कि समाज में जिस नीतिपूर्ण स्वार्थ भावना तथा स्त्री-पुरुषों में भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता के व्यवहार का इसमें वर्णन किया गया है वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व की दशा को पूर्ण रूप से सिद्ध करता है।

अन्तिम या कल्कि अवतार के प्रकट होने का स्थान

अन्तिम अवतार विषय में भगवत पुराण की भविष्यवाणी इस प्रकार है:-

शम्भले विष्णु यशसो गृहे प्रादुर्भवाम्यहम्।
सुमत्यांमार्तार विभो! पत्नीयाँ त्वन्निर्दशतः।।

(कल्कि, पुराण, द्वितीय अध्याय पेज नं० 197)

अनुवाद- "हे विभो! मैं शम्भल ग्राम में विष्णुयश के यहां उनकी पत्नी सुमति के गर्भ से उत्पन्न हूँगा"।

सुमत्यां विश्णु यशसा गर्भमाधयत्तवेष्णवर्म्
ग्रह-नक्षत्र-राश्यादि-सेवितं-श्रीपदाम्बुजम्।। 11
सरिसमुद्राः गिरयो लोकाः संस्थाणुजंगमः।
सहर्षा ऋषयोः देवाः जाते विषणौः जगत्पतोः।। 12
बभूवः सर्वसत्वानामानन्दा विविधाश्रयाः।
नृत्यन्ति पितरो हृष्ठास्तुष्टा देवा जगुयैशः।। 13
चक्रुर्वाद्यानि गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणः।। 14
द्वादश्यां शुक्लपक्षस्य माधवे मासि माधवः।
जातं दद्दशतुः पुत्रं पितरौ हृष्टमानसौ।। 15

(कल्कि, पुराण, द्वितीय अध्याय पेज नं० 298)

कल्कि विष्णुयश के द्वारा उनकी पत्नी सुमति के गर्भ में प्रविष्ट होकर भ्रूण रूप हुए। 11 यह जानकर कि कल्कि पृथ्वी पर आ गये हैं। सभी सरिता, समुद्र, पर्वत, स्थावर जगत प्राणी, ऋषिगण और देवगण आदि सभी प्रसन्न हो उठे। 12। तथा सभी जीव विभिन्न प्रकार से हर्ष प्रकट हुए। 13। गन्धर्व बाजे बजाने और अप्सराएँ नृत्य करने लगीं। 14। वैशाख शुक्ल द्वाद्वशी के दिन कल्कि ने अवतार लिया। उनको प्रकट होते हुए देखकर माता पिता पुलकित हो उठे। 15।

शम्भल शब्द की खोज

ऊपर के श्लोकों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तिम अवतार का स्थान 'शम्भल' होगा और शम्भल की व्याख्या करते हुए पं० वेद प्रकाश उपाध्याय जी अपनी पुस्तक, 'कल्कि अवतार और मुह़म्मद साहब' में लिखते हैं 'शम्भल' शब्द 'शान्त करना' अर्थात शम् धातु से बना है जिसमें 'बन्' प्रत्यय लगा हुआ है। शम्भल शब्द का अर्थ होगा 'शान्ति का घर' और मक्का को अ़रबी भाषा में 'दारुल अमन' भी कहा जाता है। शम्भल किसी ग्राम का नाम नहीं हो सकता, क्योंकि यदि केवल किसी ग्राम विशेष को शम्भल नाम दिया जाता तो उसकी स्थिति भी बतलाई जाती परन्तु पुराणों में कहीं भी शम्भल ग्राम की स्थिति नहीं बतलाई गई है। यदि भारत में कोई शम्भल नामक ग्राम मिलता है तो वहाँ आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले कोई पुरूष ऐसा नहीं पैदा हुआ जो लोगों का उद्धारक हो। अतः -शम्भल'

शब्द को विशेषण मान कर विचार करना आवश्यक है।

(1) 'शम्भल' शब्द 'शम्' (शानत करना) धातु से बना है अर्थात जिस स्थान में शान्ति मिले।

(2) सम् उपसर्ग पूर्वक 'वृ' धातु में अप् प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न शब्द 'संवर' हुआ वबयोर भेदः और रलयोग्भेदः के सिद्धान्त से शम्भल शब्द की उत्पत्ति हुई, जिसका अर्थ हुआ जो अपनी ओर लोगों को खींचता हो या जिसके द्वारा किसी को चुना जाता हो।।

(3) 'शम्बर' शब्द का निघण्टू (1,12,88) में उदक नामों में पाठ है 'र' और 'ल' में अभेद होने के कारण शम्भल का अर्थ होगा जल का समीप वर्ती स्थान। लोगों को यह सन्देह होगा कि जब 'शम्भल' का अर्थ जल निकल रहा है, तो जल का समीपवर्ती स्थान गांव के अर्थ में क्यों लिया गया है? इसका उत्तर यह है कि प्रसंग यहाँ ग्राम का है न कि जल का। जब गंगा में घोष शब्द से आप यह अर्थ करते हैं, कि गंगा के समीप स्थित गांव में घोष, न कि गंगा के जल के ऊपर घोष, तो आप शम्भल शब्द से वैसे ही क्यों अर्थ नहीं निकाल लेते? यदि गंगा में घोष, वाक्य में लक्षण मानते हैं तो यहाँ भी लक्षण मानिये। अन्तिम अवतार के स्थान के विषय में केवल इतना ही विचारणीय है कि वह स्थान, जिसके आस-पास जल हो, और वह स्थान आकर्षक एवं शान्तिदायक हो, अवतार की भूमि पवित्र और हिंसा से पाक तथा तीर्थ स्थान हो।

शम्भल का शाब्दिक अर्थ

'शान्ति का स्थान' अर्थात यह शम् धातु से बना है जिसमें 'बन्' प्रत्यय लगा हुआ है। शम्भल शब्द का अर्थ होगा 'शान्ति का घर' और मक्का शहर को अ़रबी भाषा में 'दारुल अमन' भी कहा जाता है जिसका अर्थ हुआ शान्ति का घर।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि अन्तिम अवतार मक्का शहर में आएगा और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का भी जन्म मक्का शहर में ही हुआ था, जो इस बात की पुष्टि करता है कि अन्तिम अवतार मुह़म्मद (सल्ल०) ही हैं।

कल्कि अवतार के माता-पिता का नाम

पिता का नाम-

अन्तिम अवतार के पिता के नाम के साथ कल्कि पुराण में कई स्थान पर उल्लेख मिलता है, जिसमें से द्वितीय अध्याय के अठ्ठारहवें श्लोक का भाव इस प्रकार है:-

'सम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राहमणस्य महात्मनः।
भवने विश्ष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भाविष्यति'।।

(भगवत् पुराण 12/2/18)

अनुवाद- जब अवतार के प्रकट होने का अवसर आयेगा उस समय सम्भल ग्राम में विष्णुयश नाम के एक श्रेष्ठ ब्राह्मण होंगे। उनका ह्रदय बड़ा उदार एवं भक्तियुक्त होगा उन्हीं के घर में कल्कि अवतार ग्रहण करेंगे।

विष्णुयश-

इस प्रकार पिता का नाम विष्णुयश बताया गया है जिसका अर्थ होता है, विष्णु भक्त, या परमेश्वर का उपासक।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पिता का भी नाम 'अब्दुल्लाह' था जिसका अर्थ होता है अल्लाह का बन्दा, अर्थात विष्णु का भक्त (विष्णु=अल्लाह और यश=बन्दा) अर्थात अल्लाह का बन्दा अब्दुल्लाह। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि पिता का नाम विष्णुयश=अब्दुल्लाह जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पिता का नाम था।

माता का नाम-

कल्कि के पिता के समान माता का भी उल्लेख कई स्थान पर मिलता है जिसमें से निम्न शलोक प्रस्तुत हैं:-

'सुमत्यांः विष्णुयशसा गर्भमाद्यत्व वैश्णवम्'।

(कल्कि पुराण अध्याय 2, श्लोक।।)

अनुवाद- "कल्कि विष्णुयश के द्वारा उनकी पत्नी सुमति के गर्भ में प्रविष्ट होकर पैदा होंगें"।

सुमति-

उपर्युक्त श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तिम अवतार की माता का नाम कल्कि पुराण में सुमति (सोमवती) आया है जिसका अर्थ होता है शांति एवं मनन शील स्वभाव वाली अर्थात 'आमिना'। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की माता का नाम 'आमिना' होगा और आमिना का अर्थ होता है, शान्ति वाली (सोमवती- अमन व सलामती वाली) अर्थात दोनों के एक ही अर्थ हुए। आमिना और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की माता का भी नाम आमिना ही था। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि माता का नाम सोमवती=आमिना जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की माँ का नाम था।

इस आने वाले अन्तिम सन्देष्टा को भगवत पुराण प्रथम स्कन्ध, तृतीय अध्याय 25 वां श्लोक में भगवत पुराण के 24 अवतारों के प्रकरण में कल्कि को सबसे अन्तिम अवतार माना गया है।

कल्कि अवतार की विशेषताएँ

कल्कि अवतार की पुराणें में बहुत सी विशेषताएँ बताई गई हैं जिन में से मुख्य विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जाता है:-

1. **अशवारोहण करने वाला।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)
2. **जगद गुरु होगा।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)
3. **असाधु दमन करेगा।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)
4. **देवताओं द्वारा सहायता दी जाएगी।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)
5. **अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)
6. **शरीर से सुगन्ध निकलेगी।** (भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

कल्कि अवतार और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की विशेषताएँ तुल्नात्मक दृष्टि से

'अश्वमाशुगारूहा देवदक्त्तं जगत्पतिः।
असिनास द्युदमन मठटैश्यर्य गुणान्वितः'।।

(भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय 19 वां श्लोक)

अनुवाद- वही अष्ट सिद्धियों के तथा समस्त सद्गुणों के एक मात्र आश्रय हैं। समस्त जगत के वे ही रक्षक हैं, वे देवदत्त नामक शीघ्रगामी अश्व (घोड़े) पर सवार होकर दुष्टों को अपनी तलवार से ख़त्म करेंगे।

1. अशवारोहण करने वाला होगा-

उपरोक्त श्लोक से मालूम होता है कि अन्तिम अवतार देवताओं द्वारा दिये गये अश्व पर चढ़ कर तलवार द्वारा दुष्टों का संहार करेंगे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने भी अश्व अर्थात घोड़े की सवारी की और आप (सल्ल०) को घोड़े बहुत प्रिय थे और दूसरी बात खड्गधारी बताया गया है अर्थात अन्तिम अवतार दुष्टों का संहार तलवार द्वारा करेंगे, एटम बम द्वारा नहीं। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने भी अपने समय के दुष्टों का संहार तलवार द्वारा किया जैसे जंगे बद्र आदि। **(सीरतुन्नबी)**

2. जगद्गुरू होगा-

भगवत पुराण 12 स्कन्ध 2 अध्याय के 19 वें श्लोक में अन्तिम अवतार को जगत्पति कहा गया है। जगत का अर्थ होता है संसार और पति का अर्थ होता है रक्षक। इस प्रकार जगत्पति का अर्थ हुआ जगत की रक्षा करने वाला अर्थात अपने उपदेशों द्वारा गिरते हुए समाज को बचाने वाला जगत गुरु और पवित्र कुर्आन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए कहा गया है कि आप कह दीजिए कि "मैं सारी दुनिया के लिए रह़मत बना कर भेजा गया हूँ"। इस प्रकार यह सिद्व हो जाता है कि जगदगुरु वास्तव में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही हैं।

3. असाधुदमन करेगा-

ऊपर के ही श्लोक में कहा गया है कि वह दुष्टों का दमन करेंगे। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर यह भी गुण पूर्ण रूप से सिद्ध होता है जिसका उल्लेख हमने अन्तिम खण्ड में किया है और 'तारीख़े इस्लाम' में विस्तार पूर्वक देखा जा सकता है कि किस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने दुष्टों का दमन किया।

4. देवताओं द्वारा सहायता मिलेगी-

कल्कि पुराण (अध्याय 2 श्लोक 7) में उल्लेख है कि देवताओं द्वारा कल्कि

को युद्धों में सहायता मिलेगी। यही बात ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथ भी हुई कि बद्र की लड़ाई में फ़रिश्तों ने उनकी सहायता की जिस का उल्लेख स्वयं कुर्आन में मौजूद है। जिसे विस्तार पूर्वक 'नबी-ए-रह़मत' नामक पुस्तक में देखा जा सकता है।

5. अनुपम क्रान्ति से युक्त होगा-

विचरन्नाशुना क्षोणायां हयेना प्रतिमद्यतिः।
तपलिंगप्तछदो दस्यून् को टिशेशनिहनिष्यति।।

(भागवत पुराण, 12 स्कन्ध 2 अध्याय 20 वां श्लोक)

कल्कि के विषय में उल्लेख है कि वे अनुपम क्रान्ति से युक्त होंगे अर्थात वे इतने अधिक सुन्दर होंगे कि उनकी उपमा नहीं की जा सकती। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में बुखारी शरीफ़ में कहा गया है कि आप आदमियों में सबसे अधिक सुन्दर तथा आदर्शवान एवं योद्धा थे।

(विस्तार के लिए आगे पृष्ठ पर खण्ड 'ख' में देखें)

6. शरीर से सुगन्ध निकलेगी-

अथ तेषां भविष्यन्ति मनांसि विशदानि वै।
वासुदेवाद्ध. रगाति पुरायगन्धानित स्पृशाम्।।

(भगवत पुराण, 12 स्कन्ध 2 अध्याय, 21 वां श्लोक)

श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार कल्कि के शरीर से निकली हुई सुगन्ध से लोगों के मन निर्मल हो जाएँगे। उनके शरीर की सुगन्ध हवा में मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी।

ठीक इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी जिससे मिलते सुगन्ध आती रहती थी यहाँ तक कि आप (सल्ल०) के पसीने से भी सुगन्ध आती जिसे उनके साथी शीशीयों में भर लेते। **(शमायले तिर्मिज़ी)**

भविष्य पुराण के अनुसार कल्कि अवतार के आने से पूर्व की दशा

भविष्य पुराण में तो स्पष्ट रूप से कहा गया है कि उनका नाम 'मुह़म्मद' और 'अह़मद' होगा और वह 'मरूस्थल' में उत्पन्न होंगे। परन्तु आर्य समाज

वालों ने इस पुराण को संदिग्ध माना है वह यह कहते है कि उसमे केवल एक का हवाला है इसके बावजूद दूसरे लोग भी प्रमाणित करते हैं।

इस प्रकार भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व तृतीय खंड एवं तृतीय अध्याय में चित्रित किया गया है। राजा भोज का समय और मुह़म्मद का समय एक ही था क्योंकि पृथ्वी को धर्म की मर्यादा से हीन देखकर राजा भोज सिन्धु पार करके अरब जाता है जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

"एतस्मिन्नन्तरे म्लेच्छ आचार्येज रामन्वितः।
महामद इति ख्यातः शिष्य शाखासमन्तिवः।।
नृपश्चैव महादेवं मरूस्थलनि वासिनम।
गंगा जलैश्च संस्नाथ पन्वगब्यसमन्वितैः।।
चन्दनादिभिरम्तर्च्य तुष्यव मनासा हरम।
नमस्ते गिरिजानाथ मरुस्थलनिवासिनेः।।
ग्रिपूरासुरनाशाय बहुमाया प्रवतिने।
म्लेच्छै गुप्ताय शुद्धाम सच्चिदानन्द रुपिणे।।
त्वं मां हि किं करं विद्धि शरणार्थभुपा गतम।"

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग, पर्व खण्ड-3, अध्याय-3)

अनुवाद- उसी बीच अपने शिष्यों के साथ मह़ामद (मुह़म्मद) नामी पवित्र म्लेच्छ (ग़ैर मुल्की या ग़ैर आर्य) वहाँ आएगा। राजा भोज मरुस्थल (रेगिस्तान) निवासी महादेव के दरबार में तमाम गुनाहों के धोने से पवित्र होकर गंगा स्नान करके अपने आप को सुपुर्द करके यूँ अनुरोध करेगा-ऐ रेगिस्तान के निवासी! शैतान को पराजित करने वाले, चमत्कारों के मालिक, बुराइयों से पाक व साफ, सत्य वादी, सचेत, साक्षात, ईश प्रेम में डूबे हुए तुम्हें प्रणाम या सलाम हो तुम मुझे अपनी शरण में आया हुआ दास समझो।

(वेदों व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति पृष्ठ संख्या-21)

उवाच भूपवि प्रेम्णा मायाद विशारदः।
तब देवो महाराज मम दास्तवभगतः।।
ममाच्छिष्टं स भुन्जीयात् तथा तत्पश्य भो नृप।

इति श्रुत्वा तथा दृष्टा परं विसमयमा यौ।।
म्लेच्छ धर्मे मतिश्चासीत्तस्य भूपस्य द्वारुणे।

अनुवाद- राजा भोज के पास रखी हुई पत्थर की मूर्ति के लिए महामद (मुहम्मद) कहेंगे कि वह मेरा झूठा खा सकती है जिसे तुम पूजते हो। यह कहकर राजा भोज को ऐसा ही चमत्कार दिखाएगा। यह सुनकर और देख कर राजा भोज को बड़ा आश्चर्य होगा और उस म्लेच्छ धर्म में उसकी आस्था हो जाएगी। **(अनुदित पं० वेद प्रकाश उपाध्याय)**

वेदों में शब्द अहमद व मुहम्मद

शब्द अहमद-

<u>वेदाहमेत</u> पुरूष महान्तमादित्तयवर्ण तमसः प्रस्ताव.....यनाय।।

(यर्जुवेद अध्याय 31: मन्त्र 18)

अनुवाद- "वेद अहमद महानतम पुरुष हैं। सूर्य के समान अन्धेरों को परास्त करने वाले हैं उन्हीं को जानकर मृत्यु को पार किया जा सकता है इसके अतिरिक्त लक्ष्य तक पहुँचने के लिए और कोई रास्ता नहीं है"।

एक दूसरे स्थान पर शब्द अहमद-

<u>अहमिद्धि</u> पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ अहं सूर्य इवाजानि।।

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व चतुर्थ अध्याय कलिकृतविष्णु स्तुतिः)

सबसे पहले जिन का चिन्तन किया वह अहम ही हैं पिता समान हैं, उसने ही सबसे पहले वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया इसे जानकर मैं सूर्य समान हो गया।

इस प्रकार 'अहमिद्' का इतना महत्व है कि ऋग्वेद मं० 8 सूक्त 6.10 अर्थव वेद काण्ड 20 सूक्त 115, मंत्र 1 तथा सामवेद 152 वाँ तथा 1500 वाँ मन्त्र में अहमिद् शब्द का प्रयोग हुआ है जो केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ही घटित होता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मेरे अनेक नाम हैं मैं मुहम्मद हूँ, और अहमद हूँ। **(बुख़ारी,मुस्लिम)**

मुहम्मद-

अज्ञान हेतु कृत <u>मोहमदान्धकार</u> नाशं विद्यायं हित दो दयते विवेक।

(श्री मद् भागवत पुराण 2/72)

"यहाँ स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मुहम्मद के द्वारा अन्धकार का नाश होगा और ज्ञान व विवेक का प्रकाश उदय होगा"।

1. ऊपर के श्लोक में मुहम्मद की जगह असल संस्कृत में 'महामद' शब्द का प्रयोग हुआ है। और उसी श्लोक से यह भी मालूम हुआ कि म्लेच्छ शब्द ग़ैर आर्य नस्ल के निवासियों के लिए प्रयोग होता था जैसे- अ़रब, ग़ैर अ़रब (Non-Arab) के लिए अज़म और यहूदी, ग़ैर यहूदी के लिए "जेन्टाइल" (Gentile) शब्द प्रयोग करते हैं। उसी प्रकार का यह भी एक शब्द है।
2. इस प्रकार ऊपर के श्लोकों में महामद के लिए ही मुहम्मद और अहमद नाम प्रयोग किये गये हैं और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के भी यह नाम थे।
3. इसी प्रकार यह भी कहा गया है कि उनका सम्बन्ध "मरुस्थल" से होगा और संस्कृत में मरुस्थल कहते हैं रेगिस्तानी भू भाग को। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी रेगिस्तानी भू-भाग में आये थे जहाँ उन्हें वफ़ादार साथियों के साथ फ़रिश्तों की सहायता भी प्राप्त हुई थी।
4. इस प्रकार यह भी है कि वह मूर्ति पूजा को ख़त्म करेगा और मानव जाति के लिए उपकारक होगा। अतः हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी बुत परस्ती को ख़त्म किया और मानव जाति के उपकारक के रूप में सिद्ध हुए।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी गुण केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर सिद्ध होते हैं। जो विस्तार पूर्वक (भविष्य पुराण भाग 3, खण्ड 3, अध्याय 3, श्लोक 5-8) में दिया गया है।

भाग-3

उपनिषदों की भविष्यवाणियाँ

उपनिषदों में शब्द अल्लाह रसूल व मुहम्मद

उपनिषदों में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और इस्लाम के बारे में कहीं-कहीं उल्लेख मिलता है। नागेन्द्र नाथ बसु द्वारा संपादित विश्वकोष के द्वितीय खण्ड में उपनिषदों के वे श्लोक दिये गये हैं, जो इस्लाम और पैग़म्बर (सल्ल०) से सम्बन्धित हैं। इनमें से कुछ प्रमुख श्लोक और उनके अर्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं ताकि पाठकों को वास्तविकता का पता चल सके-

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ता। इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्दुदः। हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्ला वरुणे मित्रस्तेजस्कामः (1) होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्राः। अल्लो ज्येष्ठं परमं ब्रह्माणं अल्लाम (2) अल्लो रसूल महामद रकाबरस्य अल्लो अल्लामः (3) (अल्लोपनिषद 1,2,3,)

अनुवाद- "उस देवता का नाम अल्लाह है वह एक है। मित्रा वरुण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरुण है, जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रों! उस अल्लाह को अपना पूज्य समझो। वह वरुण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों का काम संवारता है। वह इन्द्र है, श्रेष्ठ इन्द्र। अल्लाह सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा पूर्ण और सबसे ज़्यादा पवित्र है। मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसूल हैं।

उपर्युक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह एक है और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उसके सन्देशवाहक (पैग़म्बर) हैं। इस उपनिषद के अन्य श्लोकों में भी इस्लाम और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की साम्यगत बातें आई हैं। इसी उपनिषद में आगे कहा गया है:-

एक और स्थान पर अल्लाह व रसूल-

आदल्ला बूक मेककम्। अल्लबूक निखादकभ् (4) अलो यज्ञेन हुत हुत्वा अल्ला सूर्य्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः (5) अल्लो ऋषीणं सर्व

दिव्यां इन्द्राय पूर्व माया परमन्तरिक्षा (6) अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्ष्ज्ञं विश्वरूपम् (7) इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इललल्लेति इल्लल्लाः (8) ओम् अल्ला इल्लल्ला अनादि स्वरुपाय अथर्वण शयमा हुही जनान पशून सिद्धान जलवरान् अदृष्टं कुरु फट (9) असुरसंहारिणी हं हीं अल्लो रसूल महमदरकबस्य अल्लो अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्लति इल्लल्ला (10) (इति अल्लोपनिषद 4-10)

अर्थात "अल्लाह ने सब ऋषि भेजे और चन्द्रमा, सूर्य एवं तारों को पैदा किया। उसी ने सारे ऋषि भेजे और आकाश को पैदा किया। अल्लाह ने ब्रह्माण्ड (ज़मीन और आकाश) को बनाया। अल्लाह श्रेष्ठ है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। ऐ पूजारी! कह दे, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, अल्लाह अनादि से है। वह सारे विश्व का पालनहार है। वह (अल्लाह) तमाम बुराइयों और मुसीबतों को दूर करने वाला है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं, वह (अल्लाह) जो सारे संसार का पालनहार है। अतः घोषणा करो कि अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई पूज्य नहीं"।

बहुत थोड़े से विद्वान जिनका संबन्ध विशेष रूप से आर्यसमाज से बताया जाता है। अल्लोपनिषद् की गणना उपनिषदों में नहीं करते और इसका इन्कार करते हैं, हालांकि उनके तर्कों में दम नहीं है। हिन्दू धर्म के अधिकतर विद्वान और मनीषी अपवादियों के आग्रह पर ध्यान नहीं देते।

गीता प्रेस (गोरखपुर) का नाम हिन्दू धर्म के अधिकतर प्रामाणिक प्रकाशन के रूप में मान्य है। यहां से प्रकाशित 'कल्याण' (हिन्दी पत्रिका) के अंक अत्यंत प्रामणिक माने जाते हैं। इसकी विशेष प्रस्तुति 'उपनिषद अंक' में 220 उपनिषदों की सूची दी गई है जिसमें अल्लोपनिष्द् का उल्लेख 15 वें नंबर पर किया गया है। 14 वें नंबर पर अमत बिन्दुपनिष्द् और 16 वें नंबर पर अवधुतोपनिषद् (पद्य) उल्लिखित है। डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने भी अल्लोपनिषद को प्रमाणिक उपनिषद माना है।

(देखिएः वैदिक साहित्य एक विवेचना, डा० एम० ए० श्री वास्तव, प्रदीप प्रकाशन, संस्करण 1989, पृ० 101)

भाग-4

बौद्ध धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

गौतम बुद्धजी की भविष्यवाणियाँ

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान और शोधकर्ता पं० वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने अपनी पुस्तक वेद के ऋषि नराशंस, क़ुर्आन के अन्तिम ईश दूत मुहम्मद (सल्ल०) के छठे अध्याय में गौतम बुद्ध की। भविष्य वाणियों द्वारा महामान्य हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अन्तिम बुद्ध इस प्रकार सिद्ध किया है

गौतम बुद्ध ने अपने मृत्यु काल के समय प्रिय शिष्य आनन्द से बताते हुए कहाः-

आनन्द! इस संसार में न तो मैं प्रथम बुद्ध हूँ और न अन्तिम बुद्ध हूँ। इस जगत में सत्य तथा परोपकार की शिक्षा देने के लिए अपने समय पर एक और बुद्ध आएगा। वह पवित्र अन्तः करण वाला होगा उसका हृदय शुद्ध होगा ज्ञान और बुद्धि से सम्पन्न तथा सब लोगों का नायक होगा जिस प्रकार मैंने जगत को अनश्वर सत्य की शिक्षा प्रदान की है उसी प्रकार, वह भी जगत को सत्य की शिक्षा देगा। जग को वह ऐसा जीवन मार्ग दिखाएगा जो शुद्ध तथा पूर्ण भी होगा। नन्दा! उस का नाम ***मैत्रेय*** होगा[1]।

बुद्ध का अर्थ बुद्धि से युक्त होता है। बुद्ध मनुष्य ही होता हैं, देवता आदि नहीं[2]।

आने वाले बुद्ध की विशेषताएँ

बुद्ध जी ने ऊपर की पंक्ति में जिन मुख्य विशेषताओं की ओर संकेत किया है वे इस प्रकार हैंः-

1. वह जगत को सत्य और परोपकार की शिक्षा देगा।
2. वह जगत का नायक होगा।
3. वह जगत को जीवन का ऐसा मार्ग दिखाएगा जो सत्य तथा पूर्ण होगा।
4. वह अपने समय पर आएगा।

1- Gospel of Buddha by Grus, Page 215.
2- Mohammad in Buddhist Scriptures P.1

5. उसका हृदय शुद्ध होगा तथा ज्ञान और बुद्धि से संपन्न होगा।
6. उस का नाम मैत्रेय होगा।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और अन्तिम बुद्ध तुलनात्मक दृष्टि से

1. वह जगत को सत्य और परोपकार की शिक्षा देगा-

जगत तथा मानव जीवन का सबसे बड़ा सत्य अपने पैदा करने वाले को मानना और केवल उसी की उपासना और भक्ति करना है। परन्तु जिस समय महाईश दूत का अभियोदय हुआ संसार से यह सत्य लुप्त हो चुका था और परमेश्वर के साथ सूर्य, चंद्रमा, धरती पर नक्षत्रों, जीवित तथा मृत्यु महापुरुषों, काल्पनिक सत्ताओं, नदियों, पशुओं, वृक्षों आदि की पूजा भक्ति और उपासना हो रही थी तथा उन्हीं से प्रार्थना और याचना की जा रही थी। कोई अल्लाह का बेटा माना जा रहा था तो कोई अवतार, केवल परमेश्वर को उपास्य और पूज्य मानने वाला कोई न था। इस अवस्था में महाईश दूत ने यह घोषणा की **"लाइलाह इल्लाल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"** अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं अर्थात मुहम्मद (सल्ल०) न अल्लाह के बेटे हैं न उसका रूप, न परमेश्वर के अंश, वह केवल परमेश्वर के ही उपासक और भक्त हैं।

"मैं गवाही देता हूं कि परमेश्वर के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके भक्त और सन्देष्टा हैं"।

यह है हर प्रकार के सत्य का स्रोत और वह मूल सत्य जिसकी शिक्षा अन्तिम ईशदूत ने संसार को दी। यही वह शिक्षा है जिस पर आपकी तथा पवित्र क़ुर्आन की सारी शिक्षाएँ आधारित हैं। यही शिक्षा मानव जीवन का मूल भी है, और सारे संसार भर की मस्जिदों में दिन-रात में पांच बार इसी सत्य की पुकार होती रहती है। यह सत्य की कसौटी है कि जो इस पर खरा उतरे वह खरा और जो खोटा उतरे वह खोटा परन्तु यह बड़े खेद की बात है कि इस संसार के लोग इस शिक्षा के मूल्य को नहीं समझते और न ही समझना चाहते हैं। इसलिए

मानवता पतित और पतन ग्रस्त होती जा रही है। अर्थात संजीवनी के होते हुए भी मर रही है।

पवित्र क़ुर्आन और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अल्लाह की उपासना के साथ ही परोपकार की भी शिक्षा दी है। 'नमाज़' और 'ज़कात' इस्लाम के दो मुख्य स्तम्भ हैं, नमाज़ उपासना की एक मुख्य विधि है, ज़कात दान की एक मुख्य विधि है। पवित्र क़ुर्आन में दोनों का हुक्म कई स्थान पर साथ-साथ आया है। ज़कात के विषय में यह बताया गया है कि ज़कात में धनहीनों का मुख्य अधिकार है, इसलिए यह दान हर धनवान पर अनिवार्य है तथा साधारण दान इसके अ़लावा है, जिसे ईश्वरीय मार्ग में ख़र्च करने का हुक्म दिया गया है। साधारण दान का पुण्य वर्णित करते हुए पवित्र क़ुर्आन में बताया गया है-

"जो लोग परमेश्वर के मार्ग में अपना धन व्यय करते हैं उनकी उपमा ऐसी है कि एक दाना बोया जाये और उससे सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ दाने हों। अल्लाह जिसके पुण्य को चाहता है बढ़ा देता है"।

(सूरः बक़रः आयत नं० 262 से 267 तक विस्तार पूर्वक है और इसके आगे की आयत में ब्याज को निषिद्ध ठहरा दिया गया है। आयत 275 से 280 तक)

महाईशदूत, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथी माननीय अबू मूसा अश्अ़री कहते हैं "मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि हर व्यक्ति दान करे"। मैंने निवेदन किया किसी के पास धन न हो तो वह क्या करे"? फ़रमाया, "मज़दूरी करके स्वयं लाभ उठाये और निर्धन को दान भी दे"। मैंने निवेदन किया "यदि मज़दूरी न मिले"? फ़रमाया, "धन से सहायता न कर सके तो किसी अपेक्षी के काम में उसकी सहायता कर दे"। मैंने निवेदन किया, "यदि यह भी न कर सके"?

फ़रमाया "यदि दूसरों को किसी प्रकार का लाभ नहीं पहुँचा सकता तो कम से कम यह करे कि उससे किसी को किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे। यह भी एक प्रकार का दान है"।

मुह़म्मद (सल्ल०) के एक सहचर मान्य अबूज़र (रज़ि०) कहते हैं, "मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, तेरा अपने भाई अर्थात मिलने जुलने वालों से हंसमुख आकृति से मिलना भी दान है। सुकर्म की आज्ञा देना और कुकर्म से मना करना भी तेरा दान है। अन्धे को रास्ता बता देना भी तेरा दान है। रास्ते से पत्थर, कांटे

और हड्डियां हटा देना भी तेरा दान है। अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी तेरा दान है"।

इस प्रकार महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) स्वयं ऐसे दानशील थे कि भिक्षु को भोजन दे देते स्वयं भूखे सो जाते। शरीर के वस्त्र को भी उतार कर दे देते। आपकी शिक्षा और दानशीलता के प्रभाव से आपके सहचर ऐसे दानशील हो गये थे कि निर्धनों को जो दान मिलता वह अपने से अधिक दीन के लिए दान कर देते।

एक बार युद्धक्षेत्र में कुछ लोग दम तोड़ रहे थे। एक सह़ाबी उधर से निकले, उनके पास थोड़ा सा पानी था उन्होंने एक प्यासे को पिलाना चाहा, उन्होंने दूसरे प्यासे की ओर संकेत कर दिया और उन्होंने तीसरे की ओर यहाँ तक कि वह पानी घूमता हुआ पहले व्यक्ति के पास आ गया, जो सातवें व्यक्ति थे, परन्तु वह प्यासे ही मर चुके थे, दूसरे के पास गये तो वह भी स्वर्ग जा चुके थे। सब प्यासे मर गये परन्तु किसी ने भी पानी पीना अपने दूसरे भाई से पहले उचित नहीं समझा, क्योंकि आप (सल्ल०) की शिक्षा ही ऐसी थी।

अतः आने वाले बुद्ध के प्रति बुद्ध जी की जो परोपकार की भविष्यवाणी थी वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर इस प्रकार घटित होती है।

2. अन्तिम ईशदूत जगतनायक होगा-

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी जगत के नायक के रूप में थे जिसका स्पष्टीकरण स्वंय क़ुर्आन ने इस प्रकार किया है:-

"बड़ा महिमाशाली है, 'वह' (अल्लाह) जिसने अपने बन्दे पर क़ुर्आन उतारा ताकि वह (उसके द्वारा) सर्वजगत के लोगों को (अधर्म के कुपरिणाम से) सचेत कर दे"। **(सूरः फ़ुरक़ान, आयत नं० 1)**

(ऐ सन्देष्टा!) हमने तुमको सत्य धर्म के साथ सब लोगों को धार्मिकता के कुफल से डराने वाला बनाकर भेजा है। **(सूरः सबा, आयत नं० २८)**

(ऐ सन्देष्टा!) कह दो, "ऐ लोगो मैं तुम सबकी ओर परमेश्वर का भेजा हुआ सन्देष्टा हूँ 'जिसका' शासन आकाशों और पृथ्वी सारी सृष्टि में

है, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं"। (सूरः अअ़राफ़, आयत नं० 156)

मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन की अति महत्वपूर्ण घटना अन्तिम ह़ज है, जिसके चौथे ही माह परलोक गमन हुआ। अ़रब पर आपका शासन स्थापित हो चुका था और देश भर में इस्लाम फैल चुका था, इसलिए चारों ओर से मुसलमान उमंड़ पड़े थे। इस ऐतिहासिक अवसर पर आपने मूलभूत विषयों पर जो भाषण दिये उसमें कहा, "ऐ लोगो! जान लो कि तुम्हारा अल्लाह एक है, तुम्हारा पिता एक है, अ़रबवासियों को ग़ैर अ़रबवासियों पर और ग़ैर अ़रबवासियों को अ़रब वासियों पर, गोरों को कालों पर, कालों को गोरों पर, कोई प्रधानता नहीं है, प्रधानता है तो तक़्वे अर्थात संयम के आधार पर है"।

बुद्ध जी की सूचना के अनुसार आने वाले बुद्ध, अन्तिम महाईशदूत ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही हुए जिनकी शिक्षा ग्रहण करने वाले भाई-भाई बन गये।

3. वह जगत को सत्य व पूर्ण मार्ग दिखाएगा

बुद्ध जी ने आने वाले बुद्ध के विषय में बताया कि वह जीवन का सत्य और पूर्ण मार्ग दिखाएगा। जीवन मार्ग का तात्पर्य है- धर्म विधान-बुद्ध जी ने जीवन मार्ग की विशेषता यह बताया, "वह शुद्ध और पूर्ण होगा"। शुद्ध धर्म का अर्थ है, अमिश्रित ईश्वरवादी धर्म, जिसमें किसी देवी-देवता, भौतिक तथा काल्पनिक और अकाल्पनिक सत्ता की स्तुति, पूजा, उपासना भक्ति आदि के लिए कोई स्थान न हो। ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी ऐसा ही सत्य, शुद्ध ईश्वरवादी धर्म बताया।

महात्मा बुद्ध ने जीवन मार्ग की दूसरी विशेषता यह बताई है कि वह पूर्ण जीवन मार्ग दिखाएगा। ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का बताया हुआ वह पूर्ण जीवन मार्ग है जिसका आधार पवित्र क़ुर्आन और महामान्य द्वारा की गई उसकी व्याख्या है, यही मानव जीवन का विधान है। यह केवल श्रद्धा की बात नहीं है वास्तकिता है। महामान्य ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अ़रब में इसी संविधान के अनुसार शासन स्थापित किया, यह शासन भूमण्डल पर ईश्वरीय शासन था जिसके संचालक मनुष्य ही थे परन्तु संविधान ईश्वरीय था, उसका पालन जिस प्रकार सर्वसाधारण करते थे उसी प्रकार स्वयं महामान्य ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी

करते थे। मानव सर्वसाधारण के समान ही ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी अपने आप को अल्लाह की प्रजा समझते थे।

इसका संचालक न बादशाह कहलाता था न सम्राट। स्वयं ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने न इस प्रकार की कोई पदवी ग्रहण की, न अपने वास्ते राजमहल, सिंहासन तथा राजमुकुट बनवाया। खजूर के पत्तों से छाई हुई मस्जिद में चटाई पर बैठ कर शासन कार्य करते थे। महामान्य के उत्तराधिकारी भी ऐसे ही शासन संचालक थे।

इस शासन में देश, रंग नस्ल, ऊँच नीच, छूत छात का कोई भेदभाव न था। समस्त जनता का अधिकार भी समान था। शासन संचालक वादी हो अथवा प्रतिवादी उसे भी न्यायाधीश के न्यायालय में उपस्थित होना पड़ता था महामान्य ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने घोषणा की कि न अ़रब वासियों को दूसरे ग़ैर अरबवासियों पर श्रेष्ठता है। न गोरों को कालों पर, न कालों को गोरों पर, परमेश्वर के निकट श्रेष्ठ वह है जो उससे डरता है और सदाचारी जीवन व्यतीत करता है। यह सब स्पष्ट प्रमाण हैं अन्तिम बुद्ध महामान्य ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के। समस्त संसार इस बात को प्रमाणित करता है कि क़ुर्आन अत्यन्त गूढ़ और बुद्धिमता का भण्डार है और यह क़ुर्आन उस हृदय पर अवतरित हुआ जिस का नाम मुहम्मद (सल्ल०) है।

4. वह अपने समय पर आएगा-

बुद्ध जी ने नन्दा को सन्तावना देते हुए यह नहीं कहा कि अन्तिम बुद्ध मेरे जाते ही आ जाएगा बल्कि यह कहा कि अपने समय पर आएगा। यह बड़ी अर्थपूर्ण सूचना थी। तात्पर्य यह है कि वह ऐसे समय में आएगा जब संसार भर में सत्य धर्म भ्रष्ट हो चुका होगा। जैसा कि ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व की दशा का वर्णन आपने ऊपर पढ़ा जो अन्तिम ईश सन्देष्टा महामान्य ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर सिद्ध होती है। वही उनके आने का समय था।

5. उसका हृदय शुद्ध, होगा और ज्ञान सम्पन्न होगा-

महात्मा बुद्ध के बताये हुये गुणों में अन्तिम बुद्ध का एक गुण यह है जिसे

हम ऊपर के अंकों में जो कुछ लिख चुके हैं वह इसका अकाट्य प्रमाण है। जिसके हृदय पर पवित्र क़ुर्आन अवतरित हुआ इससे सत्य और पूर्ण व्यवस्था प्रमाण इतिहास कहाँ से लाएगा? उससे शुद्ध किसका हृदय हो सकता है और ऐसा ज्ञानवान तथा बुद्धिमान कौन हो सकता है? (इसके विस्तार के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जीवन चरित्र का अध्ययन करें।)

6. अन्तिम बुद्ध का नाम मैत्रेय होगा-

"मैत्रेय का अर्थ होता है- दया से युक्त 16 अक्टूबर 1930 लीडर पृष्ठ 7 कालम 3 में एक बौद्ध ने मैत्रेय का अर्थ दया किया है। मुह़म्मद भी दया से युक्त थे। इसी कारण ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को 'रह़मतुल्लिलआ़लमीन' कहा जाता है- जिसका अर्थ होता है संसार के लिए दया से युक्त"।

महामान्य को अल्लाह ने ही पवित्र क़ुर्आन में सर्वजगत के लिए 'रह़मत' दया का पात्र कहा है-

"वमा अरसलनाका इल्ला रह़मतल्लिल्आ़लमीन"।

(सूरः 11 आयत, 107)

अनुवाद- "ऐ सन्देष्टा! और हमने तुमको सर्वजगत के वास्ते रह़मत दया स्वरूप भेजा है"। महामान्य स्वभाव से ऐसे दयावान थे कि हर प्रकार का कष्ट भोगकर मनुष्य को पाप और नरक से बचाने की कोशिश करते जो महामान्य का मुख्य गुण था।

बुद्ध जी की भविष्यवाणी के इस प्रमाण व्याख्या से अन्तिम ईशसन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का बुद्ध मैत्रेय होना पूर्ण रूपेण सिद्ध हो जाता है।

बुद्ध मैत्रेय की विशेषताएँ और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तुल्नात्मक दृष्टि से

बुद्ध मैत्रेय के विषय में दी गयी विशेषताएँ पूर्ण रूप से मुह़म्मद पर ही सिद्ध होती हैं जिसे हम तुलनात्मक दृष्टि से इस प्रकार देख सकते हैं:-

1. बुद्ध मनुष्य होते हैं देवता आदि नहीं, महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी मनुष्य थे।
2. बुद्ध स्त्री और शासन से युक्त होता है। महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी स्त्री और शासन से युक्त थे।
3. बुद्ध अपनी पूर्ण आयु तक जीवित रहता है महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी पूर्ण आयु तक जीवित रहे।
4. बुद्ध अपना कार्य स्वयं करता है, महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी अपना कार्य स्वयं करते थे।
5. बुद्ध धर्म प्रचारक होता है महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी धर्म प्रचारक थे।
6. बुद्ध अपनी पूर्ववर्ती बुद्ध का स्मरण करता है महामान्य ने भी अपने पूर्ववर्ती ईशदूतों का स्मरण कराया।
7. बुद्ध के अनुयायी पक्के अनुयायी होते हैं, उनको कोई उनके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अनुयायियों को भी उनके मार्ग से कोई विचलित नहीं कर सका।
8. बुद्ध के लिए अवश्यक है कि संसार का कोई व्यक्ति उसका गुरु न हो। महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का भी कोई व्यक्ति गुरु न था।

इस प्रकार गौतम बुद्ध जी द्वारा की गई भविष्यवाणियों को यदि निष्पक्ष होकर निर्णय लिया जाये तो वह केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही सिद्ध होती है। यहां पर तो केवल संक्षेप में उल्लेख कर दिया गया है परन्तु कोई सज्जन यदि विस्तार पूर्वक तुलना करना चाहें तो वह नबी-ए-रह़मत (लेखक-मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी की पुस्तक) द्वारा तुलना कर सकते हैं। आशा है कि पाठक उपरोक्त बातों को समझ कर अवश्य ही सत्य को स्वीकार करेंगे।

भाग-5

पारसी धर्म के अनुसार अन्तिम ऋषि की भविष्यवाणियाँ

पारसी धर्म का संक्षिप्त परिचय

पारसी धर्म विश्व का एक महत्वपूर्ण धर्म है जिसके मुख्य सन्देष्टा जरदुशता (ZOROASTER) हैं जिनके अनुयाई को ज़रदुशती (ZORQASTERIAIN) कहा जाता है। जिसे आम लोग पारसी धर्म कहते हैं। यह ईरान का सबसे प्राचीन धर्म है इसे आतिश परस्त या मजूसी धर्म भी कहते हैं।

पारसी धर्म का मुख्य ग्रन्थ-

इस धर्म के प्रमुख ग्रन्थ दसातीर (DASTIR) और जेदवेस्ता (ZEDWASTA) है। जिसे हम फ़ारसी धर्म का ओल्ड एण्ड नयू टेस्टामेन्ट कह सकते हैं।

पारसी ग्रन्थों की भविष्यवाणियाँ

जैसा कि पिछले तमाम ग्रन्थों में भविष्यवाणी की गयी है, उसी प्रकार पारसी ग्रन्थों में भी एक अन्तिम आने वाले सन्देष्टा की भविष्यवाणी 'इब्द' (IBID) के XXVIII: 129 पर मौजूद है। जिस का सारांश इस प्रकार है:-

आने वाले सन्देष्टा का नाम

'इब्द' के पेज नं० XXVIII : 129 पर दिये गये नाम के अनुसार उसका नाम 'सोइश्यान्त (Soeshyant) और स्तवेत एरेता (Astvat Erata) होगा'।

सोइश्यान्त शब्द की व्याख्या

'इब्द' ग्रन्थ के इसी खण्ड में इसकी व्याख्या 'दयावान विजयी' की गयी है। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) मक्का विजय के अवसर पर जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अनुयाइयों ने अपना बदला लेने के लिए रक्तपात करना चाहा जो स्वभाविक था कहा 'अलयौम यौमुल् मल ह़मा' परन्तु आप (सल्ल०) ने फरमाया नहीं अलयौम यौमुल मरहमा। आज बदला देने का दिन नहीं बल्कि आज तो रह़मत (दया) का दिन है। इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के इस दया को देख कर तमाम शत्रुओं ने इस्लाम ग्रहण कर लिया।

(विस्तार के लिए खण्ड ख में देख सकते हैं)

स्तेवेत एरेता (ASTVAT ERATA)

'जेन्द भाषा' और संस्कृत भाषा में इस शब्द की उत्पत्ति अस्तु से मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है 'प्रशंसनीय' (To praise) सिताउदान (Sitaudaninfinitive) जो पारसियों के यहाँ प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ होता है, 'प्रशंसा' (Praising)

उपर्युक्त शब्द को यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो यही अर्थ अ़रबी भाषी के शब्द मुह़म्मद का भी होता है 'प्रशंसनीय'।

अतः इससे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का नाम पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाता है। इसी प्रकार एक दूसरे स्थान पर 'दसातीर' नं० 14 में सासानियों के नाम और अह़काम के सिद्धान्त के साथ अन्तिम आने वाले सन्देष्टा की भविष्यवाणी की गयी है जो स्पष्ट रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही सिद्ध होती है।

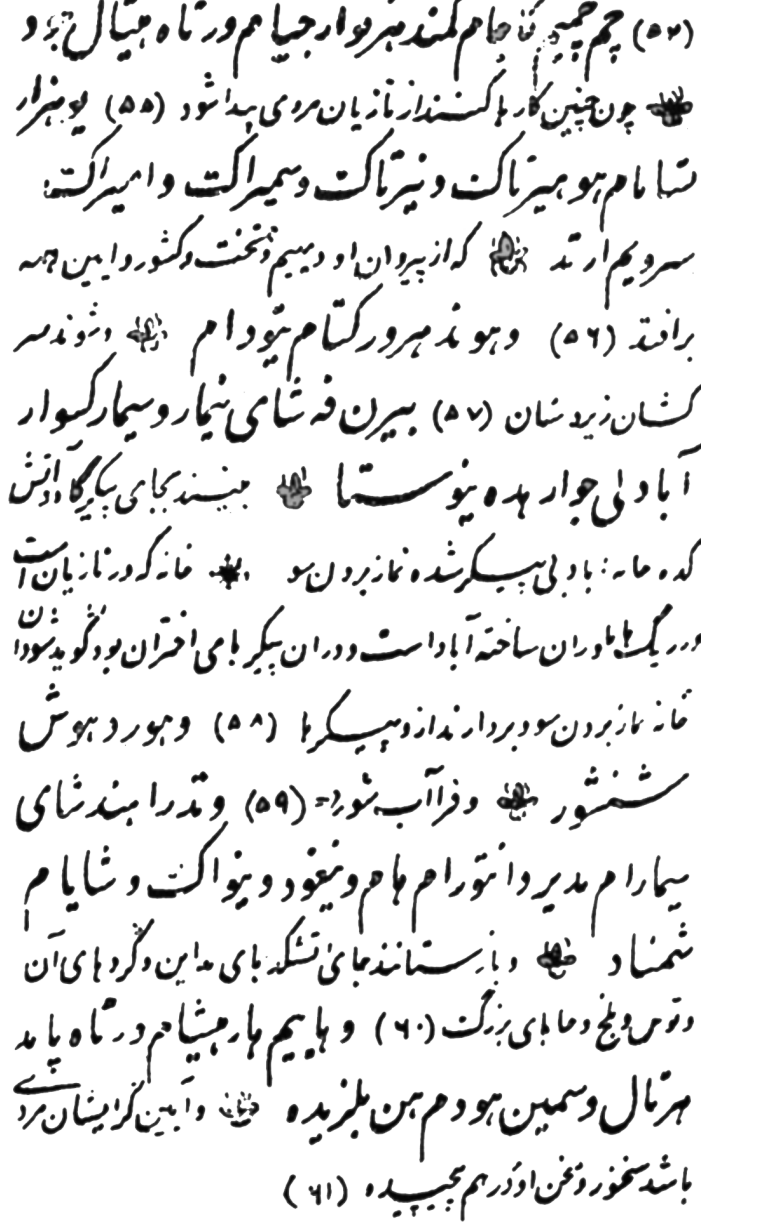

جسم (when) چیم (such) کا جام (deeds) کمند
(the Persians will do) حز توار حیارم (from among
the Arabs) ورتا (a man) عتیال هود (will be born)
هــو (from among the followers) یــو هزار تسا ماه
(of whom) هیرتاک و نیرتاک (crown and throne)
و سمیراک و امیراک (and kingdom and religion of
the Persians) سرویم ارتــــد all shall (be over-
thrown and dissoluted). و هونــد (And will be)
هر در کتام (the arrogant people) یتود ام (sub-
jugated). بیرن (They will see) فه شانی (in-
stead of) نیمــار (the house of idols) و سیمار
(and the temple of fire) کسوار (the house of
worship) آبــاد (of Abraham) بــی جــوارهده
(without any idols in it) نیوسنا (the Qibla).

هــوش شینشور (And they will be) و هــوزد
(a mercy for the worlds) وتد (and then) راهند
(they will capture) شانی ها (places) سیما رام (of
the temples of fire) مــدیر (Madain or Ctesiphon)
حــام (and of the surrounding places) و اتو رام
(of it) و نیغود (and Tūs) و نیواک (and Balkh)
و شایام (and other places) شمناد (of eminence
and sacred) -و (and) هایم هار (religious leader)
هشیام (their's) ورتا پاند (will be a man) هرتال
(eloquent) وسمن هو (and his message or what he
will say) دم هن تندده (will be well-connected)

अनुवाद-

"जब ईरानी नैतिक रूप से बिल्कुल पस्त हो जाएँगे तो अ़रब में एक व्यक्ति पैदा होगा जिसके साथी ईरानियों के ताज, सत्ता एवं धर्म सब को नष्ट कर देंगे वह घर जो बनाया गया था ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) द्वारा (अर्थात कअ़बा शरीफ़) जिसमें बहुत से बुत रखे हुए हैं उन बुतों से वह पाक कर दिया जाएगा और लोग उस घर की ओर मुँह करके अ़िबादत करेंगे। इस व्यक्ति के मानने वाले पारसियों के नगर तूस, बलख और बड़े-बड़े स्थानों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। लोग एक दूसरे से युद्ध करेंगे और ईरान के बद्धिमान लोग और अन्य लोग उनके साथियों के साथ हो जाएँगे"।

इस प्रकार यह सभी घटनाएँ ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही सिद्ध होती हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भी अ़रब में पैदा हुए। आप (सल्ल०) को सत्ता भी मिली तथा मक्का निवासियों के बहुदेव वादियों को एकेश्वर वाद की शिक्षा दी और बैतुल्लाह को तमाम बुतों से फ़तेह़ मक्का के अवसर पर पाक किया और आज तक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही नहीं बल्कि उनके अनुयाई भी कअ़बः की ओर ही मुँह कर के नमाज़ पढ़ते हैं और ह़ज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) की ख़िलाफ़त के समय तक वह तमाम हिस्सा फ़तेह़ हो चुका था जिसका वर्णन ऊपर किया गया जिसमें से अधिकांश लोगों ने इस्लामी शिक्षा को स्वीकार भी कर लिया था।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि यह भविष्यवाणी केवल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के लिए ही की गई है और उन्हीं पर पूर्णरूप से सिद्ध होती है इसके अतिरिक्त भी कई स्थानों पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की विशेषताओं का उल्लेख है। जिसे आवश्यक हो वह विस्तार के लिए **मुह़म्मद इन पारसी** (ए० एच० विद्यार्थी साहब की किताब) को देख सकते हैं।

भाग-6

यहूदी धर्म के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ तौरेत के पन्नों में

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) के ऊपर अवतरित "व्यवस्था विवरण" नामक पुस्तक में एक ऐसे ऋषि के होने की भविष्यवाणी की गई है जो ह़ज़रत मूसा के ही समान हो और उसके भाइयों के मध्य हो। उस ऋषि के मुँह में ईश्वरीय वचन के प्रवेश की बात होने के अतिरिक्त ईश्वरीय आदेश को प्रसारित करने की बात भी ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की पुस्तक में किया गया है।

"हे मूसा! मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करुँगा और अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा। **(व्यवस्था विवरण 18-18)**

तौरेत की इस पंक्ति को ईसाई भाई ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के सम्बन्ध में भविष्यवाणी समझते हैं परन्तु ऐसा नहीं है। यहाँ तो स्पष्ट रूप से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का बयान है। जिसमें निम्न सूत्र उल्लेखनीय है:-

उनके (अर्थात इस्राईलियों के) भाइयों के बीच में होगा-

ईशदूत ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दो पुत्र थे, इस्माईल व इस्हाक़। इस्माईल का वंश इस्माईली कहलाता है और इस्हाक़ के पुत्र की उपाधि इस्राईली होने के कारण उन की सन्तान इस्राईली कहलाती है।

इस प्रकार ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) के दो पुत्रों से दो ख़ानदान चले, इस्राईली व इस्माईली। ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) इस्राईली थे, परन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) इस्राईलियों के भाइयों अर्थात इस्माईलियों में से थे। बाइबिल में भाइयों का शब्द इन्हीं दोनों ख़ानदानों के परस्पर भाई होने के अर्थ में कई स्थानों पर प्रयोग हुआ है। **(विस्तार के लिए देखें उत्पत्ति 16-12)**

अतः यह भविष्यवाणी ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के लिए न होकर ह़ज़रत

मुहम्मद (सल्ल०) के लिए थी। जिनका ज़िक्र बाइबिल में मुहम्मद और अहमद नाम से भी आया है।

उदाहरण के लिए मूल इब्रानी (Hebrew) भाषा में निम्न पंक्ति को (देवनागरी अक्षरों में) देखें।

"हिक्को ममित्तादिम विकुल्लो महामदेम ज़ेहदूरी बेज़ेम राई बनूटे"।

(यापुस हलम श्रेष्ठ गीत 5116)

अनुवाद- "उस का मुखड़ा बहुत है। हाँ, वह महामद हैं। यही मेरा प्रीतम और यही मेरा मित्र है, यरुशलेम की पुत्रियों"।

शब्द महामदेम की व्याख्या

इब्रानी भाषा में नाम के अन्त में "एम" (Emorim) शब्द सम्मान देने के लिए लगाया जाता है। बाइबिल के उपलब्ध अनुवादों में 'महामद' का भी अनुवाद कर दिया गया है। जैसे बहुत से वेदों के अनुवादों में "नराशंस" शब्द का भी अनुवाद कर दिया गया है संयोगवश इब्रानी में भी महामद का वही अर्थ है जो अरबी में मुहम्मद तथा संस्कृत में नराशंस का।

तेरे (अर्थात मूसा के) समान एक नबी आएगा

ऊपर दी गई भाविष्यवाणी में आने वाले नबी के सम्बन्ध में हज़रत मूसा (अलै०) के समान बताया गया है जिसे हम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की जीवनी से इस प्रकार तुलना कर सकते हैं।

हज़रत मूसा (अलै०) और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) में समानता

उपर्युक्त पंक्ति में हज़रत मूसा (अलै०) और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) में समानता बताई गई है जो निम्न प्रकार से थीः-

1- नाम में समानता-

दोनों के नाम हिन्दी में 'म' उर्दू में 'मीम' अंग्रेज़ी में 'एम' से शरु होते हैं जैसे- मूसा, मुहम्मद।

2- विवाह में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) ने विवाह किया उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भी विवाह किया।

3- अनुयाइयों में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) के अनुयाइयों ने धोखा नहीं दिया, उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के अनुयाइयों ने भी धोखा नहीं दिया बल्कि पूरा अनुसरण किया।

4- हिजरत में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) ने हिजरत की मदयन की ओर उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हिजरत की मदीने की ओर।

5- विरोधियों से जिहाद में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) को जिहाद करना पड़ा अपने विरोधियों से, उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भी अपने विरोधियों से किसी न किसी रूप से जिहाद करना पड़ा।

6- शरीअत (ईश्वरीय विधान)

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) शरीअत लेकर आये, उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी शरीअत लेकर आये।

7- संकलन में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) पर अवतरित ईशग्रन्थ को उनके जीवनकाल में लिख लिया गया था उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित ईश ग्रन्थ को भी उनके जीवनकाल में ही लिख लिया गया था।

8- क़ौम में समानता-

जिस प्रकार हज़रत मूसा (अलै०) की क़ौम ने पहले विरोध किया और बाद में स्वीकार किया उसी प्रकार हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की क़ौम ने भी पहले

इन्कार किया बाद में स्वीकार किया।

9- दीर्घायु में समानता-

जिस प्रकार ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) का दीर्घायु में स्वर्गवास हुआ, उसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का भी दीर्घायु में स्वर्गवास हुआ।

10- मृत्यु मे समानता-

जिस प्रकार ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की मृत्यु एक साधारण मनुष्य की तरह हुई उसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की भी मृत्यु एक साधारण मनुष्य की तरह हुई।

उपरोक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत मूसा (अलै०) के द्वारा दी गई भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही पूर्ण रूप से सिद्ध होते हैं।

ईश्वरीय वचनों को प्रसारित करना

पवित्र कुर्आन जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अवतरित होना शुरु हुआ तो जो सब से पहली ईश्वरीय वाणी आयी वह इस प्रकार हैः-

"पढ़ो (ऐ मुह़म्मद!) अपने पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया"।

(सूरः अ़लक़-1)

इसके बाद पूरा कुर्आन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अवतरित हुआ जिसे पूरा का पूरा उन्हीं शब्दों में आप (सल्ल०) ने तमाम इन्सानों तक अपने मुँह में डाले गये वचन को अपने शब्दों में परिवर्तित किये बिना ईश्वरीय वाणी को उसी रूप में (कुर्आन के रूप में) पहुँचा दिया।

यही अर्थ है उस भविष्यवाणी का जिसमें कहा गया था कि "अपनी वाणी उसके मुँह में डालूँगा। इसलिए कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने भी ईश्वरीय वचनों को प्राप्त करके उन्हें अ़रब वालों के मध्य प्रसारित किया जिससे उनके जीवन की काया पलट गयी और उनकी ज़िन्दगी में बहार आ गई।

भाग-7

इंजील के अनुसार अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणियाँ

ह़ज़रत ईसा मसीह़ (अ़लै०) की भविष्यवाणियाँ

तौरेत के बाद जब हम इन्जील की दुनिया में क़दम रखते हैं तो यहाँ तो और भी स्पष्ट रूप से अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में भविष्यवाणियाँ मिलती हैं। जो इस प्रकार हैं:-

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) ने फ़रमाया, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे और मैं पिता से विनती करुँगा कि वह तुम्हें एक और सहायक देगा, जो सर्वथा तुम्हारे साथ होगा"।

(यूह़न्ना 14:15,16)

"परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा"। **(यूह़न्ना 14/26)**

"और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं अब से तुम्हारे साथ बहुत बातें न करुँगा क्योंकि इस संसार का सरदार आएगा"। **(यूह़न्ना 14-30)**

"परन्तु जब वह सहायक आयेगा जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा अर्थात सत्य की आत्मा, जो पिता की ओर से निकलती है, तो वह मेरी गवाही देगा"। **(यूह़न्ना 15-26)**

ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तुल्नात्मक दृष्टि से

ऊपर दी गयी भविष्यवाणी की तुलना ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से इस प्रकार होती है:-

1. वह सर्वथा तुम्हारे साथ होगा-

इसका तात्पर्य यह है कि जिस आने वाले की सूचना दी जा रही है वह अन्तिम ईश सन्देश वाहक होगा उसके बाद न कोई सन्देष्टा आयेगा और न कोई

ईश्वरीय विधान, वह ईश दूत और उस पर अवतरित क़ुर्आन प्रलय काल तक के लिए होगा।

2. तुम्हें सत्य का मार्ग बताएगा-

वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा परन्तु जो सुनेगा वही कहेगा, महामान्य के प्रति ईश्वरीय ग्रन्थ क़ुर्आन में है।

"वह (ह़ज़रत मुह़म्मद सल्ल०) अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहता यह तो ईश्वरीय वाणी हैं जो उस पर अवतरित होती हैं"। **(सूरः यूसुफ़ आयत नं० 2)**

3. वह मेरी गवाही देगा-

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) एक ही वंश के थे और मान्य ईसा यहूदियों ही की शिक्षा और सुधार के लिए आये थे, परन्तु धर्म भ्रष्टों ने ईसा (अ़लै०) के कुंवारी मरयम से पैदा होने को लेकर उन पर और उनकी माता पर दोष भी लगाया। महामान्य मुह़म्मद (सल्ल०) ने मान्य ईसा (अ़लै०) की पवित्रता की भी गवाही दी तथा उनके मानने वाले मुसलमान भी इसकी गवाही देते हैं।

पैराक्लीट की वास्तविकता

"वह ऋषि जिसे ग्रीक भाषा में लिखे गये बाइबिल में पैराक्लीट (फ़ारकलीत) कहा गया है। उसके विषय में विवरण इस प्रकार है:-

पैराक्लीट शब्द का अर्थ बाइबिल में जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद कम्फ़र्टर (Comforter) "आराम पहुँचाने वाला" तथा हिन्दी में सहायक दिया गया है। सर विलियम म्योर ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की जीवन कथा लिखते समय अपने ग्रन्थ के संक्षिप्त संस्करण में उल्लेख किया है कि "अ़रब के लोगों के मध्य किसी का नाम मुह़म्मद पड़ जाना एक नवीन और विचित्र बात थी। यद्यपि यह नाम अ़रब लोगों को अज्ञात नहीं था परन्तु नवीन अवश्य था। यह अ़रबी भाषा के 'ह़म्द' धातु से बना है, जिस का अर्थ होता है "प्रशंसित" ह़म्द धातु से निकला हुआ दूसरा शब्द "अह़मद" बनता है। बाइबिल के New Testamant (न्यु टैस्टा मेन्ट) के अ़रबी में अनुदित कुछ संस्करणों में पैराक्लीट का अर्थ अह़मद दिया हुआ है।

सर विलियम म्योर ने इस बात का उल्लेख किया है कि मरियम के पुत्र ईसा

मसीह ने इस बात की ओर लोगों का ध्यान आकृष्टि किया है, कि मैं पुरातन विधान की पुष्टि एवं समर्थन के लिए भेजा गया हूं। परन्तु मेरे बाद भी एक सन्देष्टा होगा, जिसका नाम 'अह़मद' होगा यहाँ अह़मद नाम 'पैराक्लीट' के लिये प्रयुक्त हुआ है। क्योंकि बाइबिल में ईसा मसीह ने अपने बाद आने वाले ऋषि को 'पैराक्लीट' शब्द से व्यक्त करते हुए उसकी बातों के मानने के लिए भी लोगों को उत्साहित किया है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि 'पैराक्लीट' का अर्थ प्रशंसक होता है, जिस का अ़रबी अनुवाद 'अह़मद' होता है। इसी प्रकार पवित्र कुर्आन में भी बनी इस्राईली जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ईश सन्देशवाहक मानने से इन्कार कर रहे थे मान्य ईसा की भविष्यवाणी इस प्रकार याद दिलाई है।

"याद करो मरयम के पुत्र ईसा (अ़लै०) की वह बात जो उसने कही थी कि ऐ इस्राईल की संतानों, मैं तुम्हारी ओर अल्लाह को भेजा हुआ सन्देष्टा हूँ, सत्य सिद्ध करने वाला हूँ, उस तौरात को जो मुझ से पहले आयी हुई विद्यमान है तथा हर्ष सूचना देता हूँ एक सन्देशवाहक की जो मेरे बाद आएगा उसका नाम अह़मद होगा"। **(सूरः सफ़, आयत नं० 6)**

प्रसिद्ध ईसाई विद्वान सर विलियम म्योर ने सिद्ध किया है कि बाइबिल में पैराक्लीट शब्द अह़मद के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यहाँ तक कि स्वयं ईसाई बाइबिल के अ़रबी अनुवाद में पैराक्लीट का अनुवाद अ़हमद ही करते थे। फिर इस विचार से कि मुसलमान माँग करेंगे कि तुम्हारी धार्मिक पुस्तक में हमारे सन्देष्टा की भविष्यवाणी है, तो उसके अह़मद अर्थ को छोड़कर 'आराम देने वाले' या 'सहायक' अनुवाद करने लगे।

बाईबिल में संशोधन

बाइबिल की प्रचलित चार इन्जील मान्य ईसा (अ़०) के समय की या उनके शिष्यों की लिखी हुई नहीं हैं। यूनानी बोलने वाले ईसाइयों की लिखी हुई हैं जिन्होंने मान्य ईसा के बाद ईसाई धर्म ग्रहण किया था। चारों इन्जीलों में मान्य ईसा के बाद सत्तर वर्ष पहले की लिखी हुई कोई इन्जील नहीं है। यूहन्ना की इन्जील तो एक शताब्दी बाद लिखी गयी। मान्य ईसा की भाषा सुर्यानी थी यूनानियों ने इसी भाषा के बोलने वालों से सुनी हुई बातों को अपनी भाषा में अनुवाद कर दिया, और प्रचलित इन्जील उस रूप में भी सुरक्षित नहीं है।

'इन्साइक्लोंपीडिया ब्रिटानिका' में बाइबिल विषय के निबन्ध का लेखक लिखता है।

"इन्जीलों में ऐसे स्पष्ट परिवर्तन किये गये हैं जैसे उदाहरण स्वरूप पूरे-पूरे उद्धरणों को किसी दूसरे मूल से लेकर सम्मिलित कर देना—यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से लोगों ने इच्छानुसार किये जिन्हें मूल पुस्तक में सम्मिलित करने के लिए कहीं से कोई मैटर मिल गया, और वह अपने को इसका अधिकारी समझते थे कि पुस्तक को अधिक लाभ दायक बनाने के लिए उसमें मैटर की वृद्धि कर दें, बहुत सी वृद्धि तो दूसरी ही शताब्दी में हुई थी और कुछ मालूम नहीं कि उनका उद्गम क्या था"।

इतने भ्रष्टाचार पर भी महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के ईश्दूत का चमत्कार है कि बाइबिल में महामान्य से सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ सुरक्षित हैं।

पैराक्लीट का अर्थ-

अब पैराक्लीट के विषय को देखिये यूह़न्ना की इन्जील में यूनानी भाषा का जो शब्द प्रयुक्त हुआ है उसके विषय में ईसाइयें को आग्रह है कि वह Paraecletus है, परन्तु उसका अर्थ निश्चित करने में स्वयं ईसाई विद्वानों के कई अर्थ हैं किसी स्थान की ओर बुलाना, सहायक के लिए पुकारना भय या, चेतावनी, या इच्छा दिलाना, उकसाना, निवेदन व प्रार्थना करना, बाइबिल में जहाँ यह शब्द प्रयुक्त हुए हैं वहाँ यह अर्थ सही नहीं बैठते। ओरिजिन (Origen) में कहीं इसका अनुवाद कान्वसोलेटर (Consalator) और कहीं डिसेप्टर (Deceptar) किया है किन्तु व्याख्या कारों ने इन दोनों अनुवादों को रद्द कर दिया है क्योंकि यह यूनानी व्याकरण के विरुद्ध है तथा जहाँ-जहाँ यह शब्द आया है वहाँ-वहाँ यह अर्थ नहीं चलता तर्तोलियन और आगस्टाइन ने एडवोकेट (Advocate) को प्रमुख्यता दी है। कुछ विद्वानों ने एसिस्टेन्ट (Assitent) और कम्फ़ार्टर (Comforter) तथा कंसोलर (Consoler) आदि शब्द प्रयुक्त किये हैं"।

(इन्साइक्लो पीडिया आफ़ बाइबिल लिटरेचर शब्द पेरा क्लीटस)

यूनानी भाषा में एक दूसरा शब्द पेरीक्लोर्स (Periclros) विद्यमान है जिसका अर्थ प्रशंसित मुह़म्मद सम अर्थ है तथा यह शब्द और पैराक्लीटस (Paracletus) दोनों मिलते जुलते शब्द हैं। हो सकता है भ्रष्टाचारी लोगों ने पहले शब्द को दूसरे

शब्द से बदल दिया हो। यूहन्ना की यूनानी इन्जील है ही नहीं, जिससे पता चलता कि यूहन्ना ने कौन सा शब्द प्रयुक्त किया था इसके अतिरिक्त यूहन्ना की इन्जील भी निर्णायक नहीं क्योंकि मान्य ईसा की भाषा सूर्यानी थी। यूहन्ना ने अनुवाद ही किया था, फिर यह कैसे मालूम हो कि मान्य ईसा ने अपने सुर्यानी भाषा में किस शब्द का प्रयोग किया था? इसका उत्तर यह है कि मान्य ईसा ने "मुन्हामन्ना" शब्द प्रयुक्त किया था जिसका यूनानी अनुवाद 'मुह़म्मद' है।

इसका प्रमाण यह है कि फिलिस्तीन सातवीं शताब्दी के मध्य काल में मुसलमानों के विजित देशों में सम्मिलित हो चुका था और नवीं शताबदी तक वहाँ के ईसाइयों की भाषा सुर्यानी ही थी। अतः फिलिस्तीन के निवासियों से भी मुसलमानों का सम्पर्क स्थापित हो चुका था, मुसलमानों के दूसरे विजित प्रदेशों में भी सुर्यानी बोलने वाले लाखों ईसाई रहते थे। मुसलमान विद्धानों को ईसाइयों से उनके धर्म की जानकारी प्राप्त करना सुगम था। प्रसिद्ध अ़रब इतिहासकार "मुह़म्मद बिन इस्हाक़" के हवाले से दूसरे प्रसिद्ध अ़रब इतिहास लेखक 'इब्ने हिशाम' ने अपनी पुस्तक में मान्य ईसा (अ़लै०) की पूर्ण भविष्यवाणी विस्तार पूर्वक लिखी है और उसमें 'मुन्हमन्ना' शब्द प्रयुक्त किया है।

इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि मान्य ईसा ने आने वाले सन्देष्टा का नाम अपनी भाषा में "मुन्हमन्ना" बताया था जिसका अनुवाद "अह़मद" होता है जो अन्तिम ईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में सिद्ध होता है। 'पैराक्लीट' शब्द भ्रष्टाचारी ईसाइयों का गढ़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त मान्य ईसा (अ़लै०) की भविष्यवाणियों से सिद्ध हो चुका है कि जो उन्होंने भविष्यवाणी की है वह सब महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ही घटित होती है।

भाग-8

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पूर्व अ़रब कवियों की भविष्यवाणियाँ

अ़रब कवियों और नुजूमियों की भविष्यवाणियाँ और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

जिस समय ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने का ज़माना क़रीब था उस समय क़वियों और नुजूमियों, काहिनों ने भी भविष्यवाणी करनी शुरु कर दी थी कि अब एक ऐसा समाज सुधारक सन्देष्टा आने वाला है जो विश्व नायक होगा।

राइश के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

1- यमन का वह पहला बादशाह जिस का लक़ब (उपाधि) राइश था, उसने अन्तिम महाईशदूत के आने की भविष्यवाणी उस समय सुनी थी जब उसने मदीना शहर पर अधिकार जमाने का इरादा किया था उसने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में इस प्रकार गवाही दीः-

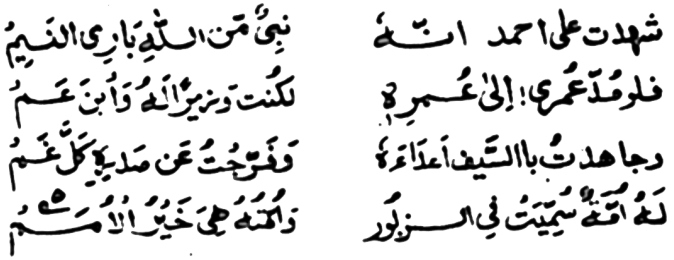

अनुवाद-

अह़मद (सल्ल०) के सम्बन्ध में, गवाही देता हूँ कि आप (सल्ल०) अल्लाह के ईशदूत हैं। जो तमाम प्राकृति का जन्म दाता है।

* यदि मेरी आयु ने साथ दिया तो मैं उनका सहायक और भाई बन जाऊँगा, और उनके दुश्मनों से युद्ध करुँगा और उनके हर दुख दर्द को समाप्त करुँगा।

* आपको एक ऐसे समूह (उम्मत) में पैदा किया जाएगा जो सर्वश्रेष्ठ उम्मत होगी जिसका ज़िक्र ज़ुबूर में मौजूद है।

इसी प्रकार एक दूसरे स्थान पर भविष्यवाणी करते हुए कहा-

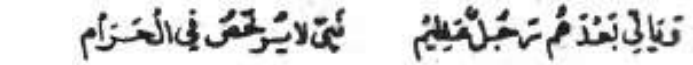

अनुवाद-

"इन नबियों के बाद एक उच्च श्रेणी का इन्सान आएगा जो महाईशदूत होगाा और वह वर्जित वस्तुओं के सम्बन्ध में किसी रिआ़यत से काम न लेगा"।

वरक़ा बिन नौफ़ल के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम-

2- वरक़ा बिन नौफ़ल बिन असअद जाहिली ईसाई थे और तौरेत वह इन्जील के माहिर थे। इस के अतिरिक्त इन्जील की किताबत इब्रानी भाषा में किया करते थे, जो बूढ़े और कमज़ोर हो गये थे और आँख की रौशनी भी चली गई थी। बचपन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की पेशानी (मस्तक) को चूमते और कहते, आप अन्तिम सन्देष्टा होने वाले हैं।

जब आप (सल्ल०) की आयु चालीस वर्ष की हुई और आप (सल्ल०) पर पवित्र क़ुर्आन नाज़िल (अवतरित) होना शुरु हुआ तो आप (सल्ल०) की पत्नी ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने आप (सल्ल०) को वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गयी और पूरा क़िस्सा सुनाया। सुनते ही वरक़ा बिन नौफ़ल ने यह अशआ़र पढ़ेः-

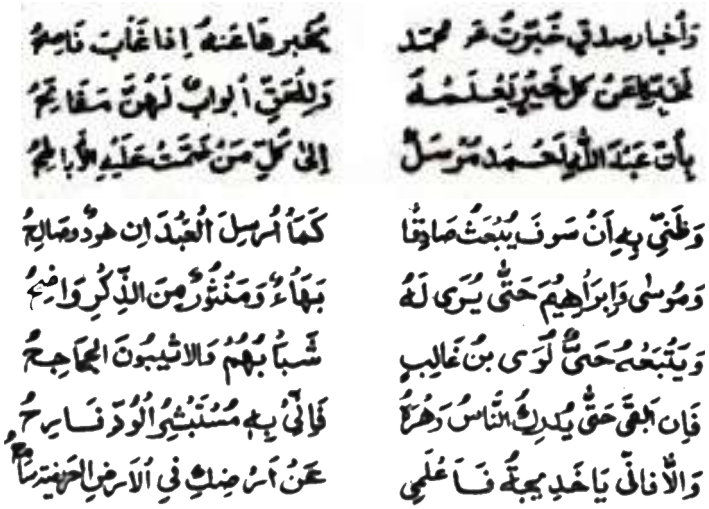

अनुवाद-

वह सच्ची भविष्यवाणियां जो समाज सुधारक के आने से पूर्व ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में मालूम हुई हैं।

* हमें हर वह भली बात से सचेत करो जो उसके विषय में मालूम हो निःसन्देह ह़क़ (सत्य) के द्वार खुलने वाले हैं।

*(अब तो अवश्य) ईश्वर भक्त अह़मद बतह़ा के निवासियों में रसूल (सन्देष्टा) बना कर भेजे जाएँगे।

* मेरा विचार है कि वह भविष्य में शीघ्र ही सादिक़ व मस्दूक (सत्यवादी) बना कर भेजे जाएँगे। जैसे कि दो नेक बन्दे हूद और स़ालेह़ (अ़लै०) का अभ्योदय हो चुका है।

* और जैसे ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की आमद उसकी दयालुता और स्नेह प्रियता, उनके सन्देष्टा होने की खुली निशानी होगी।

* लुवई बिन ग़ालिब के नौजवान और श्रद्धा पात्र लोग उसका अनुसरण करेंगे।

* यदि मैं ज़िन्दा रहा, यहाँ तक कि लोग उसका ज़माना पाएँ तो यह मेरे लिए बेहद प्रसन्नता की बात होगी वरना ऐ ख़दीज़ा! तुम समझ लो कि मैं तुम्हारी इस जगह को छोड़ कर विस्तृत दुनिया में अ़िबादत के लिए घूमता फिरता रहूँगा।

एक दूसरे स्थान पर इसी प्रकार इन्हों ने कहा कि-

وَإِنْ يَكُ حَقًّا خَدِيجَةُ فَاعْلَمِي ... حَدِيثُكِ إِيَّاهُ فَأَحْمَدُ مُرْسَلُ

وَجِبْرِيلُ يَأْتِيهِ وَمِيكَالُ فَاعْلَمِي ... مِنَ اللهِ وَحْيٌ يَشْرَحُ الصَّدْرَ مُنْزَلُ

وَيَفْرُجُ بِهِ مَنْ فَارَ فِيهَا بِتَوْبَةٍ ... وَيُشْقَى بِهِ الْعَاتِي الْعَزِيزُ الْمُذَلَّلُ

अनुवाद- "ऐ ख़दीजा! यदि तुम्हारा बयान उस ज़ाते गिरामी के विषय में सच है तो यक़ीन करो कि वह अह़मद (सल्ल०) सन्देष्टा होगा।

* और समझ लो कि जिब्राईल व मीकाईल ईशसन्देश लेकर आएँगे जो दिलों के बन्द दरवाज़े खोल देंगे।

* जिसने अपनी पिछली ज़िन्दगी को छोड़ कर उस सन्देष्टा से सम्बन्ध स्थापित

कर लिया वही कामियाब होगा और आप (सल्ल०) का विरोध करने वाला गुमराह व बरबाद होगा।

इसी प्रकार एक और स्थान पर इस प्रकार कहा-

لَحَجَّتْ وَكُنْتُ فِي الذِّكْرَى لُجُوجَا ... لَهُمْ لَمَّا تَبَعَّثَ النَّشِيجَا

وَوَصْفٌ مِنْ خَدِيجَةَ بَعْدَ وَصْفٍ ... فَقَدْ طَالَ انْتِظَارِي يَا خَدِيجَةُ

بِبَطْنِ الْمَكَّتَيْنِ عَلَى رَجَائِي ... حَدِيثُكِ أَنْ أَرَى مِنْهُ خُرُوجَا

بِمَا خَبَّرْتِنَا عَنْ قَوْلِ قُسٍّ ... مِنَ الرُّهْبَانِ أَكْرِمْ أَنْ يَعُوجَا

بِأَنَّ مُحَمَّدًا سَيَسُودُ فِينَا ... وَيَخْصِمُ أَنْ يَكُونَ لَهُ جَحِيجَا

فَيَلْقَى مَنْ يُحَارِبُهُ خَسَارًا ... وَيَلْقَى مَنْ يُصَالِحُهُ فَلُوجَا

अनुवाद- "मैं उनकी याद में इतना खोया रहा कि सिसकियों और आहों में मुब्तिला हो गया"।

* ऐ ख़दीजा! तेरे बार-बार ज़िक्र करने से इन्तिज़ार की शिद्दत और बढ़ गयी।

* तेरी बातों से मुझे उम्मीद है कि मक्का या उस के आस पास ही में मैं उस सन्देष्टा को देख लूँगा।

* मस्तूरा राहिब की जो बातें तुम ने हमें बताई हैं उसके कारण मैं नहीं चाहता कि वह वहाँ ठहरे।

* निःसन्देह मुह़म्मद हममें श्रद्धा पात्र होंगे और अपने शत्रु को पराजित करेंगे।

* जो उनसे युद्ध करेगा वह निःसन्देह नुक़सान उठाएगा, जो उनसे सुलह़ करेगा वही कामियाब होगा।

* जब वह नबी बनाकर भेजे जाएँगे तो काश मैं ह़ाज़िर रहता और तुम सब से पहले मैं उनकी गवाही और उनका धर्म ग्रहण कर लेता।

फ़ातिमा बिन्त मुर्रह की भविष्यवाणियाँ

इस प्रकार इस नये और अन्तिम नबी (सन्देष्टा) की भविष्यवाणी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आने से पूर्व इतनी प्रचलित हो गयी थी कि मर्द तो मर्द

औरतें तक इसकी आशा और इन्तिज़ार किये बैठी थीं कि यह सन्देष्टा उन्हीं की कोख से जन्म ले और वही इस आने वाले अन्तिम सन्देष्टा की माँ बने, उन्हीं औरतों में से एक फ़ातिमा बिन्त मुर्रह हसअ़मिया नाम की थीं। जब उन्होंने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पिता ह़ज़रत अब्दुल्लाह के मस्तक को देखा तो कुछ महसूस किया और तुरन्त अपने शादी का पैग़ाम भेज दिया जिसे अब्दुल्लाह ने स्वीकार नहीं किया उस पर उन्होंने यह अशआ़र पढ़े:-

إِنِّي رَأَيْتُ مُحَيَّلَةً نَشَأَتْ ... فَتَلأْلأَتْ بِعَنَاطِمِ الْعَطَرِ

فَلَمَّا رَأَيْتُهَا نُورًا يُضِيءُ بِهِ ... مَا حَوْلَهُ كَإِضَاءَةِ الْفَجْرِ

وَرَأَيْتُهُ شَرِفًا أَبُوهُ بِهِ ... مَا كُلُّ قَادِحَةٍ يُورِي

لِلّٰهِ مَا نَهْرِيَّةٌ سَلَبَتْ ... مِنْكَ الَّذِي اسْتَلَبَتْ وَمَا تَذَرِي

अनुवाद- मैंने ऐसा चेहरा देखा जो पवित्र इत्र द्वारा खुश्बूओं से परिपूर्ण था।

* मैंने उसके अन्दर वह नूर (प्रकाश) देखा जिसकी किरणें सुशोभित हो रही थीं।
* मैंने सोच लिया कि इस श्रद्धापात्र को अपना लूँ कि हर एक प्रकाशवान नहीं होता।
* क़सम है जिस जहरीय: (अर्थात आमिना) ने तुम्हारे अन्दर से निचोड़ लिया और तुम क्या जानो कि वह नूर क्या चीज़ थी?

ह़ज़र बिन मालिक की भविष्यवाणियाँ

एक बार लोगों ने आश्चर्यजनक ढंग से कुछ ऐसे सितारे देखे जो अक्सर दिखाई नहीं देते। अत: लोग 'ह़ज़र बिन मालिक' जो एक बूढ़ा आदमी था और इल्म नुजूम (सितारों का माहिर) का जानने वाला और बहुत बड़ा काहिन था के पास इकट्ठा हुए और उससे पूरा क़िस्सा बताया तो इस पर वह बड़ी देर तक विचार करता रहा इसके बाद उसने इस प्रकार उत्तर दिया:-

يَا مَعْشَرَ بَنِي قَحْطَانَ ... أُخْبِرُكُمْ بِالْحَقِّ وَالْبَيَانِ

أُقْسِمُ بِالْكَعْبَةِ وَالْأَرْكَانِ ... وَالْبَلَدِ الْمُؤْتَمَنِ السَّنَانِ

لَقَدْ مُنِعَ السَّمْعُ عُتَاةَ الْجَانِّ ... بِثَاقِبٍ بِكَفِّ ذِي سُلْطَانِ

مِنْ أَجْلِ مَبْعُوثٍ عَظِيمِ الشَّانِ ... يُبْعَثُ بِالتَّنْزِيلِ لِلْقُرْآنِ

وَبِالْهُدَى وَفَاضِلِ الْقُرْآنِ ... تَبْطُلُ بِهِ عِبَادَةُ الْأَوْثَانِ

अनुवाद- ऐ बनी क़हतान के लोगों! मैं तुम से सच्ची बात विस्तृत रूप से बयान करता हूँ।

* मैं कअ़ब: शरीफ़, चारों रुक्न और पर्दा वाले शहर अमीन की क़सम खा कर कहता हूँ कि अब सरकश जिनों से सुनने की ताक़त खींच ली गई है। ऐसे सितारों के ज़रिये जो पूरी क्षमता (क़ुदरत) रखने वाले हैं।
* ऐसा इस लिए किया गया कि एक श्रद्धा युक्त सन्देष्टा (पैग़म्बर) आने वाला है। जिसको एक पवित्र ईश्वरीय पुस्तक देकर भेजा जायेगा।
* अब वह परवरदिगार की हिदायत और उस पवित्र पुस्तक के (क़ुर्आन) आचरण की तलवार से बुतपरस्ती का ख़ात्मा कर देगा।

लोगों ने यह सुना तो कहा कि तुम तो एक आश्चर्यजनक बात की ओर संकेत कर रहे हो। यदि ऐसा ही हो गया तो तुम अपनी क़ौम के लोगों के लिए क्या सन्देश देते हो? उसने उत्तर दिया:-

أَرَى لِقَوْمِي مَا أَرَى لِنَفْسِي ... أَنْ يَتَّبِعُوا خَيْرَ نَبِيِّ الْإِنْسِ

بُرْهَانُهُ مِثْلُ شُعَاعِ الشَّمْسِ ... يُبْعَثُ فِي مَكَّةَ دَارِ الْحُمْسِ

بِمُحْكَمِ التَّنْزِيلِ غَيْرِ اللَّبْسِ

अनुवाद- मैं अपनी क़ौम के लिए वही उचित समझता हूँ जो स्वयं अपने लिए पसद करता हूँ और वह यह कि उस नबी (सन्देष्टा) का अनुसरण करें।

* उस नबी (सन्देष्टा) के प्रमाण सूर्य की किरणों के समान प्रकाशवान होंगे, वह मक्का में पैदा होंगे और बिना किसी शंका के एक ईश्वरीय ज्ञान लेकर आएँगे।

कअ़ब बिन लुवइ की भविष्यवाणियाँ-

यह वह पहला व्यक्ति है जिसने लोगों को एक बार जुमा के दिन इकट्ठा

करके भाषण दिया, जिसमें कुछ उपदेश दिये और अन्तिम सन्देष्टा की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए अन्त में उसने कहाः-

عَلٰى غَفْلَةٍ يَاتِى النَّبِى مُحَمَّدٌ فَيُخْبِرُ اَخْبَارًا صِدْقٌ خَبِيْرُهَا

अनुवाद- अचानक नबी (सन्देष्टा) मुहम्मद पैदा होंगे और लोगों को सच्ची बातें बताएँगे।

इसी प्रकार जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म हुआ तो आप की माता ने अपने सुसर (अब्दुलमुत्तलिब) को बुलवा भेजा कि आकर अपने पोते को देख लें। आपको देखते ही आपके दादा ने गोद लिया और लेकर कअ़बः शरीफ़ में गये और दुआ़ करते हुए यह शब्द कहेः-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَعْطَانِىْ هٰذَا الْغُلَامَ الطَّيِّبَ الْاَرْدَانِ
قَدْ سَادَ فِى الْمَهْدِ عَلَى الْغِلْمَانِ اُعِيْذُهٗ بِالْبَيْتِ ذِى الْاَرْكَانِ
اُعِيْذُهٗ مِنْ كُلِّ ذِىْ شَنَآنِ مِنْ حَاسِدٍ مُضْطَرِبِ الْعِنَانِ
اَنْتَ الَّذِىْ سُمِّيْتَ فِى الْقُرْاٰنِ فِىْ كُتُبٍ ثَانِيَةِ الْمَثَانِىْ
اَحْمَدُ مَكْتُوْبٌ عَلَى الْبَيَانِ

अनुवाद- "हर प्रकार की सभी प्रशन्साएँ उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें ऐसा पवित्र आचरण वाला बच्चा प्रदान किया"।

* दूध पीने के ही ज़माने से दूसरे अनेक बच्चों से भिन्न है। कई रुक्न वाले कअ़बः के ज़रिये इसके लिए पनाह चाहता हूँ।
* मैं इसके लिए हर प्रकार के ह़सद करने वालों के ह़सद (ईर्ष्या, द्वेष) से पनाह चाहता हूँ।
* ऐ परवरदिगार! तूने ही ईशग्रन्थ और बार-बार पढ़ी जाने वाली किताब में फरमाया है कि अह़मद का ज़िक्र साफ़-साफ़ पिछली पुस्तकों में मौजूद है।

इस प्रकार के बहुत से अरब कवियों ने भविष्यवाणी की जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर पूरी तरह सिद्ध हुई।

भाग-9

हिन्दी कवियों और सन्तों की भविष्यवाणियाँ

भक्ति काल के कवियों का गुणगान

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के मर्यादा चरित्र एवं महिमा का गुणगान हिन्दी कविता में भी हुआ है। हिन्दी के मुस्लिम सूफ़ी (सन्त) क़वियों के अतिरिक्त भक्ति काल के प्रमुख कवि तुलसीदास ने भी आप (सल्ल०) की महिमा का गुणगान किया है। सभी आस्थावान कवियों का विश्वास है कि आप (सल्ल०) परमेश्वर के सर्वाधिक प्रिय हैं और परमेश्वर ने आप (सल्ल०) के लिए सृष्टि की रचना की और सर्वप्रथम परमेश्वर ने आप (सल्ल०) की जीवात्मा को पैदा किया था।

क़ुर्आन में मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में इस प्रकार कहा गया है-

"हे नबी! हमने तुमको दुनिया वालों के लिए रह़मत (दयालुता) बनाकर भेजा है"। **(21:107)**

तात्पर्य यह है कि परमेश्वर ने आप (सल्ल०) को धरती के अन्धकार को दूर करने के लिए पैदा किया था।

इसी बात को जायसी ने 'पद्मावत' में स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए कहा-

जो न होत अस पुरुष उज्यारा, सूझि न परत पंथ अधियारा।

एक दूसरे स्थान पर लिखा है-

कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा, नाउ **मुह़म्मद** पूनिउ करा।
प्रथम ज्योति विधि तेहि कै साजी और तेहि प्रीति सिस्टि उपराजी।
दीपक लेसि जगत कह दीन्हा, मा निरमल जग मारग चीन्ह।

इसी प्रकार 'अखरावट' में लिखा है-

ऐसे जो ठाकुर किए एक दाऊँ-पहिले रचा **मुह़म्मद** नाऊँ
तोहि के प्रीति बीज अस जामा-भए दूइ विधि सेत औ सामा।

इसी प्रकार 'आख़िरी कलाम' में इस प्रकार लिखा है-

रतन एक विधने अवतारा, नाव **मुह़म्मद** जग उजियारा।

सूफ़ी कवि मंझन 'मधुमालती' में लिखते हैः-

उहइ ज्योति प्रगट सब ठाऊं, दीपक सिस्टि **मुह़म्मद** नाऊँ।
ओहि लग दइय सिस्टि उपराजी, त्रिभुवन दुंदभी बाजी।

सूफ़ी क़वि उस्मान ने भी 'चित्रावली' में कहा हैः-

पुरुष एक जिन्ह जग अवतारा, सबन्ह सरीर सार संसार।
आपन अंस कीन्ह दुई ठाऊं, एकक धरा मुह़म्मद नाऊँ।
पहिले उठा प्रेम विधि हिए उपजी जोति प्रेम की दिए।
वही जोति पुनि किरि पसारी, किरिन सब सिस्टि संवारी।

एक दूसरे स्थान पर में इस प्रकार लिखा हैः-

जो न करत वह ओकर चाऊ, होत न जग मंह एक उपाऊ। आप मुह़म्मद के रूप-गुण की तुलना नहीं की जा सकती है। आप (सल्ल०) के समान न तो कोई हुआ है और न ही कोई होगा।

संत प्राणनाथ ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को ईशदूत स्वीकार करते हुए लिखा है-

उन्होंने 'मारफ़त सागर क़यामतनामा' में कहा है-
आयतें हदीसें सब कहे, खुदा एक मुहंमद बरहक़।
और न कोई आगे पीछे, बिना मुहंमद बुजरक।

कबीरदास जी के अनुसार-

लगभग छः सौ वर्ष हुए कबीरदास (मृत्यु 915 हि०) ने मुहम्मद सल्ल० के किस्से को इस प्रकार बयान किया थाः-

नभ का दर खुला नहीं, नबी गये उह पार।
जैसे छच्च, अछच्च मां निकल जात उह पार।।

महाराजा सर किशन प्रसाद जी के अनुसार-

ले जाऊँगा मैं साथ फ़क़त इश्क़े मुस्तफा।
तुह़फ़ा है मेरे पास यह शायाने मदीना।।
काने अरब से लअ़ल निकल सरताज बना सरदारों का।
नाम मुह़म्मद अपना रख सुल्तान बना सरदारों का।।

शफ़ाअ़त तेरी शाद क्यों कर न होगी।
कि दिल से है तू मद्‌ह ख्वाने मुहम्मद।।
खाके रहे यसरब को बनाऊँगा मैं सुरमा।
देखूँगा इन आखों से मैदाने मदीना।
क्यों मेरी शफ़ाअ़त में भला देर लगेगी।।
क्या मुझ को नहीं जानते सुल्ताने मदीना।

एक और स्थान पर-

मुंशी शंकर लाल साक़ी जी के अनुसार-

मुंशी शंकर लाल साक़ी, दरबारे रिसालत में मस्त होकर कहते हैं-
जब मये अ़िश्के नबी से मुझे मस्ती होगी।
बे खुदी हो, बुलन्दी न वां पस्ती होगी।
मैं अगर खाके नशीने दरे अहमद हूंगा।
रफ़अ़ते अ़र्श की हमसर मेरी पस्ती होगी।

लक्ष्मी नारायण श्रीवास्तव जी के अनुसार-

जरा महबूबे हक़ का छेड़ दो ज़िक्र।
अगर है शौक़ मेरी दास्तां का।।
मुहम्मद दिल में लब पर मुहम्मद।
गरज़ लुत्फ़ आ गया दिल का जबा का।।
छिपाते हो सखा अिश्के नबी तुम।
असर है नअ़त में सोज़े निहा का।।

चौधरी दल्लू राम कौसरी जी के अनुसार-

अजीमुशशान है शाने मुहम्मद।
खुदा है मर्तबः दाने मुहम्मद।।
कुतुबखाने किए मन्सूख सारे।
किताबे हक़ है कुर्आन मुहम्मद।।
शरीअ़त और तरीक़त और हक़ीकत।
है तीनों हैं कनीजाने मुहम्मद।।

फ़रिश्ते भी यह कहते हैं कि हम हैं।
गुलामाने गुलामाने मुहम्मद।।
नबी का नुत्क़ है नुत्क़े इलाही।
कलामें हक़ है फरमाने मुहम्मद।।
अबूबक्र व उमर उस्मान व हैदर।
यही है चार याराने मुहम्मद।।
बताऊँ कैसरी क्या शुग्ल अपना।
मैं हूँ हर दम सना ख्वाने मुहम्मद।।

तिलोक चन्द्र महरूम के अनुसार-

इक पयम्बर ले के आया हक़ परस्ती का पयाम।
साथ जमअ़ीयत थी उसके और न था लश्कर कोई।।

पंडित हरी चन्द्र अख़्तर की ज़बानी-

किस ने जर्रे को उठाया और सिहरा कर दिया।
किसने कतरे को मिलाया और दरिया कर दिया।
किस की हिकमत ने यतीमों को किया दुर्रे यतीम
और गुलामों को जमाने भर का मौला कर दिया।।

पंडित देवी प्रसाद मस्त जी के अनुसार-

नज़र आया है तूफ़ाने हवादिस दामने साहिल।
जबां पर नामें नामी जिस घड़ी आया मुहम्मद का।।

योगेन्द्र पाल साबिर जी के अनुसार-

मज़हरे हुस्ने ज़ात है अहमद।
रहमते घर हयात है अहमद।।
अपने और गैर में नहीं तफ़रीक़।
सरवरे काइनात है अहमद।।

जगन्नाथ प्रसाद जी के अनुसार-

सलाम उस ज़ाते अक़दस पर सलाम उस फ़ख़्र दौरां पर।

हज़ारों जिसके एहसानात हैं दुनिय-ए- इम्का परा।
सलाम उस पर जो आया रहमतुल्लिल्आलमीन बनकर।
पयामे दोस्त बनकर सादिकुलवअदो अमीन बन कर।।
सलाम उस पर जलाई शम-ए-अ़िरफाँ जिसने सीनों में।
किया ह़क़ के लिए बेताब सज्दों को ज़बीनों में।।
सलाम उस पर बनाया जिस ने दीवानों को फ़रजाना।

चन्द्र प्रकाश जौहर बिजनौरी के अनुसार-

ऐ ख़ाके मदीना तेरे एजाज़ के सदक़े।
है अ़र्शनशी जो भी, यहां फर्श नशीं है।।
जिसने न किया गुम्बदे खज़रा का नज़ारा।
वह आंख हक़ीक़त में कोई आँख नहीं है।।

सन्तों की भविष्यवाणियाँ

श्री वेद व्यास जी ने 18 पुराणों में से एक पुराण में काक भशुण्ड जी और गरुड़ जी की बात-चीत को संस्कृत में लेख बद्ध किया है जिसे श्री तुलसी दास जी ने इस बात चीत को हिन्दी में अनुवाद किया है। इसी अनुवाद के 12 वें स्कन्द्ध छटे काण्ड में कहा गया है कि गरुड़ जी सुनो-

*** यहाँ न पक्ष बातें कुछ राखों। वेद, पुराण संत मत भाखों।।**

अनुवाद- इस अवसर पर मैं किसी का पक्ष न लूँगा। वेद, पुराण और मनीषियों का जो धर्म है वही बयान करुँगा।

*** देश अ़रब भरत लता सो होई। सोथल भूमि गत सुनो धधराई।।**

अनुवाद- अरब भू-भाग जो भरत लता अर्थात शुक्र ग्रह की भांति चमक रहा है उसी सोथल भूमि में वह उत्पन्न होंगे।

इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की विशेषताओं का उल्लेख करने के बाद अन्तिम पंक्ति में कहते हैं-

*** तब लक जो सुन्दरम चहे कोई। बिना मुह़म्मद पार न कोई।।**

अनुवाद- यदि कोई कामियाब होना चाहता है तो मुह़म्मद को स्वीकार कर ले

अन्यथा कोई बेड़ा उनके बिना पार न होगा।

तुल्सीदास जी के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

बहुत कम लोगों को इस बात का ज्ञान है कि राम को विष्णु का अवतार मानने वाले परम राम भक्त गोस्वामी तुलसीदास ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की जय जयकार भी की है। पंडित धर्मवीर उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'अन्तिम ईश्वर दूत' में लिखा है कि "काक मुसुंडी और गरुण दोनों राम की सेवा में लंबी अवधि तक रहे। वह उनके उपदेशों को न केवल सुनते ही रहे बल्कि लोगों को सुनाते भी रहे। उपदेशों का वर्णन तुलसीदास ने 'संग्राम पुराण' के अपने अनुवाद में किया है"। इस उपदेश के अनुसार राम ने आने वाले धर्म और अवतार के बारे में भविष्यवाणी की है। इस उपदेश में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जन्म, कुर्आन के अवतरण एवं सत्य के आगमान आदि की चर्चा की गयी है।

बोलो कल्कि अवतार श्री मह़ामद ऋषि की जय

यहाँ ने पक्षपात कछु राखहु। वेद पुराण संतमत भाखहुं।।
संवत विक्रम दोउ अनंगा। महाकोक नर्स चतुर्पगा।।
राजतीति भव प्रीति दिखावै। आपन मत सबका समझावै।।
सुरन चतुसुदर शतचारी। तिनको वंश भयो अतिभारी।।
तब तक सुंदर माद्दिकोया। बिना **मह़ामद** पार न होय।।
तबसे मानहु जन्तु भिखारी। समरथ नाम एहि व्रतधारी।।
हर सुन्दर निर्माण न होई। तुलसी वचन सत सत होई।।

(संग्राम पुराण, स्कंद 12, कांड 6)

उपरोक्त कविता को ध्यान से पढ़ने पर इसके कुछ शब्द प्रक्षिप्त लगते हैं। मूल 'संग्राम पुराण' या तुलसी का अनुवाद किया हुआ 'संग्राम पुराण' मेरे समक्ष नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त कविता एक-दूसरे के लेखों से उद्धरित करने में हुई त्रुटि के कारण ऐसा हुआ है। इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की श्रद्धा वर्णन इस बात को सिद्ध कर देती है कि इन सब की दृष्टि में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ही अन्तिम महाईशदूत थे।

एक दूसरे स्थान पर कहते हैं-

काशी करवट बाद है सब काम।

बेकुण्ड वास न पहिओ बिना **मुहम्मद** नाम।। (तुलसी दास जी)

बाबा गुरु नानक जी के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

सतरि सैइ सलार है जाके। सवा लाखु पैकाबर ता के।
सेख जु कहीअहि कोटि अठासी। छपन कोटि जा के खेल खासी।। 1।।
मो गरीब की को गुजरावै। मजलिसे दूरि महलु को पावै।। 1।।

(आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब द्वितीय खण्ड (सैची 3 व 4) पेज नं० 567, द्वितीय संस्करण 208)

(अनुवादक- डा० मनमोहन सहगल, प्रकाशक- भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ)

अनुवाद- जिसके साथ सात हज़ार सेनापति हैं (ख़ुदा ने जिब्रईल के साथ सात हज़ार फ़रिश्ते भेजे थे ताकि बड़ी आयत मुह़म्मद साह़िब तक सुरक्षित पहुँच सके) उसके सवा लाख पैग़म्बर हैं (कहते हैं कि ह़ज़रत आदम से मुह़म्मद साह़िब तक सवा लाख पैग़म्बर हो चुके थे) अठासी करोड़ शेख हैं और जिसके छप्पन करोड़ ख़ास मुह़ासिब हैं।। 1।। उस तक मुझ ग़रीब की पुकार कौन पहुँचाए? उसका सिक्का दूर-दूर तक चलता है, उसके महलों तक कौन पहुँचे?।। 1।।

ऊपर की पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन लोगों ने भी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के मानने की दावत दी है परन्तु किन्हीं कारणवश खुलकर सामने नहीं आ सके और दिल में पूरी श्रद्धा मौजूद होने के साथ सन्देष्टा भी स्वीकार करते हैं।

भाग-10

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) प्रसिद्ध ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों की दृष्टि में

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व

अमेरिका से एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका नाम है 'एक सौ' (The 100) इस पुस्तक में मानव इतिहास पर प्रभाव डालने वाले सौ अत्यन्त महान विभूतियों का वर्णन किया गया है। पुस्तक का लेखक जातिगत स्तर पर ईसाई और शैक्षिक स्तर पर वैज्ञानिक है, परन्तु अपनी सूची में उसने नम्बर एक पर न हज़रत मसीह (ईशू) का नाम रखा है और न न्यूटन का। उस के विचार में वह व्यक्तित्व जिसको अपने अभूतपूर्व कार्यों की वजह से नम्बर एक पर रखा जाए, वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं। लेखक का कहना है कि मुहम्मद साहब ने मानव इतिहास पर जो प्रभाव छोड़े हैं वह किसी भी दूसरे व्यक्ति, चाहे धार्मिक हों अथवा अधार्मिक, ने नहीं छोड़े हैं। लेखक ने आप (सल्ल०) के उत्कृष्ट व्यक्तित्व के विषय में लिखा है, 'आप इतिहास के एकमात्र व्यक्ति हैं जो अन्तिम सीमा तक सफल रहे। धार्मिक स्तर पर भी और सँासारिक स्तर पर भी।

"He was the only man in history who was supremely successful on both the religious and secular levels."

(Dr. Michael. Hart, The 100, New York 1978)

डी० डब्ल्यू० लाइट्ज जी के अनुसार

संसार में बहुत से धर्म आये जो अपनी शक्ल खो चुके हैं, उनकी शिक्षाएँ नष्ट हो चुकी हैं। प्रश्न यह उठता है कि मुहम्मद (सल्ल०) जो धर्म लेकर आए उसकी शिक्षाएं कब तक बाक़ी रहेंगी?

इसके उत्तर के लिए हमें केवल और केवल मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व को सामने रखना होगा। अगर यह व्यक्तित्व अपनी कथनी और करनी की दृष्टि से हर युग में स्वीकार्य है तो फिर इस व्यक्तित्व के द्वारा जो धर्म संसार में आया उसकी शिक्षाएँ भी निरन्तर जारी रहेंगी और अगर यह व्यक्तित्व किसी भी दौर में स्वीकार नहीं है तो फिर उसकी शिक्षाओं का भी यही परिणाम होगा।

और वास्तविकता यह है कि मुहम्मद (सल्ल०) के व्यक्तित्व और उनके

जीवन में एक ऐसा आकर्षण और तल्लीनता है जो किसी भी युग में कम नहीं होगी, बल्कि इस आकर्षण और तल्लीनता में आने वाले इन्सानों के लिए वृद्धि होती चली जाएगी। **(मोहम्डनिज़्म रिलीजियस सिस्टम्स आफ् द वर्ल्ड-1908)**

आर० डब्ल्यू स्टूअर्ट जी के अनुसार

मुहम्मद (सल्ल०) का जलवा हर जगह देखा जा सकता है, दिन में पाँच बार दिल्ली, हिजाज़, ईरान, क़ाबुल, मिस्र और शाम में.....जब दुनिया के हर हिस्से में मुसलमानों को नमाज़ पढ़ते देखें तो यह स्वीकार कर लें कि मुहम्मद (सल्ल०) का धर्म सत्य है, जीवित है और जीवित रहेगा। **(इस्लाम एण्ड इट्स फाउण्डर)**

लामार्टिन जी के अनुसार

यदि उद्देश्य की महानता, साधनों की कमी और (इसके बावजूद) चौंकाने वाले परिणाम, मानव प्रतिभा को परखने के पैमाने हैं, तो वर्तमान इतिहास में किसी भी महान व्यक्ति की तुलना मुहम्मद (सल्ल०) से करने का साहस कौन कर सकता है। जहाँ तक उन सारे स्तरों का संबंध है जिनसे मानव-महानता को नापा जा सके तो हम यह पूछ सकते हैं क्या संसार में कोई व्यक्ति उन मुहम्मद से भी श्रेष्ठ है?

(हिस्टोरी डीला टर्की 1854)

गिबन जी के अनुसार

मुहम्मद का दिया हुआ विधान हर प्रकार के संदेह और विरोधाभास से मुक्त है और कुर्आन ईश्वर के एकत्व का शानदार प्रमाण है।

(डिक्लाईन एण्ड फाल आफ् द रोमन एम्पायर)

जी० हिगिन्स जी के अनुसार

ईश्वर पर उनका जो विश्वास और आस्था थी और अपनी शिक्षाओं की सत्यता और वास्तविकता की जो समझ उनके पास थी, उसका उदाहरण कोई भी दूसरा महान व्यक्ति प्रस्तुत नहीं कर सकता। मुहम्मद (सल्ल०) ने यह सिद्ध कर दिया कि वह ईश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा हैं और यह ऐसी घटना है जो इतिहास में न तो इसके पहले मिलती है न बाद में। **(अपोलो जी फार मुहम्मद 1929)**

स्टेनले लेनपूल जी के अनुसार

मुहम्मद (सल्ल०) सर्वथा दया और मानवता का रूप थे। युद्ध-बंदियों के साथ उनका व्यवहार देखिए। क्या अपने दुश्मन के साथ कोई इस तरह का व्यवहार करता है? आम जनता और अपने साथियों के साथ मुहम्मद (सल्ल०) की नर्मी, बच्चों के लिए आपका प्रेम ....मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश... और अनगिनत ऐसी घटनाएँ हैं जो यह गवाही देती हैं कि अत्याचार मुहम्द (सल्ल०) की प्रवृत्ति में सिरे से था ही नहीं। **(स्टडीज़ इन मॉस्क)**

डॉक्टर गेस्टोंव लीबान जी के अनुसार

"हज़रत मुहम्मद नितांत गम्भीर, अल्पभाषी और दृढ़ संकल्पी थे। आप जितने ही सचेष्ट थे, उतने ही सहनशील और धैर्यवान भी थे। आप अत्यन्त शुद्ध विचारों वाले थे। आपने चांद के टुकड़े किये,अस्त सूर्य को पुनः उदय कराया और यह सब कुछ ईश्वरीय चमत्कार के तौर पर था। यह कहना कि हज़रत मुहम्मद साहब जादूगर थे, मेरे निकट एक मूर्खतापूर्ण बात है। **(इस्लाम की संस्कृत)**

जान डेविन पोर्ट जी के अनुसार

"हज़रत मुहम्मद की सत्यता और शुद्ध हृदयता का प्रबल प्रमाण यह है कि सबसे पहले जो लोग उन पर ईमान लाए (यानी मुसलमान हुए) वे उनके घर वाले और उनके निकट सम्बन्धी हैं, जो उनके घरेलू जीवन से पूर्णतया परिचित थे। अगर उनमें सच्चाई और सत्यता न होती, तो वे ज़रूर आपत्तियों और विराधों का तूफान खड़ा कर देते। इसमें सन्देह नही कि समस्त शास्कों और विजेताओं में एक भी ऐसा नहीं जिसका जीवन-चरित्र उनसे अधिक उत्तम और सच्चा हो"।

(अपालोजी फार मुहम्मद एन्ड कुर्आन)

यार्क्स डाड जी के अनुसार

"हज़रत मुहम्मद का चरित्र अति उत्तम था। आपके निकट सांसारिक बड़ाई कोई चीज़ न थी। आपकी सेवा में हर व्यक्ति स्थान पा सकता था। हम अत्यन्त सत्यता के साथ कहना चाहते हैं कि आपका व्यक्तित्व सुख और कल्याण का स्रोत

था। आप अद्वितीय सुशील और नितांत सुहृदय मनुष्य थे। आपका सहनशील और संयमी जीवन मन को बहुत ही लुभानेवाला है और हमारे दिल में आपके महान व्यक्तित्व के लिये विशेष श्रद्धा मौजूद है"। **(मुहम्मद, बुद्ध एण्ड मसीह)**

विश्वमान्य गाँधी जी के विचार इस प्रकार हैं-

"इस्लाम अपने अति विशाल युग में भी अनुदार नहीं था, बल्कि सारा संसार उसकी प्रशंसा कर रहा था। उस समय जबकि पश्चिमी दुनिया अन्धकार में लीन थी, पूर्व क्षितिज का एक उज्जवल सितारा चमका, जिस से विकल संसार को प्रकाश और शान्ति प्राप्त हुई। अध्ययन करना चाहिए जिस तरह मैंने किया है। फिर वे भी मेरे ही समान इससे प्रेम करने लगेंगे।

मैं पैग़म्बरे इस्लाम की जीवनी का अध्ययन कर रहा था। जब मैंने किताब का दूसरा भाग भी ख़त्म कर लिया तो मुझे दुख हुआ कि इस महान् प्रतिभाशाली जीवन का अध्ययन करने के लिये अब मेरे पास कोई और किताब बाक़ी नहीं। अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी, जिसने इस्लाम के लिये विश्वक्षेत्र में विजय प्राप्त की, बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यन्त सादा जीवन, आपकी निःस्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी। आपका अपने मित्रों और अनुयाइयों से प्रेम करना और ईश्वर पर भरोसा रखना था। यह तलवार की शक्ति नहीं थी, बल्कि ये सब विशेषताएँ और गुण थे, जिनसे सारी बाधाएँ दूर हो गईं और आपने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली।

मुझ से किसी ने कहा था कि दक्षिणी अफ्रीका में जो यूरोपियन आबाद हैं, इस्लाम के प्रचार से कांप रहे हैं, उसी इस्लाम से जिसने मराको में रोशनी फैलाई और संसार निवासियों को भाई-भाई बन जाने का सुख-संवाद सुनाया। निःसन्देह दक्षिणी अफ्रीक़ा के युरोपियन इस्लाम से नहीं डरते हैं, लेकिन वास्तव में वह इस बात से डरते हैं कि अगर अफ्रीक़ा के आदि निवासियों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया तो वह श्वेत ज़ातियों से बराबरी का अधिकार माँगने लगेंगे। आप उनको डरने दीजिये। अगर भाई-भाई बनना पाप है, यदि वह इस बात से परेशान हैं कि उनका नस्ली बड़प्पन, क़ायम न रह सकेगा तो उनका डरना उचित है, क्योंकि मैंने देखा

है कि अगर एक जूलो ईसाई हो जाता है तो वह सफेद रंग के ईसाइयों के बराबर नहीं हो सकता। किन्तु जैसे ही वह इस्लाम ग्रहण करता है, बिल्कुल उसी वक्त वह उसी प्याले में पानी पीता है और उसी तश्तरी में खाना खाता है, जिसमें कोई और मुसलमान पानी पीता और खाना खाता है, तो वास्तविक बात यह है जिससे यूरोपियन कांप रहे हैं"। **(जगत महर्षि पृष्ठ 2)**

"हज़रत मुहम्मद साहब के साहस, शौर्य, धैर्य और दृढ़ता ने दुनिया में मुसलमानों जैसी वीर और ईश्वर-उपासक जाति को जन्म दिया है। अधिक दिन नहीं हुए कि संसार में हर ओर उसकी विजय-पताका फहरा रही थी, सारी दुनिया में उसके नाम का डंका बज रहा था और कोई दूसरी जाति उसका सामना नहीं कर सकती थी। यही मुसलमान आज इतने पतनशील और दिशाहीन क्यों नज़र आ रहे हैं? उनके गले में दूसरों की गुलामी का रस्सा क्यों पड़ा हुआ है? इसका कारण इसके सिवा और कुछ नहीं है कि हज़रत मुहम्मद साहब की शिक्षा से मुसलमान कोसों दूर हट गये हैं। हज़रत मुहम्मद के नामलेवा चाहें तो अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। अगर वह सच्चाई के साथ हज़रत मुहम्मद साहब के प्रबल धैर्य और दृढ़ता, साहस और शौर्य एवं सदाचार और उदारता को फिर ग्रहण कर लें। मित्रों! मैं दूसरे धर्म के लोगों से भी प्रार्थना करता हूँ कि वह हज़रत मुहम्मद साहब को अपना आदर्श बनाएँ और उनकी उत्तम शिक्षा पर चलकर लाभान्वित हों"। **(जगत् महर्षि पृष्ठ 1,12)**

'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के रचयिताओं के अनुसार-

"मुहम्मद के स्वभाव में हर विषय की तह को पहुँच जाने का एक प्राकृतिक गुण था, यद्यपि सर्वथा अनपढ़ थे, बल्कि अरबी भाषा की काव्य-कला से इतने अनभिज्ञ थे कि बिना कुछ-न-कुछ त्रुटि के एक शेर भी नहीं कह सकते थे। इसी के संकेत के तौर पर कुर्आन की एक सुविख्यात और प्रसिद्ध सूरः में उनसे यूँ कहा गया हैः-

"हमने मुहम्मद को काव्य-विद्या नहीं सिखाई और न उनके लिए कवि होना आवश्यक है"।

यह बात सर्व सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद (आप पर ईश्वर की दया और

कृपा हो) पढ़ना-लिखना बिल्कुल नहीं जानते थे और यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि आपके पास कुर्आन आने तक किसी धर्म का कोई ग्रन्थ नहीं पहुँचा था, फिर विचार करने की बात है कि ऐसे विद्या और ज्ञान शून्य देश और जाति में पैदा होकर और उसी में जवान होकर भी आपको इतना ज्ञान कहां से प्राप्त हो गया, कि आपने इतना बड़ा सार्वभौ और विश्वव्यापी क्रान्ति उत्पन्न कर दी? आपकी शिक्षा ने संसार के सारे देशों, सारी जातियों और सारी सभ्यताओं पर समय-समय में प्रभाव डाला। भारत जैसा धर्म, संस्कृति और विद्या, ज्ञान से परिपूर्ण और सम्पन्न देश भी इस्लाम के प्रभाव से नहीं बचा और आपके बाद अब तक कोई इतना बड़ा धर्म-नेता नहीं हुआ। सारे पहलुओं पर विचार करने के बाद यह मानना ही पड़ेगा कि आप ईश्वर के पैग़म्बर थे और आपका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान था।

(एजाजुत्तन्ज़ील, पृष्ठ 124 बहवाला इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, विषय मुहम्मद और उनका मज़हब)

मुहलरजी के अनुसार-

एक ईसाई विद्वान जिसका नाम मुहलर है, हज़रत मुहम्मद साहब को पैग़म्बर न मानने वालों से सवाल करता है।

"यह किस तरह सम्भव है कि एक धार्मिक ज्वाला जो यद्यपि एक जंगल से उठी थी, मगर इतने कम समय में आश्चर्यजनक रूप से सारे एशिया में फैल गई। वह ऐसे हृदय से निकली जिसमें उसकी कुछ भी गर्मी मौजूद न थी"।

(एजाजुत्तंजील पृष्ठ 124 बहवाला 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' विषय 'मुहम्मद और उनका मज़हब')

मिस्टर थाम्स कारलायल जी के अनुसार-

उन लोगों के खंडन में जो हज़रत पैग़म्बर (सल्ल०) पर झूठे दोष लगाते हैं, लिखते हैंः-

"हाँ, ऐसा हरगिज़ नहीं। यह पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति जो जंगली मुल्क में पैदा हुआ, जो मनोआकर्षक काली आँखों और प्रफुल्ल शिष्टतापूर्ण और विचारशील स्वभाव के साथ अपने दिल में मान-सम्मान की इच्छा के विपरीत कुछ और विचार रखता था। वह एक शान्तिमय और असाधारण शक्तियों वाली आत्मा थी और उन लोगों में से था जो सत्यवान होने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं

सकते, जिसको खुद प्राकृति ने सच्चा और सत्यप्रिय पैदा किया था, जबकि और लोग अंधे विश्वासों और संस्कारों पर चल रहे थे और उन्हीं पर सन्तुष्ट थे। यह व्यक्ति उन विश्वासों और संस्कारों में नहीं रह सकता था और अपनी आत्मा और पदार्थो के तथ्यों की जानकारी में वह औरों से भिन्न था। जैसा कि मैं ने वर्णन किया है सर्वशक्तिमान का रहस्य अपने प्रताप और सौन्दर्य के साथ उस पर प्रकट हो गया था और इस तथ्य पर जिसका वर्णन करने में वाक्शक्ति असमर्थ है और जिसने अपने प्रति 'मैं यहां हूं' प्रयुक्त किया। पुरानी कथाएँ पर्दा न डाल सकीं, और ऐसा सत्य जिसका कोई श्रेष्ठतर शब्द न मिलने की वजह से हमने सत्य नाम रखा है, वास्तव में ईश्वरीय चिन्हों में से एक चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति की बात एक वाणी है, जो बिना किसी सम्बन्ध के सीधे ईश्वरीय प्राकृति के हृदय से निकलती है, जिसे इन्सान सुनते हैं और जिसके सुनने में चीज़ों के मुक़ाबले में अधिक ध्यान की ज़रूरत है, क्योंकि इसके मुक़ाबले में सब कुछ तुच्छ है। शुरू ही से उसके दिल में ह़ज के अवसरों पर एवं प्रतिदिन के इधर-उधर के चलने-फिरने में तरह-तरह के ह़ज़ारों विचार पैदा होते थे। जैसे यह कि मैं क्या हूं, क्या है यह अथाह विस्तार जिसको लोग संसार कहते हैं और जिसमें मैं मौजूद हूं, क्या है? जीवन क्या है? मृत्यु क्या है? मुझे किस बात का यक़ीन करना चाहिए और क्या करना चाहिए? जिनका (मक्का के) हिरा और (शाम के) सीना (पहाड़) के बड़े-बड़े पत्थरों के ढेरों और कठोर सुनसान रेतीली ज़मीनों जंगलों ने कुछ जवाब न दिया और सिर पर चुपचाप चक्कर खाने वाले आसमान ने भी अपने नीले प्रकाश वाले नक्षत्रों के समेत कुछ न बताया, मगर बताया तो केवल उसी की आत्मा ने और ईश्वरीय ज्ञान ने जो उसमें था। **(एज़ाज़ुत्तन्ज़ील, पृष्ठ 125-126)**

जर्मन इतिहासकार डोश जी के अनुसार

"हर्ष और विषाद, प्रेम और ममता, शौर्य और वीरता की वह विशाल पुकार जिसकी कुछ हल्की-सी आवाज़ें हमारे कानों में आती हैं। मुह़म्मद (सल्ल०) के समय में पूरी-पूरी आवाज़ रखते थे। मुह़म्मद (सल्ल०) को सबसे ज़्यादा सुभाष्य और उच्च-भाष्य लोगों से केवल बराबरी ही नहीं करनी पड़ बल्कि उन पर श्रेष्ठता भी प्राप्त करनी पड़ी और अपने कथन की सुभाष्यता और उच्चता को अपनी

पैग़म्बरी के दावे का प्रमाण भी बनाना पड़ा।

मुह़म्मद (सल्ल०) से पहले क़वियों ने बहुत-सी प्रेममयी कविताओं की रचना की थी। अन्तरा ने, जिसके प्रेम का हाल एक प्रसिद्ध कथा में लिखा है और इमरउलक़ैस ने जिसे मुह़म्मद (सल्ल०) ने अ़रब क़वियों का सरदार मगर नर्कवासियों का नेता कहा है, प्रेम के नितांत उच्च और चन्द्रमुखी, रजत वदन प्रेमिकाओं का नेता कहा है, प्रेम के नितांत उच्च और दिव्य कोटि के पदों की रचना की थी और शराब-कबाब और चन्द्रमुखी, रजत वदन प्रेमिकाओं की प्रशंसा में भाषा की सरलता और अलंकार की सरिता बहा दी थी।

मगर मुह़म्मद (सल्ल०) ने न प्रेममयी पद छन्दबद्ध किया, न प्रेममयी कविता कही, न इस नश्वर संसार के दुख-सुख को धन्दबद्ध किया, न कोई विशेष वर्णन किया, जिससे मालूम हो कि उनके निकट मानव- काया का कोई महत्व ही नहीं और इसके लिए केवल विनाश है। सारांश यह, कि उन्होंने लोगों को कविता और वार्ता नहीं सिखाई, बल्कि इस्लाम सिखाया और इस प्रकार सिखाया कि धरती और आकाश को चीर कर स्वर्ग और नरक को साकार बनाकर दिखा दिया"।

(एज़ाज़ुत्तन्ज़ील पृष्ठ 63)

मिस्टर वास्वर्थ स्मिथ जी के अनुसार

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के समय में यहूदियों और ईसाइयों में जो बुरी मान्यताएँ और कुरीतियाँ फैल गई थीं, उनको बयान करने के बाद मिस्टर वास्वर्थ स्मिथ अपनी पुस्तक 'मुह़म्मद एण्ड मुहम्डनिज्म में लिखते हैं-

"मुह़म्मद (सल्ल०) इसलिए आये थे कि उन सारी झूठी बातों पर झाड़ू फेर दें, मूर्ति क्या है? ज़ैतून लकड़ी के टुकड़े, जो खुदा होने का दावा करते हैं, उनकी वास्तविकता क्या है? भ्रमजनक दार्शनिक विचार मकड़ी का तना हुआ जाला और अधर्म, इन सबको दूर करो। अल्लाह सबसे बड़ा है और उसके सिवा कोई चीज़ बड़ी नहीं है। यही है मुसलमानों की जीवन-प्रणाली। एक आरोपक यह सवाल कर सकता है कि इन दोनों सिद्धान्तों में, जो ऊपर बयान हुए हैं। कौन-सी बात ऐसी है, जिसको यह कहा जाए कि वह नई थी, ये बातें उतनी ही पुरानी थीं, जितना मूसा का ज़माना, बल्कि वास्तव में इतनी पुरानी जितने खुद ह़ज़रत इब्राहीम

(अ़लैहिस्सलाम) थे। मुह़म्मद (सल्ल०) ने बार-बार अत्यन्त गंभीरता से जताया है कि मैं अ़रबों के लिए कोई नई बात लेकर नहीं आया यह धर्म यहां सदा मौजूद रहा, मगर लोग इसे भूल गए हैं या इससे ग़ाफ़िल हो गये हैं। क़ौम से अलग और शौकग्रस्त और नाखुश यहूदियों और आपस में लड़ने वाले तीन खुदाओं के क़ायल ईसाइयों और हर तरह के प्राणी-पूजकों में एक ऊंट हांकने वाला आया, इसलिए नहीं कि वह उनको कोई नई बात सिखाए, बल्कि इसलिए कि जो पुरानी बातें वे भूल गए हैं, वह उनको याद दिलाए। अ़रब की अपने बाप (ससुर) की बकरियां चरा रहा था, यह सादा मगर चौंका देने वाला सन्देश आया थाः-

"मैं वह हूँ जो मैं हूँ, सुनो ऐ इस्राईल! हमारा मालिक खुदा एक है। इसलिए जा! तेरी ज़बान के साथ हूँगा और तुझे जो कहना चाहिए वह तुझे सिखाऊँगा"।

इन शब्दों को सुनकर यह सम्मान प्राप्त क़ौम (बनी इस्राईल) अफ्रीक़ा से एशिया में चली गई, गुलाम आज़ाद हो गये और एक ख़ानदान एक क़ौम बन गयी। उसी अ़रब की सरज़मीन पर अब फिर वहीं आवाज़ एक-दूसरे बकरियाँ चराने वाले के ज़रिये आई और ऐसे असर के साथ आई, जो पहली आवाज़ से कुछ कम विचित्र या आमतौर पर दुनिया को फ़ायदा पहुँचाने में उससे हरगिज़ कुछ कम न थी। यानी 'अल्लाहु अकबर, लाइलाहइल्लाहुमुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि' इस सन्देश देने वाले को कुबूल और खुदा के सन्देश का एलान किया गया और एक सदी में उसकी आवाज़ की गूंज अदन से अल्ताकिया तक (एशियाई रूमी साम्राज्य का केन्द्र) और सेबील (स्पेन का एक सूबा और शहर) से समरकन्द तक फैल गई"। **(एज़ुत्तन्ज़ील पृष्ठ 28-29)**

एक और स्थान पर मिस्टर थाम्स जी लिखते हैं-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के बारे में हम कदापि यह विचार नहीं कर सकते कि वह केवल एक शुअबदाबाज़ और आत्महीन व्यक्ति थे और न हम उनके सम्बन्ध में यही कह सकते हैं कि वह एक नीच, अधिकार लोभी और जान-बूझकर मन्सूबा गांठने वाले थे। उन्होंने जो कठोर और सख़्त सन्देश दिया था यद्यपि वह एक ग़ैर-मुरत्तब कथन था। परन्तु इसके बावजूद उसका उद्गम वही व्यक्तित्व (ईश्वर) था, जिसकी थाह किसी ने नहीं पाई। उस व्यक्ति (ह़ज़रत पैग़म्बर साह़ब) के न कथन ही झूठे थे और न कार्य ही और न वह सच्चाई से

ख़ाली और न किसी की नक़ल एवं अनुसरण थे। वास्तव में जो प्रकृति के विस्तृत सीने से संसार को प्रकाशित करने के लिए निकला था और निःसन्देह उसके लिए ईश्वर का ऐसा ही आदेश था"।

(एजाज़ुत्तन्जील पृष्ठ 59, बहवाला 'हीरोज़ ऐण्ड हीरोजवर्शिप' द्वितीय लेक्चर पृष्ठ 43)

एक ईसाई डॉ० स्पिरिंगर जी के अनुसार

"वह जिसके विचार में सदा खुदा की कल्पना रहती थी और जिसको निकलते हुए सूरज, बरसते हुए पानी और उगती हरियाली में खुदा ही का हाथ दिखाई देता था और बादल की गरज, पानी की आवाज़, ईश्वर की प्रशंसा में गाये जाने वाले चिड़ियों के गान में ईश्वर ही की वाणी सुनाई देती थी और सुनसान जंगलों और पुराने शहरों के खंडरों में खुदा ही के प्रकोपों के चिन्ह दिखाई देते थे"।

(एजाज़ुत्तन्जील पृष्ठ 30, बहवाला 'लाइफ आफ मुह़म्मद' पृष्ठ 82, डाक्टर स्पिरिंगर द्वारा लिखित और 1851 में इलाहाबाद से प्रकाशित)

रेवरेण्ड राडवेल जी के अनुसार

"यह अद्भुत और आश्चर्यजनक नमूना है उस शक्ति और आत्मा का जो ऐसे व्यक्ति में होती है जिसको खुदा और परलोक पर दृढ़ता के साथ विश्वास होता है और जो अपने महान् व्यक्तित्व और सत्यतापूर्ण आचरण के कारण हमेशा उन लोगों में गिना जाएगा जिनको मानव-जाति के विश्वास, आचार और सारे सांसारिक जीवन पर ऐसा पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है, जो किसी अत्यन्त महान् कोटि के व्यक्ति के सिवा किसी और को नहीं प्राप्त हुआ और न हो सकता है"।

(एजाज़ुत्तन्ज़ील पृष्ठ 30, बहवाला भूमिका अनुवाद क़ुर्आन, लिखित राडवेल साह़ब पृष्ठ 23, मुद्रित 1861)

मिसेज एनीबेसेन्ट जी के अनुसार

"आप ज़रा हमारे पैग़म्बर का विचार कीजिए और उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब केवल उनकी पत्नी ही उन पर ईमान लाई, इसके बाद निकटतम सम्बन्धी उन पर ईमान लाते हैं, इस बात से भी मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में कुछ-न-कुछ पता चलता है। एक ऐसे समूह में से अनुयायी प्राप्त कर लेना सहज है जो आपको नहीं जानता जो आपको केवल प्लेटफ़ार्म ही पर देखता है, जो आपका केवल लिखा लिखाया भाषण ही सुनता है या आपको कुछ सवालों का

जवाब देने की हालत में देखता है। लेकिन अपनी पत्नी, अपनी बेटी और अपने दामाद और दूसरे निकटवर्ती सम्बन्धियों की नज़रों में नुबूव्वत हज़रत ईसा को भी प्राप्त नहीं?

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र का वर्णन करते हुए मिसेज एनीबेसेन्ट कहती हैं-

"निःसन्देह यह भद्रतापूर्ण जीवन है, एक अद्भुत और विचित्र जीवन है। वास्तव में वह ईश्वर के दूत थे, लेकिन इसके बावजूद वह ऐसे मितव्ययताप्रिय, सरल और नम्र हैं कि अपने फटे हुए कपड़ों को खुद ही पेवन्द लगा लेते हैं, अपने जूतों की खुद मरम्मत कर लेते हैं। विशेषकर ऐसी हालत में कि हज़ारों (लाखों) आदमी उन्हें नबी और रसूल कह कर उनके सामने नतमस्तक होते थे। और वह आस-पास के लोगों से अत्यन्त प्रेम और नम्रता का व्यवहार करते थे। हज़रत अनस (रज़ि०), जो आपके सेवक थे, कहते हैं कि "मैं दस वर्ष आपकी सेवा में रहा। इस अवधि में कभी आप (सल्ल०) ने मुझको 'उफ़' तक नहीं कहा"।

अब तनिक आप (सल्ल०) की कार्य-प्रणाली को देखिए कि उन्होंने दूसरों को जो शिक्षा दी, स्वयं किस तरह उसके अनुसार व्यवहार किया। आप (सल्ल०) के साथ कोई ऐसी बुराई नहीं की गई, जिसे आपने क्षमा न कर दिया हो।

"ऐ मेरे भाइयों! इस व्यक्ति को इसी दृष्टि से देखो, जैसा वास्तव में वह है। द्वेष के पर्दे में उसे देखने का प्रयास न करो"।

(मासिक 'निज़ामुल मशायख़', दिल्ली, जमादिलऊला, 1334 हिजरी)

ग्रेट टीचर हरबर्ट वायल जी के अनुसार

"हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को आसपास के रहने वाले लोग अमीन (धरोहर-रक्षक) कहकर पुकारते थे। ग़रीब लोग जो कष्ट में पड़े होते, आपके पास परामर्श करने आते थे, क्योंकि उन्हें आपकी सच्चाई पर विश्वास था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अधिकतर एक निर्जन स्थान में गुफ़ा के भीतर ईश्वर उपासना में लीन रहते। एक रात जबकि वह ज़मीन पर लेटे हुए थे, आसमान से एक प्रकाश प्रकट हुआ और एक तेजस्वी रूप पर आपकी दृष्टि पड़ी, जिसने कहाः-

उठ! तू खुदा का पैग़म्बर है। अपने पालनकर्ता का नाम लेकर पढ़'। मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा-'मैं क्या पढ़ूँ?' इसके बाद उस दैवी आत्मा ने कुछ उपदेश दिया।

यह वह अद्भुत और विचित्र घटना थी, जिसने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन को सर्वथा बदल दिया। इसके पूर्व वह केवल 'अमीन' थे। मगर अब रसूल (सन्देष्टा) हो गये। उन्होंने जो सर्वप्रथम उपदेश लोगों को दिया, उसमें ईश्वर के एकत्व का वर्णन था और मानव-हत्या, और हर कुकर्म की निन्दा की गई थी। बहुत से लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। वास्तव में यह अनुमान करना कठिन है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) लोगों के दिलों को मोहित करने की कितनी महान् शक्ति रखते थे"।

जार्ज बर्नाड शॉ जी के अनुसार

मैंने मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म को सदैव उनकी आश्चर्यजनक शक्ति तथा सत्यवादिता के कारण सर्वोच्च स्थान दिया है। मेरे विचार में मुहम्मद (सल्ल०) का धर्म विश्व का धर्म है जो हर काल की बदलती हुई अवश्यकताओं के प्रति आकर्षण रखता है। मैंने इस अद्भुत, विलक्षण व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) का अध्ययन किया है। मेरा ईमान है कि यदि मुहम्मद (सल्ल०) जैसा व्यक्ति वर्तमान विश्व का शासक होता तो हमारी सारी परेशानियाँ हल हो चुकी होतीं तथा पूरे विश्व में शान्ति व सुख समृद्धि होती।

मैं मुहम्मद (सल्ल०) के धर्म के सम्बन्ध में यह भविष्यवाणी करता हूँ कि यह कल के यूरोप के लिए उतना ही स्वीकार करने योग्य है जितना कि आज के यूरोप के लिए। जो इसे स्वीकार करने का आरम्भ कर चुका है।

(George Bernard Shaw in 'Islam Our choice)

उस मुहम्मद (सल्ल०) से महान व्यक्ति.....मानवता का रक्षक..... दुनिया कभी पैदा न कर सकेगी। (Voltair in Philosphical Dictionary)

सभी धार्मिक व्यक्तियों में मुहम्मद (सल्ल०) सर्वाधिक सफल रहे हैं।

(Encyclopedia Britannical 11th edition)

मैंने उनका अध्यन किया है वह एक अद्भुत व्यक्ति है तथा ईसा विरोधी होने से बहुत दूर उन्हें तो अवश्य 'मानवता का उद्धारक एवं मुक्ति दिलाने वाला,' कहना चाहिए। (George Bernard Shaw in 'The Genuine Islam' Vol-1 No.81936)

यदि किसी धर्म की सम्भावना है जो अगले 100 वर्षों में इंग्लैण्ड नहीं बल्कि पूरे यूरोप पर विजय प्राप्त कर सकता है तो वह धर्म है इस्लाम।

(George Bernard shaw)

भाग–11

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) वैज्ञानिकों की दृष्टि में

वैज्ञानिकों का विशलेषण

वैज्ञानिकों ने पवित्र कुर्आन की विभिन्न बातों का विश्लेषण करने के पश्चात ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में जो विचार प्रस्तुत किये है, उस में से प्रो० कीथमोर, जो कनाडा की टोरण्टो यूनीवर्सिटी में Anatomy एवं Embryology के प्रोफ़ेसर हैं, जिनकी पुस्तक Moore, K. L., "The development Human" 3th edition, W.B. Saunders Co. 1982 भ्रूणिकी (Embryology) की प्रमुख पुस्तक है। इस में उन्होंने कुर्आन की आयतों और वैज्ञानिकों के विश्लेषण का तुलनात्मक अध्ययन इस प्रकार प्रस्तुत किया है:-

प्रो० मूरे के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

पवित्र कुर्आन में मानव भ्रूण के विकास की विभिन्न अवस्थाओं को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:-

> हम ने इन्सान को मिट्टी के सत् से बनाया, फिर हमने उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूँद के रूप (नुत्फा) में रखा, फिर हम ने उस बूंद को लोथड़े का रूप दिया; फिर हमने उस लोथड़े को बोटी (मुदग़ह) का रूप दिया; फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बना दिया; फिर हमने उन हड्डियों पर मांस चढ़ा दिया, फिर हमने उसे एक दूसरा ही सृजन रूप देकर खड़ा किया"। (कुर्आन, 23:12:14)

(1) नुत्फा (Sperm) -अर्थात एक बूँद या जल وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾ की थोड़ी सी मात्रा।

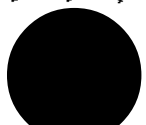

फिर हमने उसे एक सुरक्षित जगह टपकी हुई बूँद के रूप में रख दिया ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾

(2) सुरक्षित जगह-

जो सामने के चित्र से स्पष्ट है:-

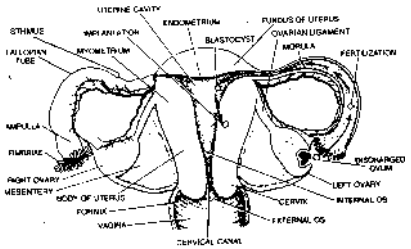

(3) 'अल्क़ह' (Alquah) यह अरबी में तीन अर्थो में प्रयोग होता है।

(क) रक्त का थक्का (Blood clot) जैसा **(ख)** जोंक (Leech) जैसा

(ग) लटकी (Suspended) हुई वस्तु जैसा

"फिर उस बूँद को लोथड़े (अलक़ह) का रूप दिया" ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

(क) रक्त का थक्का जैसा-

इसी अवस्था में भ्रूण के विकास की अनेकों अवस्थायें प्रारम्भ होती हैं। इसी अवस्था में रुधिर बंद वाहिनियों (Vessel) में आता है, जिस से यह अवस्था रक्त के थक्के से भरने के पश्चात जोंक जैसी प्रतीत होती है जो गर्भाशय (Uterus) से संलग्न होती है।

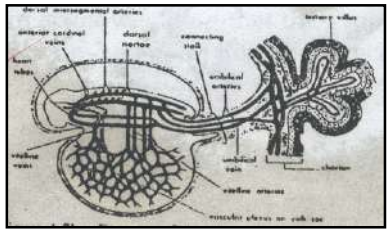

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً

(ख) जोंक जैसा

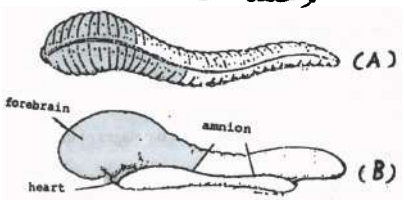

(ग) लटकी हुई वस्तु जैसा

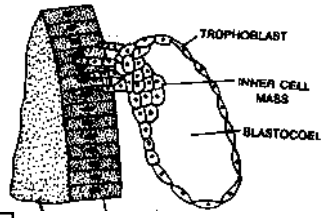

अतः कुर्आन का शब्द 'अल्कह' स्पष्टतया इस अवस्था को निरुपित करता है-

(4) 'मुज़्गह' (MUDGHAH) अर्थात गोशत का लोथड़ा या बोटी जैसा या चबाई हुई वस्तु जैसाः-

"फिर हमने उस लोथड़े को बोटी (मुज़्गह) का रूप दिया"

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً

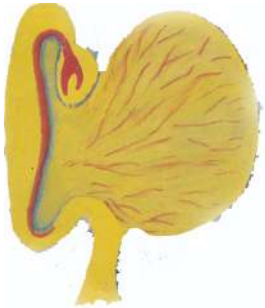

गोश्त के लोथड़ा या बोटी जैसा

فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً

चबाई हुई वस्तु जैसा

"फिर हमने बोटी की हड्डियाँ बनाई"

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا

(4) 'इज़ाम' (IDHAMAH)

कठोर बोटी अर्थात कार्टिलेज और हड्डी जिसमें (leevrtibral column) का निर्माण होता है-

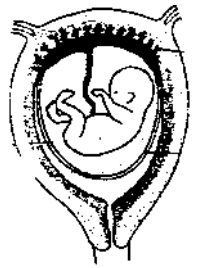

"फिर हमने उन हड्डियों पर माँस चढ़ाया"

فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا

(5) 'कसौनलूइज़ाम लह़मा'

(KASAUNALIDHAMA LAHMA) अर्थात हड्डियों पर माँस का चढ़ना

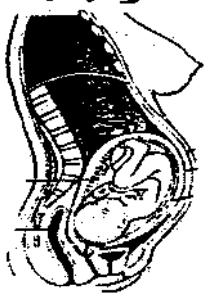

ثُمَّ أَنشَأْنَٰهُ خَلْقًا ءَاخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ ٱلْخَٰلِقِينَ ﴿١٤﴾

फिर हमने उसे एक दूसरा ही सृजन रूप दे कर खड़ा किया। अतः बहुत ही बरकत वाला है सबसे उत्तम सृष्टा

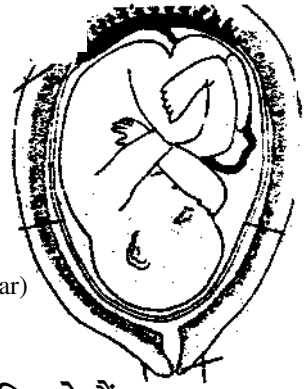

(6) 'ख़लक़न आख़र' (Khalaqan Akhar)

अर्थात एक नया जीव बना दिया

प्रो० मूरे इन आयतों के सम्बन्ध में लिखते हैं-

कि अत्यधिक अनुसंधान के पश्चात जो तथ्य हमें कुर्आन और हदीस से प्राप्त हुए हैं वास्तव में वे बहुत चौकानें वाले हैं क्योंकि यह तथ्य सातवीं ईस्वी के हैं जब भ्रूणकी के बारे में बहुत कम अध्ययन हुआ था। भ्रूण के सम्बन्ध में सब से पहला अनुसंधान जो ऐरिक स्टेट (Eric Stete) द्वारा चिकन के अण्डे पर किया गया, उस में भी इन अवस्थाओ का बिल्कुल उल्लेख नहीं है। अतः प्रोफेसर मूरे ने अपना निष्कर्ष कुछ इस प्रकार दिया-

> "It is clear to me that these statements must have come to Muhammad (SAW) from God, Allah, because almost all of this knowledge was not discovered until many centuries later. This proves me to that Muhammed (SAW) must have been a Messenger of God, Allah."

अनुवाद- "यह हमारे लिए स्पष्ट है कि यह तथ्य मुहम्मद (सल्ल०) पर अल्लाह की ओर से ही आया है क्योंकि इस (भ्रूणकी) सम्बन्ध की खोज ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की मृत्यु के बहुत बाद में हुई। यह हमारे लिए स्पष्ट करता है कि मुहम्मद अल्लाह के भेजे हुए सन्देष्टा हैं"।

प्रो० तेगासान के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

फ़रवरी 1995 में रियाज़ में होने वाली सभा में शेख ज़िन्दानी जो

इस्लामिक स्कालर हैं, उन्होंने कुर्आनी आयतों का वैज्ञानिक विश्लेषण जानने के लिए प्रो० तेगासान महोदय के सम्मुख कुर्आन की निम्न आयतें प्रस्तुत कीः-

> "जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब उनकी खालें पक जाएँगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, वे यातनाओं का मज़ा चखते ही रहें"।
>
> (कुर्आन)

और उन से पूछा गया कि क्या आप इस से सहमत हैं कि 1400 वर्ष पूर्व कुर्आन की यह आयत नर्व एण्डिंग (Nerve ending) के महत्व को दर्शाती है?

प्रो० तेगासान का स्पष्टीकरण उन्हीं के शब्दों में

> Yes I agree. This knowledge about sensation had been skin and then Allah puts a new skin on him, covers him, to make him know that the test is painful again. That means they knew many years ago that the receptor of pain sensation must be on the skin, so they put a new skin on.

अनुवादः-

> "हाँ मैं सहमत हूँ कि संवेदना के सम्बन्ध में यह (आज का अविष्कार) ज्ञान बहुत पहले ही से स्पष्ट हो चुका था, क्योंकि कुर्आन में कहा गया है कि पापियों को आग में जलाकर सज़ा दी जाएगी और जब उनकी त्वचा जल जाएगी तो अल्लाह उन्हें पुनः त्वचा प्रदान करेगा जिस से वह पाप का मज़ा चख सकें। इस से स्पष्ट है कि वे बहुत पहले जानते थे कि दर्द के आभास करने का रिसेप्टर (Receptor) त्वचा ही में होना चाहिए। अतः उस (अल्लाह) ने नई त्वचा को चढ़ा दिया"।

तत्पश्चात शेख जिंदानी ने प्रो० तेगासान से पूछा-

क्या यह सम्भव है कि कुर्आन की यह आयतें ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर किसी मनुष्य द्वारा पहुँचाई गई हों?

प्रो० तेगासान ने उत्तर दिया कि यह कभी भी किसी मनुष्य द्वारा नहीं सिखाई जा सकतीं।

प्रो० महोदय ने फिर उस स्रोत के बारे में पूछा-

शेख जिंदानी ने उत्तर दिया कि वह स्रोत अल्लाह ही है और उसी ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर यह ज्ञान फ़रिश्तों (Angels) के माध्यम से भेजा है।

तब प्रो० महोदय ने पूछा, वह अल्लाह कौन है?

शेख ने उत्तर दिया जो उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है-

"अल्लाह वह है जो समस्त सृष्टि का सृष्टा है। यदि आप बुद्धिमान हैं तो वह उसी का प्रदान किया हुआ है जो सब से अधिक बुद्धिमान है। यदि आप को सृष्टि के रचना का ज्ञान प्राप्त है तो उसी की ओर से है जो इस सृष्टि को पैदा करने वाला है। यदि आप को इन रचना के घटकों में पूर्णरूपता इस का पैदा करने वाला वह है जो सब से अधिक जानने वाला है। यदि आप को दया की प्राप्ति हो जाये तो यह इसको प्रमाणित करती है कि यह उस का पैदा किया हुआ है जो सबसे अधिक दयावान है। इसी प्रकार यदि आप अनेको अनेक वस्तुओं में समानता पायें जो एक दूसरे को जोड़े हुए हों तो यह इस का प्रमाण है कि इन समस्त का सृष्टा कोई एक ही है"।

अन्त में प्रो० महोदय का अपने विचार उन्हीं के शब्दों में-

(I believe that everything that has been recorded in the Quraan 1400 years ago must be truth, that can be proved by scientific means. since the prophet, Muhammed (SAW) could neither read nor write, Muhammad (SAW), must be a messenger who relayed this truth which was revealed to him (SAW) as on enlightment by the one who is the Eligible creator; This creator must be God, Allhah. Therefore I think this is the time to say,
There is no god (to worship) but Allah (one) and Muhmmad (SAW), is the last messenger of Allah.

अनुवाद-

मैं विश्वास करता हूँ कि कुर्आन में जो कुछ भी 1400 वर्ष पूर्व लिखा जा चुका सत्य है। जो आज अनेको वैज्ञानिक स्रोतों द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। चूँकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पढ़े लिखे न थे अतः वे अल्लाह के सन्देष्टा (रसूल) ही है और उन्हों ने योग्य सृष्टा की ओर से अवतरित ज्ञान को ही समस्त मनुष्यों तक पहुँचाया। वह योग्य सृष्टा अल्लाह ही है।

इसलिए लगता है कि वह समय आ गया है कि मैं गवाही देते हुए पढ़ूँ-

"ला-इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"

"नहीं कोई मअ़बूद (पूज्य) सिवाय अल्लाह के और मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के भेजे हुए (अन्तिम) सन्देष्टा है"।

प्रो० कार्नर जी के अनुसार

इन का पूरा नाम अल्फ्रेड कार्नर है, यह संसार के मुख्य भूगर्भ (Geology) वैज्ञानिकों में से एक हैं। जिन्हें संसार के महान वैज्ञानिकों द्वारा भूगर्भ विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिपादित सिद्धान्तों के सटीक आलोचक के रूप में ख्याति प्राप्त है।

उन्होंने भूगर्भ विज्ञान के आधार पर कुर्आन की निम्न आयत का स्पष्टीकरण इस प्रकार लिखा है:-

अनुवाद- "क्या उन लोगों ने जिन्होंने इन्कार किया देखा नहीं कि यह आकाश और धरती बन्द थे, फिर हमने उन्हें खोल दिया और हमने पानी से हर जीवित चीज़ बनाई"। **(कुर्आन 21:30)**

उपर्युक्त आयत में प्रयुक्त कुर्आन का शब्द 'रतक़ान' दर्शाता है कि पहले आकाश व पृथ्वी एक साथ मिले हुए थे बाद में वे पृथ्क हो गये। प्रो० कार्नर ने इस विषय पर यह कहते हुए कि कुर्आन चौदह सौ वर्ष पूर्व यह स्पष्टीकरण उस व्यक्ति के माध्यम से प्रदान कर रहा है जो अनपढ़ था। अतः यह स्पष्ट है कि यह ज्ञान मनुष्य द्वारा तो हो ही नहीं सकता, उन्हीं के शब्दों में....

"Thinking of many these questions and thinking where Muhammd (SAW) come from, he was after all a bedouin. he could have known about things like the common origin of the universe, because scientists have only found out within the last few years with very complicated and advance technological methods that this is the case." *(-Press F. and Siever, R."EARTH", IIIded, W. H. Freeman and co. 1982)*

प्रो० कार्नर जी एक दूसरे स्थान पर इस प्रकार लिखते हैं-

प्रो० कार्नर महोदय ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की निम्न हदीस जो सही मुस्लिम से उद्धृत किया है, जिस का स्पष्टीकरण इस प्रकार लिखा है:-

"The last Hour (The day of Judgement) will not come upon us

until the lands of the Arabs are once again pasture lands and filled with rivers." (Sahieh Muslim)

अनुवाद- "क़ियामत उस समय तक नहीं आएगी। जब तक कि अरब मरुस्थल फिर से हरा भरा न हो जाए और यहां नदियाँ न बह जाएँ"। **(मुस्लिम)**

प्रो० कार्नर प्रस्तुत हदीस के सम्बन्ध में लिखते हैं कि बर्फीले काल (Snowage) में अरब प्रायद्वीप हरा भरा था। आज के वैज्ञानिक अविष्कारो से स्पष्ट हुआ है कि उत्तर ध्रुवीय बर्फ के पिण्ड (North polar Iceberge) धीरे-धीरे ध्रुवीय बर्फ के पिण्ड सापेक्षता अरब प्रायद्वीप (Peninsula) के समीप पहुंचेंगे, तो वहां मौसम बदलेगा और यह प्रायद्वीप संसार का सब से अधिक हरा भरा और ठण्डा प्रायद्वीप बन जाएगा। उन्हीं के शब्दों में-

"The new snow age has actually started and we can see the snow crawling once again from the North pole southwards. In Fact the polar snow is now on the way to get closer to the Arabian Peninsula. we can see the signs of this in the snow blizzard striking the North part of Europe&America every winter. Scientists have other signs and information proving the actual beginning of another snow age it is the scientific fact." *-Press F. & Siever,R.,*.....

"This could have been known to him only through revelation from above."

अनुवाद- इस गूढ़ वैज्ञानिक परिवर्तन का ज्ञान उस समय मुहम्मद (सल्ल०) को ईश्वरीय प्रदत्त था।

सारांश

प्रो० महोदय कुर्आन के विषय में लिखते है कि यदि इस में लिखित विज्ञान से सम्बन्धित समस्त आयतों को इकट्ठा कर दिया जाये तो यह कहना कि कुर्आन एक साधारण मनुष्य के लिए साधारण भाषा में गूढ़ वैज्ञानिक पुस्तक है असत्य न होगा। वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के विषय में लिखते हैं कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सुकथनो में से उन कथनों को जो विज्ञान से सम्बन्धित हैं आज की महान वैज्ञानिक खोजो के उपरान्त प्रमाणित भी किया जा सकता है। अतः यह

कहना बिल्कुल उचित होगा कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अल्लाह की ओर से भेजे हुए सच्चे संदेष्टा ही हैं। उन का अनपढ़ होना और उन के समय में विज्ञान का अपने प्राथमिक अवस्था में होने के बावजूद इतना गूढ़ वैज्ञानिक व तार्किक तथ्य देना, उन के संदेष्टा होने का प्रमाण है।

प्रोफ़ेसर हे (Professor Hay) के अनुसार

यह अमेरिका के महान समुद्री वैज्ञानिकों (Marine scientist) में से एक हैं इन्होंने कुर्आन की निम्न आयतों का आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के आधार पर निम्न स्पष्टीकरण इस प्रकार लिखा है:-

"उसने (अल्लाह) दो समुद्रों को प्रवाहित कर दिया, जो आपस में मिल रहे होते हैं। उन दोनों के बीच एक पर्दा बाधक होता है, जिस का वे अतिकम्रण नहीं करते"। **(कुर्आन 55:19-20)**

कुर्आन में दूसरे स्थान पर है:-

"और वही (अल्लाह) है जिसने दो समुद्रों को मिलाया एक स्वादिष्ट और मीठा। दूसरा कड़वा और खारा और दोनों के बीच उसने एक पर्दा डाल दिया है और एक पृथक करने वाली रोक रख दी है"।

(कुर्आन 25:53)

समुद्रों के जल के आपस में मिलने के बावजूद खारे और मीठे जल का पृथक रहना उस स्थान पर देखा गया है जहाँ कोई बड़ी नदी समुद्र में आकर गिरती है। इस के अतिरक्त स्वयं समुद्र में भी मीठे जल के स्रोत पाये जाते हैं। जिनका जल समुद्र के अत्यन्त खारी जल के मध्य में अपनी मिठास पर क़ायम रहता है। उदाहरणार्थ 'बहरैन के निकट और फारिस की खाड़ी में समुद्र की तली से बहुत से स्रोत निकले हुए हैं जिन से लोग मीठा जल प्राप्त करते हैं।

इन आयतों का वैज्ञानिक स्पष्टीकरण देने के लिए प्रो० हे जी लिखते हैं:-

जल के यह दोनों स्रोत जिस प्रकार हमें बाहर से समान दिखाई पड़ते हैं वास्तव में वे वैसे नहीं हैं वे अनेकों भौतिक अवस्थाओं में भिन्न हैं। जैसे धनत्व

(Density) ताप, खारापन, सान्द्रता (Salinity, concentration)

इस में प्रयुक्त सफेद रेखायें दो समुद्रों के बीच परस्पर आवरण (Partition) को दर्शाती हैं। प्रत्येक आवरण क्रमागत समुद्रों को अलग करता है जो सान्द्रता, ताप, घनत्व, BOD (Biological oxygen Demand) में भिन्न- भिन्न हैं वैज्ञानिकों ने अनेकों मेरीन स्टेशनों की स्थापना के पश्चात इस प्रतिबिम्ब को 1942 में प्राप्त किया है।

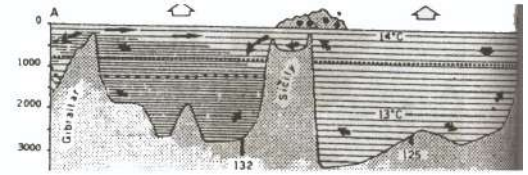

Fogure 8-2 : Water mass circulations showing the divider betwe the Mediterranean and the Atlantic Ocean at Gibraltar (Ref.No.

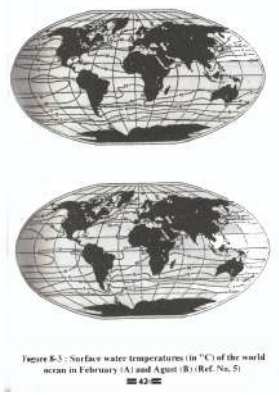

Figure 8-3 : Surface water temperatures (in °C) of the world ocean in February (A) and Agust (B) (Ref. No. 5)

यहाँ हमें मेडिटिरेनियन (Mediterranean) और अटलांटिक (Atlantic) महासागर का आवरण दिखाई दे रहा हैं। इस प्रतिबिम्ब के मध्य में जो रंगीन त्रिभुज (Traingle) दिखाई दे रहा है, यह जिब्राल्टर राक (Gibraltar Rock) का आधार है।

प्रस्तुत प्रतिबिम्ब जल के विभिन्न ऊष्मीय गुणों के आधार पर आधुनिक यन्त्रों द्वारा लिया गया है। और यही कारण है कि समुद्र भिन्न -भिन्न रंगों में

दिखाई पड़तें हैं। उदाहारणार्थ कहीं काला, कहीं गहरा नीला आदि रंग दिखाई पड़ते हैं। रंगों की भिन्नता, तापमान में भिन्नता के कारण होती है।

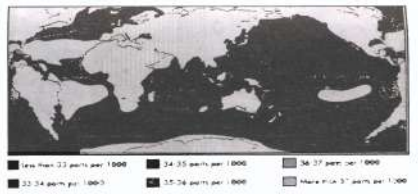

Map showing the variations in surface salinity throughout the world's oceans for the month of February (Ref. No. 3)

खारे और मीठे पानी का घनत्व भिन्न होने के कारण उन का गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational force) भी भिन्न-भिन्न होता है और दोनों आपस में नहीं मिलते।

(Kennett, J,P; "Marine Geology", prentice-Hall, Inc; 1982 --"OCEAN", "Elder, D. and Pernatta, J. editor, world conservation Atlas, Mitchell Beazley publishers, 1991)

अन्त में प्रो० महोदय लिखते हैं:-

इतने गूढ़ अर्थ का उल्लेख कुर्आन में होना इस का प्रमाण है कि यह अल्लाह की ओर से अवतरित ग्रन्थ है और चूँकि इसका अवतरण उस व्यक्ति पर हुआ जो अनपढ़ था। यह भी इस का प्रमाण है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह ही के सन्देष्टा हैं क्योंकि 1400 वर्ष पूर्व समुद्रों के सम्बन्ध में बहुत कम ही ज्ञान था, यह ज्ञान तो हमें उन्नीसवीं सदी के अन्त में ही प्राप्त हो पाया है।

उपर्युक्त कुछ उदाहरणों के पश्चात विस्तार से बचने के लिए अब हम केवल कुछ अन्य वैज्ञानिकों के कथनों को सामने रखेंगे। फिर अन्त में केवल वैज्ञानिको के नामों का उल्लेख करेंगे फिर पवित्र कुर्आन की उन आयतों को चित्रानुसार स्पष्ट करेंगे जिससे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सन्देष्टा होना सिद्ध होता है:-

प्रो० सिम्पसन (Simpson) जी के अनुसार

It follows, I think, that not only there is conflict between genetics & religion, but in fact religion can guide science by adding revelation to some of the traditional scientific approaches, that there exists statements in the Quraan shown by science to be valid, which support knowledge in the Quraan having been derived from God.

प्रो० मार्शल जानसन जी के अनुसार

Anatomy "As a scientists, I can only deal with things which I can specifically see. I can understand Embryology, Developmental biol-

ogy, I can understand the word that are translated to me from the Quraan. As I gave the example before..... I see no evidence for the fact to refute the concept that this individual, Muhammad (SAW), had to be developing the information from some place. so I see nothing here in conflict with the concepts that **divine intervention was involved in what he was able to write."**

प्रो० युश्युदी कुसान जी के अनुसार

"I say, I am very much impressed by finding true Astronomical facts in the Quraan."

प्रो० टी० वी० एन० प्रसाद जी के अनुसार

"I have no difficulty in my mind concerning that this (Quraan) is divine inspiration or revelation which led him {Muhammad SAW} to relay the. statements."

दूसरी जगह लिखते है-

"It seeme to me that Muhammad (SAW) was a ordinary man..... I have no difficulty in my mind in concerning that this (Quraan) is a divine inspiration which led him (Muhammad, (SAW) to these statements"

प्रो० दोर्जा राव (Dorja Rao) जी के अनुसार

It is difficult to imagine that this type of knowledge is existing at that time around 1400 years ago ..... This (Quraan) is definitely **not simple human knowledge.** A normal human being can not explain this phenomenon in that much detail. so, I think the information must have come from a supernatural source (ie Allah.)

प्रो० श्रोडर (Shrowder) जी के अनुसार

Actually that the scientists are now discovering what has said before (in the Quraan).

प्रो० आर्मस्ट्रांग जी के अनुसार

"There may well have to be something beyond what we understand as ordinary human experience to account for the writings that we

have seen in the Quraan."

उपर्युक्त दिये गये वैज्ञानिकों के विचार के बाद अब हम केवल कुछ वैज्ञानिकों के नामों का उल्लेख करते है जैसे-

1- Gaseous Hypothesis of kant.
2- Nebular Hypothesis of Laplace.
3- NOVA Hypothesis of Lyttleton.
4- WON- WEITZ Nebular cold Hypothesis.
5- OTTO schmidts intersteller dust Hypothesis
6- Chemical Hypothesis of Urey.
7- Continental Drift hypothesis of Wegener.
8- Thermal cycle theory of Jolly.
9-. HAY FORD & BOWIE'S Concept of Isotancy
10- Jolly's concept of Isotancy
11- Lamarkism, Oparinism.
12- Tall Mann's theory of Doomsday
13- Bethe's theory- Nucleav reaction or Nuclear fusion theory
14-Albert Einstein's theory.
15- Sr. James Jeans theory

उपर्युक्त दिये गये वैज्ञानिकों के विचारो के पश्चात अब केवल पवित्र कुआन जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित हुआ चित्रानुसार स्पष्ट किया जाता है। जैसे.....

पवित्र कुर्आन और विज्ञान

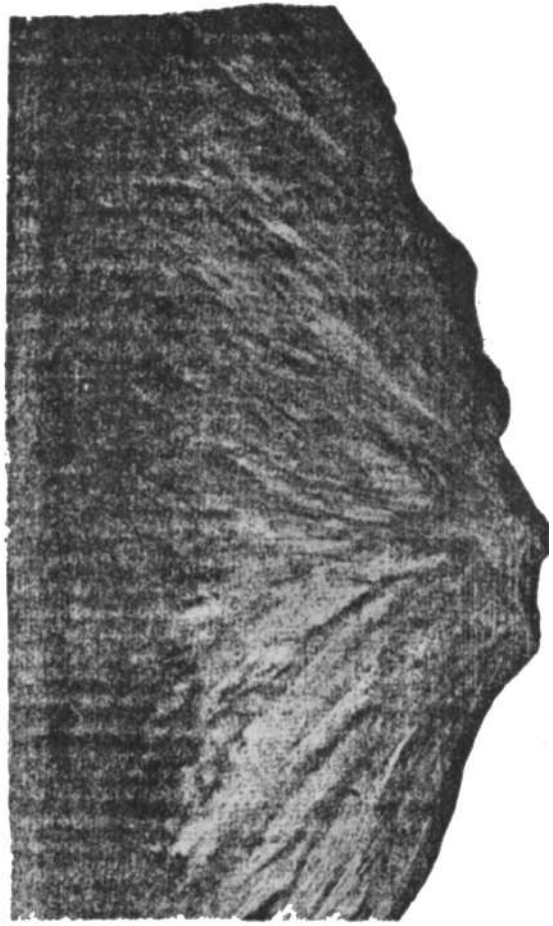

BALANCED STATE OF MOUNTAINS

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ﴿١٩﴾

और 'हमने' धरती को फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिये, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ में उगाई। (सूरः हिज्र, आयत नं० 19)

يَسْئَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ ﴿٦﴾ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ﴿٨﴾
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ﴿٩﴾

अनुवाद- पूछता है, "क़ियामत का दिन कब आएगा?" तो जब निगाह चौंधिया जाए; और चांद बेनूर हो जाए; और सूरज और चांद इकट्ठे कर दिये जाएँ; (सूरः क़ियामः आयत नं० 6 से 9)

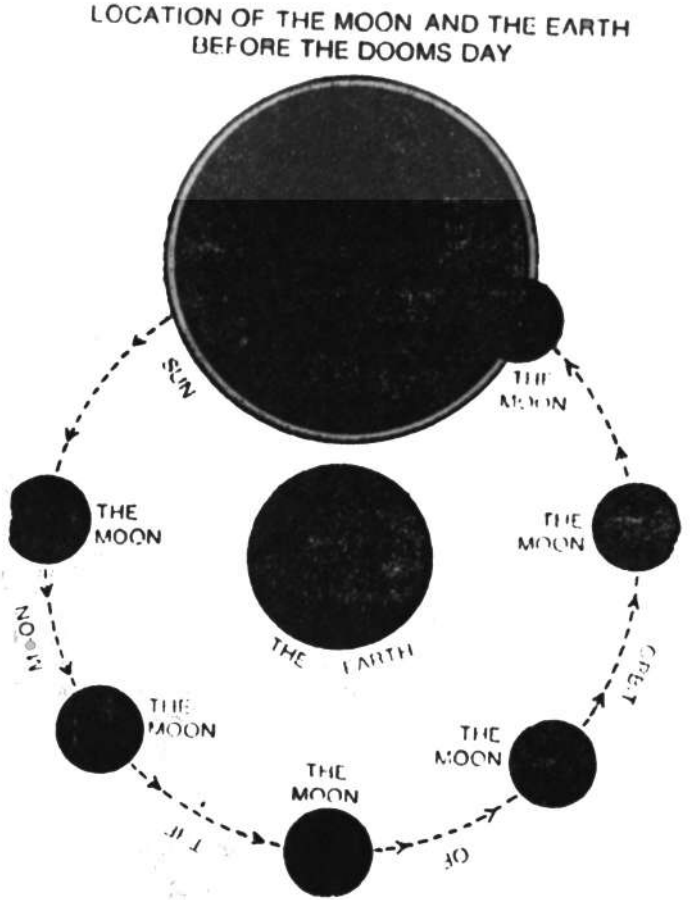

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝

अनुवाद- न तो सूरज ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है और सब अपने दायरे (कक्ष) में तैर रहे हैं। (सूरः यासीन आयत नं० 40)

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ۝

अनुवाद- और चाँद के लिए अनुवाद- और चाँद के लिए 'हमने' मंज़िलें ठहरा दीं, चला जा रहा है, यह बड़ी ताक़त वाले इल्म वाले का यहां तक कि फिर वह ऐसा हो जाता है जैसे खजूर की (निश्चय किया हुआ) अन्दाज़ा है। (सूरः यासीन आयत नं० ३८) पुरानी टहनी। (सूरः यासीन आयत नं० ३९)

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝

(निर्धारित नियम है।)

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝

अनुवाद- और जब समुद्र बह (कर मिल) जाएँगे; (सूरः इन्फ़ितार आयत नं० 3)

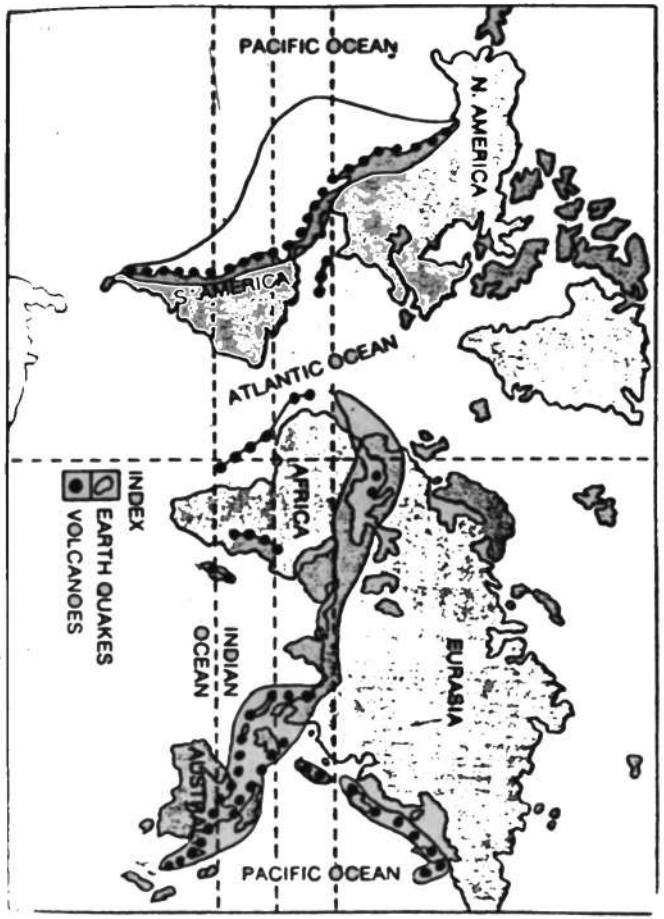

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝

अनुवाद- और जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएँगी;
(सूरः इन्फ़ितार आयत नं० 4)

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝

फिर वह आसमान की तरफ़ ध्यान दिया जो उस समय केवल धुआं (भाप या वाष्प) था। (उसने) आसमान और ज़मीन से कहा, "अस्तित्व में आ जाओ चाहे तुम चाहो या न चाहो।" दोनों ने कहा, 'हम आ गये आज्ञा पालकों की तरह।"

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا

तब उसने दो दिन के अन्दर सात आसमान बना दिए और हर आसमान में उसका हुक्म उतार दिया और संसार के समीपस्थ आसमान को हमने दीपकों से सुसज्जित किया और उसे ख़ूब सुरक्षित कर दिया।

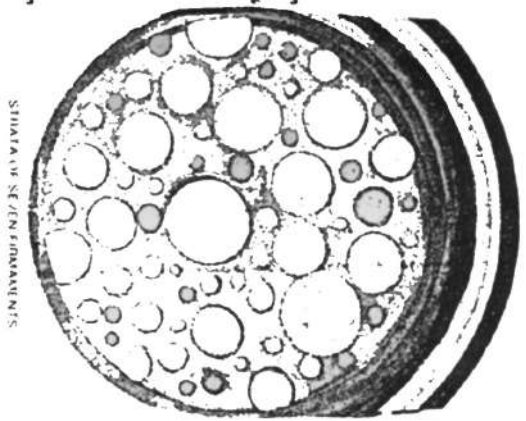

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

अनुवाद- क्या इन्कार करने वालों ने नहीं देखा! कि आसमान और ज़मीन आपस में मिले हुए थे, फिर 'हमने' उन्हें अलग-अलग कर दिया, और 'हमने' पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया, क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाएँगे?

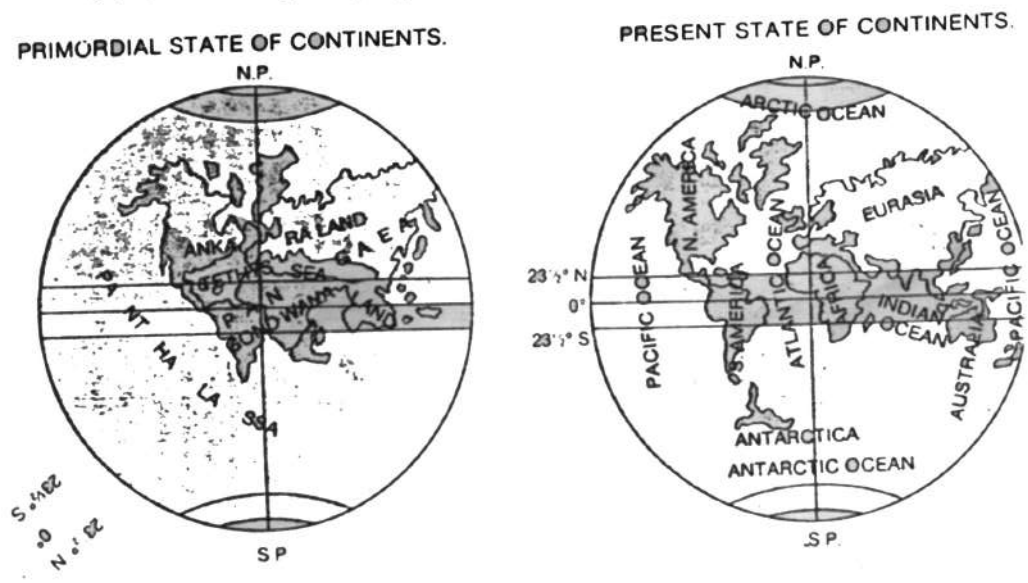

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

अनुवाद- 'उसने' दो समुद्रों को मिलाया, कि आपस में मिले हुए हैं; उनके बीच एक पर्दा है कि दोनों आगे बढ़ नहीं सकते।
(सूरः रहमान आयत नं० 19,20)

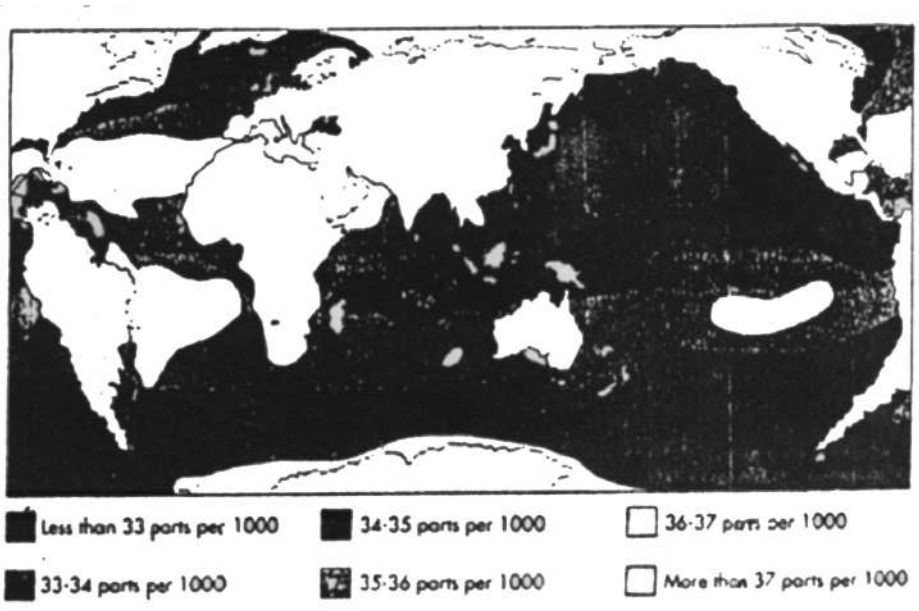

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝

और 'वही' तो है जिसने रात और दिन को, और चाँद और सूरज को पैदा कर दिया; यह सब अपने-अपने मदार (मण्डल) में तैर रहे हैं। (सूरः अम्बिया, 33)

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۭ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۭ

अनुवाद- या (उनके आ़माल ऐसे हैं) फिर जैसे एक गहरे समुद्र में अन्धेरे हों, जिस पर लहर चढ़ी आ रही हो और लहर के ऊपर लहर छा रही हो उसके ऊपर बादल हो, अन्धेरे हों। (सूरः नूर आयत नं० ४०)

यह और ऐसी ही बहुत-सी बातें क़ुरआन में मिलती हैं कि क़ुरआन को ईशग्रन्थ माने बग़ैर और ह० मुहम्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा माने बग़ैर कोई व्यक्ति रह नहीं सकता।

(1) विस्तार के लिए हिन्दी में मु० यूनुस क़ुरैशी साहब की पुस्तक 'लाइलाहा इल्लल्लाह।
(2) This is the truth.
(3) The Bible the Qur'an and Science by Mausrice Bucaidle.

भाग-12

ईश सन्देष्टा की धारणा पवित्र कुर्आन के पन्नों में

ईशदूतत्व विश्वास

आप ने अनेक धार्मिक ग्रन्थों में जिन-जिन स्थानों पर अन्तिम सन्देष्टा के आने की भविष्यवाणी की है उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ा। अब हम अन्त में अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अवतरित अन्तिम पुस्तक की ओर चलते हैं।

अन्तिम सन्देष्टा महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) किसी एक देश, जाति अथवा सम्प्रदाय के नहीं हैं जैसा कि दूसरे वर्ग के लोगों ने यह समझ रखा है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तो इस्लाम के संस्थापक और मुसलमानों के सन्देष्टा हैं तो ऐसा नहीं बल्कि! जितना अधिकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और 'कुर्आन' पर मुसलमानों का है उतना ही प्रत्येक मुनष्य का है।

पवित्र कुर्आन के अनुसार ईशदूत की धारणा

अनुवाद- "हर जाति के लिए एक संदेश-वाहक हुआ है। फिर जब उनका संदेश वाहक पहुँचा तो उनके बीच जो मतभेद पैदा हो गया था उसका न्याय के साथ फ़ैसला कर दिया गया। ऐसा नहीं होता कि लोगों के साथ अन्याय किया जाये"। **(सूरः यूनुस आयत न० 47)**

इसी तरह एक स्थान पर है-

अनुवाद- (ऐ मुह़म्मद!) हमने तुमको सत्य के साथ (सत्य कर्मियों के लिए) शुभ सूचना देने वाला (कुकर्मियों को कुकर्म के परिणाम से) डराने वाला बना कर भेजा है और कोई ऐसी जाति नहीं हुई जिसमें कोई सचेत करने वाला न आया हो"। **(सूरः फ़ातिर आयत नं० 24)**

इसी प्रकार एक दूसरे स्थान पर कहा गया है-

अनुवाद- "ऐ मह़म्मद! तुम (कुकर्म के कुपरिणाम से) सचेत करने वाले हो और हर जाति के लिए एक संमार्ग दर्शक हो"।

(सूरः रअ़द आयत न० 7)

पवित्र कुर्आन कहता है कि हमने प्रत्येक समूह में ईशदूत भेजे इस प्रकार हर समूह में सन्देष्टा अपने-अपने समय पर आते रहे जो कुछ समय तक जीवित रहते थे और अपने बाद आने वाले अन्तिम सन्देष्टा की भविष्यवाणी कर जाते थे परन्तु उनके जाने के बाद लोग उन्हीं को पूजना शुरु कर देते थे और उनकी शिक्षाओं को भुला देते थे।

सभी ईशदूत बताते कि अभी तो मेरी बात के मानने में कल्याण है। परन्तु मैं अन्तिम सन्देष्टा नहीं हूँ। जिसको कुर्आन ने इस प्रकार कहा है-

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) सारी मानव जाति के उद्धारक

पवित्र कुर्आन ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को इन शब्दों में सम्बोधित करते हुए कहा-

अनुवाद- "ऐ मुह़म्मद! तुम कहो कि ऐ मनुष्यों! मैं तुम सब की ओर उस परमेश्वर का सन्देशवाहक हूँ जो सारी सृष्टि का पालनहार है। उसके अतिरिक्त कोई मालिक नहीं है। वही जीवन प्रदान करता और मृत्यु देता है। अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उस अनपढ़ सन्देशवाहक पर (जो अनपढ़ होते हुए भी कुर्आन जैसा अपूर्व ज्ञान स्रोतउपस्थित कर रहा है) और जो परमेश्वर की सभी वाणियों (अर्थात् ईश्वरीय पुस्तकों) को मानता है उसका अनुकरण करो ताकि तुम पर कल्याण मार्ग खुल जाये"। **(सूरः अ़अराफ- आयत नं० 158)**

एक और स्थान पर कुर्आन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सम्बन्ध में यूँ कहा गया है:-

अनुवाद- "अति महिमाशाली है वह अल्लाह जिसने अपने भक्त ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर फ़ुर्क़ान (सत्य और असत्य में भेद करने वाला कुर्आन) उतारा ताकि वह सारे जगत वालों को (कुकर्म के दुष्परिणाम) सचेत करने वाला हो"। **(सूरः फ़ुर्क़ान आयत नं० 1)**

इसी प्रकार एक और स्थान पर परमेश्वर (अल्लाह) ने आपको सम्बोधित

करते हुए कहा कि-

अनुवाद- "ऐ मुह़म्मद! हमने तुमको सारे ही मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और सचेत करने वाला बनाकर भेजा है"।

(सूरः सबा आयत नं० 28)

ऊपर की ईशवाणियों से यह पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक जाति व सम्प्रदाय में परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा आते और वह यह भी बताते थे कि मैं अन्तिम सन्देष्टा नहीं हूँ कुर्आन एक प्रमाणिक पुस्तक है जिसमें कभी एक अक्षर न घटाया गया और न किसी प्रकार का परिवर्तन ही किया गया और यह पुस्तक बता रही है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को परमेश्वर ने अन्तिम सन्देशवाहक तथा समस्त संसार को सत्य मार्ग प्रदर्शित करने वाला बना कर भेजा है तो अवश्य ही इससे पूर्व आने वाली ईश्वरीय पुस्तकों या ग्रन्थों में उस अन्तिम ईशदूत की विशेषताओं और उसके प्रकट होने का समय निर्धारित किया गया होगा जिनकी व्याख्या विस्तार पूर्वक आपने तमाम पिछले ग्रन्थों में पढ़ी इसलिए कि जब परमेश्वर एक है तो उसकी ओर से आने वाली ईश्वरीय वाणी भी एक ही होनी चाहिये।

पवित्र क़ुर्आन में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के सम्बन्ध में कहा गया है कि

अनुवाद- "कहो ऐ नबी! मैं तो केवल तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूँ। मेरी ओर वह़्य की जाती है कि तुम्हारा इलाह (उपास्य) अकेला"।

(सूरः कहफ़ आयत नं० 110)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अन्तिम सन्देष्टा के रूप में

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) केवल एक सन्देष्टा और उस परमेश्वर (अल्लाह) के सच्चे भक्त थे। उन पर अन्तिम ईशवाणी कुर्आन नाज़िल हुआ जो पूरी दुनिया के तमाम इन्सानों के जीवनयापन का एक सम्पूर्ण विधान है। इसको स्वयं ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने ऊपर लागू कर के बता दिया कि इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपना जीवनयापन कर सकता है। इसलिए कि अब कोई दूसरा सन्देष्टा महाप्रलय (क़ियामत) तक नहीं आएगा उनको कुर्आन ने 'ख़ातिमुन्नबीयीन' के नाम से ज़िक्र किया है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अब नुबूवत समाप्त हो गयी और अब कोई दूसरा नबी नहीं आएगा।

यदि हम यह सोचें कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) भारत में क्यों नहीं पैदा हुए तो यह बात तर्क संगत न होगी इसलिए कि अ़रब में पैदा होने का कारण अ़रब देश या अ़रब की संस्कृति या अ़रब की राष्ट्रीयता न थी बल्कि वह पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ तथा क़ियामत तक आने वाले सभी मनुष्यों के नबी रसूल या सन्देष्टा बनने वाले थे इसलिए उन्हें पृथ्वी के केन्द्र बिन्दु मक्का कअ़बः में जो ईश्वरीय घर है वहाँ पैदा किया गया, ताकि पूरे संसार को केन्द्र से सम्बोधित कर सकें और सम्पूर्ण इन्सानों के लिए नमूना बन कर दिखा सकें और ईश्वरीय वाणी पूरे संसार तक विकसित कर सकें।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने आने के बाद पिछली पुस्तकों और सन्देशवाहकों की पुष्टि की और कहा, "जिस समय तक तुम्हें किसी पुस्तक या सन्देशवाहकों का सत्य ज्ञान न प्राप्त हो जाय उस समय तक उन्हें कुछ मत कहो" (इसलिए कि हो सकता है कि वह परमेश्वर के भेजे हुए सन्देष्टा हों तथा बाद में दूसरे लोगों ने उन्हें वास्तविक रूप से अलग कर दिया हो।)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने परमेश्वर के आदेशानुसार पिछले तामाम सन्देशवाहकों पर आस्था रखने और अपने को अन्तिम सन्देष्टा मानने का आदेश दिया।

इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने किसी राष्ट्रीय भाषा या संस्कृति का प्रचार नहीं किया बल्कि ईश्वर की ओर से अवतरित अन्तिम ईशवाणी (जो अ़रबी भाषा में थी पवित्र क़ुर्आन के रूप में) सम्पूर्ण विश्व के तमाम इन्सानों तक पहुंचाने और उसके अनुसार पालन करने का हुक्म दिया, इसलिए यह कहना बिल्कुल उचित नहीं है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने अपने राष्ट्रवादियत को तमाम दुनिया के मुसलमानों पर लागू किया।

मैं समझता हूँ कि पाठक अब निष्पक्ष होकर सत्य मार्ग की खोज के लिए आज और इसी समय से सत्य मार्ग की ओर यात्रा प्रारम्भ कर देंगे और अन्तिम सन्देशवाहक के विषय में जो मतभेद है कि वह कहां पैदा हुए और वह कब आये और कौन हैं? इसका उत्तर स्वयं मिल गया होगा, इसलिए अब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अपने अन्तिम सन्देशवाहक के रूप में स्वीकार करके उनकी

शिक्षाओं को अपने जीवन में ग्रहण करने का प्रयास करेंगे जिससे लोक परलोक की समस्याएँ दूर हो जाएँगी और हमारा जीवन शांतिमय हो जायेगा।

अब अगले पृष्ठों पर हम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की संक्षिप्त जीवनी पेश करते हैं जो पाठकों के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा समझने में सहायक होगी।

खण्ड (ख)

भाग-1

अन्तिम सन्देष्टा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का संक्षिप्त परिचय

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का वंश

सर्वप्रथम जब ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) मक्का शहर में आये तो उस समय 'मक्का' के चारों ओर 'क़बील-ए-जुर्हुम' आबाद थे। उसी वंश में ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने ह़ज़रत 'इस्माईल (अ़लै०) का विवाह किया और उनसे जो सन्तानें पैदा हुईं उन्हें 'मुस्तारबा' कहा जाता है।

ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) से दो सन्तानें पैदा हुई।

1. इस्माईल 2. इस्ह़ाक

जिसमें से ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) की सन्तानें मक्का में आ़बाद हुईं। उसी वंश में 58वीं पुश्त के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने जन्म लिया। अतः आप (सल्ल०) इस्माइली नस्ल से हुए।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जन्म से पूर्व संसार की दशा

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म छठी शताब्दी में उस समय हुआ जिस समय चारों ओर अत्याचार, भ्रष्टाचार, लूटमार, शराब तथा गुमराही के घटाटोप बादल छाए हुए थे, अन्धकार ही अन्धकार था। रोम, ईरान और अ़रब के जीवन दर्शन पतन ग्रस्त हो चुके थे। मानव सभ्यता और संस्कृति के पूरे वृक्ष को जड़ से लेकर शिखर तक अनैतिकता, क्रूरता, अश्लीलता और शोषणवादी व्यवस्था की दीमक ने खोखला कर दिया था।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व यहूदी धर्म की दशा

यहूदी धर्म में बेजान रीतियाँ और परम्पराएँ बाक़ी हैं जिनमें जीवन की कोई दमक बाक़ी नहीं। यहूदी धर्म स्वयं अपने में एक नस्ली धर्म है जिसमें दुनिया के

लिए कोई नमूना या मानवता के दुखों का मुकम्मल इलाज नहीं है।

एक धर्म का एकेश्वरवाद में विश्वास भी (जो विभिन्न धर्मों एवं कौमों में इसका विशिष्ट चिन्ह रहा है जिसमें) इसके आदर व सम्मान तथा बनी इस्राईल की अन्य क़ौमों पर इसकी प्राथमिकता का भेद निहित है और जिसकी वसीयत हज़रत इब्राहीम और याकूब (अ़लै०) ने अपने बेटों को की थी) अडिग न रह सका। यहूदियों ने अपने अक़ीदों को क़ुबूल कर लिया तथा उनकी अनेक मुश्रिकाना–[1] एवं जाहिली परम्पराओं को अपना लिया। इस बात को कुछ न्यायप्रिय यहूदी इतिहासकरों ने स्वयं स्वीकार किया है, Jewish Encyclopaedia Vol. XII के पृष्ठ 568-69 से एक उद्धरण का अनुवाद इस प्रकार है:-

'मूर्ति पूजा के विरूद्ध नबियों का क्रोध यह ज़ाहिर करता है कि देवताओं की पूजा इस्राईली जनता के दिलों में घर कर चुकी थी और बाबुल से वापस आने के समय तक पूरी तरह इसका अन्त नहीं हुआ था अन्य विश्वास और जादू टोना के द्वारा अनेक मुश्रिकाना विचार एवं रस्में जनता ने दोबारा क़ुबूल कर लिए थे। तालमूद से भी इस बात का प्रमाण मिलता है कि मूर्ति पूजा में यहूद के लिए बड़ा आकर्षण था'।

बाबुल की तलमूद[2] (जो यहूदियों में अत्यन्त पवित्र समझी जाती है और कभी-कभी तौरेत पर भी इसको प्राथमिकता दी गई है तथा जो छठी शताब्दी ईसवी में यहूदियों में लोकप्रिय एवं प्रचलित थी) कम अक़्ली, अशिष्ट शब्दों, ईश्वर के प्रति अशिष्ट व्यवहार, धर्म व अक़्ल की सच्चाइयों के साथ मज़ाक के ऐसे अजीब व ग़रीब नमूनों से भरी हुई है जिनको देखकर उस शताब्दी में यहूदी समाज के बौद्धिक पतन तथा धार्मिक अभिरुचि के बिगाड़ का पूरा अन्दाज़ा होता है–[3]।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व ईसाई धर्म की दशा

ईसाई धर्म अपने पहले ही दौर में उग्रवादियों के परिवर्धन, जाहिलों की व्याख्या तथा रूमी नसरानियों की मूर्ति पूजा का शिकार हो गया था। हज़रत मसीह

1. खुदा की ज़ात में किसी को शरीक करना।
2. यहूदियों के धर्म एवं आचरण की शिक्षा की किताब।
3. विस्तृत वर्णन के लिए देखें यहूदी की रोशनी में लेखक डा० रोहलिंग।

(अ़लै०) की सादा व पवित्र शिक्षाएँ मलूबे के नीचे दफ़न थीं और एक निष्ठा के साथ अल्लाह की अ़िबादत की किरन घने बादलों के अन्दर छिप चुकी थी।

चौथी शताब्दी के अन्त में ईसाई समाज में तस्लीस का अक़ीदा–[1] किस प्रकार रच बस गया था इसके बारे में एक ईसाई विद्वान लिखता है:-

यह विश्वास कि एक खुदा तीन सूत्रों (इकाइयों) से मिलकर बना है ईसाई दुनिया की पूरी ज़िन्दगी में चौथी शताब्दी के अन्त ही में रच बस गया था जिसको मसीही दुनिया सरकारी और मान्यता प्राप्त अक़ीदा की हैसियत से बहुत दिनों तक मानती रही, यहां तक कि उन्नीसवीं शतब्दी के उत्तरार्ध में इस विश्वास के परिवर्तन तथा इस स्वरूप तक पहुँचने का भेद खुला–[2]।

एक समकालीन ईसाई इतिहासकार Rev. J. Houstan Baxtor ने ईसाई सोसाइटी में मूर्तिपूजा के प्रारम्भ तथा उसकी नयी-नयी शक्लों की (उनकी धार्मिक पहचान, उनके आचार व्यवहार, त्योहारों एवं आयोजनों में) आंख बन्द कर के नक़ल, उनसे प्रभावित होकर अथवा अज्ञानता के कारण उनकी नक़ल करने की भावना तथा इस मामले में ईसाइयों द्वारा नयी-नयी बातें गढ़ने का खूब वर्णन किया है। वह अपनी किताब The History of Christianty in The Light of Modern knowledge (Glasgow 1929 PP 407) मे लिखता है:-

"मूर्ति पूजा ख़त्म तो हो गई मगर तबाह नहीं हुई बल्कि लुप्त हो गई। लगभग सब ही कुछ जो मूर्तिपूजा में था, ईसाइयत के नाम से चलता रहा। जिन लोगों को अपने देवताओं और लोकनायकों से हाथ धोना पड़ा था उन्होंने अनजाने तौर पर बहुत आसानी से किसी शहीद को पुराने देवताओं के गुणों से युक्त बताकर किसी स्थानीय मूर्ति को उसका नाम दे दिया और इस प्रकार काफ़िराना रीति और देवमालाई कहानियाँ इन स्थानीय शहीदों के नाम से सम्बद्ध हो गई तथा खुदाई गुणों से युक्त औलिया के अक़ीदे की बुनियाद पड़ गई। इन औलिया ने एक और दो अरीयोसीन के अक़ीदा के आधार पर इन्सान और खुदा के बीच ईश्वरीय गुण रखने वाले इन्सानों की शक्ल धारण कर ली तथा दूसरी ओर यह मध्य युग की

1. ईसाइयों का धार्मिक विश्वास की हज़रत मसीह (अ़लै०) ईश्वर के बेटे हैं जिनका जन्म हज़रत मरियम की कोख से हुआ। (अनु०)
2. New catholic Encylopaedia Voil. 14 PP.295

पवित्रता एवं पारसाई के निशान बन गये। मूर्ति पूजा वाले त्योहार कुबूल कर के उनके नाम बदल दिये गये यहां तक कि सन 400 ई० तक पहुंचते पहुंचते सूरज देवता के प्राचीन त्यौहार ने मसीह़ के जन्म दिन की शक्ल अख़्तियार कर ली"।

छठी शताब्दी ई० जिस समय शुरु हुई उस समय सीरिया व ईराक़ के ईसाइयों तथा मिस्र के ईसाइयों के बीच लड़ाई अपनी चरम सीमा पर थी यह लड़ाई ह़ज़रत मसीह की ह़क़ीक़त व अस्तित्व को लेकर हो रही थी। इसके कारण स्कूल, गिरजा और घर सब युद्ध क्षेत्र में परिवर्तित हो गये थे और एक दूसरे की बुराई में व्यस्त और एक दूसरे के खून के प्यासे थे। ऐसा मालूम होता था कि यह दो धर्मों या दो विरोधी क़ौमों की लड़ाई है–[1]। इसके कारण ईसाइयों को इसकी फ़ुरसत न थी कि विश्वव्यापी बिगाड़ के रोकथाम एवं सुधार का प्रयास करते और मानवता को भलाई व उद्धार का सन्देश देते।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व मजूसी सम्प्रदाय की दशा

मजूसी (ईरान के पारसी) प्राचीन काल से चार तत्वों (जिसमें सबसे बड़ा तत्व आग था) की अ़िबादत करते थे और उन्होंने इसके लिए विशिष्ट अग्निकुण्ड और पूजाघर बनाये थे। अग्निपूजा देश के कोने-कोने में व्याप्त थी। इसके लिए सुगठित कठोर नियम निर्धारित किये गये थे जिनका पालन करना अनिवार्य था। आग की पूजा और सूरज की आराधना के सिवा हर अक़ीदा व मज़हब वहाँ मिट चुका था। उनके निकट मज़हब की हैसियत कुछ रीतियों या कुछ प्राचीन परम्पराओं से अधिक न थी जिनको वह विशिष्ट स्थानों में अदा करते थे। अ़िबादतगाहों से बाहर वह बिल्कुल आज़ाद थे जहां वह अपनी मर्ज़ी व इच्छा के अनुसार मनमानी ज़िन्दगी गुज़ारते थे। एक मजूसी और एक बेदीन, बेज़मीर विवेकहीन व चरित विहीन व्यक्ति में कोई अन्तर शेष न रह गया था।

ईरान व अहदे सासानियान (ईरान सासानी काल में) लेखक आरथर क्रिस्टियन सीन ने उस युग के धार्मिक कार्यों और ज़िम्मेंदारियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि-

"सरकारी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य था कि वह दिन में चार बार सूरज की पूजा करें। चाँद, आग और पानी की पूजा इसके अ़लावा थी। सोने-जागने, नहाने, जनेऊ पहनने, खाने पीने, बाल बनवाने, नाखून कटवाने, शौच के लिए जाने और दीपक जलाने हर काम के लिए दुआ़एँ थीं जिनका पढ़ना उन पर ज़रूरी था। उनको इसका भी हुक्म था कि आग किसी समय बुझने न पाये और आग पानी एक दूसरे से न मिलें। धातु को मोर्चा न लगे इसलिए कि खनिज भी उनकी निगाह में पूज्य थे। **(पृष्ठ 155)**

ईरान के लोग आग की ओर मुख रूख़ कर के इ़बादत करते थे, ईरान के अन्तिम राजा यज़्दगर्द ने एक बार सूरज़ की क़सम खाते हुए यह वाक्य कहा था, ''मैं सूरज की क़सम खाता हूँ जो सबसे बड़ा मअ़बूद (पूज्य) है। उसने उन ईसाइयों को जिन्होंने ईसाइयत से तौबः कर ली थी इसका पाबन्द किया था कि वह अपनी सच्चाई साबित करने के लिए सूरज की पूजा करें। **(पृष्ठ 186-187)**

ईरान वाले हर युग में सनूवियत (द्वेतवाद) का शिकार रहे। यहाँ तक कि यह उनकी पहचान बन गई। वह दो खुदाओं के क़ायल थे। एक रोशनी या ख़ैर (अच्छाई) का खुदा जिसको वह आहुरमज़दा या यज़दाँ कहते थे। दूसरा जुल्मत या शर (बुराई) का खुदा जिसका नाम उन्होंने अहरमन रखा था। उनका अक़ीदा था कि इन दोनों खुदाओं में आपस में संघर्ष और शक्ति परीक्षण बराबर जारी है। **(पृष्ठ 183-233)**

ईरानी धर्मों के इन इतिहासकारों ने उनके खुदाओं के सम्बन्ध में जो कहानियाँ लिखीं हैं और पूरा पुराण-शास्त्र (डलजीवसवहल) तैयार कर दिया है वह अपनी अजायब पसन्दी और वर्णन में यूनानी अथवा हिन्दुस्तानी देवमाला से किसी प्रकार कम नहीं। **(पृष्ठ 204-209)**

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व बौद्ध धर्म की दशा

बौद्ध धर्म जो हिन्दुस्तान और मध्य एशिया में फैला हुआ था वह भी एक ऐसे मूर्ति पूजा वाले धर्म में बदल चुका था कि बुत उसके साथ चलते थे जहां उसके

क़ाफ़िले का पड़ाव होता वहां गौतम बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती और देखते देखते एक मअ़बूद (पूज्य) तैयार हो जाता-[1]।

विद्वानों को इस धर्म और इसके संस्थापक के बारे में अभी तक यह संदेह है कि आकाश व धरती और स्वयं इन्सान के बनाने वाले खुदा के अस्तित्व पर उसका अक़ीदा व ईमान था या नहीं। उनको आश्चर्य है कि ईमान व अक़ीदा के बिना यह महान धर्म कैसे क़ायम रह सका-[2]।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व हिन्दू धर्म की दशा

जहाँ तक हिन्दू धर्म का सम्बन्ध है वह देवी देवताओं की कसरत (बाहुल्यता) में दूसरे धर्मों से बहुत आगे है। छठी शताब्दी में इस धर्म में मूर्ति पूजा अपनी चरम सीमा पर थी। देवी देवताओं की तादाद उस शताब्दी में कई करोड़ तक बताई जाती थी। प्रत्येक महान, हैबतनाक (भयावह) अथवा लाभ पहुंचाने वाली वस्तु पूज्य थी। मूर्ति कला भी अपनी चरम सीमा पर थी और उसमें नई बातें निकाली जाती थीं-[3]।

एक हिन्दू विद्वान सी० वी० वैद्य अपनी पुस्तक History of Mediaeval Hindu India (Vol. lioona, 1921 PP. 101) में राजा हर्ष (V0 6&648) के बारे में लिखते हैं:-

"इस युग में हिन्दू धर्म और बुद्धमत दोनों ही समान रूप से मूर्ति पूजा के समर्थक थे बल्कि शायद बुद्धमत मूर्तिपूजा में हिन्दू धर्म से भी आगे बढ़ गया था यह धर्म वास्तव में खुदा के इन्कार से शुरु हुआ किन्तु अन्ततः उसने बुद्ध को सबसे बड़ा खुदा बना लिया, बाद में और दूसरे ख़ुदाओं जैसे बोधिसत्व-[1] की वृद्धि होती गई और विशेषकर महायान-[2] धर्म (स्कूल) में मूर्तिपूजा ने अपने दृढ़ क़दम

1. विस्तार के लिए देखें 'हिन्दुस्तानी तमद्दुन' (उर्दू) लेखक ईश्वरा टोपा प्रोफेसर, भारतीय सभ्यता, हैदराबाद विश्वविद्यालय (पृष्ठ 209) तथा Discovery of India लेखक पं० जवाहर नेहरू (पृष्ठ 201-202)
2. Encyclopaedia Britannica देखें।
3. देखें Ancient India By R.C. Dutt Vol. III PP. 276 vkSj Popular Hinduism The Masses By L.S.S. O'Malley (cambridge 1935) PP.6&

जमा लिए। हिन्दुस्तान में इसे इतनी ख्याति मिली कि कुछ पूर्वी भाषाओं में बुद्ध का नाम ही बुत का पर्यायवाची हो गया"।

इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि मूर्ति-पूजा उस ज़माने में सारी दुनिया में फैली हुई थी। अन्ध महासागर से प्रशान्त महागागर तक दुनिया मूर्ति-पूजा में डूबी हुई थी। ईसाई व सामी धर्म, बुद्ध मत मानो बुतों के प्रति श्रद्धा में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाने की कोशिश में लगे थे।

I.S.S. O' Malley C.I.E., I.C.S. अपनी पुस्तक Popular Hinduism-The Religion of The Masses (Cambridge 1935 PP- 6-7. में लिखते हैं कि:-

"खुदा को गढ़ने की क्रिया यहीं पर समाप्त नहीं हो गई बल्कि विभिन्न युगों में इस खुदाई एकेडमी या कौंसिल में इतनी बड़ी संख्या की वृद्धि हो गई कि इसकी गणना कठिन है, इनमें बहुत से हिन्दुस्तान के प्राचीन वासियों के मअ़बूद थे जिनको हिन्दू धर्म के देवताओं और खुदाओं के साथ शामिल कर लिया गया था, इनकी कुल संख्या तैतीस करोड़ बताई जाती है"।

जहाँ तक उन अ़रबों का सम्बन्ध है जो प्राचीन युग में इब्राहीम दीन के धारक थे और जिनकी तपो भूमि में खुदा का सबसे पहला घर निर्मित हुआ नबूवत और नबियों के काल से दूरी तथा अ़रब प्रायद्वीप में बन्द रहने के कारण बहुत निम्न स्तर की मूर्ति-पूजा से ग्रसित थे जिसकी नज़ीर हिन्दुस्तान के बुत परस्तों और मुश्रिकों से मिलती है। वह शिर्क में भी बहुत आगे थे और खुदा को छोड़कर बहुत से उपास्य उन्होंने बना लिये थे और यह अक़ीदा रखते थे कि यह स्वर्चित उपास्य सृष्टि की व्यवस्था में खुदा के साथ शरीक है और लाभ व हानी पहुँचाने तथा ज़िन्दा रखने व मारने की अपने में शक्ति और क़ुद्रत रखते हैं। अतएव पूरी अ़रब क़ौम बुतों की पूजा में डूब चुकी थी। हर क़बीला और इलाके का अलग मअ़बूद था बल्कि यह कहना सही होगा कि हर घर बुत ख़ाना था।

स्वयं कअ़बः के अन्दर और उसके आंगन में (जिसको ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लै०) ने केवल अल्लाह तआ़ला की अ़िबादत के लिए बनाया था) तीन सौ साठ

1. संस्कृत में भावी बुद्ध के लिए प्रयुक्त शब्द
2. बौद्ध मत के अनुयाइयों की दो शाखाएँ हैं एक उदार दृष्टिकोण पर आधारित महायान दूसरी संकुचित दृष्टिकोण पर आधारित हीनयान।

बुत थे। वह बुतों और मअ़बूदों की अ़िबादत से आगे बढ़कर हर प्रकार के पत्थरों को पूजने लगे थे तथा फ़रिश्तों, जिनों और सितारों को भी अपना मअ़बूद समझते थे। उनका अक़ीदा था कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं, "जिन" ख़ुदा के शरीक हैं, इस कारण वह उनकी ताक़त और प्रभुत्त के क़ायल थे और उनकी अ़िबादत करना ज़रूरी समझते थे।

ह़ज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व हिन्दुस्तानी समाज की दशा

हिन्दुस्तान जो प्राचीन युग में गणित, ज्योतिष, चिकित्सा एवं दर्शन शास्त्र में बड़ा नाम पैदा कर चुका था उसके बारे में इतिहासकारों की आम राय यह है कि उसका धार्मिक, नैतिक और सामूहिक रूप से सबसे अंधकारमय काल छठी शताब्दी ई० के प्रारम्भ से शुरू होता है बेह़याई और भोगविलास से उनकी इबादतगाहें भी पाक न थीं और इन कामों में कोई बुराई न समझी जाती थी क्योंकि धर्म में उनको पवित्रता एवं अ़िबादत का रंग दे दिया था-[1]। औ़रत की कोई क़ीमत बाक़ी न रही थी। पति अपनी पत्नी को जुएँ में हार जाता था-[2] अगर उसका पति मर जाता था तो वह ज़िन्दा होते हुए भी मरी होती थी, न शादी कर सकती थी न उसे कोई सम्मान की दृष्टि से देखता था। पति के मृत्यु पर औ़रत के सती हो जाने की उच्च एवं समृद्ध घरानों में प्रथा थी। यह बुरी प्रथा ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के द्वारा दिये गये उपदेशों के प्रभाव के बाद ही समाप्त की जा सकी-[3]।

हिन्दुस्तान अपने पड़ोसियों और दुनिया के अन्य देशों का बिरादरी में वर्ग-भेद तथा इन्सानों के बीच भेद-भाव करने में बहुत आगे था। यह एक कठोर एवं निर्दयी सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें नर्मी और लचक की कोई संभावना न थी। भेद-भाव के इस व्यवहार को धर्म का संरक्षण प्राप्त था और आर्य आक्रमणकारियों के शुभचिन्तक धर्म के ठेकेदार ब्राह्मणों के हित की भी यही माँग थी। यह वर्ण व्यवस्था उन की बुनियाद पर टिकी थी जो विभिन्न बिरादरियों और

1. सत्यार्थ प्रकाश लेखक दयानन्द सरस्वती पृ० 344
2. महाभारत का प्रारम्भिक अध्याय।
3. देखें फ्रांसीसी यात्री बर्नियर का सफ़रनामा तथा मध्य युग के राजस्थान का इतिहास

ज़ातों में पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे थे। इसके पीछे उस देशी, राजनीतिक एवं धार्मिक क़ानून की ताक़त थी जिसे उन हिन्दू विधायकों ने बनाया था जो धार्मिक हैसियत के भी मालिक थे। यह क़ानून ज्यों का त्यों पूरे समाज पर लागू था और उसे जीवन की आचार संहिता समझा जाता था। उसने हिन्दुस्तान के लोगों को चार वर्गों में बाँट दिया था:-

1. धर्म के ठेकेदार और पुरोहित जिनको ब्राह्मण कहा जाता था।
2. सिपाही और फ़ौज में भरती होने वाले लोग अर्थात 'क्षत्रिय'।
3. कृषि और व्यवसाय करने वाले अर्थात 'वैश्य'
4. नौकर- चाकर और ख़िदमतगार अर्थात 'अछूत' (शूद्र)

यह अन्तिम वर्ग (जो सबसे बड़ी संख्या में था) सर्वाधिक दलित था इसके बारे में लोग समझते थे कि वह सृष्टि निर्माता के चरणों से पैदा हुआ है इसलिए उसका काम केवल इन तीनों वर्गों की सेवा करना और उनको आराम व राहत पहुँचाना है।

इस क़ानून ने ब्राह्मणों को इतने अधिकार दे दिये थे और उन्हें इतना उच्च पद प्रदान किया था जिसमें कोई दूसरा उनके बराबर न था ब्राह्मण के सारे पाप क्षमा थे चाहे वह तीनों लोकों को अपने पापों और दुराचारों से गन्दा, तबाह और बरबाद कर दे। उस पर कोई टैक्स नहीं लगाया जा सकता था। उसको किसी दशा में भी मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता था। इसके विपरीत अछूत न कुछ कमा सकते थे न जमा कर सकते थे, न किसी ब्रह्मण के पास बैठ सकते थे न उसके शरीर को छू सकते थे न पवित्र पुस्तकों का पढ़ना उनके लिए उचित था-[1]।

पूरा देश फूट का शिकार था और टुकड़े-टुकड़े हो रहा था इसमें सैकड़ों रियासतें एवं हुकूमतें थीं जो प्रायः झगड़ती रहती थीं। अशान्ति और अव्यवस्था तथा प्रजा के प्रति लापरवाही और अत्याचार सर्वव्याप्त था। इसके अतिरिक्त यह देश दुनिया से कटकर जीवन व्यतीत कर रहा था, इसमें शिथिलता आ गई थी यह आ़दतों, परम्पराओं व रीति- रिवाज के जाल में फंसा वर्गभेद और ऊंच-नीच का शिकार था और खून, नस्ल और नसब (वंश) के भेद-भाव से पीड़ित था। एक हिन्दू इतिहासकार विद्याधर महाजन भूतपूर्व प्रोफ़ेसर, इतिहास, पंजाब यूनिवर्सिटी

1. देखें मनुशास्त्र अध्याय 1,2,8,9,10,11

कालेज, हिन्दुस्तान की हालत पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं:-

"हिन्दुस्तान के लोग सारी दुनिया से कटे हुए थे। वह अपने आप में मगन और दुनिया के ह़ालात से बेख़बर थे। इस बेख़बरी ने उनकी अवस्था बहुत कमज़ोर कर दी थी उनमें अस्थिरता पैदा हो चुकी थी तथा पतन के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे, उस समय के साहित्य में कोई जान नहीं थी। निर्माण कला, चित्रकला और अन्य ललित कलाओं में भी ह्रास था। ज़ात-पात के बन्धन कठोर थे। विधवाओं से शादी नहीं की जाती थी। खाने पीने के सिल्सिले में कठोर बन्धन थे, अछूत बस्तियों के बाहर रहने पर मजबूर थे"-[1]।

भारत का अंधकारमय युग

भारत में उस समय सत्य धर्म का लोप रहा। यहाँ भी धार्मिक-सामाजिक और नैतिक पतन चर्मोत्कर्ष पर था। यह पौराणिक काल था। यह काल भारतवर्ष के धार्मिक इतिहास का सबसे अधिक अंधकारमय युग माना जाता है। उस समय ब्राह्मणवाद की सत्ता का पुनः प्रादुर्भाव हो रहा था तथा बौद्ध धर्म लगभग लुप्तप्राय हो गया था, बहुदेववाद ज़ोरों पर था, देवताओं की गणना कई करोड़ तक पहुँच चुकी थी।

प्रख्यात मुस्लिम धार्मिक विद्वान मौलाना सैयद अबुल ह़सन अली नदवी उस समय की धार्मिक दशा का वर्णन करते हुए लिखते हैं-

"छठी शताब्दी में भारत में मूर्तिपूजा उ़रूज पर थी। वेद में देवताओं की संख्या 33 थी जो इस युग में आते-आते 33 करोड़ हो चुकी थी। इस काल में हर पसन्दीदा चीज़ हर आकर्षण रखने वाली जीवन की हर ज़रूरत पूरी करने वाली चीज़ देवता बन गई थी जिसकी पूजा की जाती थी। इन देवताओं और पूज्यनीय वस्तुओं में खनिज, पत्थर, वृक्ष, पेड़-पौधे, पहाड़ और दरिया जानवर और यहाँ तक कि लिंग सब ही सम्मिलित थे। बड़े देवता शिव के जननांग लिंग की पूजा होती थी और बच्चे, युवक, स्त्रियां सब उसमें शरीक होते थे। पुरुष निर्वस्त्र स्त्रियों और स्त्रियां निर्वस्त्र पुरुषों की पूजा करती थीं। इस पौराणिक काल

1. Muslim Rule In India By V.D. Mahajan (New Delhi 1970 PP.33)

में जात-पात का भेद भाव अपनी चरम सीमा तक पहुँचा हुआ था। जिससे पूरी सामाजिक व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो गई थी। देशवासियों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की चार श्रेणियों में बाँट दिया गया था। ऐसे नियम बनाये गये थे कि जिनसे न्याय की हत्या होती थी। वंश-कुल और वर्ण के आधार पर लोगों को अनुचित सुविधाएँ प्रदान की जाती थीं। एक स्त्री के कई पति होते थे। विधवाओं को वैधनिक रूप से हर सुख- सुविधा से वंचित कर दिया जाता था संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक हरियाली और सम्पदा से परिपूर्ण यह देश सच्चे आकाशीय ग्रन्थों की शिक्षाओं से एक लम्बी अवधि से वंचित रहने के कारण कल्पनाओं, परम्पराओं का शिकार बन गया था"।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व रोम की दशा

यूनान के पतन के बाद रोम का शासन संसार का सबसे प्रभुत्वशाली शासन समझा जाता था, परन्तु छठी शताब्दी के अन्तिम चरण में यही शासन अपने पतन की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। जिन लोगों ने मसीह़ी धर्म का लिबादा ओढ़ रखा था वे भी एकेश्वरवाद की विचारधारा से वंचित थे। मसीह़ी अनुदेशों का कोई भी लक्षण उनमें नहीं था। वह बाप, बेटा, पवित्र आत्मा और मरियम को ईश्वर मानने लगे थे। सैकड़ों धार्मिक पंथ बन गये थे। क़ब्रों की उपासना सामान्य हो गई थी। पोपों ने और उनके बाद दूसरी श्रेणी के पदाधिकारियों ने अपने-अपने स्थान पर राजसी ही नहीं वरन् ईश्वरीय अधिकार भी अपने हाथ में ले रखे थे। उनके आदेश ईश्वरीय आदेश समझे जाते थे। धर्म की उच्चतम कल्पना सन्यास और सांसारिक त्याग में निहित थी।

प्रसिद्ध दार्शनिक गिबन जी के अनुसार

"छठी सदी ई० के अन्तिम दशक में रोम का शासन अपनी तबाही और बरबादी के अन्तिम बिन्दु पर पहुँच चुका था"।

एक अन्य विचारक लार्ड हैडली उस समय की दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं-

"रूमी सल्तनत बद्तरीन ह़ालत में मुब्तिला थी। अमन और शांति का शीराज़ा बिखर चुका था, झूठे विचार और सिद्धान्त तथा बिखराव और अशान्ति

का दौर-दौरा था। घूसखोरी और बुराइयों का चलन था। हद यह है कि क़ौम के रखवाले और चर्च के प्रतिनिधि भी इससे बच नहीं पाये थे"।

संस्कृति और सभ्यता के स्तम्भ अपना स्थान छोड़ चुके थे। रूमी शासन की मिसाल उस बड़े तनावर वृक्ष के समान थी जिसके साये में संसार की क़ौमें पनाह लेती थीं और अब मात्र उसका तना रह गया था जो रोज़ बरोज़ सूखता जा रहा था।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व ईरानी साम्राज्य की दशा

ईरानी साम्राज्य जिसने सभ्यता एवं संस्कृति की तरक़्क़ी और खुशहाली में रूमी साम्राज्य से बराबर की टक्कर ली थी वह भी एक लम्बे अर्से से नैतिक पतन का शिकार हो गया था। जिन लोगों से दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापित करना दुनिया के सभी लोग अवैध समझते थे, उन्हें ईरानियों ने अपने लिए वैध समझ लिया था। यज्दगरद द्वितीय ने पाँचवी शताब्दी के मध्य में अपनी पुत्री से विवाह किया और फिर उसका वध कर दिया।

प्रोफ़ेसर आर्थर क्रस्टन जी के अनुसार

इस प्रकार के सम्बन्ध ईरान में बुरे नहीं समझे जाते थे। ह्वेन सांग भी इस को स्वीकार करता है कि दाम्पतय जीवन में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं किया जाता था। ईरान के **प्राचीन दार्शनिक 'मानी'** ने एक नया दर्शन पेश किया और कहा कि सांसारिक जीवन को त्याग कर सन्यासी जीवन को अपना लेना चाहिए। **एक अन्य दार्शनिक 'मज़दक'** ने कहा कि सभी स्त्रियाँ सभी पुरूषों के लिए वैध हैं। इन विचारो का यह प्रभाव पड़ा कि पूरा समाज अशान्ति, अराजकता और यौन विकृति का शिकार हो गया। इसी काम वासना के कारण लोग अपनी बेटियों और सगी बहनों से विवाह कर लेते थे और उन पर कोई पाप नहीं लागू होता था। ईरान के सम्राट अपनी रगों में ईश्वरीय रक्त को दौड़ता हुआ महसूस करते थे और इसी लिए धरती पर खुदाई का दावा करते थे। उन्हें सूर्य देवता के परिवार का सदस्य समझा जाता था। इस लिए ईरान में सूर्य चन्द्रमा और अन्य नक्षत्रों की पूजा होने लगी। पूजा पाठ के समय अग्नि की ओर मुख करके उपासना की जाती थी। **(नबी-ए-रह़मत)**

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व अ़रब की दशा

छठी शताब्दी में अ़रब में भी हर ओर अराजकता फैली हुई थी। अ़रब सामान्य रूप से ख़ानदानी और क़बाइली जीवन यापन करते थे। इनमें आपस में उग्र पक्षपात की भावना थी। कई नस्लों तक एक क़बीले का युद्ध दूसरे क़बीले से चलता रहता था। सारी क़ौम अज्ञानता, नैतिक पतन, भुखमरी, अराजकता और गृहयुद्ध का शिकार थी। कुछ लोग सूर्य देवता की पूजा करते थे और कुछ चांद को पूजते थे। यह लोग फ़रिश्तों को खुदा की बेटियां कहते थे, जिन्नों (प्रेतों) को ईश्वर का प्रिय, निकटवर्ती तथा साझी समझते थे। मूर्ति पूजा की आस्था इतनी सामान्य हो गई थी कि जहां कोई सुन्दर सा पत्थर मिल जाता उसी को पूजने लगते थे। शराब का सामान्य चलन था। मदीने के अ़रबी और यहूदी ब्याज के व्यापार में निष्ठुरता की सभी हदें पार कर चुके थे। व्याभिचार को बुरा नहीं समझा जाता था। अपनी बेटियों को जीवित ज़मीन में दबा देते थे। स्त्रियों को समाज में कोई मान सम्मान प्राप्त न था। बेशर्मी की स्थिति यहां तक पहुँच गई थी कि नग्न स्त्री पुरुष ख़ाना-ए-कअ़बः की परिक्रमा करते थे और इसे धार्मिक कर्म समझते थे।

एक फ्रांसीसी कॉन्स्टन वेरज़ेल जी के अनुसार

"नबी के आगमन से पूर्व अ़रबों के मिज़ाज में अहंकार और घमण्ड कूट-कूट कर भरा हुआ था। वे एक दूसरे पर अपनी श्रेष्ठता जताते थे। कोई दूसरा उनका शासक न था। हर एक ख़ुद ही अपना राजा था। अपनी स्वायत्तता और आज़ादी का उनमें बहुत जोश था"।

उस समय के संसार का वर्णन करते हुए मौलाना अबुल ह़सन अली मियाँ नदवी अपनी पुस्तक 'इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उत्थान-पतन का प्रभाव' पृष्ठ 99 पर लिखते हैं-

"मुह़म्मद (सल्ल०) के ईशदूतत्व पद संभालने से पूर्व संसार की दशा एक ऐसे मकारन के समान थी जिसकी बुनियाद एक सख़्त भूकम्प ने हिला दी हो। उसकी हर चीज़ निर्मूल और अव्यवस्थित थी जो टूटने-फूटने से बच रहा था उसकी शक्ल बदल गई थी। कहीं की चीज़ कहीं थी। कहीं सामान का ढेर लग गया

था और कहीं झाड़ू फिर गई थी। अ़रब समाज वृक्ष, जल और पत्थर की पूजा करने लगा था"।

ऐसे घोर अज्ञान काल में जब पूरे विश्व में इंसानियत की रूह का शोषण-अन्याय- अत्याचार से त्रस्त दर्दनाक चीख़ें मार रही थीं मगर कोई उसकी पुकार सुनने वाला न था, यूनान का दर्शन पक्षाघात से पीड़ित था, 'मनी' और कन्फ़्यूशियस की शिक्षाएं बेहाल थीं, वेदान्त, बुद्ध के विचार और मनुशास्त्र का क्रूरता से दुरूपयोग हो रहा था। ज़रतश्ता का संविधान और सोलन का क़ानून बेबस था, अ़रब के लोग उस समय अशिक्षित, असभ्य और अक्ख़ड, बर्बर, हट्ठी, अड़ियल, झगड़ालू और भ्रांतियों में जकड़े हुए थे। शिक्षा की इतनी कमी थी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल.) के इशदूत्व पद संभालने के समय केवल सत्रह आदमी शिक्षित थे। इस संख्या से प्रकट होता है कि शिक्षा नहीं के बराबर थी।

मदिरा पान, जुआ, व्यभिचार का अधिकता के साथ प्रसार था। स्वामी लोग अपनी दासियों के व्यभिचार करा के धन इकट्ठा करते थे। बहनों तक से विवाह कर लेते थे।

पिता की पत्नी पर उत्तरधिकारी के रूप में पुत्र अधिकार कर लेता था। पत्नी त्याग का बहुत अधिक रिवाज था, पति जब चाहता था पत्नी को छोड़ सकता था कोई नियम या सिद्धांत स्थापित न था। बहु विवाह की कोई सीमा न थी।

लोग ज़ात-पात का बहुत गर्व करते थे, वैभव परिवार का बड़ा घमण्ड करते थे, इसी कारण दासता प्रचलित थी।

एक स्त्री से कई पुरुष संम्बंध रखते थे और बच्चा होने की अवस्था में वह स्त्री निर्णय कर देती थी कि बच्चा किसका है।

कुसंस्कारों की भरमार थी, हर काम में शगुन लिया जाता था। मूर्तियों पर मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाती थी। समाधि के पास ऊंट बांधकर उसको भूखा-प्यासा मारना पुण्य कार्य समझा जाता, लड़कियों को जीवित गाड़ दिया जाता था।

यदि अकाल पड़ता तो गाय की पूंछ में घास बांध कर आग लगा दी जाती थी, इस विश्वास से कि यह आकाश से वर्षा खींच लेगी।

प्रतिकार की भावना अति प्रबल थी। मामूली-मामूली बातों पर रक्त पात हो

जाता था। एक मनुष्य की हत्या के बाद उसके नाक-कान भी काट दिये जाते थे। इस रिवाज को 'मुसला' कहा जाता था।

युद्ध में जो स्त्रियां और बालक बन्दी होकर आते थे उनको भी मार डाला जाता था गर्भिणी स्त्री का गर्भपात करा दिया जाता था। अबोध बालकों को भालों पर लटकाया जाता था। सोते हुए आदमियों पर आक्रमण किया जाता था। मनुष्यों का सर, कान आदि काट कर उनका हार बनाकर पहना जाता था।

लोगों का साधारण धर्म मूर्तिपूजा था, हर परिवार का अलग-अलग देवता था, यह थी वहां के लोगों की दशा! अर्थात वह मानवता से बहुत दूर जा पड़े थे, श्ष्टता लेशमात्र को न थी, नैतिकता का दिवाला निकल चुका था। ईमान धर्म नाम को न था, सहानुभूति और शुभकामना से उनके ह्रदय शून्य हो चुके थे, वह अज्ञानता और बर्बरता में डूबे हुए थे, उनके ह्रदय द्वेष शत्रुता, दुष्टता और पाप से भरे हुए थे। दूसरे को हानि पहुंचाते हुए न उनको परमेश्वर का भय था और न मानवता के कर्तव्य का ध्यान। दूसरों को दुख देते हुए भी उनके ह्रदय में दया उत्पन्न न होती थी, वह कहने को मुनष्य थे परन्तु उनका स्वभाव पशुओं का सा था, वह हिंसक थे जो अपने सजाति मनुष्यों को भी क्षण भर में चीर फाड़ डालते थे। अति तुच्छ बातों पर दूसरों का प्राण ले लेना खेल समझते थे। दूसरों की बहू-बेटियों की इज्ज़त को नष्ट करना और उनसे बर्बरता पूर्ण व्यवहार करना उनके बाएँ हाथ का खेल था। दूसरों की मान मार्यादा को नष्ट करने में उनको बड़ा आनन्द मिलता था। दूसरों के प्राण और धन की क्षति में वह बड़ा हर्ष अनुभव करते थे।

दूसरों पर अत्याचार और ज़्यादती करने में उनको बहुत ख़ुशी मह़सूस होती थी। अबोध बालकों को पिताहीन और भली स्त्रियों को विधवा बना देना उनकी नीति थी। निरीह और असहाय लोगों पर आक्रमण करना उनका स्वभाव था। दूसरों के माल को लूट लेना वह अपना धर्म समझते थे। दूसरों के धन और सामग्री को किसी भी अनुचित उपाय से प्राप्त कर लेना पुण्य कार्य जानते थे। वह धर्म और शास्त्र का अर्थ भूल चुके थे। उन्हें ज्ञान तक न था कि मनुष्य होने के नाते दूसरे मनुष्यों के प्रति उनके क्या कर्तव्य हैं। उन्हें पता तक न था कि शिष्टता, मानवता और सभ्यता किस जानवर का नाम है। उन्हें ज्ञान तक न था कि पुण्य

कार्य, नैतिकता और सदाचार किस को कहते हैं। मनुष्यता किस चीज़ का नाम है।

यह थी उस समय के अ़रब वालों की दशा। अल्लाह ऐसी दशा को पसंद नहीं करता। उसे मनुष्यों की इतनी पथ भ्रष्टता नहीं भाती। उन दुराचारी और शैतानी गुण रखने वाले मुनष्यों के पथ प्रदर्शन और शिक्षा के लिए महास्वामी ने अपनी दया से उन्हीं के बीच ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को प्रकट किया। और ह़ज़रत जिब्राईल (अ०) द्वारा लोगों के कुकर्मों और कुरीतियों पर अप्रसन्नता प्रकट की। और महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पवित्र जीवन को उनके लिये आदर्श बनाया जिसका फल यह हुआ कि वह पशुता और पैशाचिता को छोड़कर मनुष्य बन गये।

यह था उस 'अह़मद' और मुह़म्मद' को भेजने का उद्देश्य। यह था उस 'सय्यदुल मुर्सलीन व ख़ातमुन्नबीईन' (ईशदूतों के सरदार) के भेजे जाने का अभिप्राय, यह था उस 'रह़मतुल्लिल्आ़लमीन' (सर्व संसार के लिए ईश्वरीय अनुकम्पा) के अवतरण का ध्येय, यह धर्म उस प्रशंसित व्यक्ति द्वारा भेजा गया जिसको मुनीर (प्रकाशमान) नज़ीर (ईश्वर से डराने वाला) हादी (सुपथ प्रदर्शक) मुस्तफा (पाप रहित और श्रेष्ठ) अज़ीज़ (प्रिय) इमाम (नेता) मुद्दस्सिर (पवित्र वस्त्रधारी) मुजम्मिल (कमली वाला) मुज़क्किर (उपदेशक) और ख़ैरों ख़ल्क़िल्लाह (ईश्वर की सृष्टि का उत्तम पुरुष) पवित्र नाम दिये गये हैं।

अतः इससे प्रकट होता है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आविर्भाव से परमेश्वर का उद्देश्य और अभिप्राय यह था कि सारी बुराइयां दूसरे ही धर्म के ऐसे अनुयायी पैदा हों जो मानव जाति का कल्याण चाहने वाले, संसार में शान्ति स्थापित रखने वाले और भलाई के मार्ग पर चलने वाले हों, जो सहृदय हों, न्यायी और न्याय रक्षक हों, अल्लाह से डरने वाले हों, स्त्रियों और बच्चों की रक्षा करने वाले हों, बूढ़ों और निर्बलों पर दया करने वाले हों, शुद्ध जीविका कमाने वाले हों, किसी का ह़क़ छीनने वाले न हों, किसी पर अत्याचार और ज़्यादती करने वाले न हों, अपनी आमदनी पर संतोष करने वाले हों, सदाचारी और संयमी हों, सांसारिक धन को संयम और ईश्वर भय के आगे तुच्छ समझने वाले हों।

ऐसी विषम परिस्थितियों में मानवता की नौका को भंवर से पार लगाने के

लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म अ़रब जगत में हुआ। आपके पदार्पण का उददेश्य दुनिया को पतन के गर्त से निकालकर मानवता के शीर्ष पर पहुंचाना था। आप (सल्ल०) परमेश्वर के सन्देष्टा और आदित्य बनकर आये ताकि सारे संसार को रौशन करें। आप दुनिया के सभी इंसानों को इंसानों की गुलामी से निकालकर एक परमेश्वर की भक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आये थे।

आप (सल्ल०) कोई नया धर्म नहीं लाए थे बल्कि परमेश्वर द्वारा दुनिया के कोने-कोने में हर युग और हर भाषा में जो ईश सन्देष्टा एक ही शाश्वत ज्ञान लेकर आये थे और जो समय की धूल-चढ़ जाने से अपना शुद्ध स्वरूप खो चुका था उसी को पुर्नस्थापित करने आये थे।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अ़रब प्रायद्वीप में ही क्यों?

अल्लाह-तआ़ला (परमेश्वर) ने अ़रबों का चयन इसलिए किया और उनको सारी दुनिया में इसके प्रचार व प्रसार का ज़िम्मेदार बनाया कि उनके दिलों की पाटी (तख्ती) बिल्कुल साफ़ थी, उसमें पहले से कुछ न था जिनको मिटाना कठिन होता, अपेक्षाकृत रूमियों, ईरानियों, या हिन्दुस्तानियों के, जिनको अपने विकास, कला कौशल, सभ्यता व संस्कृति तथा दर्शनशास्त्र पर बड़ा गर्व था और इसके कारण उनके अन्दर कुछ ऐसी मनोवैज्ञानिक गुत्थियां तथा मानसिक उलझनें पैदा हो गई थीं जिनका दूर होना आसान न था। अ़रबों के मन मस्तिष्क की सादा तख्तियां केवल उन मामूली और हल्के फुल्के लेखों से परिचित थी जिनको उनकी अज्ञानता, निरक्षरता तथा बदवी जीवन (घुमक्कड़ जीवन) ने उनमें लिख दिया था और जिनका धोना, मिटाना और उनके स्थान पर नया लेख लिखना बहुत आसान था। वर्तमान ज्ञान की शब्दावली में वह "सहज अज्ञानता" का शिकार थे और यह वह आजानता है जिसका निवारण हो सकता है। दूसरी सभ्य एवं विकसित क़ौमें "योगिक अज्ञानता" से ग्रस्त थीं जिसका इलाज और उसे मिटाकर नये अक्षर लिखने का काम हमेशा अत्यन्त कठिन होता है।

यह अ़रब अपने मूल स्वभाव पर थे, मज़बूत और दृढ़संकल्प के मालिक थे। अगर ह़क़ बात (सत्य) उनकी समझ में न आती तो वह उसके विरुद्ध तलवार उठाते और उससे जी जान से अधिक मुह़ब्बत करते उसको गले से लगाते तथा

उसके लिए जान तक देने में सोच विचार न करते।

अ़रबों की इस मनोवृत्ति की झलक सुहैल बिन अम्र-[1] के उन शब्दों में मिलती है जो हुदैबिया की सन्धि लिखते समय उनके मुख से निकले। सन्धि के प्रारम्भिक शब्द यह थे...

"यह वह है जिसका फैसला 'मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किया"। उन्होंने कहा "वल्लाह अगर हम यह जानते और मानते कि आप खुदा के रसूल हैं तो न आपको अल्लाह के घर से रोकते और न आपसे लड़ाई करते"। यह मनोवृत्ति इकरमा बिन अबी जहल के शब्दों में भी झलक रही है जब यरमूक की लड़ाई अपनी चरम सीमा पर थी और इकरमा पर बड़ा दबाव पड़ रहा था जब रूमी चढ़ाई करते हुए इकरमा की ओर बढ़े तो उन्होंने उनको लल्कार कर कहा कि अक्ल के दुश्मनों! (जब तक बात मेरी समझ में नहीं आई) मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के मुकाबले में हर जगह डटा रहा, आज मैं तुमसे भागूँगा। फिर उन्होंने पुकार कर कहा कि 'है कोई जो मौत पर मुझसे बैअ़त-[2] करे? कुछ लोग आये और बैअ़त की फिर वह आगे बढ़कर लड़ने लगे यहां तक कि घायल हुए और शहादत पा ली-[3]।

यह अ़रब बड़े यथार्थवादी, गम्भीर, सज्जन, स्पष्ट वक्ता, कठोर, परिश्रमी एवं पुरुषार्थी थे वह न दूसरों को धोखा देते थे न अपने को धोखे में रखना पसंद करते थे। सच्ची और पक्की बात के आ़दी, बात की लाज रखने वाले और दृढ़ संकल्प के मालिक थे। इसका एक नमूना बैअ़त उक़ब-ए-सा़निया में हमें नज़र आता है जिसके बाद ही मदीना तय्यबा हिजरत की शुरुआ़त हुई।

इब्ने इस्ह़ाक़ बयान करते हैं कि जब औ़स व ख़ज़रज-[4] उक़बा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) से बैअ़त करने के लिए जमा हुए तो अ़ब्बास बिन उबादा अल्ख़ज़रजी ने अपनी क़ौम को सम्बोधित करते हुए कहा "ऐ खज़रज वासियों!

1. अरब में सन्तान के नाम के साथ पिता का नाम जोड़ने की प्रथा है। "बिन" अथवा "इब्न" का अर्थ है "पुत्र" अर्थात अम्र के पुत्र सुहेल पुत्री के लिए "बिन्त" लिखते है।
2. हाथ में हाथ देकर वादा (संकल्प) करना।
3. तारीख़ तबरी भाग 4 पृ० 36 देखें।
4. अ़रब के क़बीलों के नाम।

क्या तुम्हें मालूम है कि तुम हुजूर (सल्ल०) से किस चीज़ पर बैअ़त कर रहे हो"! उन्होंने जवाब दिया हाँ- कहने लगे कि तुम इनसे अहमर व अस्वद हर प्रकार के लोगों से जंग पर बैअ़त कर रहे हो (अर्थात-बहुत बड़ी संख्या और विभिन्न प्रकार के लोगों से) अगर तुम ऐसा सोचते हो कि 'तुम्हारे माल लूट लिए जाएँगे और तबाह व बरबाद कर दिये जाएँगे।

तो तुम उनको दुश्मनों के हवाले करके अलग हो जाओगे। अगर ऐसा है तो अभी इस बात को समाप्त कर दो। इसलिए कि अगर तुमने ऐसा किया तो वल्लाह दुनिया व आख़िरत दोनों जगह की रुस्वाई (निन्दा) है और अगर तुम्हारा फ़ैसला यह है कि जिस चीज़ के लिए तुमने इनको बुलाया है उसको पूरा करोगे चाहे तुम्हारा सारा माल व अस्बाब तहस-नहस हो जाये और तुम्हारे शरीर व सरदार क़त्ल कर दिये जाएँ तो अपना हाथ इनके हाथ में दो। उस समय उसमें खुदा की क़सम दुनिया व आख़िरत दोनों जगह की कामियाबी व भलाई है। उन लोगों ने उत्तर दिया कि माल व दौलत की तबाही और सरदारों के क़त्ल, हर चीज़ पर हम आप से बैअ़त करते हैं। लेकिन ऐ अल्लाह के रसूल अगर हमने यह संकल्प पूरा किया तो इसका बदला क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया 'जन्नत'। कहने लगे हाथ बढ़ाइए। आपने अपना मुबारक हाथ आगे किया और उन सबने आपसे बैअ़त की-[1]।

वास्तव में उन्होंने इस संकल्प को जिसपर आपसे बैअ़त की थी पूरा किया। ह़ज़रत साद बिन मआज़ (रह़०) ने अपने मशहूर वाक़्य में इन सबकी भावनाओं को व्यक्त किया था। उन्होंने कहा था कि "खुदा की क़सम अगर आप चलते-चलते बरकुल्ग़माद-[2] तक पहुँच जाएँगे तब भी हम आपके साथ चलते रहेंगे अगर आप इस समुद्र को पार करना चाहेंगे तो हम आपके साथ समुद्र में कूद जाएँगे"।

वह बात के पक्के व इरादे के सच्चे थे। काम में उनकी लगन और ह़क़ के सामने नतमस्तक हो जाने का पता उस वाक्य से भी मिलता है जो इस्लामी फ़ौज

1. सीरत इब्ने हिशाम भाग 1 पृष्ठ 446 (द्वितीय संस्करण)
2. बरकुलग़माद के बारे में विभिन्न कथनों में एक कथन यह है कि वह यमन का कोई सुदूर नामक स्थान है। सुहेली कहते हैं कि इसका तात्पर्य हब्शा से है। अर्थ यह है कि अगर आप बहुत दूर तक जाएँगे तो भी हम साथ न छोडेंगे।

के विख्यात सेनापति 'उक़बा बिन नाफ़े' (रज़ि०) ने कहा था। जब उनकी विजय की राह में अटलांटिक महासागर के कारण रुकावट पैदा हुई तो उन्होंने कहा, "खुदाया! यह महासागर रास्ते में है अन्यथा जी चाहता है कि बराबर आगे बढ़ता जाऊं और जल-थल में तेरे नाम का डंका बजा दूँ"।

ईरानी सभ्यता पर एक दृष्टि

रोम ईरान के लोग दुनियादारी और हवा के रुख़ पर चलने के आ़दी थे अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध वहाँ आवाज़ नहीं उठी कोई दावत और अक़ीदा (विश्वास) उनके विचारों और भावनाओं में इस प्रकार रचबस नहीं पाती थी कि वह उसके लिए अपनी दुनियादारी और भोग विलास सब कुछ की बाज़ी लगा दें।

सभ्यता व संस्कृति और विलास व आराम तलबी की पैदा की हुई इन तमाम बीमारियों और ख़राबियों से अ़रब सुरक्षित थे। इन बीमारियों का इलाज बड़ा कठिन होता है और यह ईमान और अक़ीदा की राह में हमेशा रूकावट डालती हैं और प्रायः आदमी के पैरों में बेड़ियां डाल देती हैं। अ़रब वासियों के अन्दर सच्चाई भी थी, ईमानदारी भी और बहादुरी भी, उनकी प्रवृत्ति दोहरी नीति व षडयन्त्र को पसंद न करती उनमें वह सभी गुण थे जो दुनिया में कोई महान कार्य करने वाली क़ौम के लिए अवश्यक होते हैं। विशेषकर उस समय जब लड़ाइयों का युग था तब बहादुरी का आम चलन हुआ। अ़रबवासी जी-जान से लड़ने वाले, घोड़े की पीठ पर अधिक समय बिताने वाले, सुदृढ़ सुरक्षात्मक शक्ति और सहनशीलता के मालिक, सरल जीवन के आदी, घुड़सवारी और युद्धकला के रसिया थे।

दूसरी बात यह कि उनकी चिन्तन व क्रियात्मक शक्तियां एवं जन्मजात क्षमताएँ सुरक्षित थीं और दार्शनिकों की निरर्थक तार्किक बहसों और बाल की खाल निकालने तथा वार्तालाप के गूढ़ व संवेदनशील विषयों अथवा स्थानीय या क्षेत्रीय गृह-युद्धों में बरबाद नहीं हुई थीं। यह एक नव उदित "सुरक्षित" क़ौम थी जो जीवन की गर्मी, उत्साह एवं उल्लास, आकांक्षा और पक्के इरादे से भरपूर थी।

आज़ादी व समता की भावना, प्राकृति और प्राकृतिक दृश्यों से लगाव तथा सादगी अ़रब क़ौम की घुट्टी में पड़ी थी। उसे कभी किसी विदेशी सत्ता के सामने

झुकना न पड़ा था। यह क़ौम गुलामी और एक मनुष्य पर हुक्म चलाने के अर्थ से अपरिचित थी। उसको ईरानी व रूमी साम्रज्यों के घमंड तथा मानव और मानवता को तिरस्कार (हिकारत) की नज़र से देखने का कभी अनुभव न हुआ था। इसके विपरीत ईरानी बादशाह (जो अ़रब प्रायद्वीप के पड़ोस में थे) अलौकिक व्यक्ति समझे जाते थे। अगर ईरानी बादशाह का आपरेशन होता या कोई दवा प्रयोग करता था तो राजधानी में एलान कर दिया जाता था कि आज बादशाह सलामत के फोड़े का आपरेशन हुआ है या दवा का प्रयोग किया है। इस एलान के बाद शहर में न कोई पेशेवर अपने पेशे में व्यस्त होता और न कोई सरकारी दरबारी आदमी कोई काम कर सकता। अगर उसको छींक आती तो उसके लिए किसी को दुआ़ शब्द कहने का ह़क़ न था। वह स्वयं अगर दुआ़ करता तो आमीन (खुदा करे ऐसा ही हो) भी नहीं कह सकता था। अगर वह अपने मंत्रियों व अमीरों में किसी के घर पदार्पण करता तो वह दिन अत्यन्त असा धाराण और मुहत्वपूर्ण समझा जाता और उस दिन खानदान की नयी जन्त्री प्रारम्भ होती और पत्रों में नयी तारीख़ डाली जाती एक निर्धारित समय के लिए टैक्स माफ कर दिये जाते और वह व्यक्ति विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों, पदवियों और माफ़ियों व पदोन्ननितयों से अलंकृत किया जाता। मात्र इसलिए कि बादशाह ने अपने पदार्पण से उसका गौरव बढ़ाया है।

यह सम्मान व शिष्टाचार की उन औपचारिकताओं के अतिरिक्त था जिनका पालन करना राज्य के कर्मचारियों, दरबार के लोगों और दूसरे तमाम व्यक्तियों के लिए ज़रूरी था जैसे उनके सामने हाथ बांधे खड़ा रहना। (अर्थात सीने पर हाथ रखकर आदर के साथ सर झुका देना)। उनके सामने अदब के साथ इस प्रकार खड़ा रहना कि जिस प्रकार नमाज़ में कोई खुदा के सामने खड़ा होता है। यह वर्णन खुसरो प्रथम (531 से 579 ई०) के शासन काल का है जो दुनिया में नवशेरवाने आदिल के नाम से प्रसिद्ध है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि ईरान के उन बादशाहों का क्या हाल होगा जो जुल्म व अत्याचार और निर्दयता के लिए दुनिया में मशहूर थे।

विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता (न कि आलोचना) विशाल ईरानी

साम्राज्य में लगभग समाप्त थी। तिब्री ने इस सम्बन्ध में नव शेरवाँ आ़दिल की एक रोचक कहानी बयान की है जिससे हमें अन्दाज़ा होता है कि ईरानी साम्राज्य में विचारों की अभिव्यक्ति पर कितनी सख्त पाबन्दी थी और शाही दरबार में मुंह खोलने की क्या क़ीमत चुकानी पड़ती थी?

इस घटना को ईरान बअ़हद सासानियान के लेखक ने तिब्री के हवाले से लिखा है:-

"उसने सलाहकारों की एक बैठक बुलाई और सचिव को आदेश दिया कि लगान की नई दरें पूरी पढ़कर सुनाएँ। जब वह पढ़ चुका तो खुसरो ने दो बार उपस्थित लोगों से पूछा कि किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है? सब चुप रहे, जब बादशाह ने तीसरी बार यही प्रश्न किया तो एक व्यक्ति खड़ा हुआ और आदर पूर्वक पूछने लगा क्या बादशाह यह चाहते हैं कि शीघ्र नष्ट होने वाली चीज़ों पर स्थायी कर लगाया जाये जो हमें अन्याय की ओर ले जायेगा, इस पर बादशाह लल्कार कर बोला, "ऐ गुस्ताख! तू किन लोगों में से है? उसने उत्तर दिया कि मैं सचिवों में से हूँ। बादशाह ने हुक्म दिया कि इसको कलमदानों से पीट-पीट कर मार डालो। इस पर हर एक सचिव ने अपने कलमदानों से उसको मारना शुरू किया यहाँ तक कि वह बेचारा मर गया। इसके बाद सबने कहा, "ऐ बादशाह! जितने टैक्स आपने हम पर लगाये हैं वह हमारे विचार में सब न्याय पर आधारित हैं"।

हिन्दुस्तानी सभ्यता पर एक दृष्टि

हिन्दुस्तान में अछूतों के प्रति तिरस्कार एवं निरादर की जो भावना व्याप्त थी वह कल्पना से परे है। विजयी आर्यों तथा देश की सामाजिक व्यवस्था ने उन को अत्यन्त तुच्छ प्राणी का दर्जा दिया था। अछूत पालतू जानवरों से केवल इस बात में भिन्न थे कि वह दो पैरों पर चलते थे और आदमियों जैसी शक्ल रखते थे। समाज में यह प्राविधान था कि यदि कोई शूद्र किसी ब्राह्मण को नुक़सान पहुंचाने के लिए हाथ या लाठी उठाये तो उसका हाथ काट दिया जाये यदि उसको लात मारे तो उसका पैर काट लिया जाये, यदि यह दावा करे कि वह ब्राह्मण को शिक्षा दे

सकता है तो उसको खौलता हुआ तेल पिलाया जाये। इस समाज में कुत्ते, बिल्ली जैसे जानवर और अछूत वर्ग के हर व्यक्ति की हत्या का दण्ड एक समान था?

रोम और ईरानियों की सभ्यता

निर्लज्जता और मानवता को अपमानित करने में रोम तथा ईरान वासी हिन्दुस्तानियों के यद्यपि समकक्ष न थे तथापि लगभग उनके समान ही थे। योरोप का एक इतिहसकार विक्टर चौपर्ट अपनी पुस्तक "दी रौमन वल्ड" के पृष्ठ 418 पर लिखता है:-

"क़ैसर आराध्य समझे जाते थे, यह बात ख़ानदानी उत्तराधिकार के तौर पर न थी, बल्कि जो भी सिंहासन पर बैठता खुदा मान लिया जाता था भले ही उसमें इस पद की गरिमा के अनुकूल कोई लक्षण न पाये जाते हों अगस्तस को राज्य पदवी एक राजा से दूसरे राजा को संविधान के अनुसार हस्तान्तरित नहीं होती थीं बल्कि रोम की राज्य-सभा को शक्ति के बल पर जारी किये गये हर आदेश को अनुमोदन देने के अ़लावा और कुछ न करना पड़ता था"।

यदि इसकी तुलना इस्लाम के अभ्युदय से पूर्व आज़ादी के मतवाले, आदर व सम्मान में मध्यम मार्ग अपनाने वाले स्वाभिमानी अ़रबों से किया जाये तो दोनों क़ौमों की प्रवृत्ति तथा अ़रबी व अ़जमी समाज का अन्तर स्पष्ट हो जायेगा, अ़रबवासी कभी-कभी अपने बादशाहों को "अबैतुल्लअ़न" (आप बुराई से सुरक्षित रहें) "इम सबाहन" (आप अच्छी तरह सुबह करें) जैसे शब्दों से सम्बोधित करते थे। अरबों में आज़ादी व स्वाभिमान की इतनी अधिक भावना थी कि वे अपने सरदारों एवं शासकों के बाज़ मुताल्बों और फरमाइशों को पूरा करने से भी कभी-कभी अपनी असमर्थता व्यक्त कर देते थे। इस सम्बन्ध में यह रोचक घटना इतिहास में आती है कि एक अ़रब बादशाह ने बनी तमीम क़बीले के एक व्यक्ति से एक घोड़ी जिसका नाम "सिकाब" था माँगा तो उसने घोड़ी देने से साफ़ इन्कार कर दिया और कविता के माध्यम से कहा, "ऐ बादशाह! यह बहुत क़ीमती और उत्तम घोड़ी है" न इसे भेंट दिया जा सकता है न इसे बेचा जा सकता है।

इसे हासिल करने की आप कोशिश न करें, आपसे ज़्यादा इसकी रक्षा करने का मुझमें सामर्थ्य है।

आज़ादी, आत्मसम्मान, सद्गुण, शराफ़त और हौसलामन्दी की भावना जनता के हर वर्ग में मौजूद थी तथा स्त्री-पुरूष दोनों में पायी जाती थी। इसका एक नमूना हमें हीरा के राजा अम्र बिन हिन्द की हत्या की घटना में नज़र आता है, कि अम्र बिन हिन्द ने विख्यात अ़रब शह सवार और शायर अम्र बिन कुल्सूम की दअ़वत की और इच्छा व्यक्त की, कि उसकी मां बादशाह की मां के साथ दावत में शामिल हो। अम्र बिन कुल्सूम क़बीला बनू तग़लब के कुछ ज़िम्मेदारों के साथ जज़ीरा से हीरा की ओर प्रस्थान किया और उसकी माँ लौ बिन्त मुहलहिल भी क़बीले की कुछ स्त्रियों के साथ आयी, अम्र बिन हिन्द का ख़ेमा हीरा और फ़रात के बीच लगाया गया। एक ख़ेमे में अम्र बिन हिन्द ने अम्र बिन कुल्सूम के स्वागत सत्कार की व्यवस्था की और दूसरे ख़ेमें में हिन्द और लैला एकत्र हुईं, अम्र बिन हिन्द ने अपनी मां से पहले ही कह दिया था कि जब खाना लग जाये तो थोड़ी देर के लिए नौकरों को हटाकर लैला से काम लेना। अतएव जब खाना लगाया जा चुका तो हिन्द ने लैला से, (नौकरों को हटा कर) कहा, ''बहन! ज़रा यह तबा (थाल) तो मुझे उठा कर दो''। लैला ने उत्तर दिया, ''जिसको ज़रूरत हो वह स्वयं उठाए''। जब हिन्द ने दोबारा ज़ोर देकर कहा तो लैला चिल्ला उठी, ''हाय! क्या अपमान की बात है बनू त़ालिब के सपूतो''! माँ के यह शब्द सुनकर अम्र बिन कुल्सूमू आग बगूला हो उठा। उसने लपक कर अ़म्र बिन हिन्द की तलवार जो सामने लटक रही थी उठायी और उसका काम तमाम कर दिया। इसके साथ बनू त़ालिब ने ख़ेमा को लूट लिया और जज़ीरा की ओर वापस आ गये। इसी घटना पर अम्र बिन कुल्सूम ने वह प्रसिद्ध क़सीदा कहा जिसकी गणना सब्आ़ मुअ़ल्लक़ात (सात झूलती कवितायें) में की जाती है।

इसी प्रकार जब मुग़ीर बिन शोबा मुसलमानों के दूत बनकर रूस्तम के दरबार में गये तो वह अपनी पूरी शान व शौक़त के साथ अपने सिंहसान पर बैठा था। मुगीरा बिन शोबा अ़रबों की आ़दत के अनुसार उसी के साथ उसके सिंहासन पर गाव तकिया के पास बैठ गये। रूस्तम के दरबारी मुग़ीरा पर टूट

पड़े और उनको नीचे उतार लाये। इस पर मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ि०) ने कहा, ''हमने तो सुना था कि तुम लोग बड़े बुद्धिमान हो किन्तु मुझे तुमसे अधिक मूर्ख कोई नज़र नहीं आता। हम अ़रब वासी तो सबसे बराबरी का व्यवहार करते हैं। हममें से, लड़ाई के मैदान को छोड़कर, कोई किसी को गुलाम (दास) नहीं बनाता। मेरा अनुमान था कि तुम भी इसी प्रकार अपनी क़ौम से समता का व्यवहार करते होगे। अच्छा यह था कि तुम मुझे पहले ही सूचित कर देते कि तुम ने आपस में एक-दूसरे को खुदा बना रखा है। और यह बात तुम्हारे साथ तय न हो सकेगी। उस दशा में हम तुमसे यह बर्ताव न करते और न तुम्हारे पास आते, किन्तु तुमने हमें स्वयं बुलाया है"।

अ़रब प्रायद्वीप में अन्तिम नबी के अभ्युदय का दूसरा कारण

अ़रब प्रायद्वीप और मक्का में कअ़बः का होना था जिसको ह़ज़रत इब्राहीम व ह़ज़रत इस्माईल (अ़लै०) ने इसलिए बनाया था कि एक अल्लाह की अ़िबादत की जाये और यह जगह सदा के लिए तौह़ीद की दअ़वत (बुलावा) का केन्द्र बने सूरः आले इमरान की आयत 96 में हैः-

अनुवाद- "पहला घर जो लोगों की इबादत करने के लिए निर्धारित किया था, वही है जो मक्का में है बरकत वाला और दुनिया जहान में हिदायत है"।

बाइबिल में इतने संशोधन के बावजूद 'वादी बका' के शब्द आज तक मौजूद हैं किन्तु अनुवादकों ने इसको 'दुख की घाटी' कहा है।

मज़ामीर दाऊद के शब्दों का अनुवाद इस प्रकार किया हैः-

"मुबारक है वह इंसान जिसमें ताक़त तुझसे है उनके दिल में तेरी राहे हैं वह बुका की घाटी में गुज़रते हुए एक कुआँ बनाते"। **(किताबे मुक़द्दस)**

किन्तु यहूद विद्वानों को बाद में इस ग़लती का एहसास हुआ अतएव वह एक विशिष्ट घाटी है जिसमें पानी न मिलता था और जिसने यह लिखा है उसके मन में एक ऐसी घाटी की तस्वीर थी जिसकी विशिष्ट प्राकृतिक दशाएँ थीं। इस सम्बन्ध में अंग्रेज़ी के अनुवादकों ने अ़रबी के अनुवादकों की अपेक्षा अधिक सावधानी

बरती है उन्होंने 'बका' शब्द को वैसा ही लिखा है जैसा वह मूल रूप में था-

अनुवाद- "मुबारकबाद है उन लोगों के लिए जिनकी इज्ज़त व ताक़त तेरे साथ है। जिनके दिलों में तेरे रास्ते हैं जो 'बक़ा' की घाटी से गुज़रते हुए उसको एक कुआँ बनाएँगे।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का अभ्युदय ह़ज़रत इब्राहीम व इस्माईल (अल्ल०) की उस दुआ़ के प्रतिफल के रूप में हुआ जो उन्होंने कअ़बः के शिलान्यास के समय मांगी थी और जो इस प्रकार हैः-

अनुवाद- "ऐ हमारे पालनहार! इन लोगों में इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजिए जो इनको तेरी आयतें पढ़ कर सुनाया करें और किताब तथा दानाई लिखाया करे और इनके दिलों को पाक-साफ़ किया करें। बेशक तू ग़ालिब और ह़िकमत वाला है"। **(सूरः बक़रा 129)**

अल्लाह अपने भक्तों की दुआ़एँ ज़रूर क़ुबूल करता है नबियों का स्थान तो भक्तों से कहीं अधिक ऊँचा है। तौरेत में आया है-

"और इस्माईल के ह़क़ में मैंने तेरी सुनी, देख मैं इसे बरकत दूँगा और इसे बहुत बढ़ाऊँगा। इससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं इसे बड़ी क़ौम बनाऊँगा"।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपने बारे में फ़रमाया करते थे कि मैं इब्राहीम (अलै०) की दुआ़ और उसी (या ईसा) की बशारत हूँ। तौरेत में है कि-

अनुवाद- "खुदावन्द! तेरा खुदा तेरे लिए ही बीच से तेरे ही भाइयों में से मेरी तरह एक नबी बरपा करेगा। तुम उसकी ओर कान धरियो"।

"तेरे ही भाइयों" का शब्द स्वयं बता रहा है कि इसका तात्पर्य बनी इस्माईल से है जो बनी इस्राईल के चचेरे भाई थे।

कुछ आगे फिर लिखा है कि-

अनुवाद- "और खुदावन्द ने मुझे कहा कि उन्होंने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा। मैं उनके लिए उनके भाइयों में से तुझसा एक नबी बरपा करुँगा और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा और जो कुछ उसे फरमाऊँगा वह सब उनसे कहेगा"।

"अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा" के शब्द निश्चित रूप से ह़ज़रत

मुह़म्मद (सल्ल०) की ओर संकेत करते हैं क्यों कि आप ही वह अकेले नबी हैं जिन पर अल्लाह का कलाम (ईशवाणी) अक्षरशः अवतरित हुआ और अल्लाह तआ़ला ने इसका एलान भी फ़रमायाः-

अनुवाद- "और वह अपनी मनमानी बातें नहीं कहता। यह तो खुदा का हुक्म है जो उसे भेजा जाता है"। **(सूरे नज्म आयत नं० 3)**

इसी प्रकार दूसरी जगह है-

अनुवाद- इस पर झूठ का दख़ल (अधिकार) न आगे से हो सकता है न पीछे से दाना और ख़ूबियों वाले खुदा की उतारी हुई है। **(सूरः ह़ामीम आयत नं० 42)**

इसके विपरीत बनी इस्राईल के नबियों के सहीफ़े इसका बिल्कुल दावा नहीं करते कि वह भाव व शब्द दोनों प्रकार से अल्लाह का कलाम है उनके विद्वान भी उसको नबियों से सम्बद्ध करने में तकल्लुफ़ से काम नहीं लेते। ज्यूइश इन्साइक्लोपीडिया में आता है कि-

"किताबे मुक़द्दस (प्राचीन) की पहली पाँच किताबें (जैसा कि प्राचीन यहूदी धार्मिक परम्पराएँ हमें बताती हैं) मूसा (अलै०) का संकलन है। अन्तिम आठ आयतों को छोड़कर (जिनमें मूसा (अ़लै०) के देहान्त की घटना बयान की गई है) रबीस (यहूदी विद्वान) इस विरोधाभास तथा एक-दूसरे से भिन्न परम्पराओं पर मनन करते हैं जो इन सह़ीफ़ों में आई हैं और इसमें अपनी बुद्धि से सुधार करते रहते हैं"। (Vo;.9, P.589)

अ़रब प्रायद्वीप की भौगोलिक स्थिति

अ़रब प्रायद्वीप का भौगोलिक स्थिति दीन की दअ़वत के लिए सर्वाधिक अनुकूल है जहाँ से दीन का पैग़ाम सारी दुनिया को पहुँचाया जा सकता है। यह एक प्रकार से एशिया, अफ्रीक़ा और यूरोप महाद्वीप के मिलन केन्द्र के निकट स्थित है और इसके निकटवर्ती क्षेत्र हमेशा मानव सभ्यता व संस्कृति के केन्द्र रहे हैं और जहां शक्तिशाली एवं विशाल साम्राज्य स्थापित हुए। जहाँ से विभिन्न दिशाओं में व्यापारिक मार्ग जाते थे और यह क्षेत्र व्यापार करने वाले क़ाफ़िलों के लिए बड़ा महत्व रखता था। यह क्षेत्र दो शक्तिशाली किन्तु एक-दूसरे के

कट्टर विरोधी राज्यों के बीच स्थित था एक ओर पूरब में सासानी हुकुमत थी[1] दूसरी ओर पश्चिम में बैज़नतीनी ईसाई हुकूमत। और यह दोनों ताक़तें एक दूसरे से लड़ती रहती थीं। परन्तु इस पर भी अ़रब प्रायद्वीप न अपनी आज़ादी और अपने व्यक्तित्व की सदैव रक्षा की। और अपने कुछ सीमान्त क्षेत्रों और कुछ क़बीलों को छोड़कर वह कभी इन ताक़तों के अधीन नहीं रहा। यह क्षेत्र एक विश्वव्यापी दअ़वत के लिए सर्वथा अनुकूल था जो हर प्रकार राजनीतिक दबाव से आज़ाद था और मानवता के सन्देश का उचित केन्द्र बन सकता था।

इन सब कारणों से अल्लाह ने अ़रब प्रायद्वीप में मक्का का चयन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अभ्युदय, आसमानी 'वह्य' के अवतरण तथा इस्लाम के विश्वव्यापी प्रचार हेतु प्रथम केन्द्र के रूप में किया।

अनुवाद– और अल्लाह ज्यादा जानता है कि उसका पैग़ाम कहां और किसके हवाले किया जाये। **(सूरः अन्आ़म 124)**

1. डा० हुसैन कमालुद्दीन ने जो यूनिवर्सिटी के इन्जीनियरिंग कालेज में सिविल इन्जीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष हैं, अपने एक प्रेस इण्टरव्यू में जो उन्होंने काहिरा के अलअहराम के संवाददता को जनवरी 1977 में दिया, बताया कि उन्होंने एक नयी भौगोलिक खोज की है। जिससे यह सिद्ध होता है कि थल भाग में मक्का भूतल के बीचोबीच स्थित है उन्होंने यह शोधकार्य एक ऐसे कम कीमत उपकरण की तैयारी के सम्बन्ध में किया जिससे दुनिया के विभिन्न भागों में कअ़बा की सही दिशा निर्धारित की जा सके।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जन्म उस समय हुआ जब बहार का मौसम था। 20 अप्रैल 571 ई० तथा रबीउलअव्वल की 9 को आपने जिस दिन मक्का की वादी में जन्म लिया वह दिन सोमवार का दिन था।

आप (सल्ल०) के पिता आप के पैदा होने से पूर्व ही स्वर्ग प्रस्थान कर चुके थे आपकी आयु जब 4 वर्ष की हुई तो माता भी इस दुनिया से चल बसीं, फिर आपका पालन पोषण आपके दादा ने किया आपने सर्वप्रथम अपनी मां का दूध पिया फिर आप (सल्ल०) को ह़ज़रत सोवैबा ने दूध पिलाया फिर उसके बाद ह़ज़रत ह़लीमा ने दूध पिलाया।

अब आप (सल्ल०) आठ वर्ष के हुए तो आप (सल्ल०) के दादा भी चल बसे फिर आपके चचा 'अबूतालिब' ने पालन पोषण किया परन्तु अल्लाह को यह दिखाना था कि अल्लाह जिसका संरक्षक हो जाता है तो यदि दुनिया के सारे सहारे भी टूट जाएं तब भी उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की आयु 12 वर्ष की हुई तो आप (सल्ल०) अपने चचा 'अबूतालिब' के साथ तिजारत करने लगे एक बार मुल्क 'शाम' जा रहे थे कि रास्ते ही में आप (सल्ल०) को 'बोहैरा' नामी एक ईसाई पादरी ने देख लिया, देखते ही उसने आपको पहचान लिया कि यही अन्तिम महाईशदूत हैं। इस लिए कि उनकी पुस्तकों में अन्तिम सन्देशवाहक की भविष्यवाणी उसी रूप में मौजूद थी जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के अन्दर झलक रही थी उसने तुरन्त अबूतालिब से कहा कि यह बालक भविष्य में नबी होने वाला है। अतः इसे आप वापस ले जाएँ इसलिए कि, यदि यहूदी इसे देख लेंगे तो पहचान जाएँगे और अपने स्वार्थ के लिए इसको नुक़सान पहुँचा सकते हैं। अतः आप (सल्ल०) को आपके चाचा ने वहाँ से तुरन्त मक्का वापस कर दिया।

आप का जीवन बहुत ही परहेज़गारी (संयम) का था मक्कावासी आप (सल्ल०) को 'अमीन' अमानत दार कह कर ही बुलाते थे इसलिए कि आप

(सल्ल०) तो मानव जीवन की सूखी हुई खेती को सींचने और भटके हुए मनुष्यों को अपने अल्लाह से मिलाने आये थे अत्याचार खूरेज़ी को मिटाकर अदल, इन्साफ़ और रह़मत व मुह़ब्बत का झन्डा लहराने आये थे आप फ़क़ीरों कमज़ोरों की मदद करते अनाथों के सर पर हाथ रखते।

फिर जब आप (सल्ल०) की आयु पच्चीस वर्ष की हुई तो आप (सल्ल०) का विवाह ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के साथ उस समय हुआ जब कि उनका विवाह आप (सल्ल०) से पूर्व 'हाला' से हो चुका था। परन्तु अब उनका इन्तिक़ाल हो चुका था उसके बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से विवाह किया उस समय ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की आयू 25 वर्ष और ह़ज़रत ख़दीजा की आयु 40 वर्ष की थी। जब आप (सल्ल०) की आयु 40 वर्ष की हुई तो आप (सल्ल०) को नुबूव्वत का ताज पहनाया गया।

नुबूवत का ताज (ईशदूतत्व पद)

अब वह तारीख़ भी आ गयी जिसके लिए आप (सल्ल०) को संसार में भेजा गया था। 6 अगस्त 610 ई० सोमवार के दिन आप (सल्ल०) को नुबूवत का ताज पहनाया गया जिसके पूर्व आप (सल्ल०) परिवार और नगर निवासियों की धार्मिक, नैतिक एवं सामाजिक भ्रष्टता तथा दुरावस्था को देखकर अपार कष्ट होता, आप (सल्ल०) उनके सुधार की समस्या पर विचार करते तो उसका कोई मार्ग दिखाई न देता। आप (सल्ल०) एक ओर मूर्तियों की पूजा को देखते और दूसरी ओर धरती, आकाश, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, पर्वत, सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि को, तो आप (सल्ल०) की आत्मा कहती कि पूजा, उपासना, भक्ति का अधिकारी तो वही सत्ता हो सकती है जिसने इन सब को पैदा किया हो। परन्तु आप (सल्ल०) की समझ में यह न आता कि उसकी पूजा भक्ति की विधि क्या हो। मक्का की पहाड़ियों में 'हिरा' नामक एक गुफ़ा थी जिसमें आप (सल्ल०) कुछ सत्तू और पानी लेकर चले जाते और कई-कई दिन उसमें रहते जब पानी और सत्तू ख़त्म हो जाता तो घर वापस आते और सत्तू पानी लेकर फिर वहीं चले जाते। वहाँ आप (सल्ल०) चिन्ता मग्न रहकर चिन्तन द्वारा ही धरती और आकाश के रचयिता का स्मरण करते।

एक दिन रमज़ान के महीने में हिरा नामक गुफ़ा में बैठे थे कि महामान्य

पर अल्लाह का फ़रिश्ता, जिब्रईल (अलै०) प्रकट हुए जो आपसे पहले ईश्दूतों को ईश्वरीय शिक्षा और आदेश पहुँचाया करते थे। उन्होंने परमेश्वर की ओर से आप (सल्ल०) को भी ईशदूत पद का शुभ संदेश सुनाया और उसी समय से पवित्र कुर्आन का अवतार भी आरम्भ हुआ।

इस्लाम की किरण

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने गुफ़ा से वापस आकर सर्वप्रथम अपनी पत्नी ह़ज़रत ख़दीजा से पूरा क़िस्सा सुनाया तो आप (सल्ल०) को ह़ज़रत ख़दीजा 'वरक़ा' बिन नौफ़ल नामी एक पादरी के पास ले गईं जो तौरेत व इन्जील के बहुत बड़े विद्वान थे। उन्होंने सुनते ही कहा यह वही नामूस है जो ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) पर उतरा था और एक ज़माना आएगा कि उनकी क़ौम ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को झुठलायेगी और उनको उनके शहर से निकाल देगी और इनसे जंग करेगी इस पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को बहुत आश्चर्य हुआ तो वरक़ा इब्ने नौफ़ल ने कहा यदि मैं जीवित रहा तो मैं आप का भरपूर साथ दूँगा।

इस्लाम

इस्लाम का अर्थ होता है 'सर्व समर्पण' जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व सभी ईशदूतों का धर्म था चाहे 'इस्लाम' शब्द के स्थान पर कोई दूसरा शब्द अपनी भाषा के अनुसार प्रयोग किया गया हो, परन्तु वह इस्लाम ही था इसलिए यह कोई नया धर्म न था परन्तु इस्लाम धर्म के मानने वाले चूंकि उस समय अपने वास्तविक रूप में न रह कर अन्य आडम्बरों में फंस चुके थे, अतः परमेश्वर ने पुनः ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम महाईशदूत बनाकर, पवित्र कुर्आन को अन्तिम ग्रन्थ देकर भेजा जिसकी सब से पहली बुनियाद यह है कि मनुष्य अपने पैदा करने वाले मालिक का स्मरण और स्तुति करे जिसने उसे जन्म दिया और जिस सन्देष्टा के माध्यम से इसे ज्ञान प्राप्त हुआ है उस का आभारी हो इसी को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने इन शब्दों में कहा।

"लाइलाह इल्लल्लाहा मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि"

अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं और ह़ज़रत

मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल (ईशदूत) हैं।

सर्वप्रथम इस्लाम ग्रहण करने वाले

सर्वप्रथम आपकी पत्नी ह़ज़रत ख़दीजा, आप (सल्ल०) के दास ह़ज़रत ज़ैद, आप (सल्ल०) के चचा के पुत्र ह़ज़रत अली और आप (सल्ल०) के मित्र ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया और अबूबक्र (रजि०) के प्रचार से ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि०) ह़ज़रत जुबैर (रज़ि०) ह़ज़रत अब्दुर्रह़मान (रज़ि०) सअ़द बिन अबीवक़्क़ास (रज़ि०) तल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (रज़ि०) आदि ने इस्लाम स्वीकार किया।

मुसलमानों का घोर विरोध

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तीन वर्ष तक छिप-छिपकर धर्म प्रचार का कार्य करते रहे। यहाँ तक कि आप (सल्ल०) को अल्लाह की ओर से संकेत मिला कि आप तमाम इन्सानों को ईश ज्ञान पहुँचा दीजिए।

इस संकेत के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर बुलन्द आवाज़ में कहा 'या सबाह़' (यह नारा किसी दुश्मन के ख़त्रे के समय लगाया जाता था) इस नारे को सुनते ही हर समूह के लोग इकट्ठा हो गये तो आप (सल्ल०) ने उन्हें इस्लामी शिक्षा की दअ़वत दी, जिसे सुनते ही अबूलहब (आपके चचा) ने कहा, "सारे दिन तुम्हारे लिए ख़राबी हो, क्या इसी लिए जमा किया था" इस प्रकार लोगों ने आप (सल्ल०) का भरपूर विरोध किया और इस्लाम स्वीकार करने वालों पर घोर अत्याचार करना शुरु कर दिया।

महाईशदूत मुह़म्मद (सल्ल०) पर मक्का निवासियों का अत्याचार

वही मक्का के लोग जो ईशदूत पद से पहले महा मान्य का सम्मान करते थे, और आप (सल्ल०) को 'सत्यनिष्ठ मुह़म्मद' कहकर सम्बोधित करते थे। अब वही लोग आप (सल्ल०) को झूठा कहने लगे और आप (सल्ल०) के रास्ते में कांटे बिछाने लगे जब आप (सल्ल०) किसी रास्ते से गुज़रते तो ऊपर से लोग

कूड़ा करकट डाल देते थे। एक बार आप (सल्ल०) इसी दशा में घर आये तो आपकी पुत्री फ़ातिमा को बहुत अफ़सोस हुआ। वह आप (सल्ल०) का सर धोती जाती थी और रोती जाती थी। जिस पर आप (सल्ल०) ने उन्हें तसल्ली (सांत्वना) दी और कहा 'बेटी! ग़म न करो अल्लाह तुम्हारे पिता को असहाय न छोड़ेगा।

एक बार कअ़बा में आप (सल्ल०) नमाज़ पढ़ रहे थे कि उसी समय आप (सल्ल०) की पीठ पर ऊँट की ओझड़ी लाकर डाल दी गयी जिस के बोझ से आप सर नहीं उठा सकते थे, थोड़ी देर के बाद आप की पुत्री फ़ातिमा ने आकर ओझड़ी को हटाया।

एक बार आप (सल्ल०) के गले में मोटी चादर डाल कर एक काफ़िर ने इतनी तेज़ ऐंठा कि आप का गला घुंटने लगा, उस पर जब आप के मित्र ह़ज़रत अबू बक्र (रज़ि०) आप (सल्ल०) को बचाने आये तो उनको इतना मारा गया कि बिल्कुल मरने के निकट हो गये, परन्तु महामान्य या उनके अनुयाई अपने कर्तब्य से विचलित न हुए।

महाईशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को प्रलोभन

मक्का के सरदारों ने भय दिलाकर और अत्याचार करके भी सफ़लता न देखी तो उन्होंने प्रलोभन देने के लिए अपने सरदार 'उत्बा' को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास भेजा उसने कहाः-

"मुह़म्मद! तुम यह जो कुछ कर रहे हो इसमें तुम्हारा उद्देश्य क्या है? मक्के की सरदारी चाहते हो? या किसी प्रतिष्ठित कुल की सुन्दर युवती से विवाह? या धन या मक्का का राज्य चाहते हो, तो हम इसके लिए भी तैयार हैं, किसी स्त्री से विवाह चाहते हो तो हम विवाह कर दें, यदि धन चाहते हो तो धन का ढ़ेर लगा दें परन्तु तुम अपना प्रचार बन्द कर दो।

'उत्बा को पूर्ण विश्वास था कि आज वह सफ़ल होकर ही लौटेगा, परन्तु आप तो महाईशदूत थे। आपने कहा यदि मुझे दाहिने हाथ में सूरज और बाएँ हाथ में चाँद दे दिया जाये तब भी मैं अपने काम से नहीं रुकूँगा इस प्रकार आप (सल्ल०) ने सबका उत्तर उसे पवित्र कुर्आन द्वारा सुना कर दिया, उत्बा बहुत प्रभावित हुआ और लौट कर उसने अपने साथियों से कहा। "आज हमने वह

वाणी सुनी जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) प्रस्तुत करते हैं, वह मानवीय वाणी नहीं है, कोई और ही वाणी है, मैं तुमको परामर्श देता हूँ कि वह जो कुछ कर रहे हैं उन्हें करने दो यदि वे सफ़ल हो गये तो उससे तुम्हारी ही प्रतिष्ठा बढ़ेगी अन्यथा अ़रब स्वयं ही उनको समाप्त कर देंगे"।

परन्तु उन लोगों ने बात न मानी और बराबर अत्याचार करते रहे और इधर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ईशवाणी (क़ुर्आन) अवतरित होती रही जैसा कि विरोधियों के उपलक्ष में एक स्थान पर कहा गया है-

"हम भली भांति जानते हैं कि विरोधी (तुम्हें झुठलाने की) जो बातें करते हैं उनसे तुमको दुख होता है, सो वह तुमको नहीं झुठलाते बल्कि वह ज़ालिम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं और तुम से पहले के ईशदूतों को भी झुठला चुके हैं, सो वह अपने झुठलाये जाने और दुख दिये जाने पर सहनशीलता से काम लेते रहे यहाँ तक कि उनको हमारी सहायता पहुंच गई और अल्लाह के वचन को कोई झुठलाने वाला नहीं"। **(सूरः अनआ़म, आयत 33-34)**

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का सामाजिक बाईकाट

आप (सल्ल०) की नुबूवत के सातवें साल के बाद जब बनी अ़ब्दुल मुत्तलिब ने क़ुरैश को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के हवाले करने से इन्कार कर दिया तो आपस में फ़ैसला किया कि बनी हाशिम और अब्दुल मुत्तलिब का बाईकाट किया जाये उनसे रिश्ते नाते, क्रया-विक्रया सब बन्द कर दिया जाये यह प्रतिज्ञा लिख कर पवित्र कअ़बः के दरवाज़े के ऊपर लटका दी गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि महाईशदूत को अपने परिवार समेत तीन वर्ष तक पहाड़ की घाटी में बंद रहना पड़ा जिसमें कोई खाद्य सामग्री जाने न पाती थी, इसलिए जीवन रक्षा के लिए वृक्षों के पत्ते चबाने पड़े और सूखे चमड़े तक भिगो कर खाने पड़े। यह सब आप (सल्ल०) के अनुयाइयों ने सहन कर लिया परन्तु धर्म से विचलित न हुए।

मक्का के काफ़िरों का अत्याचार मुसलमानों पर

मक्का वालों के अत्याचार को सुन कर एक साधारण मनुष्य के रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि उस समय मानवता किस प्रकार नष्ट हो चुकी थी।

ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) का इस्लाम

जब ह़ज़रत बिलाल (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया तो मक्का वाले उन्हें लोहे की ज़िरह (कवच) पहना कर गर्मी की धूप में डाल देते और ऊपर से पत्थर की चट्टान रख देते ताकि इस्लाम धर्म छोड़ दें और कभी लड़कों को लगा देते जो मक्का की पहाड़ियों में घसीटते फिरते परन्तु ह़ज़रत बिलाल इस कष्ट को सहते और 'अह़द-अह़द अर्थात अल्लाह एक है अल्लाह एक है कहते रहते।

(सुनन इब्ने माजा पेज नं० 14)

ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) ने जब इस्लाम स्वीकार किया तो मक्का वाले उन्हें गर्म रेत पर लिटा देते, जिसके कारण उन की कमर का गोश्त गल गया था। एक दिन ह़ज़रत उमर (रज़ि०) ने उनकी पीठ देखी तो कहा आज तक ऐसी पीठ मेरी नज़र से नहीं गुज़री, ह़ज़रत ख़ब्बाब (रज़ि०) ने उत्तर दिया काफ़िर मुझे अंगारों पर लिटा कर घसीटा करते थे। **(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः ख़ब्बाब बिन अरत)**

ह़ज़रत सुह़ैब व ह़ज़रत अम्मार (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत सुह़ैब (रज़ि०) और ह़ज़रत अम्मार (रज़ि०) को मक्का वाले लोहे की ज़िरहें (कवच) पहना कर धूप में डाल देते, परन्तु इससे उनके इस्लाम में कोई अन्तर न आता। **(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः सुह़ैब रज़ि०)**

ह़ज़रत अबू फ़कीह (रज़ि०) का इस्लाम

इसी प्रकार जब ह़ज़रत अबू फ़कीह (रज़ि०) ने इस्लाम क़ुबूल किया तो उनके पैर में बेड़ी डाल कर धूप में लिटा दिया जाता, फिर पीठ पर पत्थर की चट्टान रख दी जाती यहाँ तक कि उनके हवास उड़ जाते। एक दिन आसिया ने उनके पैर में रस्सी बांधी और आदमियों को उनके घसीटने का आदेश दिया उसके बाद उनको तपती हुई ज़मीन पर लिटा दिया, अचानक एक व्यक्ति उधर से गुज़रा, तो उमय्या ने मज़ाक उड़ाने के लिए कहा तेरा पालनहार यही तो नहीं? उस पर बोले "मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह तआ़ला है" इस पर उसने ज़ोर से

उनका गला घूंटा लेकिन उसके निर्दयी भाई को जो उस समय उसके साथ था इस पर भी संतुष्टि नहीं हुई और उसने कहा कि इसको और कष्ट दो।

(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः अबू फ़कीह)

ह़ज़रत सुमय्या (रज़ि०) का इस्लाम

जब ह़ज़रत सुमय्या (रज़ि०) जो ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि०) की माँ थीं इस्लाम कुबूल किया तो मक्का वालों ने उनको धूप में लिटा दिया। इसी ह़ालत में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का जाना हुआ तो फ़रमाया सब्र करो तुम्हारा ठिकाना जन्नत में है, परन्तु अबू जह्ल को इस पर भी तसल्ली नहीं हुई और उसने बरछा मार कर उनको शहीद कर दिया। यही वह औ़रत हैं जिनकी शहादत सबसे पहले हुई।

(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः सुमय्या रज़ि०)

ह़ज़रत अबूज़र गिफ़ारी (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०) ने जब कअ़बः शरीफ़ में अपने इस्लाम स्वीकार करने का एलान (घोषणा) किया तो उन पर मक्का वाले टूट पड़े और मारते-मारते ज़मीन पर लिटा दिया।

(मुस्लिम शरीफ़, मनाकिब फ़ज़ायल ह़ज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि०)

ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मस़ऊद (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन मस़ऊद (रज़ि०) ने जब पहले-पहल कअ़बः में कुर्आन मजीद की कुछ आयतें ऊँची-ऊँची आवाज़ से पढ़ीं तो मक्का वालों ने उनको इतना मारा कि चेहरे पर निशान पड़ गये, परन्तु उन्होंने सहाबा से कहा कि "यदि कहो तो कल फिर इसी प्रकार ऊँची आवाज़ में कुर्आन की तिलावत करुँ"। **(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः अब्दुल्लाह बिनमस्ऊद रज़ि०)**

ह़ज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) सम्मानित लोगों में से थे परन्तु जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो स्वयं उनके चचा ने उन्हें रस्सी से बाँध दिया।

(तबक़ात इब्ने सअ़द, तर्जुमः उस्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि०)

ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम (रज़ि०) ने जब इस्लाम स्वीकार किया तो उनके चचा उनको चटाई में लपेट कर लट्का दिया करते और नीचे से उनकी नाक में धुंआ दिया करते थे। **(अत्तबरी तज़्किरः ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि०)**

ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत उमर (रज़ि०) के चचा ज़ाद भाई सईद बिन ज़ैद (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया तो ह़ज़रत उमर (रज़ि०) ने उनको रस्सियों में बाँध दिया था।

(बुख़ारी किताबुल इकराह, बाब अख़्तिरूज्जर्ब वल क़त्ल)

ह़ज़रत आइशा बिन्त अबी रबीअः व सलमः बिन्त हिशाम रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इस्लाम

इसी प्रकार ह़ज़रत आइशा बिन्त अ़बी रबीअः रज़ियल्लाहु अ़न्हा और ह़ज़रत सल्मः बिन्त हिशाम रज़ियल्लाहु अ़न्हा जब इस्लाम लाईं तो मक्का वालों ने दोनों के पैरों को एक साथ बाँध दिया था। **(तबक़ात इब्ने सअ़द, तज़्किरः वलीद बिन वलीद)**

ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) का इस्लाम

ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने इस्लाम स्वीकार किया तो एक भाषण में लोगों को इस्लाम की ओर बुलाया। मक्का वाले सुनते ही उन पर टूट पड़े और इतना मारा कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के क़बीले बनू तमीम को उनकी मौत का विश्वास हो गया और वह उनको एक कपड़े में लपेट कर घर ले गये। शाम के समय उनकी आँख खुली तो तुरन्त ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का हाल पूछा, अब परिवार वाले भी अलग हो गये थे परन्तु उन्हें बस उस मह़बूब नबी की रट थी, फिर आप को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक पहुँचाया गया। आप ने यह ह़ालत देखी तो आप ने उनको बोसा दिया और रोने लगे। **(उस्दुल्ग़ाबा तज़्किरः उम्मुल ख़ैर)**

इन सब तक्लीफ़ों व अत्याचारों के अतिरिक्त काफ़िर इन लोगों को पानी में डुबा देते, मारते और भूखा प्यासा रखते यहां तक कि कमज़ोरी के कारण बैठ भी नहीं सकते थे।

श्री नाथू राम जी की राय

जब हुज़ूर (सल्ल०) नबी बनाये गये थे तो कुर्आन में भूखे को खाना खिलाने और यतीमों के सम्मान करने का सख्ती से हुक्म दिया गया तो यतीमों और दुर्बलों का शोषण करने वाले लोगों के लिए यह बात असह्य थी। उन्होंने देखा कि कुर्आन की इस शिक्षा से हमारा मान-सम्मान, प्रतिष्ठा धूल-धुसरित हो रही है, बल्कि उन्होंने इस स्वर को खून पसीना एक करके कमायी हुई दौलत को समाज के बेकार लोगों में बांट कर स्वयं को निर्धन बना देने वाला स्वर कहा। इसलिए हम कह सकते हैं कि हुज़ूर के प्रति किया गया विरोध मात्र धार्मिक कारणों से नहीं था, बल्कि इसके पीछे आर्थिक कारण मौजूद थे। **(ह़ज़रत मुह़म्मद का अदर्श' पेज नं० 11-12)**

इस घोर अत्याचार के बाद मुसलमानों की ह़िजरत

ह़िज़रत (अर्थात धर्म हेतु देश त्याग) करके बहुत से मुसलमान ह़ब्शा चले गये। यहाँ मक्का में बराबर अत्याचार होता रहा, यहां तक कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और मुसलमानों को भी अपनी जन्म भूमि में रहना असम्भव हो गया। मक्का में तो यह दशा थी कि जीना मुश्किल था, परन्तु मदीना में बड़ी तेज़ी से लोग इस्लाम कुबूल कर रहे थे।

इस्लाम का प्रकाश मदीने में

ह़ज के मौसम में मदीने का एक समूह मक्का आया ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उनको इस्लाम की शिक्षा दी तो उन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया, फिर वह लोग अगले वर्ष और लोगों को मक्का लेकर आये जिन्हें ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने कुछ उपदेश दिये, जिससे उन लोगों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया, तो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने उनकी शिक्षा के लिए एक साथी (सह़ाबी) को मदीना भेजा जिनके द्वारा वहां घर-घर इस्लाम फैल गया, इस प्रकार तीसरे वर्ष मदीने के मुसलमानों का एक बड़ा समूह ह़ज करने मक्का आया और उसने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से आग्रह किया कि आप और आप (सल्ल०) के साथियों पर इतना अत्याचार हो रहा है इसलिए आप (सल्ल०) हमारे यहाँ चले आएँ और हम

आप के जान माल और हर प्रकार से आपकी रक्षा करेंगे तो आप (सल्ल०) ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और मुसलमानों को मदीना जाने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार ह़बशा की हिजरत के बाद यह दूसरी ऐतिहासिक हिजरत थी।

मदीने की ओर हिज़रत

मक्का निवासियों का अत्याचार बराबर होता रहा यहाँ तक कि एक दिन मक्का के काफ़िरों ने आप (सल्ल०) की हत्या की योजना बना कर आप (सल्ल०) के घर को घेर लिया तो आप (सल्ल०) को परमेश्वर की ओर से मदीना जाने का हुक्म हो गया।

आदेश मिलते ही ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को अपने बिस्तर पर लिटा कर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को साथ लिया जिनके साथ दो सवारियां थीं और अब्दुल्लाह बिन उरैकित को (रास्ता दिखाने के लिए) लेकर मदीने की ओर निकल पड़े और एक गुफ़ा (ग़ारे सौर) में तीन दिन ठहरने के बाद मदीना पहुँच गये।

मक्का निवासियों से युद्ध

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के देश त्याग के बाद भी मक्का निवासियों की शत्रुता की आग शान्त न हुई और उन्होंने मदीने वालों को धमकियाँ देनी शुरु कर दीं तो जिस प्रकार रक्षार्थ देश त्यागा करना पड़ा उसी प्रकार युद्ध पर भी बाध्य होना पड़ा, जब मक्का के काफ़िरों ने मदीने पर आक्रमण करने की योजना बनाई तो अब धर्म रक्षा का ही प्रश्न न था बल्कि प्राण रक्षा का भी प्रश्न आ गया था, ऐसी दशा में परमेश्वर की ओर से मुसलमानों को रक्षार्थ जिहाद की अनुमति दे दी गयी जिसे एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ इतिहास कार मिस्टर थाम्स कारलायल (Thomas Carlyle) ने इस घटना के विषय में इस प्रकार लिखा है कि-

"अब तक मुह़म्मद ने अपने धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए उपदेश का तरीक़ा अपनाया था परन्तु जब निर्दयता के साथ अपनी मातृ भूमि से निकाल दिये गये और अत्याचारी दुष्ट लोगों ने केवल इतना ही नहीं किया कि उनके सच्चे आलौकिक सन्देश को सुनने में उपेक्षा प्रकट की, जो उनके हृदय का चमत्कार था

बल्कि जब वह इस सन्देश के सुनने से शांत न हुए तो उनके जीवन के बाधक बन गये, ऐसी परिस्थिति में उस जंगल निवासी ने एक वीर अ़रब की तरह अपनी रक्षा का निश्चय किया"। (ON HEROES AND HERO WORSHIP 61)

इस प्रकार पवित्र कुर्आन में जो सब से पहले क़िताल की अनुमति मिली वह उनके अत्याचार के परिणाम में दी गयी और कहा गया।

अनुवाद- "लड़ने की अनुमति उन लोगों को दी जाती है जिनसे इस कारण लड़ाई की जाती है कि उन पर अत्याचार हुआ, और अल्लाह उनकी सहायता पर शक्ति शाली है, जो लोग अपने घरों से नाहक निकाले गये केवल इतनी बात पर कि वे यूं कहते हैं कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और अगर न हटाया होता अल्लाह लोगों को, एक को दूसरे से तो (ईसाइयों की इबादतगाहें और मदरसे और उपासना गृह और मस्जिदें) जिसमें अल्लाह का बहुत नाम लिया जाता है ढ़ा दिये जाते और अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा, जो अल्लाह की सहायता करेगा, निःसन्देह अल्लाह शक्तिशाली ज़ोर वाला है"। **(सूरः ह़ज आयत नं० 39-41)**

क़त्ल (युद्ध) की अनुमति का कारण

"बिअन्न लहुम जुलेमू" में कारण बताया जा रहा है कि मुसलामानों पर जुल्म होने के कारण इजाज़त दी जाती है इस लिए कि मज़लूम का ह़क़ है कि जुल्म से बचाव करे और मुक़ाबला करे यदि इस ह़क़ को छीन लिया जाये तो इन्सानी अत्याचार के प्रतिचार (मुदाफ़िअ़त) का कोई सामान न रह जायेगा और आगे की आयत से यह बात भी साफ़ कर दी गई कि यह कोई नई अनुमति नहीं है बल्कि पिछले तमाम सन्देशवाहकों के मानने वालों को भी काफ़िरों (इन्कारियों, नास्तिकों) से युद्ध करने की अनुमति थी अगर ऐसा न किया जाता तो किसी की ख़ैर न थी सारे ही मज़हब और उनकी इबादत गाहें ढा दी जाती।

जिहाद का अर्थ इस्लाम धर्म में

अधिकतर लोग जिहाद का अर्थ केवल जंग, युद्ध क़िताल और मारकाट समझते हैं। जबकि जिहाद का शाब्दिक अर्थ मेहनत और कोशिश होता है और

जिहाद का पारिभाषिक अर्थ सय्यद सुलेमान नदवी (रह़०) ने इस प्रकार लिखा है-

"ह़क़ को (इस्लाम की) उन्नति और उसके प्रचार व प्रसार तथा उसकी सुरक्षा के लिए हर प्रकार की कोशिश और क़ुर्बानी को बर्दाश्त करना और शारीरिक या माली व दिमाग़ी हर प्रकार की क़ूव्वतों (क्षमताओं) को जो अल्लाह की ओर से बन्दों को मिली हैं इस राह में ख़र्च करना यहाँ तक कि इसके लिए अपनी और अपने क़रीबी रिश्तेदारों की या बीवी बच्चों की, परिवार व क़ौम की, जान तक को क़ुर्बान कर देना और हक़ का विराध करने वालों और दुश्मनों की तमाम कोशिशों को तोड़ना और उनकी ओर से किये गये ह़मलों को रोकना और उसके लिए युद्ध के मैदान में यदि उनसे लड़ना पड़े तो, उसके लिए भी पूरी तरह तैयार रहना"।

(सीरतुन्नबी भाग 5 पेज नं० 269)

इस प्रकार जिहाद का अर्थ कई अर्थों में प्रयोग होता है। पवित्र कुर्आन में जिहाद और क़िताल (युद्ध) दोनों शब्द अलग-अलग प्रयोग हुए हैं। "जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह" कहते हैं-

"अल्लाह की राह में जिहाद करना" और "क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह" कहते हैं अल्लाह की राह में लड़ना। इन दोनों शब्दों का अर्थ अलग-अलग है अर्थात हर जिहाद क़िताल नहीं है बल्कि जिहाद विभिन्न प्रकार से होता है जिसमें से एक प्रकार क़िताल और शत्रुओं से लड़ना भी है। "जिहाद बिल्माल" अर्थात माल के ज़रिये जिहाद जैसे-

अनुवाद- "सच्चा मुसलमान वह है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और फिर उसमें वह डगमगाया नहीं और अल्लाह के रास्ते में अपनी जान से और अपने माल से जिहाद किया यही सच्चे उतरने वाले हैं"।

(सूरः हुजुरात आयत नं० 2)

शिक्षा के ज़रिये

अनुवाद- "आप लोगों को अपने पालन हार की राह की ओर ह़िक्मत और दानाई की बातों के द्वारा और अच्छी नसीह़त के ज़रिये बुलाइये और यदि बहस करना हो तो वह भी अच्छी तरह कीजिए"। **(सूरः नह़्ल आयत नं० 125)**

अनुवाद- "तू काफ़िरों का कहना न मान और इस कुर्आन के ज़रिये तू उनसे जिहाद कर, बड़ा जिहाद"। **(सूरः फ़ुरक़ान आयत नं० 5)**

माल के ज़रिये जिहाद

अनुवाद- "निःसन्देह वह जो ईमान लाये और हिजरत की, और अपने माल और जान से जिहाद किया"। **(अन्फ़ालः आयत नं० 100)**

ऊपर की आयतों से मालूम हुआ कि जिहाद माल, इल्म या मेहनत यहाँ तक कि जान तक दे देने के ज़रिये हो तो उसे भी जिहाद कहते हैं।

जान के ज़रिये जिहाद

इसी प्रकार क़िताल के महत्व को भी प्रस्तुत किया गया है जिसे अल्लाह ने अत्याचारियों या धर्म में बाधा डालने और निरन्तर विरोध करने वालों से क़िताल (युद्ध) का भी आदेश दिया है उनके विषय में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः-

अनुवाद- "और जो अल्लाह की राह में युद्ध करता है फिर वह मारा जाता है या वह विजयी होता है तो हम उसको बड़ा बदला देंगे"। **(सूरः निसा आयत नं० 10)**

अनुवाद- जो अल्लाह की राह में मारे गये उनको मुर्दा न समझो बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने पालनहार की ओर से रोज़ी दी जाती है। **(सूरः आले इमरान 169)**

ऐसे जान देने वालों को इस्लाम धर्म में 'शहीद' कहते हैं जिनका स्थान बहुत ऊँचा होता है।

तल्वार का प्रयोग इस्लाम धर्म में

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने दुनिया को तल्वार का सही प्रयोग बताया इस लिए कि अत्याचार को रोकने के लिए कभी-कभी हथियार उठाना एक ज़रूरत ही नहीं बल्कि अनिवार्य हो जाता है। जैसे कोई स्वतन्त्रता छीनने का प्रयास करे या इबादतगाहें ख़त्रे में डाल दे, या मानवता नष्ट करने लगे और इन्सानों (मुस्लिम हो या काफ़िर) की जान माल की कोई क़ीमत न रहे तो क्या ऐसे संकट के समय में केवल तमाशाई बन कर खड़ा देखता रहे या केवल अपनी अ़िबादत में लगा रहे। ऐसा नहीं बल्कि उस समय मानवता को अत्याचार से निकाल कर शान्ति व सुकून की राह की ओर लाना पहला दायित्व बन जाता है, परन्तु दुर्भाग्य से तल्वार का

प्रयोग अधिकतर लोगों ने ग़लत ढंग से किया है। इसलिए तल्वार ग़लत समझ में आने लगी है।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मनुष्यों के स्वभाव को सामने रख कर जंग की जो अनुमति दी है आपको आगे की पंक्तियों से स्पष्ट हो जायेगा कि किस परिस्थिति में युद्ध करें और किस से करें उसके पूरे उपदेश ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने बताए हैं।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) जिन युद्धों (ग़ज़्वात) में स्वयं होते उनमें मुजाहिदीन को आदेश होता कि जब तक शुत्रुओं की फ़ौज क़रीब न आ जाये कोई आगे न बढ़े और एक बार 10 हिज्री में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने सह़ाबा को तीन सौ सवारों के साथ यमन भेजा तो रसूल (सल्ल०) ने उनसे फ़रमाया, "जब तक तुम पर कोई ह़मला न करे तुम न लड़ना"। **(सीरतुन्नबी भाग 1, 605)**

इसी प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की मिसाल या ह़क़ की स्थापना करने वालों की मिसाल तो ऐसी है कि जिस प्रकार एक डाक्टर आपरेशन थियेटर में मरीज़ के फोड़े को सही करने के लिए ब्लेड का प्रयोग करता है ताकि पूरा शरीर स्वस्थ हो जाये ठीक उसी प्रकार रसूल (सन्देष्टा) का तल्वार उठाना उसी डाक्टर के समान है। (कि मानवता को क़ायम करने के लिए जो फ़ोड़ा फुन्सी हो उसे ख़त्म करता है, और एक अच्छे समाज को स्थापित करता है।)

कुर्आन पर आरोप की वास्तविकता

कुछ लोग कुछ आयतों को लेकर इस्लाम के विरुद्ध बड़ा प्रचार करते हैं कि कुर्आन में मुसलमानों को आज्ञा दी गई है कि काफ़िरों को जहाँ पाओ उनकी गर्दन मार दो, इस प्रचार की वास्तविकता का कुर्आन से स्पष्ट हो जाना भी अनिवार्य है जैसे-

अनुवाद- "और तुम अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से युद्ध करो जो तुमसे युद्ध करें और किसी पर अत्याचार न करो निःसन्देह अल्लाह अत्याचारियों को दोस्त नहीं रखता और ऐसे लोगों को जिस स्थान पर भी पाओ मार डालो और जिस जगह से उन्होंने तुमको निकाला है तुम भी उनको वहाँ से निकाल दो और फ़ितना (दीन से बिचलना) रक्तपात से भी अधिक भयंकर है और शत्रु जब तक स्वयं

प्रतिष्ठा वाली मस्जिद के पास न युद्ध करें, तुम उस जगह उनसे युद्ध न करना यदि वह स्वयं ही तुम से पहल करें तो तुम भी उनसे युद्ध करो यही सच्चाई का इन्कार करने वालों की सज़ा है। फिर यदि वह (युद्ध से) रुक जाएँ तो (तुम भी रूक जाओ) निःसन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील बड़ा कृपालु है और युद्ध करते रहो जब तक कि फ़ितना मिट न जाये, और धर्म अल्लाह के लिए (स्वतन्त्र) न हो जाये, फिर अगर वह (युद्ध से) रुक जाएँ तो (तुम भी रुक जाओ) लड़ाई तो केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो अत्याचारी हैं"। **(सूरः बक़रः आयत नं० 190)**

व्याख्या– ऊपर की इन आयतों को लेकर धर्म विरोधी बड़ा (इस्लाम और कुर्आन का) विरोध करते हैं परन्तु यदि निष्पक्ष होकर पूरी आयतों को पढ़ कर विचार करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि जिस समय यह अनुमति दी गई उससे पूर्व का इतिहास पढेंगे तो रोंगटे खड़े हो जाएंगे कि मक्का के विधर्मी ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को सत्य धर्म के प्रचार से रोकने के लिए आप (सल्ल०) के विरुद्ध लोगों को बहकाते और भड़काते थे। जो आप (सल्ल०) पर और आप (सल्ल०) के साथियों पर भयंकर अत्याचार करते थे जिन्होंने आप (सल्ल०) का और आप (सल्ल०) के परिवार का शेबे अबी त़ालिब में तीन वर्ष तक बहिष्कार किया और यह बहिष्कार ऐसा निर्दयता पूर्ण था कि वहिष्कृत परिवार अर्थात ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक मुट्ठी भर खाद्य सामग्री नहीं पहुँच पाती थी बच्चे भूखे मरते थे। वृक्षों के पत्ते और सूखे चमड़े भिगोकर खाने पड़ते थे।

मुसलमानों को मक्का में तपती हुई रेत पर लिटा दिया जाता फिर उनके शरीर को दहकते हुए लोहे से दाग़ा जाता, गले पर तलवार चला दी जाती, तीरों की उन पर बारिश होती, भूख और प्यास देकर आज़माया जाता परन्तु एक मिनट के लिए इस्लाम से फिरने के लिए तैयार न होते थे। इस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और उनके साथियों के साथ तेरह वर्ष तक अत्याचार होता रहा अन्त में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी मातृ भूमि छोड़ कर मदीना चले गये परन्तु अत्याचारी इस पर भी संतुष्ट एवं शान्त न हुए और उन्होंने मदीने पर चढ़ाई कर दी तो ऐसे विधर्मी शत्रुओं से युद्ध की आज्ञा दी गई।

"उनको जहाँ पाओ क़त्ल करो और जिस जगह से उन्होंने तुमको निकाला है तुम भी (युद्ध करके) उनको वहां से निकाल दो....."

"यह आदेश मुसलमानों को उस समय दिया गया जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने मदीना आने के बाद मक्का के लोगों से एक सन्धि की जिसे सुल्ह़े-हुदैबिया के नाम से जानी जाती है उसी सन्धि की शर्त के अनुसार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सह़ाब-ए-किराम (साथियों) के साथ इस उमरा की क़ज़ा पूरी करने का इरादा किया, "जिसे एक वर्ष पूर्व विधर्मी कुरैशे मक्का ने यह कह कर रोक दिया था कि आप अगले वर्ष उमरा कर सकते हैं। परन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के साथियों को यह ख़याल आया कि इन अत्याचारियों की सन्धि का कोई भरोसा नहीं यदि वह उस वर्ष भी रोकने लगें तो हमें क्या करना चाहिए इस पर यह अनुमति अल्लाह की ओर से दी गयी कि यदि वह युद्ध करने लगें तो तुम्हें भी अनुमति है कि जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और जिस प्रकार उन्होंने मुसलमानों को मक्का से निकाला, तुम भी उनको मक्का से निकाल दो"। **(क़ुर्तुबी)**

- इसी प्रकार युद्ध की आज्ञा देते हुए मुसलमानों को चेतावनी दी जाती थी कि तुमको युद्ध की अवस्था में भी ज़्यादती नहीं करनी है अर्थात हर वह कार्य और व्यवहार जो अनुचित, अनैतिक तथा न्याय विरुद्ध हो।
- अबूदाऊद में ह़ज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जिहाद में जाने वाले को नसीह़त करते कि तुम अल्लाह के नाम पर और रसूलुल्लह की मिल्लत पर जिहाद के लिए जाओ लेकिन, किसी बूढ़े, कमज़ोर, छोटे बच्चों या औ़रतों को क़त्ल (हत्या) मत करना। **(मज़हरी)**
- इसी प्रकार मुसलमानों को आदेश दिया जाता कि उन लोगों से युद्ध निषिद्ध है जो तुम्हारे धर्म में विध्न (बाधा) न डालें, किसी की स्त्रियों, बालकों, बूढ़ों, आहतों पर हाथ न उठाना, खेतियों और पुशुओं को निरर्थक हानि न पहुँचाना, अपनी शारीरिक शक्ति का वहीं प्रयोग करना जहां वह अनिवार्य हो और उसी सीमा तक करना जितने की आवश्यकता हो।
- ऊपर की आयतों में यही आदेश मुसलमानों को दिया गया है कि केवल मुसलमान उन काफ़िरों (इन्कार करने वालों) से युद्ध करें जो उनके विरोध के लिए सामने आएँ वर्ना किसी को केवल काफ़िर होने की वजह से किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं पहुँचाया जाएगा।

बाबू मुकुटधारी प्रसाद जी के अनुसार इस्लाम की तूलवार

बाबू मुकुटधारी प्रसाद बी० ए० एल० एल० बी० गया के प्रमुख राष्ट्रीय नेता हैं, जो स्वाधीनता आन्दोलन में अनेक बार जेल जा चुके हैं और 12 वर्ष तक गया म्युनिस्पल्टी के अध्यक्ष रह चुके हैं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म दिवस की एक सभा के सभापति पद से भाषण करते हुए आपने फ़रमायाः-

"आप लोगों को यह मालूम हो या न हो, परन्तु सत्य यह है कि इस्लाम और मुहम्मद साहब के सम्बन्ध में मेरे विचार पहले उतने अच्छे नहीं थे जैसा कि आप पाते हैं। मेरा दिल उनकी ओर द्वेष से भरा हुआ था और मुझे मुहम्मद (सल्ल०) और उनके इस्लाम में कोई गुण दिखाई नहीं देता था। परन्तु जब असहयोग आन्दोलन में जेल गया और वहां आपकी जीवनी का अध्यन किया तो मेरी आंखे खुल गईं और मुझे मुहम्मद साहब के अपार गुणों का क़ायल हो जाना पड़ा और इसी कारण आज मैंने यह उच्च पद ग्रहण कर लिया है"।

अरब देश के इतिहास से स्पष्ट है कि मुहम्द साहब के धर्म-प्रचार से पहले अरब नितांत मूर्खता बर्बरता, तथा-भ्रष्टता, मद्यपान और तरह-तरह के कुकर्मों में लिप्त था। परन्तु मुहम्मद साहब की शिक्षा का यह प्रभाव हुआ कि केवल 23 वर्ष के अल्प समय में इस मूर्ख और बर्बर देश की काया पलट गई। आपकी शिक्षाएँ अगणित हैं। किन्तु इनमें विशेष रूप से मुझे अत्यन्त प्रिय और जो हर आदमी के लिए लाभकारी और व्यवहार-योग्य है बयान करता हूँ-

मैं सबसे पहले समता को लेता हूँ। स्वामी हो या दास, धनी हो या निर्धन, गोरा हो या काला इस्लाम ने हर मुसलमान को बराबर का पद दिया है। मुहम्मद साहब की शिक्षा में परिवारिक नीच-ऊँच के लिए कोई जगह नहीं है, बल्कि नाम और प्रतिष्ठा की कसौटी कर्म और केवल कर्म है।

अब विरासत (मृतक-सम्पत्ति) और ज़कात को लीजिए। मेरी राय में मुहम्मद साहब ने इस विषय के प्रति जो आदेश दिये हैं, उनसे साफ़ प्रकट होता कि इस्लाम पूंजीवाद का विरोधी और धन विभाजन का समर्थक है। विरासत-नियम का अर्थ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता कि एक आदमी का धन कुछ

आदमियों में बंट जाये और उस परिवार का हर-हर प्राणी निर्धनता से सुरक्षित रह सके और साथ ही कोई अकेला धन के घमण्ड से दूसरे आदमियों को अपने सामने हीन न समझे।

ज़कात (केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कार्य) को मुहम्मद साहब की शिक्षा में जो प्रधानता प्राप्त है, वह दूसरे धर्मो में मौजूद नहीं। सम्पत्ति-विभाजन से एक परिवार के लोगों की आर्थिक कठिनाइयाँ दूसरी हो सकती थीं परन्तु ज़कात ने पूंजीवाद के विरोध के साथ एक दशाहीन और निर्धन मुसलमान को निर्धनता के गर्त से निकाला और संसार में मनुष्यों का-सा जीवन बिताने का अवसर प्रदान किया।

मुहम्मद साहब की एक सुपुत्री को, जबकि वह गर्भवती थी, इस्लाम के एक विरोधी ने भाले से ज़ख्मी कर दिया और उसके कारण उनका गर्भपात हो गया और इस दुख से वह जीवित न रह सकीं। किन्तु फिर जब वही विरोधी किसी अवसर पर अपराधी के रूप में मुहम्मद साहब के सम्मुख लाया गया तो आप ने अपनी असीम दयालुता, धैर्य और क्षमा-भाव से काम लेकर ऐसे अपराधी को कोई दण्ड दिये बिना छोड़ दिया।

सज्जनो! कहा जाता है कि 'इस्लाम तलूवार के बल से फैला'। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि मेरा भी यही विचार है, परन्तु वह कौन-सी तलवार थी? क्या वह लोहे की तलवार थी? नहीं, वह मुहम्मद साहब की यही अमूल्य सदाचारिता, क्षमा-भाव, शुद्ध आचार-व्यवहार, उनके महान गुण और उनकी क़ियामत तक न मिटने वाली आदर्श-शिक्षाओं की चमकती-दमकती तलवार थी, जिसने गर्दन काटने की जगह दिलों को एक धागे में जोड़ दिया। इस्लाम की लोकप्रियता और प्रसिद्धि के यही वे कारण है अन्यथा कोई चीज़ जो बलपूर्वक और अत्याचार के आधार पर स्थापित की जाती है, स्थाई और फलदायी नहीं होती। मुहम्मद साहब की अति उत्तम शिक्षा और सदाचार ही के यह चमत्कार हैं कि इस्लाम अब तक क़ायम है और मुझे यह स्वीकार करने में कुछ भी संकोच नहीं है कि मुहम्मद साहब का धर्म ही अपनी शिक्षाओं के आधार पर आज संसार में सबसे अधिक लोकप्रिय धर्म है। **(जगत महर्षि पृष्ठ 62-68)**

महात्मा गांधी जी के अनुसार इस्लाम की तल्वार

मैंने जितना अध्ययन किया उतना ही जाना कि इस्लाम की शक्ति तलवार में निहित नहीं है। (Mahatma Gandhi in his news paper"Young India")

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार

भारत में मुसलमानों की विजय निर्धन व पीड़ित जनता के लिए मुक्ति सरीखी थी। इस लिए पंचभाश (शूद्र व पिछड़ी) जनता मुसलमान बन गई। यह सोचना कि तल्वार व विनाश के द्वारा धर्मान्तरण हुआ केवल पागलपन है।

(Swami Vivekanand in Selected Works P. 291)

डी लेसी ओ-लेरी जी के अनुसार

.....फिर भी इतिहास ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कट्टर मुसलमानों का पूरे विश्व में फैलकर अपने अधीन जनता को बलपूर्वक तल्वार की नोक पर मुसलमान बनाना, उन अत्यन्त भद्दे, बेढंगे एवं मूर्खतापूर्ण व्याख्यानों में से है जिस इतिहासकारों ने कभी दोहराया था।

(De Lay O'Leary in "Islam at the crossroads", London&1923 P.8)

इस्लाम की नैतिकता

ऊपर के दिये गये आदेशों में ऐसे निर्दयी अत्याचारी शत्रुओं के सम्बन्ध में भी मुसलमानों से कहा गया कि यदि वह युद्ध का परित्याग कर दें तो अल्लाह बड़ा क्षमा शील, दयावान है। इस पवित्र शैली में मुसलमानों को नैतिकता की उच्चकोटि तक पहुँचाया गया है।

इसी प्रकार की एक आयत दूसरे स्थान पर भी है जैसे-

अनुवाद- और तुम उनसे युद्ध करते रहो यहाँ तक कि फ़ित्ना (धर्म में विध्न बाधा) बाक़ी न रहे और धर्म पूर्ण रूप से अल्लाह के लिए हो जाये फिर यदि वह फ़ित्ना से रुक जाएं तो उनके कार्यों को देखने वाला अल्लाह है और यदि वे न मानें तो जान लो कि अल्लाह संरक्षक है और वह बहुत ही अच्छा संरक्षक और बहुत ही अच्छा सहायक है।

(सूरः अन्फ़ाल आयत नं० 39-40)

ऊपर वाली आयतों की तरह यहाँ भी मुसलमानों को सत्य की रक्षा तथा संमार्ग से विध्न बाधा को हटाने के अतिरिक्त किसी भौतिक उद्देश्य से युद्ध करने की अनुमति नहीं है।

इस प्रकार विरोधियों को दो भागों में बांटा जा सकता है, एक यह कि वह मुसलमानों पर अत्याचार करना बन्द कर दें और चाहें तो इस्लाम स्वीकार कर लें या अपने धर्म पर रहते हुए मुसलमानों पर अत्याचार करने से रुक जाएँ। इस आयत में कहा गया है कि यदि वह युद्ध से रुक जाएँ तो जिहाद बन्द कर दिया जाये।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का पहला युद्ध

मदीना हिज्रत के दूसरे वर्ष महाईशदूत को सूचना मिली कि मक्का निवासी मदीने पर आक्रमण करने आ रहे हैं तो आप (सल्ल०) भी 313 मुसलमानों को लेकर उनका सामना करने के लिए निकले। उनके पास न पर्याप्त सवारियाँ थीं, न पर्याप्त हथियार, न पर्याप्त खाने-पीने का सामान ही था। जिस समय 'बद्र' नामक गावँ के निकट दोनों पक्षों का सामना हुआ मक्का निवासियों की संख्या एक हज़ार के लगभग थी और उनके पास सवारी के ऊँट, घोड़े, हथियार सब कुछ अवश्यकता से भी अधिक था परन्तु महाईशदूत की पूर्ण विजय हुई और शत्रु सेना के लगभग सत्तर लोग मारे गये तथा उतने ही लगभग बन्दी हुए।

इस प्रकार कई जंगों का सामना करना पड़ा परन्तु अन्त में मक्का विजित हो गया।

लेनपूल जी के अनुसार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)

'स्पीचेज़ आफ़ मुह़म्मद' में प्रसिद्ध इतिहासकार लेने ने लिखा है-

"ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व दया और शौर्य दोनों का संमिश्रण है, वह वर्षों तक अकेले अपने देशवासियों की शत्रुता का सामाना करते रहे। मुह़म्मद साह़ब इतने सुशील थे कि वह हर एक से प्रफुल्ल-मुख के साथ मिलते थे। उनकी निष्कपट मित्रता, सहानुभूति, उदार हृदयता, वीरता और शौर्य प्रशंसनीय है। जब दस हज़ार आदमियों के साथ वह मक्का में विजेता के रूप में

दाख़िल हुए तो मुहम्मद साहब के लिये यह समय क्रूरता दिखाने और सारी दुष्टताओं का बदला लेने का था, क्योंकि आपको सताने वाले और दुख देने वाले आपके अधिकार में थे और पूर्णरूप से उनसे प्रतिशोध लिया जा सकता था, परन्तु आपने कुरैश के सारे अपराध क्षमाकर दिये और सेना नितांत शान्ति पूर्वक नगर में प्रविष्ट हुई। न कोई घर लूटा गया, न कोई स्त्री अपमानित की गई, न किसी का रक्त बहाया गया। देश विजय के इतिहास में इस प्रकार के विजय-प्रवेश का कोई उदाहरण नहीं मिलता"।

मि० लारेंस ई० ब्राउन जी के अनुसार

इस्लाम ने शत्रु देश के नागरिकों को जितने भी अधिकार प्रदान किये उसका पालन किया। इतिहास में इसके अनेकों उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहें हैं जिसकी गवाही लारेन्स ई० ब्राउन ने येरूशलम की विजय के सम्बन्ध में दी है।

"येरुशलम के ग़ैर मुस्लिम प्रजा को उनकी जान व माल सन्तान और पूजा स्थलों सलीबों और प्रत्येक उस वस्तु को, जो आधिपत्य में है, संरक्षण की प्रत्याभूत दी जाती है उनकी ज़मीनों और उनके धर्म में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा, उनके गिरजाघरों को न तो गिराया जायेगा और न किसी प्रकार का नुक़्सान पहुंचाया जायेगा। उनकी धार्मिक पूंजी और उनके सम्मान को बहाल रखा जायेगा। योरोशलम के लोगों को अपने धर्म के पालन में प्रत्येक प्रकार की स्वतन्त्रता होगी"।

The Eclipes of christianity in Asia by Laurance E. Brown P. 39

(इस्लाम में रवादारी पृष्ठ 68)

इस्लाम का सिद्धान्त ग़ैर मुस्लिम भाइयों के हित में

अनुवाद- "अल्लाह तुमको उन लोगों के साथ भलाई और इंसाफ का व्यवहार करने से नहीं रोकता जिन्होंने तुमसे दीन (धर्म) के सम्बन्ध में युद्ध नहीं किये और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला। निः सन्देह अल्लाह इन्साफ़ का बर्ताव करने वालों से प्रेम करता है। केवल उन लोगों से दोस्ती करने से अल्लाह तुमको रोकता है जिन्होंने तुमसे दीन (धर्म) के सम्बन्ध में युद्ध

किया और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में मदद की। जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे वे लोग अत्याचारी होंगे"।

(सूरः मुम्तहिना, आयत 8-9)

इस आयत में ग़ैर मुस्लिम भाइयों के साथ सद् व्यवहार करने का हुक्म दिया गया है। केवल उन्हीं लोगों से मित्रता का हाथ बढ़ाने से रोका गया है जो अत्याचारी हैं, अर्थात अत्याचारियों से दोस्ती करना ऐसा ही है जैसे अत्याचार को बढ़ावा देना।

पवित्र कुर्आन में एक आयत भी ऐसी नहीं है जिसमें किसी काफ़िर को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने का या नाहक़ मार डालने का आदेश दिया गया हो बल्कि इसके विपरीत है जैसे-

अनुवाद- और यदि (लड़ाई में) कोई मुश्रिक तुमसे पनाह चाहे तो उसको पनाह दो यहां तक कि वह अल्लाह की ईशवाणी (कलाम) सुन ले फिर उसको वहाँ पहुँचा दो जहाँ वह बिल्कुल बे ख़ौफ़ हो कर रह सके कि यह लोग अज्ञानी हैं। **(सूरः तौबः आयत नं० 6)**

इस प्रकार आप (सल्ल०) के जीवन में कोई एक घटना नहीं मिलती कि आपने किसी को ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाया हो। इसके विपरीत आप (सल्ल०) के आचरण व व्यवहार से इस्लाम के स्वीकार करने वालों की संख्या भरी पड़ी है। लोग पवित्र कुर्आन की वाणी सुन कर ही इस्लाम क़ुबूल कर लेते और बहुत से लोग तो आप (सल्ल०) के आचरण को देख कर तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर लेते, इसलिए कि इस्लाम के स्वीकार और अस्वीकार करने का सम्बन्ध हृदय से होता है न कि ऊपरी बनाव सिंहार से। अब हम कुछ नमूने आप के सम्मुख रखते हैं जिससे अन्दाज़ा होगा कि इस्लाम कैसे फैला।

श्री सुन्दर लाल जी के अनुसार इस्लामी सिद्धान्त

हमारे देश के एक विद्वान श्री सुन्दर लाल जी ने अपने एक लेख 'हज़रत की लाइफ़' नाम से जो कल्कत्ता के हिन्दी पत्रिका विशाल भारत में प्रकाशित हुआ था। रसूल-ए-अकरम (सल्ल०) की धार्मिक उदारता की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं-

"बात यह है कि प्रशासक की हैसियत से मुहम्मद साहब ने ग़ैर मुस्लिमों को यहां तक कि बुत परस्तों को भी अपनी हुकूमत के अन्दर अपने धार्मिक अनुष्ठान की पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की, और उनके पूजा स्थलों की सुरक्षा करना प्रत्येक मुसलमान का फ़र्ज़ क़रार दिया। "ला इकराहा फिद्दीन" अर्थात धर्म के मामले में ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए। यह मदनी आयत है और मुहम्मद साहब की तमाम ज़िन्दगी इस आयत की जीती जागती तस्वीर है। इसके सबूत में ईसाइयों, यहूदियों और अन्य धर्मों के अनुपालकों के साथ मुहम्मद साहब के जो समझौते हुए उनकी नकलें अभी तक सुरक्षित हैं"। **(विशाल भारत कलकत्ता नव 1923 पृष्ठ 514)**

कुर्आन के प्रभाव से इस्लाम कुबूल करने वाले

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के शत्रु ही नहीं थे बल्कि तलवार हाथ में ले कर निकले कि मैं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को आज क़त्ल कर दूँगा इसलिए कि वह हमारी पुरानी आस्थाओं का खण्डन करते हैं, परन्तु जब पवित्र कुर्आन की चन्द आयतें सुनीं तो उनका दिल पिघल गया और इस्लाम कुबूल कर लिया।

इसी प्रकार "हज़रत अबूज़रग़िफ़ारी (रज़ि०) ने अपने भाई से कुर्आन मजीद के प्रभाव को सुना तो मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िद्मत में पहुँचे और सच्चे दिल से इस्लाम स्वीकार कर लिया"। **(बुख़ारी फ़ज़ायल अबूज़र)**

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) का कुर्आन सुन कर इस्लाम कुबूल करना

अनुवाद- "निःसन्देह अल्लाह इंसाफ़ और भलाई करने का और रिश्तेदारों (नातेदारों) के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश देता है और निर्लज्जता से और बुद्धिहीन कार्यों से, अत्याचार से रोकता है"।

इन आयतों को सुन कर स्वयं जो उनके दिल पर प्रभाव पड़ा वह लिखते हैं, "यह वह समय था जब ईमान मेरे दिल में बैठ गया और मैं मुहम्मद (सल्ल०) से मुहब्बत रखने लगा"। **(मुस्नद इब्ने हम्बल, भाग एक 318)**

हज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़ि०) का इस्लाम कुबूल करना

अनुवाद- "क्या यह लोग स्वयं पैदा हो गये? या यह लोग स्वयं पैदा करने वाले हैं, क्या आकाश व धरती को इन्हीं लोगों ने पैदा किया है सच तो यह है कि इनके दिल में ईमान नहीं (ऐ सन्देष्टा), क्या इनके पास तुम्हारे परवरदिगार के खज़ाने हैं या यह लोग सरबराहकार हैं?"

"यह सुन कर वह स्वंय कहते हैं कि मेरा दिल उड़ने लगा और इस्लाम कुबूल कर लिया"। **(बुख़ारी)**

* इसी प्रकार **"हज़रत तुफ़ैल बिन उमर अद्दौसी (रज़ि०) ने** हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़बान से कुर्आन सुना तो सुनते ही मुसलमान हो गये।

(तबक़ात इब्ने साद, तज़किरः हज़रत तुफ़ैल बिन उमर अद्दौसी)

* इसी प्रकार ताइफ़ के सफ़र में **हज़रत ख़ालिद (रज़ि०) ने** आप (सल्ल०) की ज़बान से यह आयत सुनी-

"आसमान की क़सम और रात में आने वाले की क़सम....."

यह सुनते ही पूरी सूरः याद कर ली और तुरन्त इस्लाम कुबूल कर लिया।

(मुस्नद इब्ने हम्बल भाग 4, पेज 335)

* इसी प्रकार कभी-कभी पूरा का पूरा एक गुट और जमाअ़त आती और कुर्आन सुन कर इस्लाम कुबूल कर लेती जैसे-हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) हज़रत अबूसलमः (रज़ि०) हज़रत अरक़म बिन अबी अरक़म (रज़ि०) और हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) जब यह लोग आप के सम्मुख आए तो आप ने इस्लाम समझाया और कुर्आन का पाठ सुनाया जिस का परिणाम यह हुआ कि यह तमाम लोग मुसलमान हो गये। **(असदुल्ग़ाबा, तज़किरः अबूसल्मा बिन अ़ब्दुल असद)**

इसी प्रकार कुर्आन पाक में ईरानियों के मुक़ाबिले में रूमियों की विजय की जो भविष्यवाणी की थी वह पूरी हुई तो बहुत से लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

(तिर्मिज़ी किताबुत्तफ़सीर सूरः रूम)

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आचरण से प्रभावित होकर इस्लाम क़ुबूल करने वाले

एक बार एक व्यक्ति ने ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से बहुत सी बकरियाँ माँगी। आप ने उसका सवाल पूरा किया जिस से प्रभावित हो कर उसने अपने परिवार वालों से कहा कि लोगो मुसलमान हो जाओ क्योंकि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) इतना देते हैं कि उनको अपने फ़क़ीर हो जाने का भी डर नहीं होता। **(मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल)**

एक बार आप ने एक यहूदी आ़लिम से क़र्ज़ लिया अभी अदा करने की तारीख़ भी नहीं आयी थी कि उसने आकर इतना तंग किया कि जुह़ से फ़ज्र हो गयी तो सह़ाबा ने उसे धमकियाँ दीं, लेकिन आप (सल्ल०) ने कहा, "अल्लाह ने मुझे ग़ैर मुस्लिम (काफ़िर) पर अत्याचार करने की अनुमति नहीं दी है (इतना सुनने के बाद) दिन चढ़ते-चढ़ते उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और कहा मेरा आधा माल अल्लाह के लिए दान है। आपको तंग करने का मेरा यह मक़सद था कि तौरात में आपके जिन गुण या विशेषताओं का उल्लेख है उनका तजुर्बा करूँ"। **(मिश्कात, किताबुल फ़ितन)**

इसी प्रकार उमामः बिन आसाल गिरफ़्तार हो कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास आए परन्तु जब आपने उनको बिना किसी शर्त व मुआ़वज़ा के रिहा कर दिया तो उन्होंने तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर लिया। **(मुस्लिम शरीफ़ किताबुल जिहाद अल्असीर)**

आप (सल्ल०) के भाषण के प्रभाव से इस्लाम क़ुबूल करने वाले

एक बार ह़ज़रत ज़म्माद (रज़ि०) मक्का में आये तो मक्का विरोधियों से सुना कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) मज़नून हो गये हैं। यह सुन कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के पास गये और कहा कि "मैं जुनून का इलाज करता हूँ" आपने उनके सामने एक भाषण दिया जिसका असर उन पर पड़ा और तुरन्त मुसलमान हो गये। **(मुस्लिम शरीफ़, किताबुल जुमुअः)**

इसी प्रकार ह़ज़रत ह़लीमा के पति अर्थात आपके रज़ाई बाप, जब मक्का

आये तो क़ुरैश ने कहा कि सुना है तुम्हारा बेटा कहता है कि लोगों को मरकर फिर जीना होगा उन्होंने आप से कहा बेटा यह क्या कहते हो? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अगर वह दिन आया तो मैं आप का हाथ पकड़ कर बताऊँगा कि जो कुछ मैं कहता था सच था, यह सुनकर वह तुरन्त मुसलमान हो गये और इन शब्दों का प्रभाव उमर भर रहा, कहा करते थे कि "मेरा बेटा हाथ पकड़ेगा तो जन्नत में पहुंचा कर ही छोड़ेगा"। **(तज़किरः ह़ज़रत ह़ारिस बिन अब्दुल उज्जः)**

आप (सल्ल०) को केवल देखने का प्रभाव

बहुत से तो केवल आप (सल्ल०) को देख कर ही आप की नुबूवत का स्वीकार कर लिया करते।

ह़ज़रत अबू राफेअ़ (रज़ि०) आप की सेवा में क़ुरैशे मक्का की ओर से एलची बन कर आये थे परन्तु आप पर नज़र पड़ते ही तुरन्त इस्लाम क़ुबूल कर लिया। **(अबूदाऊद, किताबुल जिहाद)**

इसी प्रकार अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) को आप (सल्ल०) का चेहरा देखते ही यक़ीन हो गया कि झूठे आदमी का चेहरा ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम क़ुबूल कर लिया। **(तिर्मिज़ी, अबवाबुज्जुह़द पेज नं० 409)**

आचरण का प्रभाव

अधिकतर लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और उनके साथियों (सह़ाबा) के आचरण से प्रभावित होकर इस्लाम क़ुबूल करते जैसे बहुत से लोगों ने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के प्रभाव से इस्लाम स्वीकार किया और यमन के लोगों ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) के आचरण व व्यवहार से। इसी प्रकार ह़ज़रत तुफ़ैल (रज़ि०) ने अपने क़बीले के बहुत से लोगों को मुसलमान किया, क़बीला हमदान ह़ज़रत आमिर बिन सहर के प्रभाव से इस्लाम लाया और ह़ज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी का आधा क़बीला उनके असर से मुसलमान हुआ।

आप (सल्ल०) के चमत्कार का प्रभाव

जब ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हिजरत करके मदीना आये तो ह़ज़रत

अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) आप की सेवा में उपस्थित हुए और कुछ भविष्य वाणियों और गैबी चीज़ों के विषय में प्रश्न किया तो आप (सल्ल०) ने उनका उत्तर दिया, जिस को सुनकर उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया।

(बुख़ारी शरीफ, बाबु हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

इसी प्रकार जब मक्का विजय के बाद आपने ह़ज़रत ख़ालिद को बनु खुज़ैमा की ओर भेजा तो साफ़ हिदायत कर दी थी कि केवल इस्लाम का सन्देश पहुँचाना मक़सद है जंग नहीं, इसके बावजूद ह़ज़रत खालिद ने तलवार से काम लिया जिसे आप (सल्ल०) ने बहुत नापसन्द फ़रमाया और कअ़बः की ओर खड़े होकर फ़रमाया, "ऐ खुदा! ख़ालिद ने जो कुछ किया उस की ज़िम्मदारी मुझ पर नहीं है"। फिर आपने खून का बदला अदा करने के लिए ह़ज़रत अ़ली को भेजा और उन्होंने एक-एक बच्चे का यहां तक कि कुत्तों तक के खून का बदला अदा किया।

(तारीख़ तबरी भाग 3)

इस्लाम के विषय में जो भ्रम और सन्देह था वह इन प्रमाणों से भली भाँति दूर हो गया होगा कि इस्लाम में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की कहीं अनुमति नहीं है, परन्तु क्रासवेल के अनुसार "युद्ध मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण विभाग है"। जिसे इस्लाम ने मानव जीवन के इस श्रेत्र में भी केवल उच्चकोटि की नैतिक शिक्षा को ही नहीं बल्कि सद्व्यवहार की भावना के साथ अनुमति दी है। जिसमें आक्रमणात्मक युद्ध की हर अवस्था को निषिद्ध ठहराया है जो ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के जीवन की घटनाएँ इस शान्ति प्रियता का समर्थन करती है।

मक्का विजय और शत्रुओं के साथ व्यवहार

मक्का त्याग के आठवें साल आप दस या बारह हज़ार की सेना के साथ मक्का की ओर निकले,और किसी प्रकार रक्त पात किये बिना मक्के में प्रवेश करते हैं, ऐसे अवसर पर विजयी शत्रुओं के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। 21, 22 वर्ष तक निरंतर शत्रुता करने वाले मक्का निवासी किस व्यवहार के पात्र थे। इसी व्यवहार के तो, कि सम्पूर्ण नगर बध स्थल बन जाए और शत्रुओं के शव से पट जाये परन्तु, क्षमाशील और दयावान महाईशदूत क्या घोषणा कर रहा है।

1- जो व्यक्ति हथियार डाल दे उसे क़त्ल न किया जाये।
2- जो व्यक्ति कअ़बः में शरण ले ले उसकी रक्षा है।
3- जो व्यक्ति काफ़िरों के सेना नायक, अबू सुफ़यान या ह़कीम बिन हिज़ाम, के घर शरण ग्रहण करे उसके लिए रक्षा है।
4- जो लोग अपने घरों के दरवज़े बन्द कर लें उनके लिए रक्षा है
5- आहतों और बंदियों को क़त्ल न किया जाये।

इस अवसर पर भी आप को शांति और दया का इतना ध्यान था कि स्वयं आप ने फ़रमाया, "आज तो रह़मत (दया) का दिन है"। इसी दया के कारण आपने फ़रमाया, जो अबू सुफ़यान (उस समय तक कट्टर विरोधी थे) के घर में दाख़िल हो जायेगा उससे जंग नहीं करेंगे इतना सुनते ही ह़ज़रत अबूसुफ़यान और तमाम विरोधियों के दिल में यह बात उत्पन्न हो गई कि हम इनका विरोध करते हैं! और यह हम पर दया करते जा रहे हैं। इसलिए यह निःसन्देह अल्लाह के ईशदूत हैं, यह सब देखकर मक्का वासियों ने तुरन्त इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

यह था व्यवहार उनके साथ जिन्होंने आप (सल्ल०) को आपकी मात्र भूमि से निकाला था और आप (सल्ल०) पर और आपके अनुयाइयों पर हर प्रकार के अत्याचार किये थे। आप को संसार में कोई ऐसा सहन शील ऐसा दयावान विजेता नहीं मिलेगा।

इस प्रकार 20 रमज़ान को आप (सल्ल०) ने कअ़बे का तवाफ़ (परिक्रमा) किया और वहां रखे हुए 360 बुतों में से, जिसके पास जाते, आप (सल्ल०) के हाथ में एक लकड़ी थी, उससे इशारा करते तो वह बुत मुँह के बल गिर पड़ता।

इसके बाद तमाम दुश्मने इस्लाम ने इस्लाम स्वीकार किया जैसे बनू सकीफ़, बनी फ़ुजारह, बनी तमीम, बनी सअ़द, बनी कुदह, बनी अ़ब्द क़ैस, बनी ह़नीफ़ा, बनी क़ह़तान, बनी ह़ारिस, बनी मुहारिब, बनी हमदान, बनी ग़स्सान आदि सभी समूहों ने खुद से आकर अपनी खुशी से इस्लाम कुबूल कर लिया। यहाँ तक कि दसवीं हिज्री तक एक लाख से अधिक लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

यह है वास्तव में इस्लाम धर्म की तलवार, सद्व्यवहार और अच्छे आचरण, जिससे इस्लाम विश्व व्यापी रूप में फैलता गया न कि रक्तपात से, यहां प्रश्न उठ

सकता है कि फिर इतनी लड़ाइयां क्यों हुई? निःसन्देह, आपने प्रत्येक लड़ाई केवल शान्तिप्रिय और निर्दोष लोगों को हिंसा और अत्याचार से बचाने के लिए की। जैसा कि आप (सल्ल०) के आदेशों से स्पष्ट होता है कि अपनी सेना को रणक्षेत्र में जाते समय यह आदेश देते-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) द्वारा दिये गये सेना को उपदेश

अल्लाह से डरो, अपनी इच्छाओं का दमन करो, अल्लाह का नाम लेकर जाओ, और उसी की आज्ञानुसार जाओ, उसी अल्लाह से सहायता मांगो, और ईश्वरीय सेना बन कर युद्ध करो, किसी प्रकार का धोखा न दो, विरोधी के माल की चोरी न करो, मृतक की लाश को नष्ट न करो, बूढ़ों बच्चों और स्त्रियों पर हाथ न उठाओ, न उन पर जो युद्ध में सम्मिलित न हों, वृक्षों को अनावश्यक न काटो, पूजा स्थलों को न गिराओ। तुम्हारे सरदार जिस स्थान पर तुम्हें नियुक्त कर दें वहां स्थिर रहो, जो शरण माँगे उसे शरण दो, आक्रमण करते हुए अल्लाह को याद रखो, बिना ज़रूरत मवेशियों को न मारो न उन्हें ज़ख़्मी करो, आग न लगाओ, खुजूर या दूसरे फलदार वृक्षों को न काटो, फ़सलों को हानि न पहुंचाओ न उन्हें जलाओ।

मानवता पूर्ण नियम

इससे पता चलता है कि जब इस्लाम में युद्ध के नियम इतने मानवता पूर्ण न्याय जनक और शांति दायक हैं तो उसके साधारण नियम कितने शान्तिपूर्ण होंगे! इस प्रकार आपका संपूर्ण जीवन उदारता, समता, सत्य और न्याय एवं पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार से भरा हुआ है, आपने कभी दास, बालक व पशु तक को नहीं मारा न ही किसी को अपशब्द कहा, यहाँ तक कि युद्ध के बन्दियों का भी सम्मान करते, अन्य जातियों के सरदारों तथा अन्य धर्मों के विद्यानों, प्रतिष्ठित जनों से सम्मान पूर्वक मिलते, जहाँ अपने प्रिय अनुयाइयों के लिए दिन-रात अल्लाह से प्रार्थना करते वही विरोधियों और शत्रुओं के लिए भी प्रार्थना करते। आप का आदेश था, "सृष्टि के प्राणियों पर दया करो"।

इस प्रकार हम महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के कुछ उपदेशों को आपके सम्मुख रखते हैं जो आप (सल्ल०) के दयालुता और आचरण का स्पष्ट नमूना हैं कि शुद्ध बुद्धि इसके बाद निर्णय ले सकती है कि क्या वह लोहे की तलवार थी? नहीं, वह मुह़म्मद (सल्ल०) की अमूल्य सच्चरित्रता, क्षमा भाव, शुद्ध आचार विचार उनके महान गुण और क़ियामत तक न मिटने वाली आदर्श शिक्षाओं की चमकती हुई तलवार थी, जिसने असत्य और अत्याचार की गर्दन उड़ा दी और स्वस्थ समाज की स्थापना की।

अन्तिम ह़ज और उसका ख़ुत्बः

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के इस अन्तिम ह़ज को "ह़ज्जतुल् विदा" कहते हैं, जिसमें एक लाख से भी अधिक सह़ाबा (सहचर) साथ थे और आप (सल्ल०) तमाम सह़ाबा के साथ 25 ज़ीक़अ़दह, दस हिज्री, सोमवार के दिन, ह़ज के लिए मदीना से मक्का की ओर चले और 'जुल्हुलैफ़ा' नामक स्थान पर सबने एह़राम बांधा फिर चार ज़िलह़िज्जा को मक्का में प्रवेश के बाद कअ़बे का तवाफ़ किया जहाँ ह़ज का पूरा तरीक़ा बताने के बाद 9 तारीख़ को अरफ़ात नामी मैदान में पहुंचे और एक भाषण दिया जो आप (सल्ल०) का अन्तिम भाषण था।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का अन्तिम अन्तर्राष्ट्रीय भाषण

आप (सल्ल०) ने लगभग सवा लाख लोगों के सामने जो अन्तिम भाषण दिया वह इस प्रकार है।

1- "लोगों! मैं ख़याल करता हूँ कि हम और तुम फिर कभी इस जगह इकट्ठे नहीं होंगे"।

2- लोगों! तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल, तुम्हारी इ़ज़्ज़तें एक दूसरे पर ऐसी ही ह़राम हैं जैसा कि आज के दिन में इस शहर में इस महीने में (ख़ून बहाना) ह़राम है। लोगों! तुम्हें अतिशीघ्र अल्लाह के सामने उपस्थित होना है और वह तुमसे तुम्हारे आ़माल के सम्बन्ध में सवाल करेगा। ख़बरदार मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें काटने लगो।

3- लोगों जाहिलियत की हर बात को मैं अपने पैरों की नीचे कुचलता हूँ। जाहिलियत में किये गये क़त्ल के तमाम झगड़े ख़त्म करता हूँ। पहला ख़ून जो मेरे ख़ानदान (परिवार) का है अर्थात इब्ने रबीआ़ बिन ह़ारिस का ख़ून माफ़ करता हूँ जिसने 'बनी साद' में परवरिश पाई और 'हुज़ैल' ने उसे मार डाला था।

4- जाहिलियत के ज़माने का सूद मिटा दिया गया सबसे पहले मैं अपने परिवार अ़ब्दुल मुत्तलिब के पुत्र अ़ब्बास का सूद छोड़ता हूँ।

5- लोगों अपनी पत्नियों के सम्बन्ध में अल्लाह से डरते रहो, तुमने उनको अल्लाह के नाम की ज़िम्मेदारी (अमानत) के तौर पर पत्नी बनाया है और ख़ुदा के कलाम से तुमने उनका जिस्म (शरीर) अपने लिए ह़लाल बनाया है। तुम्हारा ह़क़ औ़रतों पर उतना है कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी दूसरे को न आने दें। यदि वह ऐसा करें तो तुम उनको ऐसी मार मारो जिससे चिन्ह न पड़े और उनका ह़क़ तुम पर यह है कि तुम उनको अच्छी तरह़ खिलाओ और अच्छी तरह़ पहनाओं।

6- लोगों मैं तुम्हारे बीच वह चीज़ छोड़ कर जाता हूँ कि अगर तुम उसे मज़बूत पकड़ लोगे तो कभी पथभ्रष्ट न होगे, वह 'क़ुर्आन' अल्लाह की किताब है।

7- लोगों न तो मेरे बाद कोई सन्देष्टा होगा और न कोई नई उम्मत पैदा होगी ख़ूब सुन लो, अपने रब (पालनकर्ता) की इ़बादत करो और पाँचों नमाज़ें अदा करो, साल भर में एक महीना रमज़ान के रोज़े रखो, मालों की ज़कात ख़ुशी से दिया करो, बैतुल्लाह का ह़ज करो और अपने अमीर (अगुवा) का अनुसरण करो जिसका बदला यह है कि तुम अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

8- लोगों! क़ियामत के दिन तुमसे मेरे बारे में पूछा जाएगा तो तुम क्या जवाब दोगे सबने उत्तर दिया हम इसकी गवाही देंते हैं कि आप ने अल्लाह का सन्देश हम तक पहुँचा दिया। आप ने रिसालत व नुबूव्वत का ह़क़ अदा कर दिया, आपने हमको खोटे खरे की पहचान बता दी (उस वक़्त) फिर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) अपनी शहादत की उंगली आसमान की ओर उठाते और फिर लोगों की तरफ़ झुकाते और फ़रमाते थे, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना। देखो जो लोग मौजूद हैं वह उन

लोगों को जो मौजूद नहीं हैं उन तक यह पैग़ाम पहुँचाते रहें। मुम्किन है कि बाज़ सुनने वालों से वह लोग इस बात को याद रखने और ह़िफ़ाज़त (सुरक्षा) करने वाले हों जिन तक पैग़ाम पहुँचाया जाए।)

यह प्रश्नोत्तर हो ही रहा था कि अल्लाह की ओर से वह्य आई।

"आज मैंने तुम्हारे धर्म को सम्पूर्ण कर दिया तुम पर अपनी नेअ़मतों की पूर्ति कर दी तथा इस्लाम को तुम्हारे धर्म के लिए अपनी प्रसन्नता का आधार बना लिया"।

इस अन्तिम ईश्वरीय वाणी पर, पवित्र क़ुर्आन जो 23 वर्ष से समय समय पर अवश्यकतानुसार उतर रहा था पूर्ण हो गया।

इस प्रकार संसार का सबसे अधिक धर्म और आचरण भ्रष्ट तथा पतन ग्रस्त देश, अ़रब, संसार के लिए धर्म और मानवता का आदर्श बन गया। इस ऐतिहासिक चमत्कार में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने पापियों का नाश न करके पापियों के पाप का नाश किया अर्थात-

"दुराचारी से घृणा न करो, बल्कि उसके दुराचार से घृणा करो" कहावत को ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने साकार कर दिखाया, सबसे अधिक आश्चर्य का विषय तो यह है कि ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की मक्का विजय में एक भी प्राण की क्षति नहीं हुई। ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) और उनके अनुयाइयों ने अपने शत्रुओं के कर्मो का बदला लिए बिना छोड़ दिया जिसे देख कर पूरे मक्का निवासी इस्लाम की गोद में आ गये।

आप (सल्ल०) की बीमारी और अन्तिम समय

28 सफ़र दिन बुधवार 11 हिजरी से आप (सल्ल०) की बीमारी शुरु हुई यहाँ तक कि आप (सल्ल०) मस्जिद तक जाने से असमर्थ हो गये तो आप (सल्ल०) ने ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया।

आप (सल्ल०) के अन्तिम शब्द

ह़ज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि इस मर्ज़ के दौरान कभी-कभी आप (सल्ल०) चेहरा मुबारक से चादर उठा कर फ़रमाते कि 'यहूद व नसारा तबाह हों, उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया' आप (सल्ल०) ने

मुसलमानों को इससे ख़बरदार किया, और ज़्यादातर वसीयत यह थी 'अस्सलातु व मामलकत ऐमानुकुम' देखो नमाज़ का ख़याल रखना और अपने मातहतों और गुलामों का, यह आप (सल्ल०) बराबर फ़रमाते रहे। इसी तरह हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि आप (सल्ल०) के सामने पानी का कटोरा था और आप (सल्ल०) अपना हाथ पानी के अन्दर डालते और चेहरा पर फेर लेते फिर उसके बाद फ़रमाते 'लाइलाहइल्लल्लाह, इन्नल.....' फिर आप (सल्ल०) ने बाईं उंगली ऊपर उठाई और फ़रमाने लगे 'फ़ी रफ़ीक़िल आ़ला.....फ़ी.....रफ़ीक़िलआ़ला।' (सबसे घनिष्ट व सर्वोच्च मित्र के पास) यही कहते-कहते आप के प्राण निकल गये।

"अल्लाहुम्म सल्लिअ़ला मुहम्मदिवं व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमासल्लैता अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम्मजीद"।''

आप (सल्ल०) के निधन के बाद

आप (सल्ल०) के निधन की ख़बर सहाबा में पहुंचते ही सब के होश उड़ गये और हज़रत फ़ारूक़ आज़म जैसे सहाबी ग़म से आप (सल्ल०) की मौत का इन्कार करने लगे तो सिद्दीक़ अकबर ने एक खुत्बः दिया और सब्र की तलक़ीन के बाद फ़रमाया, जो शख़्स मुहम्मद (सल्ल०) की इबादत करता था तो वह जान ले कि आप (सल्ल०) का निधन हो चुका और जो अल्लाह की इबादत करता था तो वह समझ ले कि वह आज भी ज़िन्दा है यह सुन कर सहाबा को कुछ होश आया फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को ख़लीफ़ा बनाया गया इसके बाद इतना समय नहीं था कि उस दिन तद्फ़ीन होती, चूंकि आप (सल्ल०) अपने ही हुजरे में वफ़ात पाये थे इस लिए वहीं लोग थोड-थोड़े जाते और नमाज़े जनाजः अपनी-अपनी पढ़ते, इस प्रकार आप (सल्ल०) की नमाज़े जनाज़ः की किसी ने इमामत नहीं की इसीलिए दफ़न में भी देर लग गई और मंगल का दिन गुज़र कर रात में फ़ुरसतमिली।

आप (सल्ल०) की क़ब्र मुबारक (रौज़-ए-अत़हर)

जिस हुजरा में आप (सल्ल०) की वफ़ात हुई थी, क़ब्र खोदी गयी और आप

(सल्ल०) के जिस्ममुबारक को हज़रत अ़ली (रज़ि०), फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास (रज़ि०) व उसमान बिन ज़ैद (रज़ि०) और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) ने क़ब्र में उतारा और आप (सल्ल०) की क़ब्र शरीफ़ एक बालिश्त ऊँची रखी गयी।

"बेहिसाब दुरूद व सलाम हो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर"।

भाग–2

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के आचरण और गुणों का वर्णन

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का आचरण और स्वभाव

हिन्द बिन अबी ह़ाला कहते हैं कि–

"अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हर समय आख़िरत की ही सोच में रहते। आप (सल्ल०) को यह सोच और चिन्ता बराबर बनी रहती, प्रायः ख़ामोश रहते, देर-देर तक खामोश रहते, अनावश्यक न बोलते, बोलते तो प्रत्येक शब्द का साफ़ उच्चारण करते (अर्थात घमंडियों की तरह़ अधकटे शब्द का प्रयोग न करते) न अधिक बोलते न बहुत कम"।

आप के स्वभाव और बातचीत में नर्मी थी। आ़दत में कठोरपन और बेमुरव्वती न थी। न किसी का अपमान करते, और न अपने लिए अपमान पसंद करते। नेअ़मत (वरदान) की बड़ी क़दर करते और उसको बहुत ज़्यादा जानते चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो और उसकी बुराई न करते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न प्रशंसा। दुनिया और दुनिया से सम्बन्धित जो भी चीज़ होती उस पर कभी गुस्सा न करते, लेकिन जब ख़ुदा के किसी ह़क़ को कुचला जाता तो उस समय आप (सल्ल०) के सामने कोई चीज़ ठहर न पाती, यहां तक कि आप (सल्ल०) उसका बदला ले लेते।

आप (सल्ल०) को अपने लिए स्वयं क्रोध न आता, न अपने लिए बदला लेते, जब संकेत करते तो पूरे हाथ के साथ इशारा करते, जब किसी बात पर आश्चर्य करते तो उसको पलट देते। बात करते समय दाएं हाथ की हथेली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते, गुस्सा और नागवारी (अप्रिय) की बात होती तो मुख उधर से फेर लेते, प्रसन्न होते तो नज़रें झुका लेते, आप (सल्ल०) का हंसना अधिकतर मुस्कुराना था जिससे केवल आप (सल्ल०) के दांत जो बरसात के ओलों की तरह पाक, साफ़ ज़ाहिर होते। **(शमायले तिर्मिज़ी)**

ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) जो बड़े ज्ञानी और जानकार थे और वह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के निकटतम लोगों में से थे और ज्ञान व साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते थे, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के गुणों का बयान इस प्रकार करते हैं:-

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के गुणों का वर्णन

आप (सल्ल०) अपशब्द, बेह़याई व बेशर्मी से दूर थे, बाजार में कभी आप ज़ोर से न बोलते, बुराई का बदला बुराई से न देते, बल्कि क्षमा कर देते, आप (सल्ल०) ने किसी पर कभी हाथ नहीं उठाया, हां अल्लाह की राह में जिहाद को छोड़कर। किसी सेवक अथवा औ़रत पर आप (सल्ल०) ने कभी हाथ न उठाया। मैंने आप को किसी जुल्म व ज़्यादती का बदला लेते हुए भी नहीं देखा, जब तक कि अल्लाह के आदेशों का उल्लघन न हो, और उस पर आँच न आये।

हाँ, यदि अल्लाह के किसी आदेश को कुचला जाता और उसकी गरिमा पर आंच आती तो आप (सल्ल०) उसके लिए सब से अधिक क्रोधित होते। दो चीज़ें सामने होती तो हमेशा आसान चीज़ का आप चयन करते। जब घर पर होते तो आप (सल्ल०) साधारण इन्सानों की तरह़ नज़र आते, अपने कपड़ों को साफ़ करते, बकरी का दूध दूहते और अपने सारे कार्य स्वयं करते।

आप (सल्ल०) अपनी जुबान सुरक्षित रखते और केवल उसी चीज़ के लिए खोलते जिससे आप को सरोकार होता। लोगों को सांत्वना देते और घृणा न फैलने देते, किसी क़ौम या बिरादरी का प्रतिष्ठित व्यक्ति आता तो उसको सम्मान देते, लोगों के बारे में नपी तुली बात कहते और अपनी प्रसन्नता व आचरण से उनको वंचित न रखते, अपने साथियों के ह़ालात की बराबर ख़बर रखते। लोगों से उनके मामले के बारे में पूछा करते।

अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे सशक्त बनाते। बुरी बात की बुराई करते और उसको कमज़ोर करते। आप (सल्ल०) का मामला मध्यम मार्गी और समता का था, इसमें उतार चढ़ाव न होता था। आप (सल्ल०) किसी बात से ग़फ़लत न करते, इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लेगें और उकता जाएँ। हर ह़ाल और हर मौक़े के लिए आप (सल्ल०) के पास उस परिस्थिति के अनुरूप सामान था। ह़क़ (सत्य) के मामले में न कमी करते न ह़द

से आगे बढ़ते आप के सान्निध्य में जो लोग रहते थे वह सर्वोत्कृष्ट होते थे।

आप (सल्ल०) की निगाह में सर्वोत्कृष्ट और अधिक प्रतिष्ठित वह था जो ग़म ख़्वारी व सह़दयता और परोपकार में सबसे आगे हो। अल्लाह का नाम लेकर खड़े होते और अल्लाह का नाम लेकर बैठते जब कहीं पदार्पण करते जहाँ तक लोग बैठे होते उसी जगह आसन ग्रहण करते, और इसका हुक्म भी देते। उपस्थित जनों में प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान देते। आप की संगत में बैठने वाला हर व्यक्ति यह समझता था कि उससे बढ़कर आप की निगाह में कोई और नहीं है।

यदि कोई व्यक्ति आप (सल्ल०) को किसी ग़रज़ से बिठा लेता या किसी ज़रूरत की आप (सल्ल०) से बात करता, तो बड़े धैर्य के साथ उसकी पूरी बातें सुनते, यहां तक कि वह स्वयं ही अपनी बात पूरी करके प्रस्थान करता। यदि कोई व्यक्ति आप से कुछ सवाल करता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे वापस न करते या कम से कम उसे नर्मी से जवाब देते।

आप (सल्ल०) का सदाचरण तमाम लोगों के लिए आ़म था, और आप (सल्ल) उनके ह़क़ में बाप के समान थे तमाम लोग ह़क़ के मामले में आप (सल्ल०) की नज़र में बराबर थे। आप (सल्ल०) का सत्संग ज्ञान, भक्ति, ह़या और शर्म और धैर्य व अमानतदारी का सत्संग था।

आप की मजलिस में न कोई ज़ोर से बोलता था, न किसी के अवगुण बयान किये जाते थे, न ही किसी की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाया जाता था और न कमज़ोरियों का प्रचार किया जाता था। सब एक दूसरे के बराबर थे और केवल खुदा के डर के आधार पर उनको एक दूसरे पर प्राथ्मिकता प्राप्त होती थी। इसमें लोग बड़ों का आदर और छोटों के साथ दया एवं प्रेम का मामला करते थे। ज़रूरत मन्द को अपने ऊपर प्राथमिक्ता देते थे। यात्रियों और नवआगन्तुकों की सुरक्षा करते और उनकी सुख- सुविधा का ध्यान रखते।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का स्वभाव

आप (सल्ल०) जब चलते तो ऐसा मालूम होता कि मानों नीचे उतर रहे हैं। जब किसी की ओर ध्यान देते तो पूरे शरीर से फिर कर ध्यान देते। आप (सल्ल०) की निगाह नीचे रहती थी। चलने में आप (सल्ल०) सहाबा को अपने आगे कर

देते थे। और आप (सल्ल०) पीछे रहते थे, जिससे मिलते सलाम करने में पहल करते। आप (सल्ल०) के बाल कन्धों तक थे, और उन पट्टों से, जो कान की लौ तक हुआ करते हैं, या ज़्यादा और मोढ़ों तक होते हैं, उनसे कम थे (अर्थात न अधिक लम्बे न बहुत छोटे बल्कि औसत), आपने माँग भी निकाली है। सर में प्रायः तेल लगाते थे, और दाढ़ी में कंघीं करते थे। जब आप (सल्ल०) वुज़ू करते, या कंघी करते या मोज़ा पहनते, तो दाहिने से शुरू करना पसंद करते। आप (सल्ल०) के पास एक सुर्मेदानी थी जिससे हर रात को तीन बार एक आंख में और तीन बार दूसरी आंख में सुर्मा लगाया करते।

आप (सल्ल०) सदैव प्रसन्नचित रहते। आप बड़े विनम्र थे। न कठोर प्रकृति के थे और न सख़्त बात कहने के आ़दी। न चिल्लाकर बोलने वाले, न घमंडियों की तरह़ बात करने वाले, न किसी को ऐब लगाने वाले, न तंग दिल और क़ंजूस। जो बात आप को पसंद न होती, उसके प्रति उदासीन रहते, और स्पष्टतः उससे निराश भी न होते और उसका जवाब भी न देते (अर्थात उसकी अनदेखी कर देते)। तीन बातों से आप (सल्ल०) ने अपने को बिल्कुल बचा रखा था, एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे अनावश्यक और बेमक़सद बात।

लोगों को भी तीन बातों से आप (सल्ल०) ने बचा रखा था न किसी की बुराई करते थे, न उसको ऐब लगाते थे (दोषारोपण), न उसकी कमज़ोरियों और गोपनीय बातों के पीछे पड़ते थे। केवल वह बात करते थे जिस पर सवाब (पुण्य) की उम्मीद होती थी। जब आप (सल्ल०) बात करते तो उपस्थित जन अदब से इस प्रकार सर झुका लेते थे कि मालूम होता था कि उनके सरों पर चिड़ियां बैठी हैं। (अर्थात चुपचाप बिना हिले डुले) जब आप (सल्ल०) ख़ामोश होते तब यह लोग बातें करते। आप (सल्ल.) के सामने कभी विवाद न करते।

यदि आप की मजलिस में कोई व्यक्ति बात करता तो शेष सभी लोग शान्त होकर सुनते, यहां तक कि वह अपनी बात समाप्त कर लेता। आप के सामने हर व्यक्ति को पूरे इत्मीनान से अपनी बात कहने का अवसर मिलता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप (सल्ल०) भी हंसते, जिस पर सब आश्चर्य व्यक्त

करते। आप (सल्ल०) भी आश्चर्य व्यक्त करते।

यात्री और परदेसी के हर प्रकार के सवाल को धैर्य से सुनते, आप (सल्ल०) कहते, ''तुम किसी ज़रूरत मन्द को पाओ तो उसकी मदद करो।'' आप (सल्ल०) से कोई बात कह रहा होता, तो न बोलते, और न उसकी बात काटते। हाँ, यदि ह़द से बढ़ने लगता तो उस को मना करते, या मजलिस से उठकर चले जाते।

आप (सल्ल०) सर्वाधिक उदार, सह्दय, सत्यवादी, नर्म मिजाज़ और व्यवहार में अत्यन्त कृपालु थे। जो पहली बार आप (सल्ल०) को देखता उस पर आप (सल्ल०) का प्रभाव बैठ जाता, आप (सल्ल०) के सत्संग में रहता और जान पहचान प्राप्त होती तो आप (सल्ल०) पर मुग्ध (क़ुर्बान) हो जाता। आप (सल्ल०) की चर्चा करने वाला कहता, ''न आप (सल्ल०) से पहले आप (सल्ल०) जैसा कोई व्यक्ति देखा न आप (सल्ल०) के बाद।''

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तमाम लोगों में सबसे अधिक उदार नर्म तबीअ़त और ख़ानदानी दृष्टि से सब से अधिक आदरणीय थे। अपने सत्संगियों से अलग-थलग न रहते थे उनमें पूरा मेल जोल रखते थे, उनसे बातें करते, उनके बच्चों के साथ खुशमिज़ाजी और विनोदप्रियता का आचरण करते, उनके बच्चों को अपनी गोद में बिठाते। ग़ुलाम और आज़ाद, दीन दुखिया सब का निमन्त्रण स्वीकार करते, बीमारों को देखने जाते, चाहे वह बस्ती के छोर पर ही क्यों न हो, क्षमाप्रार्थी को क्षमा करते।

आप (सल्ल०) को सह़ाबा की मजलिस में कभी पैर फैलाए हुए नहीं देखा गया ताकि किसी को तंगी न हो। सह़ाबा एक दूसरे से कविता सुनते सुनाते और अज्ञानता की किसी बात का उल्लेख करते तो आप (सल्ल०) ख़ामोश रहते या मुस्कुरा देते। आप (सल्ल०) अत्यन्त नर्म दिल मुह़ब्बत करने वाले और कृपालु थे। अपनी बेटी फ़तिमा से कहते, ''मेरे दोनों बेटों (ह़सन व हुसैन) को बुलाओ।'' वह दौड़ते हुए आते तो आप (सल्ल०) दोनों को प्यार करते और उनको अपने सीने से लगाते।

आपके एक नाती को आप (सल्ल०) की गोद में इस ह़ाल में दिया गया कि उसकी सांस उखड़ चुकी थी, तो आप (सल्ल०) की आंखों से आंसू जारी हो गये।

ह़ज़रत स़ाद ने कहा, या रसूलल्लाह यह क्या है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, "यह दया है, जो अल्लाह अपने भक्तों में जिसके दिल में चाहता है डाल देता है। निःसन्देह अल्लाह अपने दयावान भक्तों ही पर दया करता है"।

बद्र के युद्ध में बन्धकों के साथ ह़ज़रत अ़ब्बास को भी बन्धक बनाया गया, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनकी कराह सुनी तो आप (सल्ल०) को नींद नहीं आयी। जब अंसार को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने अ़ब्बास के बन्धन खोल दिये और इच्छा व्यक्त की कि उनको छोड़ दिया जाये परन्तु आप (सल्ल०) ने इस बात को स्वीकार नहीं किया।

आप (सल्ल०) की दयालुता

आप (सल्ल०) बड़े ही शीलवान (मेह़रबान) थे। लोगों के स्वभाव के उक्ताहट व मन के ठहराव का बराबर ध्यान रखते, इसीलिए प्रवचन व उपदेश समयान्तर के साथ करते, कि कहीं उक्ताहट न पैदा होने लगे। अगर किसी बच्चे का रोना सुन लेते तो नमाज़ संक्षिप्त कर देते और कहते, "मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूँ तो इस विचार से नमाज़ संक्षिप्त कर देता हूँ कि उसकी मां को कष्ट न हो"।

आप (सल्ल०) कहते थे, तुममें कोई व्यक्ति मुझसे किसी दूसरे की शिकायत न करे इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम्हारे सामने इस ह़ाल में आऊँ कि मेरा दिल बिल्कुल साफ़ हो। आप (सल्ल०) कहते, जिसने तर्के में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का है यदि उसके ऊपर कुछ क़र्ज आदि बाक़ी है तो वह हमारे ज़िम्मे।

आप (सल्ल०) घर में आ़म लोगों की तरह़ रहते, ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा कहती हैं कि आप (सल्ल०) अपने कपड़ों को भी साफ़ कर लेते, अपना काम स्वयं करते, यहाँ तक कि अपने कपड़ों में पेवन्द भी लगा लेते, जूता भी गांठ लेते। ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से पूछा गया कि आप (सल्ल०) अपने घर में किस तरह़ रहते थे? उन्होंने उत्तर दिया, आप (सल्ल०) घर के काम-काज में रहते थे जब नमाज़ का समय आता तो नमाज़ के लिए बाहर चले जाते।

ह़ज़रत अनस (रज़ि०) बयान करते हैं कि मैंने किसी व्यक्ति को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से अधिक अपने परिवार जनों के प्रति कृपालु व दयालु नहीं देखा।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सादगी

ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने किसी खाने में कभी कोई ऐ़ब नहीं निकाला। इच्छा हुई तो खा लिया, नापसंद हुआ तो छोड़ दिया। आगे कहते हैं कि मैंने आप (सल्ल०) की दस साल सेवा की, आप (सल्ल०) ने कभी ''हूं'' भी नहीं किया। और न यह कहा कि अमुक कार्य तुमने क्यों किया और अमुक कार्य तुमने क्यों न किया। आप (सल्ल०) के साथी आप (सल्ल०) के आदर व सम्मान के लिए खड़े नहीं होते थे इसलिए कि आप (सल्ल०) इसको पसंद नहीं करते थे। आप (सल्ल०) कहते, मेरी इस प्रकार आगे बढ़-चढ़ कर प्रशंसा न करो, जिस प्रकार ईसाइयों ने ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) के साथ किया था, मैं तो एक भक्त हूँ। तुम मुझे अल्लाह का भक्त और उसका रसूल कहो।

अ़दी बिन ह़ातिम कहते हैं कि मैं जब आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप (सल्ल०) ने मुझको अपने घर बुलाया। मैं गया तो आप (सल्ल०) की बाँदी ने तकिया टेक लगाने के लिए पेश किया। आप (सल्ल०) ने तकिये को मेरे और अपने बीच रख दिया और स्वयं ज़मीन पर बैठ गये। अ़दी कहते हैं कि इससे मैं समझ गया कि वह बादशाह नहीं हैं एक व्यक्ति ने आपको देखा तो काँप उठा। आप (सल्ल०) ने उससे कहा कि "घबराओ नहीं, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ मै तो क़ुरैश की एक महिला का बेटा हूँ"।

आप (सल्ल०) घर में झाड़ू दे लेते। ऊँट बाँधते, उनको चारा देते और बाज़ार से सौदा सुलूफ़ ले आया करते थे।

आप (सल्ल०) को किसी व्यक्ति के बारे में ऐसी बात मालूम होती जो आप (सल्ल०) को नापसंद होती तो यह न कहते कि अमुक व्यक्ति ऐसा क्यों करता हैं। बल्कि यूं कहते कि लोगों को क्या हो गया है कि ऐसे कर्म करते हैं या ऐसी बात ज़बान से निकालते हैं। इस प्रकार नाम लिए बिना उस कर्म से रोकते।

जानवरों पर दया का ह़ुक्म

आप (सल्ल०) कमज़ोर व बेज़बान जानवरों और चौपायों के प्रति सहानुभूति

रखते और उनके साथ नर्मी का हुक्म फ़रमाते। आप (सल्ल०) कहते, अल्लाह ने हर चीज़ के साथ अच्छा मामला करने और नर्म बर्ताव करने का हुक्म दिया है, इसलिए ज़ब्ह करो तो अच्छी तरह करो, तुममें से जो ज़ब्ह करना चाहे उसे चाहिए कि वह अपनी छुरी पहले तेज़ कर ले और जिस जानवर को ज़ब्ह करना हो उसे आराम दे। आगे कहा, इन बेज़बान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो, इन पर सवारी करो तो अच्छी तरह से, इनको खाओ तो इस ह़ालत में कि वह अच्छी ह़ालत में हों।

सेवकों के साथ दया

आप (सल्ल०) सेवक, नौकर और मुज़दूर व गुलाम के साथ अच्छे बर्ताव की शिक्षा देते और कहते, जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ और अल्लाह की मख़लूक़ को कष्ट न पहुँचाओ। जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है तुम्हारे भाई, तुम्हारे सेवक और मददगार हैं। जिसका भाई उसके मातह़त हो उसको चाहिए कि जो स्वयं खाता है, वही उसको खिलाये जो स्वयं पहनता है वही उसको पहनाए, उनके सुपुर्द ऐसा काम न करो जो उनकी ताक़त से बाहर हो। यदि ऐसा करना ही पड़े तो फिर उनका हाथ बटाओ।

एक दिन एक ग्रामीण अनपढ़ आप (सल्ल०) के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार क्षमा करूँ ? आप (सल्ल०) ने कहा, सत्तर बार और फ़रमाया, "मज़दूर को उसकी मज़दूरी, पसीना सूखने से पहले दे दो"।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का पहनावा

कपड़ों में कुर्ता सबसे अधिक पसंद था। जब कोई नया कपड़ा पहनते तो खुशी से उसका नाम लेते और दुआ़ पढ़ते और फ़रमाते कि सफ़ेद कपड़े पहना करो, और सफ़ेद ही कपड़ों में मुर्दों को दफ़न किया करो, यह बेहतरीन कपड़ों में से है। एक बार नज्जाशी ने आप (सल्ल०) की सेवा में दो काले सादे मोज़े भेजे आप (सल्ल०) ने उनको पहना और वुज़ू के बाद उन पर मसह़ भी किया और ऐसे जूतों में नमाज़ पढ़ी जिनमें दूसरा चमड़ा सिला हुआ था और यह कहते कि एक जूता पहन कर कोई न चले, या दोनों पहन कर चले या दोनों निकाल कर।

बाएं हाथ से खाने या केवल एक जूता पहन कर चलने से आप (सल्ल०) मना करते और कहते, जूता पहनो तो पहले दाहिना पैर डालो और उतारो तो पहले बायां पैर निकालो। आप (सल्ल०) ने दाहिने हाथ में अंगूठी पहनी है। और एक अंगूठी बनवाई जिसमें पहली पंक्ति में "मुह़म्मद" दूसरी में "रसूल" और तीसरी में "अल्लाह" लिखा था। जब शौच को जाते तो अंगूठी उतार देते।

मक्के की विजय के अवसर पर आप (सल्ल०) ने जब मक्के में प्रवेश किया तो सर पर काली पगड़ी थी। पगड़ी जब पहनते तो उसका सिरा दोनों मोढ़ों के बीच डाल देते। आप (सल्ल०) की लुंगी की ऊँचाई आधी पिंडलियों तक होती।

आप (सल्ल०) का भोजन

आप (सल्ल०) टेक लगाकर नहीं खाते थे। आप (सल्ल०) को कद्दू , लौकी पसन्द थी और ह़ल्वा और शहद भी, गोश्त आप (सल्ल०) को कभी कभी मुयस्सर होता। आप (सल्ल०) कहते, जो व्यक्ति बिना खुदा का नाम लिये खाना खाता है उसके साथ में शैतान सम्मिलित होता है। और कहते, अल्लाह इससे खुश होता है कि बन्दा कुछ खाये और कुछ पिये तो इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे। ठंडा और मीठा पानी आप (सल्ल०) को सबसे अधिक पसंद था। आप (सल्ल०) फ़रमाते, खाने और पानी का बदल (विकल्प) दूध की तरह़ कोई दूसरी चीज़ नहीं। आप (सल्ल०) ज़मज़म खड़े होकर और पानी तीन सांस में बैठकर पीते।

आप (सल्ल०) की पसन्दीदा चीज़ (खुशबू)

आप (सल्ल०) के पास एक इत्रदान था जिससे इत्र लगाया करते थे। कोई इत्र भेंट करता तो उसे स्वीकार करते। आप (सल्ल०) कहते, "तीन चीज़ें रद्द नहीं करना चाहिए तकिया, खुशबू और दूध"। फ़रमाया, मर्दाना खुशबू वह है जिसकी खुशबू तेज़ हो और रंग हल्का और ज़नाना खुशबू वह है जिसका रंग गहरा और खुशबू हल्की।

कभी-कभी आप (सल्ल०) बड़े सटीक शेअ़र भी पढ़ते। आपने कविता पाठ की इजाज़त भी दी है और उस पर पुरस्कार भी दिया है और उसको पसंद भी किया है। आप (सल्ल०) ने कअ़ब बिन मालिक का क़सीदा (स्तुति) सुना और उनको चादर इनआ़म में दी।

आप (सल्ल०) के आराम करने का तरीक़ा

आप (सल्ल०) जब आराम करते तो दाहिना हाथ अपने दाएं गाल के नीचे रख लेते। आप (सल्ल०) का बिस्तर चमड़े का था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। (शमायले तिर्मिज़ी)

भाग-3

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के संक्षिप्त सुकथनों का वर्णन

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के उपदेश

(1) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया तुममें सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनके व्यवहार अच्छे हों। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(2) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जो इन्सानों पर दया नहीं करते अल्लाह उस पर दया नहीं करता। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(3) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया दया करने वालों पर, बड़ा दयावान, अल्लाह दया करेगा। ज़मीन पर रहने वाली मख़लूक (समस्त प्राणियों) पर तुम दया करो तो आसमान वाला तुम पर दया करेगा। **(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)**

(4) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह की समस्त सृष्टि एक कुटुम्ब के समान है अतः जो उसकी सृष्टि से अधिक से अधिक भलाई करता है वही अल्लाह का प्रिय बनता है। **(बैहक़ी)**

(5) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया जो व्यक्ति अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान (आस्था) रखता हो, उसे चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को कष्ट न दे। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(6) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, "एक व्यक्ति रास्ता चल रहा था कि उसे बड़ी तेज़ प्यास लगी इतने में उसे एक कुंआ मिला और उसने इसमें उतर कर पानी पिया फिर जब बाहर निकला तो देखा एक कुत्ता हांफ रहा है और प्यास की वजह से तरी को चाट रहा है, यह देख कर उस व्यक्ति ने कहा यह कुत्ता भी उतना ही ज़्यादा प्यासा मालूम होता है जितना मैं था। अतः वह फिर कुंए में उतरा और अपने जूते में पानी भरने के बाद मुंह से पकड़ कर ऊपर लाया और कुत्ते को पानी पिलाया, अल्लाह तआ़ला ने उसके इस कार्य को पसंद किया और उसकी मग़फ़िरत (क्षमा) कर दी।

आप (सल्ल०) के साथियों ने कहा या रसूलल्लाह! क्या हमें जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने में भी सवाब (पुण्य) मिलता है? ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया हर जानदार (के साथ अच्छा व्यवहार करने) पर सवाब मिलता है। **(बुख़ारी शरीफ़)**

(7) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, यदि कोई मुसलमान वृक्ष (पेड़) लगाता है और उस पेड़ से कोई इन्सान या जानवर खाता है तो पेड़ लगाने वाले के लिए वह सदकः हो जाता है। ह़ज़रत अबूशुरैह़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया। ख़ुदा की क़सम! उसका ईमान (ईश्वर विश्वास) हरगिज़ सम्पूर्ण नहीं है, ख़ुदा की क़सम उसका ईमान हरगिज़ सम्पूर्ण नहीं है, ख़ुदा की क़सम उसका ईमान हरगिज़ सम्पूर्ण नहीं है! जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। **(बुख़ारी शरीफ़)**

(8) अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक अन्सारी सह़ाबी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये, वहाँ एक ऊँट था जब उस ऊँट ने आप को देखा, तो ऐसा डकारा और ऐसी दर्द भरी आवाज़ उसने निकाली (जैसी बच्चे के जुदा हो जाने पर ऊंटनी की आवाज़ निकलती है) और उसकी आंखों से आंसू भी जारी हो गये। रसूलुल्लाह (सल्ल०) उसके पास गये और आप ने उस पर हाथ फेरा तो वह शान्त हो गया। फिर आपने पूछा यह ऊंट किसका है? इस का मालिका कौन है? एक अन्सारी नौजवान आये और उन्होंने कहा, ह़ज़रत यह ऊंट मेरा है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि इस बेचारे बेज़बान जानवर के बारे में तुम उस अल्लाह से डरते नहीं जिसने तुमको इसका मालिक बनाया है। इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसको भूखा रखते हो और ज़्यादा काम ले कर तुम इसको बहुत कष्ट पहुँचाते हो। **(अबू दाऊद शरीफ़)**

(9) अ़ब्दुर्रह़मान (रज़ि०) कहते हैं कि हमने अपने पिता से सुना कि एक सफ़र में मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ था आप (सल्ल०) क़ज़ा-ए-ह़ाजत (लेट्रीन) के लिए गये थे कि उसी समय हमारी नज़र एक छोटी सी सुर्ख़ (लाल) चिड़िया पर पड़ी, जिसके साथ छोटे-छोटे उसके दो बच्चे भी थे हमने उन बच्चों को पकड़ लिया, वह चिड़िया आई और हमारे सरों पर मंडलाने लगी, इतने में रसूलुल्लाह (सल्ल०) तशरीफ़ ले आये, आपने फरमाया, किसने इसके बच्चे पकड़ कर इसे सताया है? इस के बच्चे इस को वापस कर दो और आप (सल्ल०) ने चींटियों की एक बस्ती देखी हम ने वहां आग लगा दी थी आपने

फ़रमाया, किसने इन को आग से जलाया है? हमने अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह हमने ही यह आग लगाई है आपने फ़रमाया, आग के पैदा करने वाले ख़ुदा के सिवा किसी के लिए यह सज़ा देने का अधिकार नहीं है कि वह किसी जानदार को आग का अज़ाब दे। **(अबूदाऊद शरीफ़)**

(10) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक बेदर्द और बेरह़म औरत इसलिए जहन्नम में गिराई गई कि उसने एक बिल्ली को बांध कर भूखा मार डाला, न तो उसे ख़ुद कुछ खाने को दिया और न उसे छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े मकोड़ों से अपनी गिज़ा (खना) ह़ासिल कर लेती। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(11) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी अदा कर दिया करो। **(सुनन इब्ने माज़ा)**

(12) अनस बिन मालिक (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक बार एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया सह़ाबा (रज़ि०) उनकी ओर दौड़े परन्तु रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया, इसके पेशाब को मत रोको फिर आपने (सल्ल०) पानी का डोल मंगाया और पेशाब की जगह पर पानी बहा दिया। **(बुख़ारी शरीफ़)**

(13) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, कोई भी सामान बेचते या ख़रीदते समय धोखा देकर दाम न बढ़ाओ। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(14) ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने दीबा और रेशम रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुबारक हथेली से ज़्यादा नर्म नहीं छुआ और कभी कोई ख़ुशबू रसूलुल्लाह(सल्ल०) की ख़ुशबू से अधिक अच्छी नहीं सूंघी और मैंने आप की दस वर्ष सेवा की आपने कभी उफ़ भी नहीं कहा और न किसी काम के करने या न करने पर आपने कभी फ़रमाया कि ऐसा क्यों किया या क्यों न किया। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(15) ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जान बूझ कर या अन्जाने में कभी भी अशिष्ट बात न निकालते थे और फ़रमाते थे कि तुम में सबसे बेहतर वह है जिस का व्यवहार अच्छा हो। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(16) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) बन्दे की नेकियों

के तौलने के समय अच्छे व्यवहार से अधिक कोई वस्तु भारी न होगी और अल्लाह तआ़ला बकवास बकने वाले बदज़बान आदमी से घृणा करता है। **(तिर्मिज़ी)**

(17) ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह (सल्ल०) से पूछा गया कि किसके कारण लोग जन्नत में जाएंगे आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह के भय और एहतियात और सद् व्यवहार से। और पूछा गया दोज़ख़ में अधिकतर किस वजह से लोग जाएंगे फ़रमाया, हराम ख़ोरी और बदकारी की वजह से। **(बुख़ारी)**

(18) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया सम्पूर्ण ईमान उसका है जिसके व्यवहार अच्छे हों और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी पत्नियों से अच्छे व्यवहार से पेश आये। (तिर्मिज़ी)

(19) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मोमिन (मुसलमान) सद्व्यवहार के कारण लगातार रोज़े रखने वाले और आबिद (संयमी) का दर्जा प्राप्त कर लेता है। **(अबूदाऊद)**

(20) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मैं उस व्यक्ति के लिए जन्नत के सामने एक घर की ज़मानत लेता हूं जिसने ह़क़ पर होते हुए भी झगड़ा छोड़ दिया, और उस व्यक्ति के लिए जन्नत के अन्दर मैं एक घर की ज़मानत लेता हूं जिसने झूठ छोड़ दिया चाहे वह मज़ाक़ ही में बोलता था और उस व्यक्ति के लिए जन्नत की बुलन्दी में एक घर की ज़मानत लेता हूं जिसके आचरण अच्छे हों। **(अबूदाऊद)**

(21) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन मुझसे सबसे अधिक पसंदीदा सबसे अधिक क़रीब वह लोग होंगे जो अच्छे आचरण वाले हैं और मुझे सबसे अधिक नापसंद, और सबसे अधिक मुझसे दूर वह होंगे जो ज्यादा बातूनी, चर्ब ज़बान, और बनावटी व घमंण्डी लोग होंगे। **(तिर्मिज़ी)**

(22) ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि जिस चीज़ में नर्मी होती है वह उसको सुन्दर बनाती है और जिस चीज़ से निकल जाती है उसको बुरा कर देती है। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

(23) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, आसानी पैदा करो सख़्ती न करो, बशारत दो, नफ़रत न दिलाओ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

(24) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जो नर्मी से मह़रूम (वंचित) रहा वह हर भलाई से महरूम रहा। (मुस्लिम)

(25) ह़ज़रत आइशा (रज़ि०) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, न किसी औरत को न गुलाम को, अपितु इसके कि अल्लाह की राह में और आप (सल्ल०) को कभी किसी से तक्लीफ़ पहुँचती तो तकलीफ़ पहुँचाने वाले से बदला न लेते, परन्तु जब अल्लाह के आदेश को कोई तिरस्कार करता तो आप (सल्ल०) अल्लाह के लिए बदला लेते। (बुखारी)

(26) ह़ज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह (सल्ल) के साथ एक बार जा रहा था कि आप (सल्ल०) मोटे किनारे की नजरानी चादर ओढ़े हुए थे, एक देहाती आप (सल्ल०) से मिला और चादर पकड़कर आप (सल्ल०) को बड़े ज़ोर से खींचा, (मैं ने देखा कि आप (सल्ल०) के कांधे पर चादर के खींचने से निशान पड़ गये थे) और कहा, "ऐ मुह़म्मद मुझे उस माल से दीजिए जो आप (सल्ल०) को अल्लाह ने दिया है, आप ने उस की ओर देखा और मुस्कुराए फिर उसको देने का आदेश दिया"।
(बुख़ारी व मुस्लिम)

(27) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, पहलवान वह नहीं जो किसी को पिछाड़ दे पहलवान वह है जो गुस्सा के समय अपने आप को क़ाबू में रखे।
(बुख़ारी व मुस्लिम)

(28) ह़ज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िद्मत में ह़ाज़िर हुआ और उसने कहा! मेरे रिश्तेदार हैं, मैं उनसे रिश्ता जोड़ता हूं, वह काटते हैं मैं उनके साथ भलाई करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं अच्छे आचरण पेश करता हूँ वह मुझ पर सख़्ती करते हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जो कुछ तुम कहते हो यदि यह सही है तो तुम उनके मुँह में ख़ाक डालते हो, जब तक तुम्हारा यह व्यवहार रहेगा अल्लाह की मद्द तुम्हारे साथ रहेगी। (मुस्लिम)

(29) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, न्याय करने वाले नूर के मेंम्बर पर होंगे वह जो अपनी सत्ता में अपने घरों में, और जो काम उन के हवाले हुआ हो उसमें, न्याय करें। (मुस्लिम)

(30) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, तीन आदमी जन्नत के हक़दार होंगे- 1. न्यायी बादशाह जो न्याय करता हो 2. ऐसा आदमी जो हर क़रीबी रिश्तेदार मुसलमान के लिए रह़मदिल और नर्म हो। 3. वह आदमी जो सवाल (भिक्षा) से बचे यद्यपि कई सन्तानों वाला हो। (मुस्लिम)

(31) ह़ज़रत अस्मा (रज़ि०) कहती हैं, हुदैबिया की सन्धि के ज़माने में मेरी विधर्मी माँ मेरे पास आई, मैंने ईश्वरीय दूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूछा, कि महाईशदूत मेरी माँ मेरे पास आयी हैं और वह इस्लाम से असन्तुष्ट हैं, क्या मैं उनकी सेवा करुँ? उन्होंने कहा कि हाँ, उनकी सेवा करो। (बुखारी शरीफ़)

(32) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिसने किसी ज़िम्मी (वह ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी शासन में रहता है) की हत्या की अल्लाह ने स्वर्ग उसके लिए ह़राम कर दिया। (नसई)

(33) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से किसी व्यक्ति ने कहा कि मूर्ति पूजकों के विरुद्ध ईश्वर से बद्दुआ करें। उन्होंने कहा, मैं श्राप देने के लिए नहीं दया करने के लिए पैदा किया गया हूँ। (मुस्लिम)

(34) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मुझे सबसे ज़्यादा नापसंद और न्याय के दिन मुझसे अलग वह होंगे जो फ़ालतू बातें करते हैं मुंह फट हैं, अपने मिलने वालों पर बड़ाई जताते हैं, ज्ञान के झूठे दावेदार और घमण्डी हैं। (तिर्मिज़ी)

(35) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम, यदि मुह़म्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उसके भी हाथ काट दूँगा। (बुख़ारी शरीफ़)

(36) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, मज़लूम (पीड़ित) की आह से बचो क्योंकि वह अल्लाह से अपना अधिकार माँगता है और अल्लाह और पीड़ित के बीच में कोई पर्दा नहीं होता। (मिश्कात)

(38) एक बार एक व्यक्ति ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला 'हे ईश्वर के दूत! हमें अपने नौकर की ग़लतियां कहां तक माफ़ करनी चाहिए? ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) चुप रहे। उसने यही सवाल दोबारा किया, आप (सल्ल०) फिर भी चुप रहे। तीसरी बार सवाल करने पर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने कहा एक दिन में 70 बार। (अबू दाऊद)

(38) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, पड़ोसी का अधिकार तुम पर यह है कि अगर वह बीमार हो जाये तो उसकी ख़बर लो, मर जाये तो उसकी शवयात्रा (जनाज़े) में जाओ, क़र्ज़ मांगे तो उसको क़र्ज़ दो, कोई बुरा काम करे तो उस पर ध्यान न दो। उसे कोई ख़ुशी मिले तो बधाई दो, दुख पहुंचे तो सांत्वना दो, अपना मकान इस प्रकार से ऊंचा न करो कि उसके घर की हवा रुक जाये, तुम्हारे घर में पकने वाली चीज़ों की ख़ुशबू से उसे पीड़ा न पहुँचे, अगर खाने की ख़ुशबू घर पहुँचती हो तो जो कुछ तुमने पकाया है उसके घर भी भेजो। (तबरानी)

(39) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जो व्यक्ति चाहता है कि उसके अन्न एवं भोजन में वृद्धि हो एवं उसका नाम दुनिया में काफ़ी समय तक रहे तो उसे अपने रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। (बुख़ारी शरीफ़)

(40) ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया, जिस व्यक्ति ने दो या तीन बहनों या बेटियों की ज़िम्मेदारी निभाई उनको अच्छी शिक्षा दिलाई, उनके साथ अच्छा व्यवहार किया, तथा उनकी शादी का प्रबन्ध किया तो अल्लाह की ओर से उसके लिए स्वर्ग का निर्णय है। (अबू दाऊद)

खण्ड (ग)

भाग–3

इस्लाम धर्म का अर्थ और उसके कुछ मूल विश्वास

इस्लाम के मूल विश्वास

इस्लाम का शाब्दिक अर्थ

इस्लाम का शब्दिक अर्थ होता है 'सुपुर्दगी' या अपने आपको बिना किसी शर्त के परमेश्वर के हवाले (Surrender) कर देना अर्थात अल्लाह (परमेश्वर) की इच्छा के अनुसार पूर्ण रूप से नत मस्तक हो जाना और पारिभाषिक अर्थ होता है, ''अल्लाह तथा ईश्वरीय शिक्षा को स्वीकार कर लेना उसके प्रति नतमस्तक हो जाना, अपने और अपने सर्वस्व को अल्लाह के अधीनकर देना तथा सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह का आज्ञाकारी और भक्त बन जाना,''उसी को उपास्य और पूज्य मानना, उसी से प्रार्थना करना तथा उसका दास व भक्त बन जाना और अपना पूर्ण जीवन उसी के नियम व आदेशानुसार व्यतीत करना, इसी सिद्धान्त के अनुसार 'पवित्र कुर्आन' मानव जीवन का पूर्ण विधान है।

इस्लाम धर्म की प्राचीनता और उसके संस्थापक

इस्लाम धर्म एक प्राकृतिक धर्म है, परन्तु एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूल की बिना पर यह समझा जाने लगा है कि यह एक नया और सबसे बाद में आने वाला धर्म है। जबकि मानव जाति के उत्पत्ति के समय से ही केवल यही एक धर्म था।

इस धर्म के संस्थापक अल्लाह तआ़ला हैं, फिर इस धरती पर लागू करने वाले सर्वप्रथम मनुष्य ह़ज़रत आदम (अ०) थे जिनकी रचना अल्लाह ने बिना माता-पिता के की थी और उनके बाद उनकी स्त्री हव्वा को उत्पन्न किया था, इन्हीं दोनों पति-पत्नी से मनुष्यों की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ जिनका विस्तार पूर्वक उल्लेख पवित्र कुर्आन के सूरः बक़रः और विभिन्न सूरतों में तथा भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व के प्रथम खण्ड के चतुर्थ अध्याय, और बाइबिल व दूसरे अनेक ग्रन्थों में किया गया है इसधरती के पहले व्यक्ति ह़ज़रत आदम (अ०) हैं जिनका धर्म, इस्लाम ही था।

इसलिए कि अल्लाह ने मनुष्यों को पैदा करने के बाद यूं ही छोड़ नहीं दिया

बल्कि जिस प्रकार कोई कम्पनी किसी वस्तु को ढालती या बनाती है, तो उस वस्तु के प्रयोग करने का तरीक़ा भी बताती है ठीक इसी प्रकार जिस अल्लाह (परमेश्वर) ने इस मानव की रचना की उसी ने इसके अंगों के प्रयोग का तरीक़ा भी बताया उसी की ओर से अंगों के प्रयोग करने के ज्ञान को 'ईश्वरीय शिक्षा' कहा जाता है जिसे वह अपने नबियों, रसूलों, या सन्देश वाहकों (ईश्दूतों) के माध्यम से तमाम इन्सानों को देता रहा, प्रत्येक समूह को परमेश्वर वहीं की भाषा के अनुसार शिक्षा प्रदान करता रहा उसी शिक्षा के अनुसार जीवन यापन का नाम 'इस्लाम' था। हां इसी इस्लाम शब्द को प्रत्येक सन्देष्टा अपनी भाषा के अनुसार नाम रखता था जैसे संस्कृत में नाम था 'सर्व समर्पण धर्म' जिसका अ़रबी भाषा में अर्थ होता है इस्लाम धर्म या 'सनातन धर्म' अर्थात 'दीने क़य्यिम'।

ह़ज़रत आदम (अ०) से लेकर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) तक बहुत से सन्देष्टा आते रहे जो मनुष्य और समाज की अवस्था, और अवश्यकता के अनुसार ईश्वरीय शिक्षा व आदेश देते रहे, परन्तु जब, मनुष्य बाल्यावस्था से आगे बढा, तो इस की अवश्यकता हुई कि पूरे विश्व का एक ऐसा स्थान हो जहां से पूरे विश्व को ईश ज्ञान प्रदान हो सके, उसके लिए परमेश्वर ने महामान्य ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को नियुक्त किया और उन्हें अरब देश के मक्का शहर में पैदा करके उन पर ईश्वरीय संविधान के रूप में कुर्आन का अवतरण किया, ताकि मानवजाति अपने पैदा करने वाले मालिक के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत कर सके, इस प्रकार जिस इस्लाम धर्म की स्थापना ह़ज़रत आदम (अ०) ने रखी थी उसी को सम्पूर्ण विधान के रूप में पिछले तमाम रसूलों (ईशदूतों) और उनकी शिक्षाओं की पुष्टि करते हुए, क़ियामत (महाप्रलय) तक के तमाम इन्सानों की रह़नुमाई और मार्ग दर्शन के लिए ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का अभ्युदय हुआ।

इस प्रकार इस्लाम के संस्थापक ह़ज़रत आदम (अ०) हुए और इस्लाम को सम्पूर्ण रूप प्रदान करने वाले अन्तिम महाशदूत ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) हुए, जिस धर्म के विषय में कुर्आन ने इस प्रकार कहा है।

"निःसन्देह दीन (धर्म) तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है"।

विश्वव्यापी धर्म-

पवित्र क़ुर्आन इस बात का साक्षी है कि अल्लाह तआ़ला प्रत्येक वर्ग (समूह) और क़ौम में कोई न कोई डराने वाला भेजता रहा, अर्थात रसूल (दूत) को नियुक्त करता रहा, जिसे पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट रूप से इस प्रकार कहा है-

"वलक़द अर्सलना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूल" (सूरः नह़्ल)

अनुवाद- "और हमने प्रत्येक समूह या क़ौम में रसूल (सन्देष्टा) भेजे"।

इस आयत से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह ने हर क़ौम और हर क्षेत्र में अपना रसूल (सन्देष्टा) भेजता रहा, परन्तु ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को तमाम इन्सानों के लिए एक मात्र अन्तिम रसूल (महाईशदूत) बना कर भेजा गया जिन्होंने पवित्र क़ुर्आन और अपने उपदेशों के ज़रिये जीवन के हर क्षेत्रों, वैचारिक, अध्यत्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सभी क्षेत्रो एवं विभागों में सही व्यापक और संतुलित मार्ग दर्शन दिया जो रहती दुनिया तक सारे इन्सानों का मार्ग दर्शन बने। वह एक मात्र क्रांतिकारी सुधारक एवं मार्ग दर्शक हैं जिनके नेतृत्व को स्वीकार करके उनकी शिक्षाओं का अनुसरण करके मानव जाति अपनी तमाम समस्याओं का समाधान कर सकती हैं जिसे पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार कहा गया है।

"आज के दिन तुम्हारा दीन सम्पूर्ण (मुकम्मल) कर दिया, और अपनी नेअ़मतें पूरी कर दीं"।

अर्थात अब क़ियामत तक यही दीन व शरीअ़त (धर्म) रहेगा जिसे पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट कर दिया, जो दीन या धर्म है वह केवल अल्लाह के निकट 'इस्लाम' ही है। समस्त संसार अल्लाह का है, सारे मनुष्य अल्लाह के हैं, ईश्वरीय धर्म समस्त संसार तथा सारे मनुष्यों का धर्म है, इसलिए इस्लाम धर्म भी सारे मनुष्यों के लिए है।

प्रश्न- मुसलमान या मुस्लिम किसे कहते हैं?

उत्तर- मुसलमान या मुस्लिम वह व्यक्ति है जो अपने आप को अल्लाह के समक्ष बिना किसी शर्त के हवाले कर दे। अर्थात अल्लाह (परमेश्वर) की

इच्छा के अनुसार पूर्ण रूप से नत्मस्तक हो जाए, तथा सम्पूर्ण जीवन में अल्लाह का आज्ञाकारी और भक्त बन कर ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम महाईशदूत मानते हुए अपना पूर्ण जीवन उन्हीं के आदेशानुसार व्यतीत करे चाहे वह नस्ली मुसलमान हो या कोई भी व्यक्ति।

प्रश्न- काफ़िर किसे कहते हैं?

उत्तर- काफ़िर शब्द व्याकरण की दृष्टि से गुणवाचक संज्ञा है, अपमानबाधक नहीं। पवित्र क़ुर्आन में कुफ़्र का अर्थ अवसर के अनुरूप विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, जैसे- इन्कार, अवज्ञा, कृतघ्नता, निरादर, नाक़द्री, अनिष्ठावान, किसान, नाशुक्री, अधर्म और सच्चाई को छुपाने वाला आदि। इस प्रकार कुफ़्र करने वाले को अ़रबी भाषा में काफ़िर कहते हैं। कुफ़्र का शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त है जो अपने को इस्लाम का अनुयायी और मुसलमान कहते थे, परन्तु इस्लाम के प्रति निष्ठावान न थे। अतः जो व्यक्ति अल्लाह का इन्कार करे और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा न माने और अन्तिम ईशग्रन्थ का इन्कार करे, वह चाहे मुसलमान हो या कोई भी व्यक्ति काफ़िर ही कहलाएगा।

क़ुर्आन में जिन काफ़िरों से युद्ध की बात कही गई है उस का कारण उनका मात्र काफ़िर होना काफ़ी नहीं बल्कि वह बात उन के घोर अपराध और उन ह़ालात के कारण कही गई है जो उस समय उन्होंने पैदा किये थे। ***अगर कोई मुसलमान*** भी ऐसा अपराध करेगा और जुल्म की परिस्थितियाँ पैदा करेगा जिनमें युद्ध आवश्यक हो जाता है तो उसके ख़िलाफ़ भी वही मामला किया जाएगा जो किसी काफ़िर के साथ किया जाता है।

प्रश्न- क्या क़ुर्आन या इस्लाम में ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने की आज्ञा दी गई है?

उत्तर- आज्ञा तो बड़ी बात, अनुमति तक नहीं है। क़ुर्आन के सूरः बक़रः आयत नं० 256 में कहा गया है कि ***"दीन (धर्म) के विषय में ज़बरदस्ती नहीं हिदायत तो गुमराही से साफ़-साफ़ खुल चुकी है"।***

इस से मालूम हुआ कि ज़बरदस्ती किसी को मुसलमान बनाना क़ुर्आन के

विरुद्ध है और इस ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन करना महापाप है। जब तक कोई व्यक्ति अपनी इच्छा और दिल से स्वतन्त्रतापूर्वक अल्लाह के आदेशों को स्वीकार नहीं करेगा वह हरगिज़ मुसलमान नहीं हो सकता।

कुर्आन की इस पंक्ति के उतरने की घटना इस प्रकार है, एक मुसलमान के दो बेटे ईसाई थे, उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से कहा, "मेरे बेटे ईसाई मत को छोड़ने पर राज़ी नहीं होते, तो क्या मैं उन को बाध्य कर सकता हूँ?" उस पर यह आयत उतरी और कहा गया, हरगिज़ नहीं कर सकते।

इस आयत की व्याख्या में 'इब्ने कसीर' (रह०) जो कुर्आन के महान प्रमाणित आचार्य हैं, उन्होंने लिखा है कि ***"किसी व्यक्ति को इस्लाम में दाख़िल होने पर विवश नहीं किया जा सकता।"***

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी (रह०) लिखते हैं कि ***"ख़ुदा ने दीन के कार्य को ज़बरदस्ती पर निर्भर नहीं किया बल्कि अधिकार और अख़्तियारात दे रखा है।"*** इस प्रकार कुर्आन की और भी बहुत सी आयतों में ज़बरदस्ती किसी को इस्लाम स्वीकार करवाने से मना किया गया हैं जैसे- सूरः यूनुस आयत नं० 108, सूरः कहफ़ आयत नं० 29 व 31, सूरः काफ़िरून आयत नं० 6, सूरः यूनुस आयत नं० 99, 41, 100, 108 सूरः बनी इस्राईल आयत नं० 7, सूरः जासिया आयत नं० 14, सूरः माइदा- 92, सूरः शूरा 48, सूरः ग़ाशिया 22

अतः यदि कोई व्यक्ति कुर्आन के ख़िलाफ़ कार्य करता है तो वह अपने स्वार्थ के लिए करेगा उस का इस्लाम या मुसलमान से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस्लाम ने प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता दी है, चाहे स्वीकार करे- या इन्कार, किसी को बाध्य नहीं किया गया, लेकिन किसी को इस बात का हक़ नहीं कि वह किसी के इस अधिकार को छीने। जिस प्रकार किसी व्यक्ति को कोई बात ***मानने या न मानने का मौलिक अधिकार*** (Fundamental Right) है, ठीक इसी प्रकार से यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से कोई बात माने तो किसी को इस बात का भी हक़ नहीं है कि वह उसके

इस मानने को रोके, अर्थात इस्लाम में किसी के मौलिक अधिकार के हनन की इजाज़त नहीं, (Islam protects fundamental Rights of every person.)। इसलिए कि आस्था के विषय में अल्लाह ने हर एक को आज़ाद कर रखा है, परन्तु हर व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि जिस चीज़ को वह सही समझता हो दूसरों तक पहुँचाए ***लेकिन पहुँचाने में केवल समझाने की ज़िम्मेदारी है, ज़बरदस्ती नहीं*** ! इसलिए कि ऊपर वाला पूछेगा कि तुमने सही बात पहुँचाई थी या नहीं, 'वह' यह नहीं पूछेगा कि सामने वाले ने माना था या नहीं।

प्रश्न- इस्लाम धर्म की मूल आस्थाएँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर- इस्लाम धर्म की मूल आस्थाएँ इस प्रकार हैं।

1- तौहीद (अद्वैतवाद) का सिद्धान्त-

इस्लाम में सबसे पहला विश्वास यह है कि अल्लाह पर ऐसी आस्था रखना कि वह अल्लाह अकेला है, उस का कोई साझीदार नहीं, वह अद्वितीय है, उसकी सत्ता, उसके गुण तथा कर्म में कोई उसके समान नहीं। वह स्वतः है, अनादि है, अनन्त और अविनाशी है, उसी ने इस पूरी सृष्टि की रचना की, वह ज़िन्दा, सुनने वाला, देखने वाला है, न कोई उसकी तरह है न कोई उसके बराबर है, वह सर्वशक्तिमान और सर्वगुण सम्पन्न है, वह किसी काम के लिए किसी का मुहताज नहीं प्रकृति और जीव भी अपने आप नहीं हैं। उनको भी अल्लाह ही ने उत्पन्न किया है, उसी ने ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, सितारे, जिन्न, इंसान और तमाम जीव जन्तुओं को पैदा किया। वही रोज़ी देने वाला तमाम दुनिया का मालिक है, वही मारता और जिलाता है, अर्थात उसी की आज्ञानुसार सब कुछ होता है। वह न खाता है, न पीता है, और न सोता है, वही रोगी को अच्छा करता है, वही तकलीफ़ों को दूर करता है। वही स्वयं हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इसी प्रकार वह हाथ, पैर, नाक, कान और हर प्रकार की मूर्ति से पाक है, उसकी कोई प्रतिमा या मूर्ति नहीं, सभी उसके मुहताज हैं, वह किसी का मुहताज नहीं और न उसे किसी चीज़ की ज़रूरत। वही अकेला पूजा, उपासना,

अ़िबादत और प्रार्थना का अधिकारी है, बाक़ी सब उसके पुजारी और उपासक हैं, चाहे वह कैसा ही गुणवान और कीर्तिमान हो।

वह अल्लाह पिता, पुत्र, पति,पत्नी जैसे संबंधों से मुक्त है, ऐसा बन्धन अल्लाह की महानता और पवित्रता के विरुद्ध है, इसी प्रकार वह किसी भी प्रयोजन से, किसी भी प्राणी का रूप धारण नहीं करता, न वह किसी कार्य के लिए शरीर धारण करने पर बाध्य है। उसने जब केवल अपनी इच्छा शक्ति से इतने बड़े सृष्टि की रचना कर दी तो किसी कार्य के लिए उसको शरीर धारण करने की क्या आवश्यकता, यह उसकी पवित्रता के विरूद्ध है।

वही निगेहबानी(रक्षा) करने वाला तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला अद्वितीय है।

2- रिसालत (ईशदूतत्व विश्वास)-

सर्वप्रथम अपने और सारे ब्राह्मण्ड के पैदा करने वाले मालिक (अल्लाह) पर आस्था रखने के बाद ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अन्तिम सन्देष्टा मानते हुए, अपने आप को अल्लाह का बन्दा (भक्त) मानना और ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व सभी ईशदूतों(रसूलों) पर आस्था रखते हुए आप (सल्ल०) को अन्तिम महाईशदूत (आख़िरी रसूल) और आप (सल्ल०) पर अवतरित पवित्र क़ुर्आन को अन्तिम विधान मानना।

3- ईशवाणी या ईशग्रन्थों पर विश्वास-

अल्लाह ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पूर्व बहुत से सन्देशवाहकों को भेजता रहा, जिन पर ईशवाणी भी अवतरित करता रहा, परन्तु अन्तिम महाईशदूत पर अवतरित ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन जो संशोधन से पाक है और अब क़ियामत तक यही पूर्ण विधान रहेगा। जिसे ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०) ने अल्लाह की ओर से जिस प्रकार दिया था उसी प्रकार आप (सल्ल०) ने पूर्ण रूप से तमाम इन्सानों तक पहुँचा दिया।

4- अल्लाह के फ़रिश्तों (देव दूतों) पर आस्था-

इस बात पर आस्था रखना कि जिस प्रकार अल्लाह ने इन्सानों और जिन्नों

को पैदा किया, उसी प्रकार फ़रिश्तों (देवदूतों) को भी उसी ने अपनी शक्ति से पैदा किया और फ़रिश्तों को जिस काम में लगा दिया वह उसका विरोध करने में असर्मथ हैं। अतः ईशवरीय वाणी पवित्र क़ुर्आन को भी अल्लाह ने अपने एक सर्वश्रेष्ठ फ़रिश्ते 'ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लै०)' के माध्यम से ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) पर अवतरित किया।

5- तक़्दीर पर आस्था-

अच्छी बुरी तक़्दीर अल्लाह की ओर से होती है, वह आइन्दा (भविष्य) में होने वाली सभी घटनाओं को जानता है, वही जिसे चाहता है इ़ज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़लील करता है।

6- क़ियामत और मरने के बाद दोबारह उठाए जाने पर आस्था-

इस बात पर आस्था रखना कि यह सृष्टि अनादि और अनन्त नहीं है। इसे एक दिन नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाएगा। फिर जिस प्रकार अल्लाह ने इस सृष्टि की रचना की थी उसी प्रकार वह अपनी इच्छा शक्ति से एक नए सृष्टि की रचना कर देगा और जब से सृष्टि की रचना हुई है तब से अन्त तक के सारे मनुष्यों को जीवित करके उनके कर्मो का ह़िसाब लेगा और उनके कर्मो के अनुसार जन्नत (स्वर्ग) देगा या जहन्नम (नर्क) में डालेगा।

प्रश्न- इस्लाम के प्रमुख आधार कौन-कौन से हैं?

उत्तर- इस्लाम के बुनियाद पाँच आधार है, जिन पर विश्वास रखते हुए उस पर अ़मल करना फ़र्ज़ (अत्यन्त अनिवार्य) है। जिस के प्रमुख आधार इस प्रकार हैं।

"लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि"

अनुवाद- ***'अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना (अ़िबादत) के योग्य नहीं'।***

नमाज़ अर्थात दिन रात में पाँच बार नियमित समय पर अल्लाह की अ़िबादत (उपासना) करना, जिस प्रकार ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने की।

अर्थात धर्मदान, हर उस व्यक्ति पर प्रतिवर्ष जिसके पास साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना हो, उस पर पूरी मालियत का ढ़ाई प्रतिशत क़ुर्आन

में दिये गये नियमानुसार दान करना।

रोज़ः अर्थात प्रतिवर्ष रमज़ान के महीने में पूरे महीने के रोज़े हर बालिग़ मर्द,औ़रत पर फ़र्ज़ (अति अनिवार्य) हैं।

जो अ़रब में स्थित मक्का नगर में अल्लाह के बने हुए घर 'क़अ़बः' तक की जो यात्रा करने का सार्मथ्य रखता हो, उस पर ह़ज करना अनिवार्य (फ़र्ज़) है।

अन्तिम शब्द

हमें पूर्ण विश्वास है कि पाठकगड़ निष्पक्ष होकर अपनी भ्रांतियों को दूर कर के ऐसा निर्णय लेंगे जो उन्हें लोक व परलोक में लाभदायक हो।

Writer at a glance

Mufti Muhammad Sarwar Farooqui Nadwi (*Aacharya*)

Name	:	**Muhammad Sarwar**
Father's name	:	**Mohd Haneef**

Educational Background.

Basic	:	**Intermediate,** (Allahabad)
Higher Education	:	**M.A.** (Lucknow)
Arabic	:	**Almiat, Fazeelat & Iftah,** (Darul-Uloom- Nadwatul Ulama Lucknow (U.P.) India.
Islamic Tadreebi Course	:	**Jamia Islamiya** **Madina Munawarah** (Saudi Arabia)
Urdu	:	**Adeeb Kamil & Mua'llim**
Sanskrit	:	**Shastri & Aacharya** (Banaras).
Computer skill	:	**P.G.D.C.A**
Major Research	:	**Qur'an and Fiqah,** Darul-Uloom Nadwatul-Ulama, Lucknow, U.P. (India)

Present Posts

President	:	***Jamiat Payam-e-Amn,*** (Educational Society) lucknow, U.P. (India)
Manager	:	**Universal Peace Foundation,** Lucknow, U.P. (India)
Director	:	***Jamiya Darut-Tawheed Al-Islami*** lucknow, U.P. (India)
Managing Director	:	**Jamia Dar-e-Arqam** (Fatehpur, Haswa) U.P. (India)
Manager	:	**Amn Islamic School** (Lucknow)
Chairman	:	**Arqum Model School** (Lucknow U.P.) (India)
Director	:	***Quran Research Academy,*** (Lucknow) U.P. (India)
General Secretary	:	***All India, Jamiat Darul-Aml,*** (Allahabad) U.P. (India)

(मुफ़स्सिरे क़ुर्आन) मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी साहब द्वारा लिखित पुस्तकें

1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)
4. क़ुर्आन का पैग़ाम (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर) (भाग-1 से 7 तक)
6. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की प्रमाणित जीवनी
7. इस्लाम धर्म क्या है? (क़ुबूले हक़ के बाद इस्लामी कोर्स)
8. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम
9. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन
10. अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन (Hard bound)
11. अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन (Paper back)
12. जन्नत के हालात और जन्नती
13. कुफ़्र और शिर्क की हक़ीक़त
14. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
15. सहाबा का इस्लाम और उसके बाद
16. अज़ान क्या है?
17. आओ नमाज़ की ओर
18. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल
19. हज और उमरा का आसान तरीक़ा
20. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल
21. आपके सवालों का आसान हल (भाग एक)
22. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे
23. इस्लाम की बुनियाद मालूमात
24. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत
25. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पाकीज़ह ज़िन्दगी
26. बीवी-शौहर की ज़िम्मेदारियाँ *(शरीअ़त की रोशनी में)*
27. अल्लाह के अधिकार और बन्दों के अधिकार
28. सूर-ए-फ़ातिहा की तफ़्सीर
29. तौहीद की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
30. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम
31. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से
32. मोबाईल व इण्टरनेट से सम्बन्धित मसायल
33. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में
34. सृष्टि का सृष्टा कौन?
35. इस्लाम?
36. उमरह का आसान तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
37. उमरह का आसान तरीक़ा (मुख़्तसर)
38. उमरह का आसान तरीक़ा (तफ़्सीली)
39. ग़ैर मुस्लिमों के साथ व्यवहार (ऐतिहासिक दृष्टि से)
40. ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध और धार्मिक आज़ादी
41. इस्लामी विरासत की तक़्सीम एक नज़र में
42. मीरास की तक़्सीम (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
43. लाइलाहा इल्लल्लाहु की गवाही
44. ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास
45. प्राकृतिक नियम और परमेश्वर से इन्सान का सम्बन्ध
46. मानव कल्याण सम्बन्धित इस्लामी सन्देश
47. मानव एकता और शान्ति सन्देश
48. मुहर्रम की हक़ीक़त
49. इस्लामी राज्य की शासन व्यवस्था
50. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बातें (अ़मालें हसना की रौशनी में)
51. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और साहित्य की विधाएँ

उर्दू पुस्तकें

52. क़ुर्आनी आयात और इस्लामी मुआ़शरा
53. हिन्दुस्तान में क़ुर्आन के तर्जुमे की शुरुआ़त और चन्द तफ़्सीर का तआ़रुफ़
54. तफ़्सीर का बुनियादी मआ़ख़ज़
55. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का अ़ज़ल मक़्सद
56. क़ुर्आन के मुतअ़ल्लिक़ दअ़वत और इस्लामी जिहाद (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)
57. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा
58. कायनात के अ़जायबात और इन्सान का अल्लाह से तअ़ल्लुक़
59. कलिमा-ए-तय्यबः की हक़ीक़त और उस के तक़ाज़े
60. इस्लामी क़ानूने विरासत और मीरास की तक़्सीम

61. अल्लाह तआ़ला का तआ़रुफ़ और कलिम-ए-शहादत के फ़ज़ायल
62. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रौशनी में)
63. कुफ़्र व शिर्क की हक़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
64. कुफ़्र शिर्क और फ़िस्क़ का ज़िक्र और सहाबा से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ीदा
65. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती
66. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मुख़्तसर सीरत
67. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और जज़ीरे-ए-अ़रब
68. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की करीमाना अख़्लाक़ और आप (सल्ल०) की सीरत
69. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें
70. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सिफ़ात (अहादीस की रौशनी में)
71. आ़माल सालिहा (भाग-1)
72. आ़माल सालिहा (भाग-2)
73. ख़ातिमुन्नबीईन (क़ुर्आन हदीस की रौशनी में)
74. नबियों की सीरत (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)
75. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत
76. मुसलमानों के फ़िर्क़े और उनके अ़क़ायद
77. हराम, हलाल और मुबाह चीज़ें
78. इख़्लास की फ़ज़ीलत (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)
79. आख़िरत का अ़क़ीदा (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)
80. तअ़द्दुदे इज़्दिवाज और इस्लाम (मज़ाहिब आ़लिम की रौशनी में)
81. मुस्तनद मस्नून दुआ़एँ
82. उम्मते मुहम्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेअ़यार और बनी इस्राईल
83. इस्लाम में ज़िज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात
84. इस्लाम में औ़रत का मक़ाम
85. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)
86. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा
87. जिन्नात व शयातीन का तआ़रुफ़ और मुआ़लिज की सिफ़ात
88. क़ियामत तक के फ़ित्नें (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पेशीनगोई की रोशनी में)
89. इस्लाम की दअ़वत का असर इन्सानी दुनिया पर
90. ग़ैर अ़रबी रस्मुलख़त में क़ुर्आन की इशाअ़त
91. दअ़वत की ज़िम्मेदारी (क़ुर्आन व हदीस की रौशनी में)
92. आख़िरी रसूल, कहाँ, कब और कौन?
93. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में
94. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़
95. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में
96. इस्लाम के ख़िलाफ़ इल्ज़ामात और उस की दअ़वत का असर
97. बौद्ध धर्म और इस्लाम
98. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी
99. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़
100. अत्याते क़ुद्रत और दौलत की पैदाईश
101. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल
102. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत
103. इस्लामी मआ़शियात का तक़ाबुली जायज़ा
104. इस्लाम में तिजारत का तरीक़ा
105. इस्लाम का ज़रई निज़ाम
106. जहन्नम के हालात और जहन्नमी (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
107. काग़ज़ी नोट और बैअ़ की हक़ीक़त
108. इस्लामी क़ानून विरासत और मीरास की तक़्सीम
109. मुसाफ़िर और सफ़र के मसायल
110. ईदैन व क़ुर्बानी की हक़ीक़त और उस के मसायल
111. उमरह का आसान तरीक़ा
112. हज और उमरा का मुकम्मल तरीक़ा
113. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल
114. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)
115. सद्क़-ए-फ़ित्र और अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
116. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात
117. इस्लामी पर्दा और आज़ाद मुआ़शरे की बर्बादी
118. मुहर्रम की हक़ीक़त और आ़शूरा के वाक़िआ़त

119. ज़बरदस्ती इस्लाम क़ुबूल करवाने की मुमानिअ़त
120. ग़ैर मुस्लिमों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
121. वफ़ात से पहले रसूल करीम (सल्ल०) की उम्मत को नसीहतें
122. दुआ़ की क़ुबूलियत के अवक़ात व आदाब और माँगने का तरीक़ा
123. मआ़नी क़ुर्आनुल् करीम
(लफ़्ज़ी तर्तीब के एतिबार से)
124. रसूल करीम (सल्ल०) की रिश्ते की अहम सह़ाबियात
125. नबियों व सह़ाबा का ज़रिया-ए-मआ़श
126. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
127. नबियों की दअ़वत व तब्लीग़ के पाँच अहम उसूल
128. लुग़ात क़ुर्आनुल् करीम
129. यौमे आज़ादी और यौमे जम्हूरिया की मुख़्तसर तारीख़
130. हिन्दू मज़हबी किताबों का मुख़्तसर तआ़रुफ़
131. मुस्लिम पर्सनल लॉ और यकसाँ सिविल कोड
132. जैन धर्म का मुख़्तसर तआ़रुफ़
133. जनाब गुरु नानक जी और सिख धर्म का तआ़रुफ़
134. उम्मते मुस्लिमा पर दअ़वत की ज़िम्मेदारी
135. ह़ज़रत आदम (अ़लै०) से मुह़म्मद (सल्ल०) तक की दअ़वती ह़िक्मतें और नसीहतें
136. दअ़वत का क़ुर्आनी उस्लूब और अल्लाह तआ़ला की नुसरत
137. हिन्दू मज़हब के अहम त्योहार और रसोम व शादी का मुख़्तसर तआ़रुफ़
138. पुराण का तआ़रुफ़
139. रसूल करीम (सल्ल०) का मक्की व मदनी दौर
(दअ़वती पसे मन्ज़र में)
140. बहाई मज़हब और उन के फ़िर्क़ों का तआ़रुफ़
141. रसूल करीम (सल्ल०) के बेटे और बेटियाँ
142. क़ादिनियत और उस के बानी का मुख़्तसर तआ़रुफ़
143. यहूदी मज़हब और उन के फ़िर्क़ों का तआ़रुफ़
144. ईसाई मज़हब का तआ़रुफ़
145. हिन्दू धर्म ग्रन्थों में तौह़ीद, रिसालत और आख़िरत जैसा तसव्वुर
146. हिन्दू धर्म फ़िर्क़ों के अ़क़ायद और उन की तर्दीद
147. जीव हत्या और क़ुर्बानी
148. मय्यित से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल
149. क़ुर्आन की नसीहतें और उस का तास्सुर
150. औलाद की तअ़लीम व तर्बियत
151. पुर्नजन्म और आवागमन का तसव्वुर
152. क़ुबूले इस्लाम के बाद तअ़लीमी व तर्बियती निज़ाम
153. रसूल करीम (सल्ल०) की दअ़वत के मुख़्तलिफ़ तरीक़े
154. मदऊ के एतिबार से दअ़वत के तरीक़े
155. इस्लाम क़ुबूल करने के अस्बाब और मुख़ालिफ़ के मुख़्तलिफ़ तरीक़े
156. रसूल करीम (सल्ल०) की ह़यात के अहम वाक़िआ़त सन् ईस्वी के एतिबार से
157. तशरीह़ लुग़ातुल् क़ुर्आन अल् करीम
158. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की 365 नसीहतें
159. क़ससुल् अम्बिया (दअ़वती पसे मन्ज़र में)
160. मअ़ने अल् क़ुर्आन करीम (तर्जुम व मुख़्तसर तफ़्सील)
161. पयामे अम्न और उस के तक़ाज़े
162. जिहाद और आतंकवाद में अन्तर

अ़रबी पुस्तकें

163. मन्ज़तुल मराह फ़ी ज़ौइल इस्लाम वल्अद्यान वल्ह़ज़ारात अल्मुख़्तलह
164. अल् इन्सान फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वस्सुन्नह
165. नुब्ज़तु अ़न सिफ़ाति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम
166. ग़ज़्व-ए-ह़ुनैन व तायफ़ फ़ी ज़ौविल् क़ुर्आन वल् सुन्नह
167. अस्बाब तह़बतुल् अअ़माल वल् हमियतुल् निया फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
168. अल् फ़ितन अल् वाक़िअ़ः इला क़ियामः अल् साअ़ह फ़ी ज़ौइल अह़ादीस अल् शरीफ़
169. अल् नबी अल् ख़ातिम मन, मता, वआईन फ़ी ज़ौइल कुतुबुल् हिन्दूसीया वद्दिनातुल मुख़्तलिफ़ा
170. अल्हिन्दूसिया फिरक़ुहा, अक़ाइदोहा, मुनज्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा

171. अहमयतुल् दअ़वह वल् तब्लीग़ फ़ी ज़ौइल क़ुर्आन वल् सुन्नह
172. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद
173. अत्तअ़रीफ़ुलवजीज़ बिदियानी बूजा
174. तअ़द्दुदे अज़्ज़ौवजात वल् इस्लाम फ़ी जौए दियानात

अंग्रेज़ी पुस्तकें

175. क़ुर्आन
176. इस्लाम?
177. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद ऐण्ड पुराण
178. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप
179. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम
180. दी स्वॉड आफ़ इस्लाम
181. अज़ान, ए कालिंग फ़ार ह्यिूमेनिटी
182. हिन्दू रिलीजन एट्स सेक्ट आर्गेनाइज़ेशन एण्ड इन्ट्रोडक्शन ऑफ़ इट्स इस्टिट्यूशन

अनुवाद की हुई पुस्तकें

183. मुन्तख़ब अह़ादीस
(लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)
184. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ़ बग़ावत (लेखक-इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल रह़०)
185. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया पर
(लेखक-ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी रह०)
186. मानवता आज भी उसी चौखट की मुहताज़ है
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह०)
187. रमज़ान का तोह़फ़ा
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
188. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार
(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)
189. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन?
(विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादरी)
(तरत्तीब व तर्तीब- मु० मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी)
190. यतीमों की किफ़ालत
(लेखक-मुह़म्मद आमिर सिद्दीक़ी नदवी)

जल्द प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

191. तारीख़-ए-इस्लाम
192. क़ससुल् अम्बिया
193. मजमुआ़ अह़ादीस (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
194. दुआ़ के आदाब (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
195. इस्लाम के अ़दालती फ़ैसले
196. सीरत-ए-सह़ाबा
197. क़ुर्बानी से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल
198. तह़ारत से मुतअ़ल्लिक़ मसॉयल
199. इल्म से मुतअ़ल्लिक मसायल
200. ईमानियात,अ़क़ायद और नज़र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
201. ईदैन व जुमअ़ः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
202. मदारिस से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
203. हिबा व जहेज़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
204. सूद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
205. सफ़र और सद्क़ः फ़ित्र से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
206. निकाह़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
207. तलाक़ व इद्दत और नफ़्क़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
208. नमाज़ व जमाअ़त से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
209. ज़कात से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
210. ह़ज से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
211. इमामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
212. क़िराअत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
213. तिजारत की मुख़्तलिफ़ क़िस्मों से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
214. वसीयत व मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
215. अज़ान व इक़ामत से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
216. तर्बियत, रज़ाअत व अ़क़ीक़ा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
217. अ़लामात क़ियामत (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
218. सज्दः से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
219. वक़्फ़ से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
220. मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ मसायल
221. इल्म व उ़ल्मा से मुतअ़ल्लिक़ मसायल

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

कुर्आन का

कुर्आन का आसान हिन्दी अनुवाद

सन्देश

इस्लामी जगत के प्रख्यात विद्वान

मुफ़क्किरे इस्लाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी नदवी (अ़ली मियाँ) (रह़०)

अनुवाद-

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

(सदर- जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

जमअ़ीयत पयामे अम्न

मर्कज़ुत्तौहीद अल् इस्लामी, अम्न कालोनी (सिकरौरी)

हरदोई रोड, लखनऊ (यू0पी0) इण्डिया–227107

हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन

इसमें पत्रकारिता का महत्त्व, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास और भारत की हिन्दी पत्रकारिता, समाचार का अर्थ, उसकी अनिवार्यताएँ तथा प्रस्तुतिकरण का कार्य संवादाताओं के प्रकार, विविध समाचार का संकलन, विज्ञापन के तत्व, फ़ीचर के भेद, इन्टरव्यू, प्रेस कान्फ्रेंस में अन्तर, फ़ोटो रिर्पोटिंग और फ़ोटोग्राफ़ी के प्रकार, रेडियो, डाटा पेजिंग सर्विस तथा कम्प्यूटर सम्बन्धी मालूमात, इन्टरनेट, ई-मेल, साइबर स्पेस और मल्टी-मीडिया तथा भारत में मानहानि क़ानून से सम्बन्धित मालूमात का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है।

एम० एम० सरवर फ़ारूक़ी नदवी (आचार्य)

(विभागाध्यक्ष,भाषा विभाग एवं अनुसंधान, जमीअ़त पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक

कुर्आन, अम्न रिसर्च एकेडमी

टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-२०

झाड़,फूँक,जादू,टोना और तअ़वीज़,गंडे

शरीअ़त की रोशनी में

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी
(सदर जमीअ़त पयामे अम्न, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,२० (यू०पी०) इण्डिया

ईशदूतों का धर्म और परलोक विश्वास

कुर्आन की दृष्टि में

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(अध्यक्ष, जमअ़ीयत पयामे अम्न, लखनऊ)

मकतबः पयामे अम्न
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ,20 (यू0पी0)इण्डिया